श्रीः ।

# दानसंग्रहः ।

पण्डित-महीधरेणसर्वधर्मशास्त्रग्रन्थेभ्यस्संगृहीतः विषयानुक्रमणिकया सहितः ।

सच

खेमराज श्रीकृष्णदास इत्यनेन

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालये

मुद्रयित्वा प्रकाशितः ।

संवत् १९५४, शके १८१९.

अत्र सर्वस्वत्वं यन्त्राध्यक्षस्य वशगम् ।

श्रीः ।

# अथ दानसंग्रहविषयानुक्रमणिका ।


| विषयाः | पृष्ठ. |
|---|---|
| **१ दानसंज्ञाध्यायः ।** | |
| मंगलाचरणादिः-१ | |
| दानसंज्ञा .... .... .... | १ |
| दानपात्रम् .... .... .... | ,, |
| द्रव्यविभागः .... .... | २ |
| अग्राह्यदानम् .... .... | ,, |
| दानकालः .... .... .... | ,, |
| पुण्यदेशः .... .... .... | ३ |
| वीर्थेप्रतिग्रहनिषेधः ... .... | ,, |
| तीरक्षेत्रप्रमाणम् .... .... | ,, |
| तीर्थप्रतिग्रहनिषेधस्य परिहारः .... .... .... | ,, |
| दानकृत्यम् .... .... .... | ,, |
| प्रतिग्रहीतृकृत्यम् .... .... | ,, |
| प्रतिग्रहीतृदोषः .... .... | ४ |
| तन्माहात्म्यम् .... .... | ,, |
| द्रव्यमानम् .... .... .... | ,, |
| धान्यमानम् .... .... .... | ,, |
| दक्षिणाप्रमाणम् .... .... | ,, |
| दक्षिणाविभागः .... .... | ५ |
| द्रव्यदेवताः ... .... .... | ,, |
| प्रतिगृह्यस्यदानेगृह्यस्थानम् | ,, |
| **२ दानमाहात्म्याध्यायः ।** | |
| दानफलानि .... .... .... | ७ |
| **३ पुण्यकालाध्यायः ।** | |
| पुण्यतिथ्यादिः .... .... | १० |
| युगादिप्रभृतयः .... .... | १२ |
| व्यतीपात वैधृतियोगौ .... | १३ |
| उपरागकालः .... .... | ,, |
| प्रकीर्णकालः.... .... .... | १४ |
| **४ दातृप्रतिगृहीतृ धर्माध्यायः ।** | |
| दातृप्रतिग्रहीत्रोर्नियमाः .... | ,, |
| पात्रपरीक्षा .... .... .... | १६ |
| **५ संक्रांतिमासदानाध्यायः ।** | |
| संक्रांति दानम् .... .... | १६ |
| मेषसंक्रांति दानम्.... .... | ,, |
| मेष संक्रमदाने कृत्यम् .... | ,, |
| सकृदानमंत्रः .... .... | १८ |
| मासव्रतनियमाः .... .... | ,, |
| वृषसंक्रमे दानम् .... .... | ,, |
| जलधेनु दानम् .... .... | ,, |
| ज्येष्ठमासे दानानि .... .... | १९ |
| मिथुनसंक्रमेअन्नदानादि .... | ,, |
| वस्त्रदानम् .... .... .... | ,, |
| शय्यादानम्.... .... .... | ,, |
| आषाढमासेकृत्यम् .... .... | ,, |
| कर्कसंक्रमेघृतधेनुदानम् .... | २० |
| श्रावणमासेकृत्यम् .... .... | २१ |
| फलदानानि .... .... .... | ,, |

| विषयाः | पृष्ठ. |
|---|---|
| सिंहसंक्रमेसुवर्णच्छत्रा दिदानम् .... .... ... | २१ |
| उपानद्दर्पणचामरदानमंत्राः | ,, |
| भाद्रपदमासेकृत्यम्... .... | २२ |
| कन्यासंक्रमेवस्त्रक्षीरधेनु दानम्... .... .... .... | ,, |
| अश्विनमासेकृत्यम् .... .... | ,, |
| घृतदानम् .... .... ... | ,, |
| तिलदानमश्वदानाङ्गम् .... | ,, |
| अश्वदानविधिः .... .... | २३ |
| वृषदानम् .... .... .... | ,, |
| दधिदानम् .... .... .... | ,, |
| ताम्रदानम् .... .... .... | २४ |
| तुलासंक्रमे कृसरदानम् .... | ,, |
| बीजादिदानम् .... .... | ,, |
| मधुधेनु दानम् .... .... | ,, |
| धान्यदानम् .... .... .... | ,, |
| धान्यदान मंत्राः .... .... | ,, |
| कार्तिकमासे दानानि .... | २५ |
| दीपदानम् .... .... .... | ,, |
| आकाशे दीपस्थापनम् .... | ,, |
| गोपरिचर्य्याविधिः .... | ,, |
| वृश्चिकसंक्रमेच वस्त्रगृहदाने | ,, |
| गृहदान फलम् .... .... | २८ |
| धनुःसंक्रमे रथदानम् .... | ,, |
| गंत्रीदानम् .... .... .... | ,, |
| शिबिका दानम् .... .... | २९ |
| पौषमासे कृत्यम् .... .... | ,, |
| अग्निदानविधि .... .... | ,, |
| मकरसंक्रमेरत्नदानम् .... | ,, |
| नवरत्नदानम् .... .... | ३० |
| मौक्तिकदानम् ... .... | ,, |
| प्रवालदानम्.... .... .... | ,, |

| विषयाः | पृष्ठ. |
|---|---|
| कर्णभूषणदानम् .... .... | ३० |
| मांगल्यमणिदानम् .... .... | ,, |
| सुवर्णदानम् .... .... .... | ,, |
| तिलधेनुदानविधिः.... .... | ,, |
| तत्प्रार्थनाविशेषः .... .... | ३२ |
| कृसरान्नदानम् ... .... | ,, |
| गुडदानम् .... .... .... | ,, |
| षोडशफलदानम् ... .... | ,, |
| सौभाग्यवतीनांदानविशेषः | ३३ |
| वर्द्धितफलदानम् .... .... | ,, |
| सौभाग्यशूर्पदानम् .... .... | ,, |
| सपायसकांस्यपात्रदानम् .... | ,, |
| माघमासेकृत्यम् .... .... | ,, |
| कुंभसंक्रमेगोभ्योम्बु तृणदानम् .... .... .... | ,, |
| अपमृत्यु हरं कालचक्रदानम् .... .... .... | ३४ |
| फाल्गुनमासे कृत्यम् .... | ,, |
| व्रीहिदानम्.... .... .... | ,, |
| स्वरूपतो गोदानम्.... .... | ,, |
| सवस्त्र कृष्णाजिन दानम्.... | ३५ |
| मीनसंक्रमे धर्मशाला दानम् | ३७ |
| पुष्पदानम् .... .... .... | ,, |
| अजादानम्.... .... .... | ,, |
| चैत्रमासे कृत्यम् .... .... | ३८ |
| हरिद्रा दानम् .... .... | ,, |
| कुंकुम दानम्.... .... .... | ,, |
| सिंदूर दानम् .... .... | ,, |
| कस्तूरी दानम् .... .... | ,, |
| कर्पूर दानम्.... .... .... | ,, |
| नानासुगंधि द्रव्यदानम् .... | ,, |
| गलतिका दानम् .... .... | ,, |
| मलमासे दानानि .... .... | ३९ |

| विषयाः | पृष्ठ. |
|---|---|
| **६ प्रतिपदादानाध्यायः ।** | |
| प्रपादानम् .... .... .... | ४१ |
| दुर्गाप्रीतिकरदानानि .... | ,, |
| मणिकदानम् .... .... | ,, |
| कार्तिकशुक्लप्रतिपदि .... दशाचलसंज्ञा .... .... | ४१ |
| धान्यशैलदानम् .... .... | ,, |
| लवणाचलदानम् .... .... | ४६ |
| गुडाचलदानम् .... .... | ४७ |
| सुवर्णाचलदानम् ... .... | ,, |
| तिलाचलदानम् .... .... | ४८ |
| कार्पासाचलदानम् .... .... | ,, |
| घृताचलदानम् .... .... | ,, |
| रत्नाचलदानम् .... .... | ४९ |
| रौप्याचलदानम् .... .... | ,, |
| शर्कराचलदानम् .... .... | ,, |
| मार्गशीर्षकृष्णप्रतिपदादौ .... शयनदानम् .... .... .... | ५० |
| कंशिपुदानम् .... .... | ,, |
| चैत्रकृष्णप्रतिपदादौ श्वेत वस्त्रदानम् .... .... | ,, |
| श्रावणकृष्णप्रतिपदादौ स्थालीदानम् .... .... | ५१ |
| **७ द्वितीयादानाध्यायः ।** | |
| भ्रातृ द्वितीया दानम् .... | ५१ |
| नानाद्रव्य तुलादानम् .... | ५२ |
| व्रणग्रलक्ष्मीमूर्तिदानम् .... | ,, |
| **८ तृतीयादानाध्यायः** | |
| सौभाग्याष्टक दानम् .... | ५३ |
| अक्षयतृतीया दानम् .... .... | ,, |
| तांबूल दानम् .... .... | ,, |
| षाडुका दानम् .... .... .... | ,, |

| विषयाः | पृष्ठ. |
|---|---|
| उपानद्दानम् .... .... | ५३ |
| छत्र दानम् .... .... .... | ५४ |
| व्यजन दानम् .... .... | ,, |
| लवणधेनु दानम् .... .... | ,, |
| शिखर दानम् .... .... | ,, |
| सौभाग्यवतीनां दान विशेषाः | ५६ |
| **९ चतुर्थीदानाध्यायः ।** | |
| शंख दानम् .... .... .... | ५७ |
| फल दानम् .... .... .... | ,, |
| कंदमूलफलदानम् .... .... | ,, |
| शाकपत्रतांबूलदानानि .... | ,, |
| मोदकदानम् .... .... .... | ,, |
| अंगारकमूर्तिदानम् .... .... | ५८ |
| स्वर्णवारणदानम् .... .... | ,, |
| गणेशमूर्तिदानम् .... .... | ५९ |
| **१० पंचमीदानाध्यायः ।** | |
| मृदंगादिवाद्यदानम् .... | ६० |
| दारिद्र्यहरकुबेरमूर्तिदानम् | ,, |
| सुवर्णनागदानम् .... .... | ६१ |
| वेणुपात्रदानम् .... .... | ,, |
| नानासुगन्धिद्रव्यदानम् .... | ,, |
| रतिकाममूर्तिदानम् .... | ६२ |
| आयुष्यवृषदानम् .... .... | ,, |
| हिरण्यवृषभदानम् .... .... | ६३ |
| शिवायवृषदानम् .... .... | ,, |
| कुष्ठहररौप्यवृषदानम् .... | ,, |
| शिवायरौप्यवृषदानम् .... | ६४ |
| **११ षष्ठीदानाध्यायः ।** | |
| कपिलादानम् .... .... | ६४ |
| महाकपिलादानम् .... .... | ६५ |
| सूर्य्यमूर्तिदानम् .... .... | ,, |

| विषयाः | पृष्ठ. |
|---|---|
| शर्करान्नदानम् .... .... | ६६ |
| **१२ सप्तमीदानाध्यायः ।** | |
| स्वर्णकमलदानम् .... .... | ६७ |
| अंबवृद्धिहरनारायण मूर्त्तिदानम् .... .... | ,, |
| पुत्रशोकहरस्वर्णवृषदानम् | ६८ |
| सूर्यमूर्त्तिदानम् .... .... | ,, |
| ताटंकदानम् .... .... .... | ,, |
| कूष्मांडदानम् .... .... | ,, |
| **१३ अष्टमीदानाध्यायः ।** | |
| पंचसुगंधिफलदानम् .... | ६९ |
| जगदंबिकामूर्त्तिदानम् .... | ,, |
| राज्यंधत्वहरगोपालमूर्त्तिदानम् | ७० |
| सर्वपापहरंत्रिशूलदानम् .... | ,, |
| चक्षूरोगहरगरुडमूर्तिदानम् | ७१ |
| **१४ नवमीदानाध्यायः ।** | |
| रामचन्द्रमूर्तिदानम् .... | ७१ |
| दुर्गामूर्तिदानम् .... .... | ७२ |
| आयुधदानम् .... .... .... | ७३ |
| कट्टारकदानम् .... .... | ,, |
| छुरिकादानम् .... .... | ,, |
| कवचदानम् .... .... .... | ,, |
| चर्मदानम् .... .... .... | ,, |
| धनुर्दानम् .... .... .... | ,, |
| शक्तिदानम् .... .... .... | ,, |
| कुंतदानम् .... .... .... | ,, |
| अग्नियंत्रदानम् .... .... | ७४ |
| पाशदानम् .... .... .... | ,, |
| परशुदानम् .... .... .... | ,, |
| अजादानम् .... .... .... | ,, |
| पताकादानम् .... .... | ,, |

| विषया. | पृष्ठ. |
|---|---|
| **१५ दशमीदानाध्यायः ।** | |
| दशहरादानम् .... .... | ७४ |
| सक्तुदानम् .... .... .... | ७५ |
| घृतदानम् .... .... .... | ,, |
| मधुदानम् .... .... .... | ,, |
| तंडुलदाम् .... .... .... | ,, |
| तिलदानम् .... .... .... | ,, |
| शर्करादानम् .... .... | ,, |
| लवणदानम् .... .... .... | ,, |
| चणकदानम् .... .... .... | ,, |
| अपूपदानम् .... .... .... | ,, |
| मुद्गान्नदानम् .... .... .... | ,, |
| घटदानम् .... .... .... | ,, |
| उपानद्दानम् .... .... .... | ,, |
| व्यंजनदानम् .... .... | ,, |
| छत्रदानम् .... .... .... | ,, |
| स्वर्णप्रतिमादानम् .... .... | ७६ |
| वस्त्रदानम् .... .... .... | ,, |
| स्वर्णदानम् .... .... .... | ,, |
| सर्वान्नदानम् .... .... | ,, |
| जलजीवदानम् .... .... | ,, |
| तिलाचलदानम् .... .... | ,, |
| शिखरदानम् .... .... .... | ,, |
| सरस्वतीमूर्त्तिदानम् .... | ,, |
| मुखवाद्यदानम् ... .... | ७७ |
| सिंहासनदानम् ... .... | ,, |
| छत्रदानम् .... .... .... | ,, |
| कनकदंडदानम् ... .... | ,, |
| यष्टिकादानम् .... .... | ,, |
| दुंदुभिदानम् ... .... .... | ,, |
| व्यजनदानम् ... .... .... | ,, |
| चामरदानम् ... ... .... | ७८ |

| विषयाः | पृष्ठ. |
|---|---|
| शंखदानम् .... .... ... | ७८ |
| घंटादानम् .... .... .... | ,, |
| काम्यघंटादानम् ... .... | ,, |
| भेर्य्यादिदानम् .... .... | ,, |
| तिलपूर्णकरकदानम् .... | ,, |
| गुडधेनुदानम् .... .... | ७९ |
| कार्पासधेनुदानम् .... .... | ८० |
| **१६ एकादशीदानाध्यायः।** | |
| वामनमूर्त्तिदानम् .... .... | ८१ |
| शुक्ल्यादिदानम् .... .... | ,, |
| घृतधेनुदानम् .... .... | ,, |
| सुवर्णाचलदानम् .... ... | ,, |
| शालग्रामदानम् .... .... | ,, |
| शिवनाभिदानम् .... .... | ८२ |
| मत्स्यमूर्त्तिदानम् .... .... | ,, |
| वराहमूर्त्तिदानम् .... .... | ,, |
| पुत्रात्मिकरकूर्मदानम् .... | ८३ |
| तिलदानम् .... .... .... | ८४ |
| तिलपात्रदानम् .... .... | ,, |
| नृसिंहमूर्त्तिदानम् .... .... | ,, |
| **१७ द्वादशीदानाध्यायः।** | |
| लक्ष्मीनारायणमूर्त्तिदानम् .... | ८५ |
| शर्कराधेनुदानम् .... .... | ८६ |
| अन्नदानम् .... .... .... | ,, |
| तंडुलदानम् .... .... .... | ,, |
| व्रीहिदानम् .... .... .... | ८७ |
| यवदानम् .... .... .... | ,, |
| गोधूमदानम् .... .... .... | ,, |
| माषदानम् .... .... .... | ,, |
| मुद्गदानम् .... .... .... | ,, |
| चणकान्नदानम् .... .... | ,, |
| कुलत्थदानम् .... .... .... | ,, |

| विषयाः | पृष्ठा. |
|---|---|
| निष्पावदानम् .... .... | ८७ |
| प्रियंगुदानम् .... .... .... | ,, |
| श्यामाकदानम् .... .... | ,, |
| कोद्रवदानम् ... .... .... | ,, |
| लंकदानम् .... .... .... | ,, |
| यावनालदानम् .... .... | ८८ |
| मसूरिकादानम् .... .... | ,, |
| पायसान्नदानम् ... .... | ,, |
| कमंडलुदानम् ... .... | ,, |
| ओदनदानम् ... ... .... | ,, |
| दध्यन्नदानम् ... .... .... | ,, |
| कृसरान्नदानम् ... .... | ,, |
| नानाभक्ष्यदानम् ... .... | ,, |
| सर्वान्नदानम् ... .... .... | ,, |
| सक्तुदानम् ... .... .... | ,, |
| शर्करादानम् .... ... .... | ,, |
| गुडदानम् .... ... .... | ,, |
| इक्षुदंडदानम् .... ... | ,, |
| मधुदानम् .... .... .... | ८९ |
| घृतदानम् .... .... .... | ,, |
| तैलदानम् .... .... .... | ,, |
| नवनीतदानम् .... .... .... | ,, |
| क्षीरदानम् .... .... .... | ,, |
| दधिदानम् .... .... .... | ,, |
| तक्रदानम् .... .... .... | ,, |
| पुष्पदानम् .... .... .... | ,, |
| फलदानम् .... .... .... | ,, |
| तांबूलदानम् .... .... .... | ,, |
| **१८ त्रयोदशीदानाध्यायः।** | |
| रतिकाममूर्त्तिदानम् .... .... | ९० |
| अजादानम् .... .... .... | ,, |
| घृताचलदानम् .... .... | ,, |

| विषयाः | पृष्ठ. |
|---|---|
| यमदीपदानम् .... .... .... | ९० |
| गोवर्द्धनदानम् .... .... | ” |
| घृतदानम् .... .... .... | ९१ |
| कुबेरमूर्तिदानम् .... .... | ” |
| दद्रुरोगहरोमामहेश्वर मूर्त्ति दानम् .... .... .... | ” |
| शर्कराचलदानम् .... .... | ” |
| सुवर्णधेनुदानम् .... .... | ” |
| **१९ चतुर्दशीदानाध्यायः ।** | |
| रौप्याचलदानम् ... .... | ९२ |
| नृसिंहमूर्तिदानम् .... .... | ” |
| हेमधेनुदानम् ... .... .... | ” |
| अनंतदानम् .... .... .... | ९३ |
| प्रदोषदीपदानम् .... .... | ” |
| भोजनदानम् ... .... .... | ” |
| उल्काग्रहणम् .... .... | ” |
| वैकुंठदीपदानम् ... .... | ९४ |
| रुद्राक्षदानम् .... ... .... | ” |
| लवणधेनुदानम् .... .... | ” |
| शिवलिंगदानम् .... .... | ९५ |
| मणिमयलिंगदानम् .... .... | ” |
| काश्मीरलिंगदानम् .... .... | ” |
| **२० पौर्णमासीदानाध्यायः ।** | |
| भांडदानम् .... ... .... | ९६ |
| तिलकुंभदानम् .... .... | ” |
| दधिधेनुदानम् .... .... | ” |
| कृष्णाजिनदानम् .... .... | ९७ |
| छत्रोपानद्व्यजनदानानि .... | ” |
| गोदानम् .... .... .... | ” |
| पुराणदानम् .... .... .... | ” |
| रक्षाबंधनदानम् .... .... | ” |
| यज्ञोपवीतदानम् .... ... | ” |
| शिरोरोगघ्नयज्ञोपवीतदानम् | ९८ |

| विषयाः | पृष्ठ. |
|---|---|
| गर्भस्रावहरयज्ञोपवीतदानम् | ९८ |
| भागवतदानम् .... .... | ” |
| कोजाग्रेदीपदानम् .... .... | ” |
| नानाफलदानम् .... .... | ” |
| दीपदानम् .... .... .... | ९९ |
| तिलदानम् .... .... ... | ” |
| नीलवृषभदानम् .... .... | ” |
| गजाश्वादिदानम् .... .... | १०० |
| दशाचलदानानि .... .... | ” |
| तिलपात्रदानम् .... .... | ” |
| माष्यांतैलादिदानम् .... .... | ” |
| घृतकंबलदानम् .... .... | ” |
| गोमिथुनदानम् .... .... | १०१ |
| विष्णुमूर्त्तिदानम् .... .... | ” |
| शय्यादानम् .... .... .... | ” |
| हरिहरमूर्तिदानम् .... .... | ” |
| **२१ अमादानाध्यायः ।** | |
| हिरण्यदानम् .... .... .... | १०२ |
| रजतदानम् .... .... .... | ” |
| लवणदानम् .... .... .... | ” |
| अमादीपदानम् ... .... .... | ” |
| नवनीतधेनुदानम् .... .... | ” |
| अर्द्धोदयेदानविशेषः ... .... | १०३ |
| पात्रदानानि ... .... .... | ” |
| तिलपर्वतदानम् .... .... | १०४ |
| **२२ वारादिषु पंचांगेषु दानाध्यायः ।** | |
| ग्रहाणांमणिदानम् .... .... | १०६ |
| नवग्रहद्रव्यदानंसमन्त्रकम् .... | १०७ |
| वारदोषापनोदनायदानान्तराणि .... .... .... | १०८ |
| नक्षत्रदानानि ... .... .... | ” |

| विषयाः | पृष्ठ. |
|---|---|
| योगदानानि .... .... .... | ११० |
| व्यतीपातवैधृतिदानम् .... | १११ |
| अन्यप्रकारेणयोगदानानि .... | ,, |
| करणदानानि... .... .... | ११२ |
| पक्षदानानि .... .... .... | ,, |
| ऋतुदानानि .... .... ... | ,, |
| संवत्सरदानानि .... .... | ११३ |
| यौगिकदानानि .... .... | ,, |
| **२३ षोडश महादानाध्यायः।** | |
| षोडश महादानसंज्ञा .... | ११४ |
| तुलापुरुषदानम् ... ... | ,, |
| कुंडमंडपादि ... ... ... | ११५ |
| तुलावेदिप्रमाणम् ... ... | ,, |
| वेद्यांचक्रालेखनम् .... .... | ११७ |
| घृतादितुलाफलम् ... .... | ११९ |
| नानारोगहरतुलादानम् .... | १२० |
| तुलाद्रव्याधिदेवताः .... | १२१ |
| तुलाकालविशेषाः ... .... | ,, |
| तुलादानविधिः ... .... | ,, |
| एतत्प्रयोगः.... .... .... | १२३ |
| हिरण्यगर्भदानम् .... .... | १२६ |
| ब्रह्मांडदानम्.... .... .... | १२९ |
| कल्पपादपदानम् .... .... | १३१ |
| गोसहस्रदानम् .... .... | ,, |
| गोशतदानम्... .... .... | १३३ |
| हिरण्यकामधेनुदानम् .... | ,, |
| हिरण्याश्वदानम् .... .... | १३४ |
| हिरण्याश्वरथदानम् .... | ,, |
| हिरण्यहस्तिरथदानम् .... | १३५ |
| पंचलांगलदानानि ... .... | १३६ |
| स्वर्णधरादानम् .... .... | १३७ |
| जंबूद्वीपदानम् .... .... | १३८ |
| पांडुरोगहरपृथ्वीदानम .... | ,, |

| विषयाः | पृष्ठ. |
|---|---|
| विश्वचक्रदानम् .... .... | १३९ |
| कल्पलतादानम् .... .... | १४० |
| सप्तसागरदानम् .... .... | १४१ |
| रत्नधेनुदानम् .... .... | १४२ |
| महाभूतघटदानम् .... .... | १४३ |
| **२४ गोदानाध्यायः वा अतिदानाध्यायः।** | |
| स्वरूपतोगोदानम् .... .... | १४४ |
| दानप्रयोग .... .... .... | ,, |
| श्वेतादिवर्णगोदानम् .... | १४६ |
| समानवर्णगोवत्सदानम् .... | ,, |
| कृष्णधेनुदानम् .... .... | ,, |
| हेमशृंगीदानम् .... .... | ,, |
| प्रमेहघ्नस्वर्णधेनुदानम् ... | १४७ |
| अर्शोघ्नस्वर्णधेनुदानम् .... | ,, |
| बंध्यात्वहरस्वर्णधेनुदानम्.... | १४८ |
| नानागोदानमाहात्म्यम् .... | ,, |
| उभयतोमुखीगोदानम् .... | १४९ |
| तत्प्रतिग्रहेप्रायश्चित्तम् ... | १५२ |
| देवतोद्देशेनगोदानम् .... | १५३ |
| देवताभ्योगोदानम्.... .... | ,, |
| ग्रहणीरोगहरगोदानम् .... | ,, |
| असृग्दररोगहरगोदानम् .... | १५४ |
| **२५ दशदानाध्यायः।** | |
| भूमिदानम् .... .... .... | १५४ |
| तिलदानम् .... .... .... | १६५ |
| हिरण्यदानम् .... ... | ,, |
| आज्यदानम् .... .... .... | ,, |
| वस्त्रदानम् .... .... .... | ,, |
| धान्यदानम् .... .... .... | १५६ |
| गुडदानम् .... .... .... | ,, |
| रजतदानम् .... .... .... | ,, |

| विषयाः | पृष्ठ. |
|---|---|
| लवणदानम् .... .... .... | १५७ |
| पंचधेनुदानम् .... .... | ,, |
| ऋणापनोदधेनुदानम् .... | १५७ |
| प्रायश्चित्तधेनुदानम् .... .... | ,, |
| वैतरणीधेनुदानम् .... .... | ,, |
| उत्क्रांतिधेनुदानम् .... .... | ,, |
| महिषीदानम् .... .... | १५९ |
| मेषीदानम् .... .... .... | १६० |
| अजादानम् .... .... .... | १६१ |
| वृषदानम् .... .... .... | ,, |
| मंदाग्निहरमेषदानम् .... | ,, |
| **२६ अतिदानाध्यायः ।** | |
| भूमिदानम् .... .... .... | १६३ |
| तत्प्रयोगः .... .... .... | ,, |
| शिवायभूमिदानम् .... .... | १६४ |
| विष्णवेभूमिदानम् .... .... | ,, |
| सूर्य्यायभूमिदानम् .... .... | ,, |
| अन्यन्महीदानम् .... .... | ,, |
| गृहदानम् .... .... .... | १६५ |
| विद्यादानम् .... .... .... | १६६ |
| वेददानप्रशंसा .... .... | १६७ |
| विद्यादानविधिः .... .... | ,, |
| **२७ दशमहादानाध्यायः ।** | |
| नित्यसुवर्णदानम् .... .... | १६९ |
| पापरोगहरशतमानस्वर्णदानम् .... .... .... | ,, |
| भद्रनिधिदानम् .... .... | ,, |
| अश्वदानविशेषः .... .... | १७१ |
| तिलदानम् .... .... .... | ,, |
| मातृऋणापनोदकंकास्यपात्रतिलदानम् .... .... .... | ,, |
| सर्वपापघ्नतिलराशिदानम् .... | १७२ |
| तिलपद्मदानम् .... .... | ,, |
| तिलपद्मदानम् .... .... | १७३ |
| क्षयरोगहरतिलपद्मदानम् .... | १७४ |
| रक्तशूलघ्नतिलपद्मदानम् .... | ,, |
| कंडूदद्रुहरंतिलपद्मदानम् .... | ,, |
| मूकत्वहरतिलपद्मदानम् .... | १७५ |
| त्रिपद्माख्याश्वपंचकदानम् .... | १७६ |
| तिलारंजकदानम् .... .... | ,, |
| तिलपीठदानम् .... .... | १७७ |
| तिलादर्शदानम् .... .... | ,, |
| तिलकुंभदानम् .... .... | ,, |
| अहंकारदानम् .... .... | १७८ |
| एकादशरुद्रेभ्यःस्तिलदानम् | ,, |
| तिलगर्भदानम् .... .... | १७९ |
| हस्तिदानम् .... .... .... | ,, |
| मुखरोगहरनजदानम् .... | १८० |
| व्रणरोगहरगजदानम् .... | १८१ |
| देवताभ्योगजदानम् .... | ,, |
| दासीदानम् .... .... .... | ,, |
| देवताभ्योदासीदानम् .... | १८२ |
| रथदानम् .... .... .... | ,, |
| वास्तुशांतिः .... .... .... | १८३ |
| गृहदानप्रयोगः .... .... | १८४ |
| मठदानम् .... .... .... | १८६ |
| धर्मशालादानम् .... .... | ,, |
| कन्यादानम् .... .... .... | १८७ |
| कन्यादानप्रयोगः .... .... | ,, |
| स्थानच्युतस्थापनम् .... | १८९ |
| **२८ दशावतारदानाध्यायः ।** | |
| विष्णोर्दशावतारदानम् .... | १९१ |
| मत्स्यस्वरूपदानम् .... .... | ,, |
| वराहस्वरूपदानम् .... .... | ,, |
| नृसिंहस्वरूपदानम् .... .... | ,, |
| वामनस्वरूपदानम् .... | ,, |

| विषयाः | पृष्ठ. |
|---|---|
| परशुरामस्वरूपदानम् .... | ,, |
| रामस्वरूपदानम् .... .... | ,, |
| बलरामस्वरूपदानम् .... | ,, |
| बौद्धस्वरूपदानम् .... .... | ,, |
| कल्किस्वरूपदानम्.... .... | ,, |
| दशमहाविद्यादानम्... .... | १९२ |
| महाविद्यामूर्त्तिस्वरूपाणि .... | ,, |
| **२९ यौगिकपर्वदानाध्यायः।** | |
| भौमचतुर्थ्यांरुद्रमूर्त्तिदानम् | १९३ |
| सर्वरोगहराश्विनीकुमारमूर्त्ति दानम् ... .... ... | १९४ |
| रोगहरत्रिमूर्त्तिदानम् .... | १९४ |
| अपमृत्युहरत्रिपुरुषदानम् .... | १९५ |
| रुद्राष्टकदानम् .... .... | १९६ |
| महापातकहरदक्षिणामूर्त्ति दानम् .... .... .... | १९७ |
| अतिसारहराग्निमूर्त्तिदानम् | ,, |
| आत्मप्रकृतिदानम् .... .... | १९८ |
| अल्पमृत्युहरकंल्पदानम् .... | ,, |
| दिग्दानम् .... .... .... | ,, |
| लोकपालाष्टकदानम् .... .... | १९९ |
| चक्षुरोगहरद्वादशादित्यदानम् | २०० |
| आयुष्यकरदानम् .... .... | २०१ |
| चंद्रसूर्य्यदानम् .... .... | ,, |
| **३० अनंतफलदानाध्यायः।** | |
| आरोग्यदानम् .... .... | २०२ |
| रोगहरदानानि .... .... | २०३ |
| अथ रोगदानानि .... .... | २०४ |
| नवरत्नदानानि .... .... | ,, |
| भगंदररोगहरनवरत्नदानम् | २०५ |
| व्रणघ्नरत्नदानम् .... .... | ,, |
| गलरोगघ्नरत्नदानम् .... | ,, |
| अलंकारदानम् .... .... | २०६ |
| वस्त्रदानम् .... .... .... | ,, |
| एकादशरुद्रवस्त्रदानम् .... | २०७ |
| शोकहरवस्त्रदानम्.... .... | ,, |
| उष्णीषदानम् .... .... | ,, |
| ऊर्णावस्त्रदानम् .... .... | ,, |
| आसनदानम्.... .... .... | ,, |
| आपाकदानम् .... .... | २०८ |
| ताम्रपात्रदानम् .... .... | ,, |
| ताम्रदानम् .... .... | २०९ |
| कांस्यपात्रदानम् .... .... | ,, |
| कांस्यदानम्.... .... .... | ,, |
| लोहपात्रदानम् .... .... | ,, |
| सुवर्णपात्रदानम् .... .... | ,, |
| सपायसस्थालीदानम् .... | ,, |
| अथाभयदानम् .... .... | २१० |
| पांथपरिचर्य्या .... .... | २११ |
| अभ्यंगदानम्.... .... .... | २१२ |
| पादाभ्यंगदानम् .... .... | ,, |
| गोपरिचर्य्या .... .... | ,, |
| पक्वान्नदानम् .... .... | २१५ |
| आमान्नदानम्.... .... .... | २१६ |
| उदकदानम्.... .... .... | ,, |
| **३१ क्रूरदानाध्यायः।** | |
| ग्रहणदानम् .... .... .... | २१७ |
| ग्रहणपीडाद्यांशांतिः .... | ,, |
| भूकंपदानम्.... .... .... | २१८ |
| भद्रादानम् .... .... .... | २१९ |
| कालपुरुषदानम् .... .... | २२२ |
| **३२ सर्वसंपत्करदानाध्यायः।** | |
| सर्वसंपत्करदानम् .... .... | २२३ |
| जलाशयनिर्माणम् .... .... | २२४ |
| वृक्षरोपणंतत्कालश्च .... | २२५ |

| विषयाः | पृष्ठ. |
|---|---|
| वृक्षदानम् .... .... .... | २२६ |
| कदलीदानम्.... .... .... | ” |
| न्यग्रोधदानम् .... .... | २२७ |
| अश्वत्थदानम् .... .... .... | ” |
| विद्रधिरोगघ्नाम्रदानम् .... | ” |
| आरामविधिः.... .... .... | २२८ |
| वृक्षप्रतिष्ठा ..... .... .... | २३० |
| तरुपुत्रदानविधिः .... .... | २३१ |
| **३३ संक्रांतिदानाध्यायः ।** | |
| सक्रांतिषु सौभाग्यदानम् .... | २३२ |
| धनदानम् .... .... .... | ” |
| आज्ञादानम् .... .... .... | १३३ |
| पापदानम् .... .... .... | ” |
| तांबूलदानम्.... .... .... | ” |
| विशोकदानम् .... .... | ” |
| तेजोदानम् .... .... .... | २३४ |
| आयुषेदानम् .... .... | ” |
| कीर्त्यर्थदानम् .... .... .... | ” |
| मनोरथप्रापकदानम् .... | २३५ |
| शीलप्रदंदानम् .... .... | २३५ |
| राजत्वप्रददानम् .... .... | ” |
| **३४ नियमाध्यायः ।** | |
| लक्षवर्त्तिकादानम् .... .... | २३५ |
| गोपद्मदानम्.... .... .... | २३७ |
| चातुर्मास्यनियमाः .... .... | ” |
| वृताकत्यागेविशेषः.... .... | २४० |
| अश्वत्थसेवनम् .... .... | २४१ |
| अश्वत्थाभिमंत्रणम्.... .... | ” |
| सहस्रभोजनविधिः.... .... | ” |
| सर्वस्वदानप्रयोगः .... .... | २४५ |
| **३५ प्रतिग्रहधर्माध्यायः ।** | |
| व्यासोक्तधर्माः .... .... | २४७ |
| प्रतिग्रहप्रायश्चित्तानि .... | २४८ |
| षोडशमहादानप्रायश्चित्तानि | २५१ |
| राजप्रतिग्रहप्रायश्चित्तम् .... | २५२ |
| रहस्यप्रायश्चित्तानि .... .... | २५३ |
| प्रतिपदोक्तप्रायश्चित्तानि .... | २५५ |
| स्मृत्यर्थसारोक्तप्रायश्चित्तानि | ” |


इति दानसंग्रहविषयानुक्रमणिकासमाप्ता ।


पुस्तकमिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीवेंकटेश्वर” छापाखाना, खेतवाड़ी—( मुंबई )

श्रीः ।

# अथ
# दानसंग्रहप्रारम्भः ।

यमाधारादूर्द्धसकलमपिभित्त्वाकुलपथंहसांतंभोजंगीदश शतदलांतःस्थितगुरुम् ॥ समालिंग्यापांगैरमृतरसवृष्टिन्वित नुतेतमीडेपंचाशल्लिपिभिरितितेजोमयतनुम् ॥१॥ सद्दान धर्मनिरतानामनुतुष्टयैमहीधरःसूरिः ॥ तंत्रंपुरोधसांसत्कर्म ण्यानांसुखायटीहर्य्याम् ॥ २ ॥

आलोक्यदानखंडान्दानपरत्वंहिसर्वशास्त्रेषु ॥ तस्मांच्चदानसं ग्रहंपर्वपरत्वंचिनोमिसद्ग्रंथम् ॥ तत्रादौदानसंज्ञा ॥ परस्वत्वो त्पत्यंतोद्रव्यत्यागोदानम् ॥ तथा ॥ अर्थानामुदितेपात्रेश्रद्धया म तिपादनम् ॥ दानमित्यभिनिष्टंसेवापर्य्यायकंनचेत् ॥ तत्तुत्रि विधमुक्तंगीतासु॥ दातव्यमितियद्दानंदीयतेनुपकारिणे॥ देशेकाले चपात्रेचतद्दानंसात्विकंस्मृतम् ॥ १ ॥ यत्तुप्रत्युपकारार्थंफलमुद्दि श्यवापुनः ॥ दीयतेचपरिक्लिष्टंतद्राजसमुदाहृतम् ॥ २ ॥ अदेश कालेयद्दानमपात्रेभ्यश्चदीयते ॥ असत्कृतमवज्ञातंतत्तामसमुदाहृत म् ॥ ३ ॥ गारुडे ॥ अर्हतेयत्सुवर्णादिदानंतत्कायिकंस्मृतम् ॥ आत्तानामभयंदानमित्येतद्वाचिकंस्मृतम् ॥ विद्यामादाययज्ज्ञप्ये त्तद्दानंमानसंद्विजाः ॥ अथ दानपात्रम् ॥ स्वाध्यायीतपसायुक्तः प्रतिग्रहविवर्जितः॥ शूद्रान्नपानकंनाथात्ततत्पात्रंश्रेष्ठमुच्यते॥ प्रथमं

१ डीहरीतिग्रामनाम ।

दानमाचार्य्येदत्वाश्रेष्ठमनुक्रमात् ॥ ततोन्येषांचविप्राणांदद्यात्पा त्रानुसारतः ॥ सन्निधावस्थितान्विप्रान्दौहित्रंविट्पतिन्तथा ॥ भागिनेयंविशेषेणतथाबंधून्गृहागतान् ॥ नातिक्रामेन्नरस्त्वेतान्सु मूर्खानपिभावतः ॥ अतिक्रम्यमहारौद्ररौरवंनरकंव्रजेत् ॥ समम ब्राह्मणेदानंद्विगुणंब्राह्मणब्रुवे ॥ सहस्रगुणमाचार्य्येत्वनंतंवेदपारगे॥ एतेषांलक्षणानि ॥ ब्रह्मबीजसमुत्पन्नोमंत्रसंस्कारवर्जितः ॥ जातिमात्रोपजीवीचभवेदब्राह्मणःसतु ॥ गर्भाधानादिभिर्युक्तस्त थोपनयनेनच ॥ नकर्मविन्नचाधीतःसभवेद्ब्राह्मणब्रुवः ॥ नाना विधानिकर्माणिकर्त्ताकारयिताचयः ॥ सर्वधर्मविधिज्ञश्चसवैआचा र्य्यउच्यते ॥ वेदवेदांगशास्त्राणांपारगःसमदर्शनः ॥ दंभलोभादिर हितःसज्ञेयोवेदपारगः ॥ अथ द्रव्यविभागः ॥ स्वस्यत्रिभागं वित्तस्यजीवनायप्रकल्पयेत् ॥ भागद्वयंतुधर्मार्थमनित्यंजीवितं यतः ॥ अथाग्राह्यदानानि ॥ अजिनंमृतशय्यांचमेषींचोभयतो मुखीम् ॥ कुरुक्षेत्रेचगृह्णानोनभूयःपुरुषोभवेत् ॥ मनुः ॥ हिरण्यं भूमिमश्वंगामन्नंवासस्तिलान्घृतम् ॥ अविद्वान्प्रतिगृह्णानोभस्मीभ वतिकाष्ठवत् ॥ अविद्वान्विद्यातपोभ्यांहीनः ॥ अथदान कालः ॥ दर्शेशतगुणंदानंवद्दशग्रंदिनक्षये ॥ शतघ्नंतच्चसंक्रांतौ शतघ्नंविषुवेततः ॥ युगादौतच्छतगुणमयनेतच्छताहतम् ॥ सोमग्रहे सऋछतघ्नंतच्छतघ्नंरवेर्ग्रहे ॥ तच्छतघ्नंव्यतीपातेदानंवेदविदोविदुः ॥ वैशाखीकार्तिकीमाघीपौर्णिमातुमहाफला ॥ पौर्णमासीषुसर्वासु मान्नर्क्षसहितासुच ॥ दत्तानामिहदानानांफलंशतगुणंभवेत् ॥ ग्रह णोद्वाहसंक्रांतियात्रार्तिप्रसवेषुच ॥ दानंनैमित्तिकंज्ञेयंराज्ञावापिनदु

ष्यति ॥ अथ पुण्यदेशः ॥ दृषद्वंतीसरस्वत्योर्देवनद्योर्यदंतरम् ॥ तंदेवनिर्मितंदेशंब्रह्मावर्त्तंप्रचक्षते ॥ पुण्यदेशेषुसर्वेषुगृहेदेवालयादिषु ॥ यत्रसाधनसंपत्तिस्तत्रदानंमहाफलम् ॥ सर्वोत्तमंगृहेदानंविधिनायत्प्रदीयते ॥ तीर्थेदेवालयेयज्ञेदानमात्रविधिःस्मृतः ॥ वाराणसीकुरुक्षेत्रंप्रयागंपुष्करंतथा ॥ गोकर्णंनैमिषारण्यंसेतुंश्रीपर्वतंतथा ॥ महाकालंतथागंगामेतान्पुण्यतमान्विदुः ॥ लिंगंवाप्रतिमावापिदृश्यतेयत्रकुत्रचित् ॥ तत्सर्वंपुण्यतांयातिदानेषुचमहाफलम् ॥ ॥ अथ तीर्थप्रतिग्रहनिषेधः ॥ नतीर्थेप्रतिगृह्णीयात्प्राणैःकंठगतैरपि ॥ तीर्थेतीरक्षेत्रेच ॥ अथ तीरक्षेत्रप्रमाणम् ॥ गंगागोदावरीकृष्णातीरमाहुर्महर्षयः ॥ उत्तरेनवगव्यूतिर्दक्षिणेयोजनत्रयम् तीराद्व्यूतिमात्रंतुपरितः क्षेत्रमुच्यते ॥ प्रवाहमवधिंकृत्वायावद्धस्तचतुष्टयम् ॥ तत्रनप्रतिगृह्णीयात्प्राणैःकंठगतैरपि ॥ प्रवाहोगर्भः ॥ अत्यंतापदितीरेपिनदोषः ॥ अथचेत्प्रतिगृह्णीयाद्ब्राह्मणोवृत्तिकर्शितः ॥ दशांशमर्जितंदद्यादेवंधर्म्मोनहीयते ॥ अथ दानकृत्यम् ॥ स्नातःसम्यगाचांतःकृतसंध्यादिकक्रियः ॥ कामक्रोधविहीनश्चपाखंडस्पर्शवर्जितः ॥ दद्यादितिशेषः ॥ तथा ॥ कुशोपरिनिविष्टेनतथायज्ञोपवीतिना ॥ देयंप्रतिगृहीतव्यमन्यथाविफलंभवेत् ॥ अंबुर्जातुकरंकृत्वासकुशंसतिलोदकम् ॥ फलान्यपिचसंधायप्रदद्याच्छ्रद्धयान्वितः ॥ नामगोत्रेसमुच्चार्य्यप्राङ्मुखोदेवकीर्त्तनात् ॥ उदङ्मुखायविप्रायदत्वातंस्वस्तिकीर्तयेत् ॥ अथ प्रतिगृहीतृकृत्यम् ॥ ॐकारमुच्चरन्प्राज्ञोद्रविणंसकुशोदकम् ॥ गृह्णीयाद्दक्षिणेहस्तेनदंतैस्वस्तिकीर्त्तयेत् ॥ प्रतिगृहीतासावित्रंसर्वत्रैवानु

कीर्त्तयेत् ॥ सावित्रंदेवस्यत्वेतिशाखाभेदेन ॥ कइदंकस्माअदादित्यादि च॥तच्चेत्थम्॥ओंकारंब्राह्मणेकुर्य्यान्निरोकारंमहीपतौ॥ उपांशुचतथावैश्येमनसाशूद्रजेतथा ॥ तत्रदोषो यथा ॥ प्रतिग्रहस्यधर्मंचनजानातिद्विजोविधिम् ॥ द्रव्यस्तैन्यसमायुक्तोनरकंप्रतिपद्यते ॥अथ माहात्म्यम्॥विधिधर्मंचविज्ञायब्राह्मणस्तुप्रतिग्रहे॥ दात्रासहतरत्येवमहादुर्गाण्यसौध्रुवम्॥ अथ द्रव्यमानम्॥जालम्यूर्य्यमरीचिस्थंत्रसरेणुस्ततस्स्मृतम् ॥ तेष्टौलिक्षातुतास्तिस्रोराजसर्षपउच्यते ॥ गौरस्तुतेत्रयःषट्तेयवोमध्यश्चतेत्रयः ॥ कृष्णलुः पंचतेमाषास्तेसुवर्णास्तुषोडश ॥ पलंसुवर्णाश्चत्वारःपंचवापारिकीर्त्तितम् ॥ द्वेकृष्णलेरूप्यमाषोधरणंषोडशैवते ॥ शतमानंतुदशभिर्धरणैःपलमेवतत् ॥ निष्कंसुवर्णाश्चत्वारः ॥ इतिहेमाद्रिः ॥ अथ धान्यमानम् ॥ पलद्वयंतुप्रसृतिःकुडवोद्विगुणंमतम् ॥ चतुर्भिःकुडवैःप्रस्थःप्रस्थाश्चत्वारआढकः ॥ आढकैस्तैश्चतुर्भिश्च द्रोणस्तुकथितोबुधैः ॥ द्रोणैःषोडशभिःखारीविंशत्याकुंभउच्यते॥ कुंभैस्तैर्दशभिर्वाहोधान्यमानंप्रकीर्तितम् ॥ अथ दाने दक्षिणाप्रमाणम् ॥ सुवर्णंपरमंदानंसुवर्णंदक्षिणापरा ॥ सर्वेषामेवदानानां सुवर्णंदक्षिणेष्यते॥ अदक्षिणंतुयद्दानंतत्सर्वंनिष्फलंभवेत्॥पुरुषाहारोपयिकतंडुलादिकमपिदक्षिणेतिहेमाद्रिः ॥ तथा॥देयद्रव्यतृतीयांशंदक्षिणांपरिकल्पयेत् ॥ अनुक्तदक्षिणेदानेदशांशंवापिशक्तितः॥ सर्वेषामेवदानानांदानेषुविधिरुत्तमः ॥ मध्यमस्तुतदर्धेनतदर्धेनाधमस्स्मृतः॥ मेष्यांचकालपुरुषेतथान्येषुसहस्रुच ॥ एवंवृक्षेरसेजेचधेनौकन्यातिलेयच॥अशक्तस्यापिहोमेयंपंचसौवर्णिकोविधिः ॥

अथदक्षिणाविभागः॥अष्टषष्टिपलोन्मानमाचार्य्यायैवदक्षिणा। हो तॄणांचैवसर्वेषांतदर्द्धंसंप्रचक्षते ॥ तदर्द्धंजापकानांचद्वारपालास्तदर्द्धतः अष्टषष्टिरित्युपलक्षणम् ॥ अथद्रव्यदेवताः॥अभयंसर्वदैवत्यंभूमेर्वै विष्णुदेवता॥कन्यादासस्तथादासीप्राजापत्याःप्रकीर्त्तिताः ॥ प्राजापत्योगजःप्रोक्तस्तुरगस्सूर्यदैवतम् ॥ तथाचैकशफंसर्वंकथितंयम दैवतम्॥महिषश्चतथायाम्यउष्ट्रोवैनैर्ऋतस्स्मृतः॥रौद्रीधेनुर्विनिर्दिष्टा छागमाग्नेयमादिशेत् ॥ मेषंतुवारुणंविद्याद्वारार्हंवैष्णवंतथा ॥ आरण्याःपशवःसर्वेकथितावायुदेवताः ॥ जलाशयानिसर्वाणिसमु द्राश्चकमंडलुः ॥ कुंभश्चकरकश्चैववारुणानिभवंतिहि ॥ समुद्रजा निरत्नानिवारुणानिप्रचक्षते ॥ आग्नेयंकनकंप्रोक्तंसर्वलोहानिचा प्यथ ॥ प्राजापत्यानिसस्यानिपक्वान्नानिचयानिवै ॥ विज्ञेयास्सर्वगं धाश्चगांधर्वावैविचक्षणैः॥विद्याब्राह्मीविनिर्दिष्टाविद्योपकरणानिच॥ सारस्वतानिज्ञेयानिपुस्तकादीनिपंडितैः ॥सर्वेषांशिल्पभांडानांविश्वं कर्माहिदेवता॥द्रुमाणामथपुष्पाणांशाकैर्हारितकैस्तथा ॥फलानाम थसर्वेषांतथाज्ञेयोवनस्पतिः॥मत्स्यमांसंविनिर्दिष्टंप्राजापत्यंतथैवच। छत्रंकृष्णाजिनंशय्यांस्थमासनमेवच॥उपानद्यौतथापात्रंयच्चान्यत्प्रा णवर्जितम् ॥ सर्वं चांगिरसत्वेनप्रतिगृह्णीतमानवः ॥ शूरोपयोगिय त्सर्वंशस्त्रचर्मध्वजादिकम् ॥ नृपोपकरणंसर्वंविज्ञेयंसर्वदैवतम्॥गृहं तुशक्रदैवत्यंयद्यत्तदनुवस्तुषु॥विज्ञेयंविष्णुदैवत्यंसर्वदाविधिवेदिभिः अथप्रतिग्रहस्थानानि॥प्रतिगृह्णीतगांपुच्छेकर्णेवाहस्तिनांकरे ॥ मूर्द्धिदासीमजंचैवपृष्ठेऽश्वतरगर्दभौ ॥ अश्वंकर्णैकटायांवादानमुद्दि श्यधारयेत् ॥ शय्यासनंगृहंक्षेत्रंसंस्पृश्यादायकांचनम् ॥ उष्ट्रं

चककुदिस्पृष्ट्वामृगांश्चमाहिषादिकान् ॥ गोधामश्वविधानेनपक्षेसं स्पृश्यपक्षिणः ॥ छत्रंदंडेतरून्मूलेफलंसंगृह्यगौरवात् ॥ प्रगृह्यो पानहौपत्रंवासयेत्प्रतिमुच्यवै ॥ पुत्रमुत्संगमारोप्यप्रतिगृह्णीतदत्तकम् रथंरथमुखेस्पृष्ट्वाप्रतिगृह्णीतकूबरे ॥ कूबरोयुगाधारकाष्ठम् ॥ तथा चहेमाद्रौ॥भूमेः प्रतिग्रहंकुर्य्याद्भूमिंकृत्वाप्रदक्षिणम् ॥ करेगृ हीत्वाकन्यांतुदासदास्यैद्विजोत्तमैः ॥ आरुह्यचगजस्योक्तःकर्णे चाश्वस्यकीर्त्तितः॥ तथाचैकशफानांतुसर्वेषांचविशेषतः ॥ प्रति गृह्णीतशृंगेजांपुच्छेकृष्णाजिनंतथा ॥ एकशफाःशृंगिणस्तेषांशृंगे एव ॥ कर्णेचपशवःसर्वेग्राह्याःपुच्छेविचक्षणैः॥ गृह्णीयान्महिषंशृंगे खंड्गं वैपृष्ठदेशतः॥ प्रतिग्रहमथोष्ट्रस्ययानानांचाधिरोहणात् ॥ वीजा नांमुष्टिमादायरत्नान्याद्यायसर्वशः ॥ वस्त्रंदशांतादादद्यात्परिधाया पिवापुनः ॥ आरुह्योपानहौमंचमारुह्यैवचपादुके ॥ धर्मध्वजौ तुसंस्पृश्यगृह्णीयाद्दानवेदिभिः ॥ अवतीर्य्यचसर्वाणिजलस्थाना निषानिच ॥ आयुधानिसमादायतथामुच्यविभूषणम् ॥ आमुच्य बद्धेत्यर्थः ॥ गांपुच्छेरथंइषायांवृक्षंमूलेशय्यासनक्षेत्राणिसंस्पृश्य पुत्रंदत्तकमुत्संगमारोप्य ॥ युग्यकांचनवस्त्राणांनांगयुक्तेप्रतिग्रहः ॥ प्रगृह्योपानहौमंचवासयेत्प्रतिमुच्यवै ॥ मृगाणांछागवत् ॥ गो वाश्वविधानेनपुच्छेसंस्पृश्यपक्षिणः ॥ छत्रंदंडे दासस्त्वादाय ॥ द्रव्याणां मथसर्वेषांदेवसंश्रयणाज्जरः ॥ वाचयेज्जलमादायकरेणा श्रप्रतिग्रहम् ॥ दातुर्मंत्रप्रयोगांतेह्यमुकस्मैसुरायवै ॥ इदमोंप्रति गृह्णामितदंतेस्वस्तिकीर्त्तयेत् ॥ प्रतिगृह्यद्विजाश्रेष्ठास्तथैवांतर्भवं

तिते ॥ प्रतिग्रहस्ययोधर्म्यंनजानातिद्विजोविधिम् ॥ द्रव्यस्तैन्य संयायुक्तोनरकंप्रतिपद्यते ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेदानसंज्ञामानादिकथनंनाम प्रथमःकोशः ॥ १ ॥

## अथदानफलानि ॥ तत्रादौसामवेदोपनिषद्वाक्यम् ॥

दानेनसर्वान्कामानवाप्नोतिचिरजीवित्वं ब्रह्मचारीरूपवानहिं रण्यउपपद्यते स्वर्गंपर्णाशनात् दिविचरः पयोभक्ष्यस्थानवीरासनो द्वित्तवान् पितृमातृगुरुशुश्रूषाध्यानवान्स्वर्गीयःकांचनदानेनेति ॥ तथा ऋग्वेदे ॥ उच्चादिविदक्षिणावंतोअस्थुर्येअश्वदाः सहतेसूर्य्येण ॥ हिरण्यदाअमृतत्वंभजंते वासोदाः सोमप्रतिरंतआयुरिति ॥ तथा चहारितः ॥ आपोददंतृषमभिजयत्यात्मावंचनिष्क्रीणाति । अन्नदसनादसूनिष्क्रीणाति । अन्नवानन्नादोऽन्नपतिश्चभवति ॥ वस्त्रदानाद्वचोनिष्क्रीणातिसुरूपोऽनघोवस्त्रभाग्भवति ॥ हिरण्यप्रदानात्तेजोनिष्क्रीणाति ॥ सुवाग्विपाप्मागोभाक्चभवति ॥ अनड्वत्प्रदानात्प्राणान्निष्क्रीणात्यरोगोबलवान् ॥ धुर्य्यभाक्चभवति।रथप्रदानाच्छरीरंनिष्क्रीणाति ॥ भृत्यविविधविमानभाग्भवति ॥ शय्याप्रदानात्सुखंनिष्क्रीणाति ॥ पानशयनासनविविधसुखश्रीभाग्भगति॥अपरिमितप्रदानादपरिमिततोषंपुष्णाति ॥ अपरिमितान्कामानवाप्नोति ॥ विष्णुः ॥ तैजसानांपात्राणांप्रदानेनपात्रीभवतिकामानाम् । मधुघृततैलदानेनारोग्यम् औषधप्रदानेनच । लवणप्रदानेनलावण्यम् ॥ धान्यप्रदानेनतुष्टिः ॥ रजतस्यदानेनच तथा॥इंधनप्रदानेनदीप्ताग्निर्भवति संग्रामेसज्जयमाप्नोति ॥ आसनदा

नेनस्थानम् ॥ शय्यादानेनभार्य्याम् ॥ उपानत्प्रदानेनाश्वयुतं रथम् ॥ क्षेत्रप्रदानेनस्वर्गम् ॥ तालवृंतचामरप्रदानेनादुःखित्वम् । पुष्पप्रदानेनज्यायानुभवति ॥ अनुलेपनप्रदानेनकीर्त्तिमानुभवति॥ तथा चस्मृतिः॥वारिदस्तृप्तिमामोतिसुखमक्षय्यमन्नदः॥तिलप्रदः प्रजामिष्टांदीपदश्चक्षुरुत्तमम् ॥ भूमिदःसर्वमामोतिदीर्घमायुर्हिरण्यदः। गृहदोग्र्याणिवेश्मानिरूप्यदोरूपमुत्तमम् ॥ वासोदश्चंद्रसालोक्यमश्वि सालोक्यमश्वदः॥ अनड्वुद्दःश्रियंपुष्टांगोदोब्रध्नस्यविष्टपम् ॥ यानश य्याप्रदोभार्य्यामैश्वर्यमभयप्रदः॥ धान्यदःशाश्वतंसौख्यंब्रह्मदोब्रह्मसा र्ष्टिताम्॥ब्रह्मसार्ष्टितांब्रह्मसमानगतित्वंतथा ।भूदीपाश्चान्नवस्त्रांभस्ति लसर्पिःप्रतिश्रयान्॥नैवेशिकःस्वर्णधुर्य्यान्दत्वास्वर्गेमहीयते॥गृहधा न्याभयोपानच्छत्रमाल्यानुलेपनम् ॥ मानंबुसींन्द्रियंशय्यांदत्वात्यंतं सुखीभवेत्॥प्रतिश्रयःप्रवासिनामाश्रयः ॥ नैवेशिकंविवाहप्रयोजकं द्रव्यम् ॥ तथा॥ श्रांतसंवाहनंरोगिपरिचर्य्यासुरार्चनम्॥पादशौचंद्वि जोच्छिष्टमार्जनंगोप्रदासमम् ॥ तथा॥ दत्वाप्रतिश्रयंलोकेतथादत्वैव चाभयम्॥तथादत्वाक्षितिंविप्रेब्रह्मलोकेमहीयते॥छत्रदोगृहमामोति गृहदोनगरंतथा॥तथोपानत्प्रदानेनरथमामोत्यनुत्तमं॥इंधनानांप्रदाने नदीप्ताग्निर्भुविजायते॥गवांग्रासप्रदानेनसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥रुक्मदःस र्वमामोतिरूप्यदोरूपमुत्तमम् ॥ वासोदश्चंद्रसालोक्यंसूर्य्यसालोक्यम श्वदः॥राजोपकरणंदत्वारत्नानिविविधानिच ॥ गेयोपस्करकंचैवशि ल्प्युपस्करकंतथा ॥ शस्त्राणिविविधानीहद्रव्यंसौख्यकरंतथा॥नगरं चतथादत्वाराजाभवतिभूतले ॥तथा॥ गवांकंडूयनादभिवंदनाच्चाभि क्षादिभिरतिथिपूजनाद्गोदानसमंफलम् ॥ यस्तुसंभृत्यसंभारंविवाहेषु

मखेषुच॥दद्यात्पुण्यकृतांलोकानस्यवक्तुंनशक्यते ॥ फलमूलपान शाकमानदानान्मुदायुक्तोभवति।मृत्तिकांगोमयंदर्भान्उपवीतमुत्तरा पोशनंमुखवासंदंतधावनंयोदद्यात्सविप्रकुलेसुभगोवाग्मीसुखीचभ वति ॥ दुर्भिक्षेन्नंसुभिक्षेहिरण्यमरण्येपानीयंदत्वाब्रह्मलोकेमही यते ॥ श्रांतायान्नदःरोगिप्रतिक्रियःस्वर्गंविमानेनाधिरोहति ॥ चंद नशंखमौक्तिकदानात्पितॄंस्तारयति ॥दासीदासालंकारदानात्स्वर्गंप्रा प्नोति ॥ रसदानात्कामानवाप्नोति ॥ तथा ॥ धर्मशास्त्रप्रदातारःस त्रदानरताश्चये ॥ तीर्थेतडागंकूपादिनौकासेतुप्रदाश्चये ॥ स्कंधेनता रयेद्यस्तृतृषार्त्तानांजलप्रदः ॥ पक्वान्ददातिकेदारान्सफलांश्चैवपाद पान् ॥ षष्टिकोटिसहस्राणिचार्बुदानांचवैत्रयम् ॥ क्रीडंतितेस्वर्गपुरे ज्ञानविद्याप्रदाश्चये ॥ तथापयस्विनीगौमहिषीकृष्णाजिनमेषीदशधे नुवृषभमणितुलादानात्कदाचिदपिभैरवःपंथानभवति ॥ रथदानात्रि दिवंतालवृंतचामरातपत्रपादुकापादपीठदंडदानेनशोभनागतिः ॥ यज्ञोपवीतमालासंध्योपकरणदानेनब्रह्मवर्चस्यम् ॥समुद्रजानांशंखा दिभद्राणांद्रव्याणांचदानेनयशस्वीभवतिसमृद्धश्च ॥शिविकादानाद ग्निष्टोमफलं॥नृवाह्यदानादश्वमेधफलम् ॥दासीदानाद्वसुलोकं ॥गर्दभो ष्ट्रदानेकुबेरलोकम् ॥तुरंगमदानेनस्वर्गम् ॥श्वेतस्यदशगुणम् ॥चतुस्तु रंगमसहितरथदानेराजसूयफलम् ॥ करिदानात्करिणीदानाच्चस्वर्गा त्प्रच्युतोराजाभवति।चतुःकुंजररथदानेनपृथ्वीदानफलम्।कपिलादा नेनसर्वयज्ञफलम्॥अजादानेनाग्निलोकम् ॥महिषदानेनयमलोकनि वासः॥आरण्यपशुदानेनवायुलोकम्॥लोकेश्रेष्ठतमंसर्वमात्मनश्चापि यत्प्रियम् ॥ दातव्यंतत्पितृभ्योवैतेभ्यएवाक्षयार्थिना ॥ कूपा

रामतडागानिक्षेत्रयोषागृहाणिच ॥ दत्वातुमोदतेस्वर्गेनित्यमाचंद्रता रकम् ॥ कौशेयक्षौममार्गंचदुकूलमहतंतथा ॥ पक्वान्नानिकरंभंच मिष्टान्नघृतशर्कराः ॥ कृसरामधुपर्कंचपयःपायसमेवच ॥ स्निग्धमु ष्णंचयोदद्याज्ज्योतिष्टोमफलंलभेत् ॥ अपाकरणाद्दारिद्र्यस्यदारिद्र्य हरणाद्भीतस्यत्राणाद्बद्धस्यमोचनाद्रोगशमनात्स्वर्गंभवति ॥ यस्तु सर्वाणिदानानिब्राह्मणेभ्यैःप्रयच्छति ॥ सप्राप्यननिवर्त्तेतदेवंशांतम नामयम् ॥ किंस्वित्स्वकैःपूजनैर्ब्राह्मणानांलोकंगत्वाब्राह्मणंसत्यसं ज्ञम् ॥ दैवैर्विप्रैःपूज्यमानःसुखीस्यात्तस्माद्देयंप्रार्थितंब्राह्मणेभ्यः ॥ इतिसामान्यतयोक्तानि दानफलानि पूर्वसूरिमतानि ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेसामान्यतोदानमाहात्म्यकथ
नंनामद्वितीयःकोशः ॥ २ ॥

## अथदानकालेप्रसंगेन पुण्यतिथ्यादयउच्यंते ॥

तिथीनांप्रवरायस्माद्ब्रह्मणासमुदाहृता ॥ प्रत्यपादिपदेपूर्वंप्रतिपत्ते नचोच्यते ॥ स्नानंदानंशतगुणंकार्तिकेयातिथिर्भवेत् ॥ आश्वि नेमासिसंप्राप्तेद्वितीयोभयपक्षजा । दानंप्रदत्तंयत्तस्यामनंतफलमुच्य ते ॥ वैशाखमासेयापुण्यातृतीयाशुक्लपक्षजा ॥ अनंतफलदादातुः स्नानदानादिकर्मसु ॥ शिवाशांतासुखाचैवचतुर्थीत्रिविधास्मृता ॥ भाद्रपदेशुक्लाशिवलोकेषुपूजिता ॥ तस्यांस्नानंतथादानमुप वासोजपस्तथा ॥ भवेत्सहस्रगुणितंप्रसादाद्देवितस्तदा ॥ माघमा सितथाशुक्लायाचतुर्थीसुपुण्यदा ॥ साशांताशांतिदानित्यंशांतिंकु र्य्यात्सदैवहि ॥ स्नानदानादिकंसर्वमस्यामक्षय्यमुच्यते ॥ मार्गशीर्षस्य शुक्लायाश्रावणेयाचपंचमी ॥ स्नानदानेबहुबलानागलोकमदायि

नी ॥ भाद्रेषष्ट्यांचयदानंतदक्षयकरंभवेत् ॥ शुक्लपक्षेचसप्तम्यां सूर्य्यवारोभवेद्यदि ॥ सप्तमीविजयानामतत्रदत्तंमहाफलम् ॥ शुक्लपक्षेचसप्तम्यांनक्षत्रंपंचतारकम् ॥ यदाचस्यात्तदाज्ञेयाजयानामेति सप्तमी ॥ स्नानदानादिकंतस्यांभवेच्छतगुणंसदा ॥ रोहिण्याश्लेषाहस्ताःपंचतारकाः ॥ यामार्गशीर्षमासस्यशुक्लपक्षेतुसप्तमी ॥ नंदासाकथितापूर्वैःसर्वानंदकरीस्मृता ॥ स्नानदानादिकंसर्वमस्यामक्षय्यमुच्यते ॥ रेवतीयत्रसप्तम्यामादित्यदिवसेभवेत् ॥ तद्दानंशतसाहस्रमितिप्राहदिवाकरः ॥ पौषेमासियदाशुक्लेपक्षेष्टम्यांबुधोभवेत् ॥ तदातुसामहापुण्यामहारुद्रेतिपुण्यदा ॥ अष्टकासुचयद्दत्तंतदनंतमुदाहृतम् ॥ हेमंतशिशिरयोश्चतुर्णामपरपक्षाणामष्टमीष्वष्टका ॥ द्वादशपौर्णमासीद्वादशामावास्यासुचेति ।आश्विनस्यचमासस्य, नवमीशुक्लपक्षजा ॥ जायतेकोटिगुणितंदानंतस्यांसदाभुवि ॥ ज्येष्ठस्यशुक्लदशमीसंवत्सरमुखीस्मृता ॥ तस्यांस्नानंप्रकुर्वीतदानंचैव विशेषतः ॥ एकादश्यांसितेपक्षेपुष्यर्क्षंयत्रसत्तमम् ॥ तिथिर्भवति सात्रोक्ताविष्णुनापापनाशिनी ॥ दानंयद्दीयतेतस्यामक्षय्यंकथितं फलम् । मासिभाद्रपदेशुक्लाद्वादशीश्रवणान्विता ॥ महतीद्वादशीज्ञेया दानेलक्षगुणास्मृता ॥ भाग्यर्क्षसंयुताचैत्रेद्वादशीस्यान्महाफला ॥ हस्तयुक्तातुवैशाखेज्येष्ठेतुस्वातिसंयुता ॥ ज्येष्ठायांतुतथाषाढेमूलोपेताचवैष्णवे ॥ वैष्णवेश्रावणेमासीति ॥ तथाभाद्रपदेमासिश्रवणेनतुसंयुता ॥ आश्विनेद्वादशीपुण्याभवत्याजर्क्षसंयुता ॥ कार्तिकेरेवतीयुक्तासौम्येकृत्तिकयातथा ॥ फाल्गुनेपुष्यसहिताद्वादशीपावनीपरा ॥ नक्षत्रयुक्तास्वेतासुस्नानंदानमुपोषितम् ॥ सकृत्कृतंमनुष्याणाम

क्षय्यफलदायकम् ॥ यस्तुचैत्रत्रयोदश्यांस्नानंदानंसमाचरेत् ॥ फलं शतगुणंतस्यकर्मणोलभतेनरः ॥ कृष्णपक्षेत्रयोदश्यांमघास्त्विदुःकरेरविः ॥ यंदातदागजच्छायाश्राद्धेपुण्यैरवाप्यते ॥ चैत्रेचतुर्दशीशुक्लाश्रवणेप्रोष्टपादयोः ॥ माघस्ययाकृष्णपक्षेदानेबहुफलाहिसा ॥ वैशाखीकार्त्तिकीमाघीपौर्णिमातुमहांफला ॥ पौर्णमासीषुसर्वासुमासर्क्षसहितासुच ॥ स्नानानामिहदानानांफलंदशगुणंस्मृतम् ॥ यस्यां पूर्णेंदुनायोगंयातिजीवोमहाबलः ॥ पौर्णमासीतुसाज्ञेयामहापूर्व्वा द्विजोत्तमैः ॥ स्नानंदानंतथाजाप्यमक्षय्यंतत्तदास्मृतम् ॥ आग्नेयंतुयदाकृक्षंकार्त्तिक्यांभवतिक्वचित् ॥ महतीसातिथिर्ज्ञेयास्नानदानेषुचोत्तमा ॥ ब्रह्मर्क्षसामहापुण्यादेवानामपिदुर्लभा ॥ अमावैसोमवारेणरविवारेणसप्तमी ॥ चतुर्थीभौमवारेणविषुवत्सदृशंफलम् ॥ तथाबुधाष्टमीज्ञेयासूर्य्यग्रहसमंफलम् ॥ तथा ॥ अमासोमेतथाभौमेसूर्य्येसूर्य्याबुधाष्टमी ॥ अंगारकेचतुर्थीचतथैवचचतुर्दशी ॥ सूर्य्यग्रहसहस्राणांपुण्यंदानेसमंस्मृतम् ॥ अमावास्यायदामैत्रविशाखाऋक्षयोगिनी ॥ श्राद्धेपितृगणस्तृप्तिंतदामोत्यष्टवार्षिकीम् ॥ तथार्द्रादित्रयेपुण्याचामातृप्तिंप्रयच्छति ॥ वासव्यजैकपादर्क्षेपितृणांतृप्तिमिच्छता ॥ वारुणेवायुदैवत्येदेवानामपिदुर्लभा ॥ माघासितेपंचदशीकदाचिदुपैतियोगंयदिवारुणेन ॥ ऋक्षेणकालःसपरःप्रदानेनह्यल्पपुण्यैर्मनुजालभंते ॥ अथ युगादि प्रभृत्यः ॥ नवम्यांशुक्लपक्षस्यकार्त्तिकेनिरगात्कृतम् ॥ त्रेतासितृतीयायांवैशाखेसमपद्यत ॥ दर्शेतुमाघमासस्यप्रवृत्तंद्वापरंयुगं ॥ कलिःकृष्णत्रयोदश्यांनभस्येमासिनिर्गतः ॥ युगादयःस्मृताह्येतेदत्तस्याक्षयकार

काः ॥ सूर्यस्यसिंहसंक्रांत्यामंतःकृतयुगस्यतु ॥ तथावृश्चिकसंक्रां त्यामन्तःकृतयुगस्यच ॥ ज्ञेयस्तुवृषसंक्रांत्यांद्वापरांतस्तुसंख्यया॥ तथाचकुंभसंक्रांत्यामंतःकलियुगस्यच ॥ दानानितुयुगांतेषुयुगांतफ लसाक्षिणः॥अश्वयुक्शुक्लनवमीद्वादशीकार्तिकस्यतु ॥ चैत्रस्यतुतृ तीयायातथाभाद्रपदस्यतु ॥ फाल्गुनस्यत्वमावास्यापौषस्यैकादशी तथा ॥ श्रावणस्याष्टमीकृष्णातथाषाढस्यपौर्णिमा ॥ आषाढमासे दशमीमाघमासस्यसप्तमी ॥ कार्त्तिकीफाल्गुनीचैत्रीज्येष्टेपंचदशी तथा ॥ मन्वंतरादयश्चैतादत्तस्याक्षयकारकाः ॥ दर्शेशतगुणंदा नंतच्छतघ्नंदिनक्षये ॥ शतघ्नंसूर्य्यसंक्रांतौशतघ्नंविषुवेततः ॥ युगा दौतच्छतगुणमयनेतच्छताहतम् ॥ सोमग्रहेतच्छतघ्नंतच्छतघ्नंरवि ग्रहे॥असंख्येयंव्यतीपातेदानंवेदविदोविदुः॥अथव्यतीपातवैधृति योगौ ॥ पंचाननस्थोगुरुभूमिपुत्रौमेषेरविःस्याद्यदिशुक्लपक्षे ॥ पाशाभिधानाकरभेणयुक्तातिथिर्व्यतीपातइतीहयोगः ॥अस्मिन्हि गोभूमिहिरण्यवस्त्रदानेनसर्वंपरिहायपापम् ॥ शूरत्वमिंद्रत्वमना मयत्वं॥मन्वाधिपत्यंलभतेमनुष्यः ॥ तथा ॥ क्रांतिसाम्यसमयः समीरितःसूर्य्यपर्वसदृशोमुनीश्वरैः ॥ तत्रदत्तहुतजप्तपूजनंकोटिको टिगुणमाहभार्गवः ॥ अथअर्थः ॥ सूर्य्याचंद्रमसोः क्रांतिसाम्ये पुण्यकालद्वयंसंभवति॥एकःव्यतीपाताख्यः ॥ अपरोवैधृत्याख्यः॥ तत्रसंक्रांतिसाम्यलक्षणस्यव्यतीपातस्य गंडोत्तरार्द्धादारभ्यक्रम शः सार्द्धेषुपंचसुयोगेषुसंभवोस्ति ॥ वैधृतोचव्यतीपातेदत्तमक्ष य्यमुद्भवेत् ॥ इतितुसूक्ष्मव्यतीपातवैधृत्यौ । स्थूलौतुसप्तविंशति योगेषुप्रसिद्धौ ॥ अथोपरागकालः ॥ चंद्रस्ययदिवाभानोराहु

णासहसंगमः ॥ उपरागइतिख्यातःस्तत्रानंतफलंस्मृतम् ।। इंदोर्दशगुणंपुण्यंतद्दशघ्नंरवेर्दिने ॥ रविवारेरवेश्रासःसोमेसोमग्रहस्तथा ॥ चूडामणिरितिख्यातस्तत्रानंतफलंस्मृतम् ॥ अथ प्रकीर्णकालाः अमावास्याव्यतीपातोग्रहणंचंद्रसूर्य्ययोः ॥ मन्वादयोयुगादिश्चसंक्रांतिर्वैधतिस्तथा ॥ दिनक्षयंदिनुच्छिद्रमवमंचतथापरम् ॥ द्वेऽयनेविषुवद्युग्मंषडशीतिमखंतथा ।। चतस्रोविष्णुपद्यश्चपुत्रजन्मादिचापरम् ।। आदित्यादिग्रहाणांचनक्षत्रैःसहसंगमे ॥ विज्ञेयःपुण्यकालोयंज्योतिर्विद्भिर्विचार्य्यच ॥ तत्रदानादिकंकुर्य्यादात्मनः पुण्यवृद्धये ।।

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेपुण्यकालकथनंनाम तृतीयः कोशः ॥ ३ ॥

---

अथदानप्रतिगृहीत्रोर्द्धर्मानिरूप्यंते ॥ ॥ दैवंवाकर्म पित्र्यंवानाशुचिःकर्तुमर्हति ॥ स्नानमेवद्विजातीनांपरंशुद्धिकरंस्मृतम् ॥ अतःस्नातोर्हतामेतिदानेचैवप्रतिग्रहे ॥ कृतमस्नायिनाकर्मराक्षसत्वायकल्पते ॥ प्रजापतिःकर्मगुप्तेऽपवित्रंमसृजत्पुरा ॥ रक्षोघ्नमेतत्परमंमुनिभिःकल्पितंसदा ।। तस्मात्तत्करयोर्द्धार्य्यंदद तापतिगृह्णता ॥ स्नानहोमजपादीनिकुर्वतांचविशेषतः ॥ दानंप्रतिग्रहोहोमोभोजनंबलिरेवच ॥ साङ्गुष्ठेनसदाकार्य्यमसुरेभ्योन्यथाभवेत् ॥ सांगुष्ठेनअंगसंगतांगुष्ठेनेत्यर्थः ॥ एतान्यनेककार्य्याणिदानादीनिविशेषतः ।। अंतर्जानुविधेयानि तद्वदाचमनंतथा । नाधिकारीमुक्तकचोमुक्तचूडस्तथैवच ॥ दानेप्रतिग्रहेयज्ञेजलभक्षादिकर्मसु ॥ देवाः समेत्यवक्त्रंहि तच्चपुंसामकल्पयन् ॥ ततश्चकास

साहीनमसंपूर्णंप्रचक्षते ॥ सोत्तरीयस्ततःकुर्य्यात्सर्वकर्माणिभा विनः ॥ अधौतंकाकधौतंचपरिदध्यान्नवाससी ॥ ददानःप्रतिगृह्णं श्चदध्यादहतमेवच ॥ सुस्नातःसम्यगाचांतः कृतसंध्यादिकक्रियः कामक्रोधविहीनश्च पाषंडस्पर्शवर्जितः ॥ जितेंद्रियःसत्यवादीपात्रं दाताचशस्यते ॥ प्रमीतेगोत्रपुरुषेसूतकेवासमागते ॥ दशरात्रमनर्हः स्यात्कर्तुंदानप्रतिग्रहौ ॥ पिंडोदकादिमृतकेदातुंप्रेतायुज्यते ॥ आच्छिन्नाथांतथानाड्यांदानार्होजातसूतके ॥ शुचिर्वाप्यशुचिर्वापि दद्यादभयदक्षिणाम् । शुचिनाऽशुचिनावापिग्राह्यंह्युभयमुत्तमम् ॥ कुशोपरिनिविष्टेनतथायज्ञोपवीतिना ॥ देयंप्रतिगृहीतव्यमन्यथाविफ लंहितत् ॥ प्रणवोजगतांबीजंवेदानामादिरेवच ॥ एषएवपरं ब्रह्मपवित्रमयमुत्तमः ॥ तस्मात्प्रणवमुच्चार्य्यकार्य्यौदानप्रतिग्रहौ ॥ योर्चितंप्रतिगृह्णातियोर्चयित्वाप्रयच्छति ॥ तावुभौगच्छतः स्वर्गेविपरीतेविपर्य्ययः ॥ दद्याद्दानंयथाशक्त्यासदाभ्यर्चनपूर्व कम् ॥ ब्राह्मणश्चापिगृह्णीयाद्भक्त्यादत्तंप्रतिग्रहम् ॥ प्रश्नपूर्वंतुयोदद्या द्गृह्णीयाच्चप्रतिग्रहम् ॥ सपूर्वंनरकंयातिग्राह्मणस्तदनंतरम् ॥ प्रश्नपूर्वं कमिति ॥ एतमध्यायमेतमनुवाकंब्रायस्त्रिंशमस्खलितंपठसि तदातेएतावद्दामीत्युक्त्वा तथाकृतेयद्गीयतेतत्प्रश्नपूर्वकम् ॥ अप्रमा णेनयोदद्यागृह्णीयाद्यः प्रतिग्रहम् ॥ तावुभौनरकेमग्नौवसेतांशरदांश तम् ॥ कार्य्यलोभेनयोदद्याद्गृह्णीयाद्यःप्रतिग्रहम् ॥ दाताग्रेनरकंयाति ब्राह्मणस्तदनंतरम् ॥ प्रतिग्रहोयोविधिनागृहीतः प्रतिग्रहोयोवि धिनाप्रदत्तः ॥ द्वयोःप्रयोगश्चरमंतुकार्य्यःश्रेयस्तथाभोतिनसंशयोत्र अथोभयधर्म्मः ॥ दानेविधिमविज्ञायनहितदातुमर्हति ॥ प्रति

ग्रहानभिज्ञश्चगृह्णन्निरयमश्नुते ॥ अथपात्रपरीक्षा ॥ शीलंसंवसनाज्ज्ञेयंशौचंसव्यवहारतः ॥ प्रज्ञासंकथनाज्ज्ञेयात्रिभिःपात्रंपरीक्ष्यते ॥ संकथनंशुद्धभावेनविधाकथा ॥ अपिसद्रूपमात्रंहिनदेयंविचिकित्सता ॥ मनसाह्यननुज्ञातःप्रतिगृह्णीतनैवहि ॥ ददानःप्रतिगृह्णँश्चयतोलोभभयादिना ॥ नामोतिश्रेयसायोगंनिरयंचैवगच्छति ॥ देशकालविधानाभ्यैर्हीनंदानंभयावहम् ॥ दातुःप्रतिगृहीतुश्चगृहीतमसतःसदा ॥ नामगोत्रेसमुच्चार्य्यप्राङ्मुखोदेयकीर्त्तनात् ॥ उदङ्मुखायविप्रायदत्वातेस्वस्तिवाचयेत् ॥ केचित्तु ॥ दद्यात्पूर्वमुखोदानंगृह्णीयादुत्तरामुखः ॥ आयुर्विवर्द्धतेदातुःक्षीयतेगृहितरीतिपठंति ॥ तत्तुचैवाहिकविप्राविरुद्धम् ॥ नान्यत्रउक्तंच प्राक्प्रत्यगास्यावुद्गाहेदातृग्राहकयोस्थितिः ॥ दद्यात्पूर्वमुखोद्रव्यमेषएवविधिः सदेति ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेदातृप्रतिगृहीतृधर्मकथनंनाम चतुर्थःकोशः ॥ ४ ॥

---

अथपर्वदानानि ॥ तदात्रौसंक्रांतिसहितमासदानविधिः ॥ संक्रांतौयानिदानानिहव्यकव्यानिदातृभिः ॥ तानिनित्यंददात्यर्कःपुनर्जन्मनिजन्मनि ॥ तत्रादौमेषसंक्रमे ॥ मेषसंक्रमणेभानोर्मेषदानंमहाफलम् ॥ तथा ॥ मेषदानेनविविधंपापंविलयमृच्छतीति ॥ अयनेविषुवेचैवोपरागेस्वप्नदोषके ॥ चित्तवित्तानुसारेणकार्य्यंतीर्थेगृहेपिवा इति ॥ आदौशंकरंब्रह्माणंविष्णुंगौरींगायत्रींचयथाशक्तिसुवर्णप्रतिमासुसंपूज्य शय्यासहेंद्रंग्रहान्लोकपालान् सौवर्णान् कृत्वासंपूज्यतत्पश्चिमतः स्वगृह्येणाग्निंप्रतिष्ठाप्यस्थापितदेवतामंत्रैस्तिलाज्यैरष्टोत्तरशतंविंशदाहुतीरष्टाष्टसंख्याकाहुतीर्वाहुत्वा ततोमेषंमेषीं वा

द्विजंचवस्त्रालंकारादिभिर्यथाविभवंसंपूज्य अद्येत्यादिसर्वपापक्षय दुःस्वप्नसूचितारिष्टविनाशपुत्रपौत्रधनकीर्त्तियशः कामअमुमेषंसुवर्णतिलकाद्यलंकृतंकौशेयपरिधानंसप्तधान्यसमायुक्तं पुष्पोपहारंसम्मुखस्थापितलवणं ब्रह्मविष्णुशिवादिप्रतिमायुतंमुक्तोपस्करमसुगोत्रायशर्मणेसुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिदत्वा सुवर्णंदक्षिणां दद्यात्॥ मंत्रस्तु। वाङ्मनःकायजनितंयत्किंचिन्ममदुष्कृतम् तत्सर्वंविलयंयातुत्वद्दानेनोपसंचितम्॥ प्रतिमास्थापनंतिलकुंभो।मेषंप्रत्यक्षं॥ वासुवर्णनिर्मितं। विप्रोदेवस्येत्वेतिशृंगेप्रगृह्ययथाशाखंकामस्तुतिंपठेत्।प्रतिगृहीतृविप्रस्यसंभाषणंमुखावलोकनंचवर्जयेत्॥ शतसुवर्णेनवित्तानुसारतोवातंकुर्य्यात्॥ तद्दिने॥ ददातियोहिमेषादौसक्तूनं घृतान्वितान्॥ पितॄनुद्दिश्यविप्रेभ्यःसर्वपापैःप्रमुच्यते॥ अथकृत्यं शीतलेनसुगंधेनवारिणापूरितंघटम्॥ शुक्लचंदनलिप्तांगंपुष्पदामोपशोभितम्। दध्योदनघृतंकुर्य्याच्छरावंतस्यचोपरि। उपानच्छत्रसंयुक्तंधर्मारव्यंकल्पयेद्घटं। पुष्पाक्षतान्गृहीत्वावैचेमंमंत्रमुदीरयेत्। नमोस्तुविष्णुरूपायनमःसागरसंभव॥ अपांपूर्णोदरास्मान्स्तंदुःखसंसारसागरात्॥ प्रार्थना। उदकुंभोमयादत्तोग्रीष्मकालेदिनेदिने। शीतोदकप्रदानेनप्रीयतांमधुसूदनः। इति। प्रत्यहंधर्मघटकोवस्त्रसंवेष्टितोनवः। ब्राह्मणस्यगृहेदेयःशीतामलजलःशुचिः॥ वसंतग्रीष्मयोर्मध्येपानीयंयः प्रयच्छति॥ पलेपलेसुवर्णस्यफलमाप्नोतिमानवः॥ मार्गशीर्षात्समारभ्य चोदकुंभंतुयःक्षिपेत्॥ दिनेदिनेसहस्रस्यगवांदानफलंलभेत्॥ तत्सांगतासिध्यैमासिमास्युद्यापनंकार्यम्॥ मंडकावेष्टिकाभिश्च पक्वान्नैःसार्वकामिकैः। उद्दिश्यशंकरंविष्णुंब्रह्माणमथवापितॄन्॥

ततःसतिलंप्रोक्ष्यानेनमंत्रेण दद्यात् ॥ एषधर्मघटोदत्तोब्रह्मविष्णु शिवात्मकः ॥ अस्यप्रदानात्सकलाममसंतुमनोरथाः ॥

तत्र सकृदानमंत्रः ॥

सकृद्घोधर्मदानित्यंब्रह्मणःप्रीतिकारकाः।त्वद्दानान्ममदुष्कर्मक्षयो स्तुसुखमस्तुमे।अथ मासव्रतानियमः॥वैशाखेपुष्पलवणंवर्जयित्वा चगोप्रदःभूत्वाविष्णुपदेकल्पंस्थित्वाराजाभवेदिह १ एकभक्तव्रतंवा इतिकांतिव्रतं।प्रत्यहंस्नात्वा नृसिंहंपूजयित्वाप्रत्यहंकनकदानमंतेगो दानमितिज्ञानातिव्रतम् ॥तथा।अपूपानांप्रदानेनवैशाखेस्वर्गमश्नुते गंधमाल्येतथादेयेमधुसूदनतुष्टयइति॥अथ वृषसंक्रमणे॥ वृषसंक्र मणेदानंगवांप्रोक्तंतथैवच॥अथ जलधेनुदानम् ॥ जलकुंभंसुवर्ण रजतान्वितम् ॥ सुवर्णशृंगंचतूरौप्यखुरान्वितमितिस्मृतम् ॥ रत्नगर्भ मशेषैस्तुधान्यैर्धान्यैःसमन्वितम् ॥ सितवस्त्रयुगच्छन्नांदूर्वापल्लवशो भिताम्।कुष्ठमांसीमुरोशीरवालकामलकैर्युतां ॥ प्रियंगुपत्रसहितांसि तवस्त्रोपशोभितम् ॥ सच्छत्रांसदुपानत्कांदर्भविष्टरसंयुताम् ॥ च तुर्भिःसंयुतांभूयस्तिलपात्रैश्चतुर्दिशम् ॥ स्थगितंतद्घिपात्रेणघृतक्षी रवतामुखे ॥ तिलपात्राणिताम्रमयानि।दधिपात्रंकांस्यमयम् । उपो षितो, वासुदेवंजलेशयंसंपूज्य संकल्पयेत् ॥ अद्येत्यादिममसक लपापक्षयपूर्वकम् इहजन्मनि नानाविधसुखैश्वर्य्यभोगोत्तरपारेपरम धामप्राप्तये इमांजलधेनुंस्वर्णप्रतिमादिपूर्वोक्तोपस्करयुतां गोत्रा वसर्पणेतुभ्यंसंप्रददेनमम॥प्रार्थना॥जलशायिञ्जगन्नाथसर्वभूताभयं कर॥जलधेनुप्रदानेनप्रसीदत्वंसदाममं ॥ जलधेनुंविप्रंचवस्त्रादिभिः संपूज्य ॥ जलधेनुंगुडधेनुंचदद्यात्ततोयालक्ष्मीरित्यादिचपठेत् ॥

अथ ज्येष्ठमासे॥छत्रदानात्तथाज्येष्ठेसर्वान्कामान्समश्नुते ॥ त्रिविक्रमस्यप्रीत्यर्थंतालवृंतंतुदापयेत्॥ जलशायिनं संपूज्यएकभक्तव्रतस्सदा॥जलदानं वस्त्रदानंगोरसैर्ब्रह्मभोजनम् ॥ उदकुंभांवुधेनुञ्चतालवृंतंचचंदनम् ॥ त्रिविक्रमस्यप्रीत्यर्थंदातव्यंज्येष्ठमासिच ॥

इति ज्येष्ठकृत्यम् ॥

अथ मिथुन संक्रांतौ ॥ अन्नपानशय्यादानं वस्त्रान्नपानदानानिमिथुनेविहितानिचेतिअन्नदानेअन्नंसंपूज्य अद्येत्यादि॰ ममश्रीप्रसादसिद्धिद्वारानेकजन्मस्ववन्नवृध्यै इदमन्नंप्रजापतिदैवतंसुवर्णदक्षिणासहित॰॥प्रार्थना॥ अन्नमेवयतोलक्ष्मीरन्नमेवजनार्दनः॥ अन्नंब्रह्माखिलत्राणमस्तुमेसर्वजन्मनि॥वस्त्र ।सूक्ष्मवस्त्रद्वयंबहुमूल्यमंष्टहस्तमितंदद्यात् ॥ अद्येत्यादि॰॥ समस्तपापक्षयकामःइमेवाहस्पत्येवासतीगोत्रायशर्मणेतुभ्यं॰॥ दानमंत्रः ।।शीतवातोष्णसंत्राणंलज्जायारक्षणंवरम्॥ देहालंकरणंवस्त्रमतःशांतिप्रयच्छमे॥शय्या॥ अष्टदलेतिलप्रस्थंनिक्षिप्य तस्मिन्शय्यामास्तीर्य्यतस्याःसमंतादीशानादिकोणचतुष्टयेशिरोभागेच पंचकुंभान् क्रमात् घृतकुंकुमगोधूमजलैःपूरयित्वाशीर्षेघृतैःपूरयित्वासंस्थाप्य अद्येत्यादि॰ ममसमस्तपापक्षयपूर्वकाप्सरोगणसेवायुतविमानकरणकेंद्रपुरगमनतत्रत्रषष्टिसहस्रवर्षाधिकरणकक्रीडनस्त्रीसंघसमावृतसर्वलोकमहितंवतदुत्तरषष्टियोजनमंडलराज्यभोगतदनंतरशिवसायुज्यावाप्तिकामःशय्यादानमहंकरिष्ये ॥ द्विजंसपत्नीकंकृत्वावस्त्रालंकारादिभिः संपूज्य शय्यायांलक्ष्मीनारायणप्रतिमांस्वर्णमयींसंपूज्यतांप्रदक्षिणीकृत्य प्रमाण्यैदेव्यैइतिचतुर्दिक्षुप्रणम्यतिथ्याद्युच्चिर्य्य ममसर्वप

पक्षयेत्यादिशिवसायुज्यकामोगोत्रायशर्मणेसुपूजितायइमांशय्या मीशानादिकोणचतुष्टयस्थापनक्रमेणघृतकुंकुमगोधूमजलघृतकुंभ समेतांहंसतूलीप्रच्छन्नांशुभ्रगंडोपधानिकां प्रच्छादनपटीस्तृतां सप्तधान्ययुतां तांबूलायतनादर्शैलालवंगकर्पूरयुतांसुगंधिपरिमलभो ग्यवस्तुचंदनागरुदीपिकोपानच्छत्रचामरासनयुतांभोजनभाजनज लपात्रयुतांपंचवर्णवितानांकेशप्रसाधिन्यंजनशलाकापुष्पमालादि युतांलक्ष्मीनारायणप्रतिमासहितांयुक्तोपस्करामंगिरोदैवतां०तुभ्य महंसंप्रददेनममेतिशय्योपवेशितविप्रहस्तेसाक्षतकुशोदकंक्षिपेत् ॥ मंत्रः । यथानकृष्णशयनंशून्यंसागरजातया ॥ तथाशय्या ममाप्यस्तुशून्याजन्मजन्मनि ॥ ततस्सुवर्णदक्षिणांदद्या द्भूयसींदक्षिणांब्राह्मणभोजनंचपुनःदद्यात् ॥ अथाषाढमासे ।। वि श्वरूपधरंहरिंपूजयेत् ॥ एकभक्तेनभक्तेनवाप्रत्यहंसुवर्णदानेनस्ना नेनचरूपावाप्तिव्रतम् ॥ मासपूर्त्तौशयनंगांहिरण्यंचदद्यात् ।। तथा ।। उपानद्युगलंछत्रंलवणंमलकानिच ।। आषाढेवामनप्रीत्यै दातव्यानितुभक्तितः ॥ इत्याषाढकृत्यम् ॥ अथकर्कसंक्रांतौघृतधे नुदानम् । घृतधेनुप्रदानंचकर्कटेपरिशिष्यते ॥ गव्यस्यसर्पिषाकुंभं पुष्पमालादिभूषितम् । कांस्यापिधानसंयुक्तंसितवस्त्रयुगेनच । हिरण्य संहितंतद्वन्मणिविद्रुममौक्तिकैः । अत्रपलसहस्रपरिमाणंकुंभःद्वादश पलाधिकपंचशतपलाधिकोवा । इक्षुयष्टिमयान्पादान्खुरान्रौ प्यमयांस्तथा ॥ सौवर्णंचाक्षिणीकुर्य्याच्छृंगेचागरुकाष्ठजे ॥ रूप्य मयंपार्श्वपत्रंतेनैवकंबले । पत्रोर्णधौतकौशेयम् । कर्पूरैः वासितम् । फलमयांस्तनान् । शर्करायाजिह्वाम् । गुडक्षीरम

यंमुखम् । क्षौमंपुच्छम् । रोमाणिसितसर्षपैः । ताम्रैःपृष्टम् । एतादृशीं कृत्वासंपूज्यब्राह्मणंवासोलंकारादिभिःसंपूज्यदद्यात् । विधिस्तुजल धेनुवत् । अद्येत्यादि० ममसकलपापक्षयपूर्वकम् इहजन्मनिनानाविधसुखैश्वर्यभोगोत्तरंपरत्रविष्णुसायुज्यावाप्तिकामः इमांघृतधेनुंपूर्वोक्तलक्षणयुतांगोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददेनमम० । मंत्रः । घृतंगावः प्रसूयंतेघृतंभूम्यांप्रतिष्ठितम् ॥ घृतमग्निश्चदेवाश्चघृतंमेसंप्रदीयताम् ॥ दक्षिणासुवर्णशय्यावा । दानफलम् । घृतक्षीरवहानयोयत्रपायसकर्दमाः ॥ तेषुलोकेषुसर्वेषुसुपुण्येषुप्रजायते ॥ सकामानामियंव्युष्टिर्निष्कामानांसलोकता ॥ अथश्रावणमासे ॥ गौरींमहेश्वरंचसंपूज्य घृतक्षीरकुंभान्घृतपक्वफलानिचदिनेदिनेदातव्यानि । तथा । श्रावणेवस्त्रदातुस्तुस्यात्कीर्त्तिस्सुमहत्फलम् ॥ श्रीधरप्रीतयेतस्माद्घृतंक्षीरंप्रदापयेत् ॥ फलदानमंत्रः ॥ मनोहराणिरम्याणिनित्यंस्वादुकराणिच ॥ फलानां संप्रदानेनसंतृप्तिस्त्वमलामम ॥ तथा ॥ फलानिमधुराणीहमुनिदेवप्रियाणिच । तस्मात्तेषांप्रदानेनसफलामेमनोरथाः ॥ इतिश्रावणे ॥ अथसिंहसंक्रमेसुवर्णसहितच्छत्रादिदानं । ससुवर्णच्छत्रदानंसिंहेपि विहितंसदा । ससुवर्णछत्रायनमद्दतिसंपूज्य अद्येत्यादिममसर्वपापक्षयोत्तरंजन्मजन्मनिवर्षातपक्लेशनिराकरणार्थममुंछत्रमांगिरोदैवतंगोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ दानमंत्रः । इहामुत्रातपत्रमणंकुरुमेकेशवप्रभो ॥ छत्रंत्वत्प्रीतयेदत्तंममास्तुचसदासुखम् ॥ उपलक्षणादुपानच्चामरदर्पणदानमंत्राः ॥ उपानद्यौप्रदद्येहं कंटकादिनिवारणे ॥ सर्वमार्गेषुसुखदेअतः शांतिंप्रयच्छमे ॥ चामरे।शशांककरसंकाशंहिमडिंडीरपांडुरम् ॥ प्रोत्सारयाशुदुरितंचामरामरवल्लभ ॥ दर्पणम् ॥ दर्शनेनत्वमादर्शचूर्णांमंगलदायकः । सर्वसौभाग्यसत्कीर्ति

तिर्निर्मलज्ञानमस्तुमे ॥ अथ भाद्रपदमासे ॥ भासिभाद्रपददद्या त्पायसंमधुसर्पिषा । हृषीकेशप्रीणनार्थंलवणंचगुडंदधि।कमलैःपा र्थिवपूजनमंतेगोदानमितिमांसंकृत्वाधनवान्भवेदिति ॥ अथ क न्यासंक्रांतौवस्त्रदानंक्षीरधेनुदानंच । कन्याप्रवेशेवस्त्राणांसुर भीणांतथैवच ॥ वस्त्रदानविधानंमिथुनसंक्रमेलिखितम् ॥ अथ क्षीरधेनुदानम् ॥ गोमयोपलिप्तभूमौगोचर्ममात्रेस्थलेकुशानास्ती र्यैतदुपरिकृष्णाजिनमास्तीर्य्यगोमयेनकुंडलिकांकृत्वाक्षीरकुंभंतत्र स्थाप्यचतुर्थांशेनवत्संविधायशृंगाणिचंदनागरुकाणिकृत्वाप्रशस्त पत्रश्रवणांतिलपात्रोपरिन्यस्तांगुडमयमुखांशर्करमयजिह्वांफलदतां मुक्ताफलेक्षणामिक्षुपादांदर्भरोमांसितकंबलकंबलाम् एतादृशीम भ्यर्च्यब्राह्मणंचवस्त्रालंकारादिभिरभ्यर्च्यअद्येत्यादिगोत्रायशर्मणेइ मांक्षीरधेनुंपूर्वोक्तोपस्करयुतांसमस्तपापक्षयकामस्तुभ्यमहंसंप्रददे०। देवस्यत्वेत्युच्चार्ययालक्ष्मीरित्यादिप्रार्थना ॥ अथाश्विनमासे अश्विन्योःप्रीतयेप्रत्यहंघृतदानम् ॥ घृतंसंपूज्य अद्येत्यादिमम जन्मजन्मनिसुरसावाप्त्यैइदंघृतमश्विनीदैवतम् ०॥ मंत्रः । कामधेनोः समुद्भूतंदेवानामुत्तमंहविः॥आयुर्विवर्द्धनंदातुराज्यंकुर्यात्सदामम ॥ ॥ तथाच ॥ तिलांस्तुरंगंवृषभंदधिताम्ररसादिकम् ॥ प्रीत्यर्थंपद्म नाभस्यदद्यादाश्वयुजेनरैरित्युक्तत्वात्। अथाश्वदानविधावादौति लदानम्॥कृष्णाजिनेतिलान्कृत्वासुवर्णंमधुसर्पिषी ॥ द्रोणैकंवास सालब्धंत्रिधातद्वत्सदक्षिणम् ॥ ब्राह्मणायचतंदद्यात्सर्वंतरतिदुष्कृत म् ॥ अद्येत्यादि० ।अमुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायकृष्णाजिन स्थंसुवर्णमधुसर्पिर्युतंवस्त्राच्छन्नंतिलद्रोणंसोमदैवतंसर्वपापक्षयकाम स्तुभ्यमहंसंप्रददे०।तत्प्रतिष्ठासिध्यर्थंसुवर्णंदेयम्॥ मंत्रः।यानिकानि

चपापानिब्रह्महत्यासमानिच ॥ तानिसर्वाणिनश्यंतुतिलानांचप्रदा
नतः॥ अथाश्वदानविधिः॥ सर्वोपकरणोपेतंयुवानंदोषवर्जितम्॥
योश्वंददातिविप्रायस्वर्गलोकेमहीयते ॥ आदौब्राह्मणंवृत्वावस्त्रा
लंकरणादिभिःततोऽश्वंसंपूज्यअयेत्यादि०ममसमस्तपापक्षयपूर्वका
श्वरोमसमसंख्याकांब्दांतंसूर्य्यलोकनिवासकामइममश्वंसवर्णंस्करस
हितंसुवर्णदक्षिणायुतं यमदैवतं गोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददेनम
मेति अश्वकर्णंधृत्वादद्यात् ॥ दानमंत्रः ॥ उच्चैःश्रवास्त्वमश्वानां
राज्ञांविजयकारकः॥ सूर्य्यवाहनमस्तुभ्यमतःशांतिंप्रयच्छमइति ।
अश्वमेधमुखंयस्तुकलौकर्तुंनशक्नुते । अश्वदानंतुतेनेहकर्त्तव्यंविधि
पूर्वकम् ॥ अश्वकर्णेतिलोदकदानमंत्रः । मार्त्तंडायसुवेगायका
श्यपायत्रिमूर्त्तये॥ जगद्दीपायसूर्य्यायत्रिवेदायनमोस्तुते॥ प्रार्थना॥
महार्णवसमुत्पन्नउच्चैश्श्रवरिहाधुना।मयात्वंविप्रमुख्यायदत्तोहयसुखी
भव ॥ विप्रप्रार्थना—इमंविप्रनमस्तुभ्यमश्वंतेप्रतिपादितम् ॥ प्रति
गृह्णीष्वविप्रेंद्रमयादत्तंसुशोभनम् ॥ विप्रस्तुकामस्तुतिंपठेत् ॥
दाताचाश्वपुरोगच्छेत् पदानांसप्तसप्ततिम् । भास्करंमनसाध्यात्वा
चालोक्यस्वगृहंव्रजेत्॥ न्यूनातिरिक्तपरिहारार्थंभूयसींदक्षिणांदद्या
त् ॥ अथवृषभदानम् ॥ अयनेविषुवेचैवयुगादौग्रहणेषुच ॥
अमायांचप्रदातव्यंवृषदानंजगुर्बुधाः ॥ अनड्वाहंसंपूज्य अद्ये
त्यादिममसर्वपापक्षयपूर्वकाल्पमृत्युनिवारणद्वाराशिवसायुज्यप्रा
येअमुंवृषभंसुवर्णतिलकंताम्रपृष्ठमुक्तालांगूलंप्रवालभूषितंरुद्रदैवतं
गोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददे॥ मंत्रः॥ धर्मस्त्वंवृषरूपेणजगदानंदका
रकः।अष्टमूर्त्तेरधिष्ठानमतश्शांतिंप्रयच्छमे ॥ अथदधिदानम्

त्रः ॥ क्षीरेणाप्लंसमुद्भूतंदेवर्षिपितृतृप्तिदम् ॥ दधिस्थान्मेमृतंनित्यमतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ ताम्रदानमंत्रः ॥ वैश्वानरसमुद्भूतंताम्रं सूर्य्यप्रियंकरम् ॥ तवदानप्रभावेणममसंतुमनोरथाः ॥ इत्याश्विनमासः ॥ अथतुलासंक्रमे ॥ तुलापवेशेधान्यानांबीजानांदान मुत्तमम् ॥ सर्वधान्यबीजादिदानं मधुधेनुदानंच ॥ अन्नदानमंत्रः ॥ अन्नमेवयतोलक्ष्मीरन्नमेवजनार्दन । अन्नंब्रह्मास्खिलत्राणमस्तुमेजन्मजन्मनि ॥ बीजदानम् ॥ बीजेभ्योजायतेसर्वंस्थावरंजंगमंचयत् ॥ तस्माद्बीजप्रदानेनसंततिर्वर्द्धतांमम । अथमधुधेनुदानम् अनुलिप्तेमहीपृष्ठेकृष्णाजिनकुशोत्तरे ॥ तत्रधान्यद्रोण्यांमधुपूरितं रत्नगर्भसंस्थाप्य स्वर्णशृंगांरौप्यपादांमुक्तादामविभूषितामित्यादि जलधेनुवद्ज्ञातव्यम् ॥ तच्चतुर्थांशेनवत्सकंकृत्वा ब्राह्मणं कृत्वा मधुधेनुधेनुपूजनविधिनासंपूज्य अद्येत्यादिगोत्रायशर्मणेसालंकृतायसौवर्णमुखींमगरुचंदनशृंगींताम्रपृष्ठांसूत्रपुच्छां इक्षुपादांसितकंबलकंबलांगुडमुखीम् शर्कराजिह्वांमौक्तिकनेत्रां फलदंतांदर्भरोमांप्रशस्तपत्रश्रवणांनवनीतस्तनींसप्तधान्योपेतां चतुर्दिक्षुघृतादिपात्रचतुष्टयसहितांवस्त्रयुग्माच्छन्नांघंटाभरणभूषितांकांस्यदोहांतुभ्यमहंसंप्रददे ॐतत्सन्नमम ॥ मधुवातेतिपठेत् सुवर्णदक्षिणांदत्वा यालक्ष्मीरित्यादिप्रार्थना ॥ अनेनदानेन पंचमहापापात्प्रमुच्यते ॥ अथधान्यदानम् ॥ सार्द्धखारीद्वयंब्रीह्योदद्याः तच्चसार्द्धशतद्वयंमणपरिमितंमणषट्कंचेति गोत्राय शर्मणेइदममुकसंख्यंप्रजापतिर्देवत्यंसमस्तपापक्षयपूर्वकैहिकामुष्मिकफलावाप्तिकामस्तुभ्यमहंसंप्रददे नममेति ॥ धान्यदानमंत्रः

सर्वदेवमयंधान्यंसर्वोत्पत्तिकरंमहत् ॥ प्राणिनांजीवनोपायमतःशां तिंप्रयच्छमे॥इतिधान्यदानम्॥अथ कार्तिकमासे रजतंकनकंदी पान्मणिमुक्ताफलादिकम् ॥ प्रीत्यर्थंदामगर्भस्यप्रदद्यात्कार्तिकेनरः दीपदानंगोपरिचर्य्याच ॥ दीपदानंतथा ॥ देवागारेद्विजागारे दीपंदत्वाचतुष्पथे ॥ मेधावीज्ञानसंपन्नश्चक्षुष्मांश्चभवेनरः ॥ मंत्रः।दीपोज्ञानप्रदोनित्यंदेवतानांप्रियःसदा ॥ दानेनास्यभवेत्सौख्यं शांतिर्मेवांच्छितंफलम् ॥ सज्योतिस्तैलपात्रंचदीपंवाहुसमुन्नतम्॥ सुखंस्यादस्यदानेनशांतिरस्तुसदामम ॥ नमःपितृभ्यःप्रेतेभ्योनमो धर्मायविष्णवे॥नमोयमायरुद्रायकांतारपतयेनमः ॥फलम् । अनेन दीपेनमनोरथानांसंप्राप्तिरस्तीतिनसंशयोऽत्र ॥ एतानिचोक्ता कंतिचिद्विधांनिदद्यान्मनोवांछितभोगसिध्यै ॥ अत्रैवाकाशदीप दानम् ॥ दीपंसंपूज्य अद्येहेत्यादि०ममश्रीराधारमणप्रीतिपूर्वका मूल्यरत्ननिर्मितविमानाधिरोहणोत्तरगोलोके मणिमयप्रदीपदीप्ति मंदिरावासश्रीकृष्णदास्यप्राप्तये कार्तिकेआकाशदीपदानमहंक रिष्ये ॥ प्रा० ॥ दामोदरायनभसितुलायांदोलयांसह ॥ प्रदीपंच प्रयच्छामिनमोनंतायवेधसे ॥ स्नानदानक्रियापूर्वं विष्णुमंदिर मस्तके।अनेनमेस्तुसुप्रीतोश्रीराधासहितोहरिः॥अथगोपरिचर्याविधिः॥गवांकंडूयनंचैवसर्वकल्मषनाशनम् ॥ गवांग्रासप्रदानेनस्वर्गलो केमहीयते॥ग्रासदानमंत्रः ॥ सुरभित्वंजगन्मातर्नित्यंविष्णुपदेस्थि ता ॥ सर्वदेवमयंग्रासंमयादत्तमिमंग्रस । प्रार्थना ॥ सर्वदेवमयेदेवि सर्वदेवैरलंकृते ॥ मातर्ममाभिलषितंसफलंकुरुनंदिनीति । इत्यूर्जमा सः॥ अथवृश्चिकसंक्रमेवस्त्रदानंगृहदानंच ॥ कीटप्रवेशेवस्त्राणांवे

श्मानंदानमेवच ॥ तत्रादौमहात्म्यम् ॥ वस्त्रंयथार्थिनेदद्याच्छुभंवापि यदृच्छया ॥ सभवेद्धनवान् श्रीमान् बृहस्पतिपुरेवसेत् ॥ तथाच ॥ वा सोहिसर्वदैवत्यंसर्वप्रायोज्यमुच्यते ॥ वस्त्रदानात्सुवेषःस्याद्रूपवर्विणसंयुतः ॥ युक्तोलावण्यसौभाग्यैर्विरोगीचभवेन्नरः ॥ दत्वाकार्पासि कंवस्त्रंस्वर्गलोकेमहीयते ॥ दत्वोर्णजंचतत्रापिफलंदशगुणंभवेत् ॥ कृत्यं वासःसंपूज्य ब्राह्मणंचसंपूज्य अद्येत्यादि० गोत्रायशर्मणे ॥ इदंवस्त्रंसूक्ष्मदेहालंकरणंबृहस्पतिदैवतंतुभ्यमहंसंप्रददेनमम।मंत्रस्तु ॥ आदौश्वेतवस्त्रस्य । सितंसूक्ष्मंसुखस्पर्शमीशानादेःप्रियंसदा । देहालं करणंयस्मादतः शांतिप्रयच्छमे।पीतस्य।पीतंवासःसुमांगल्यंदेवानां प्रीतिवर्द्धनम् ॥ दानेनानेनमेपापंहरत्वाशुजनार्द्दनः ॥ रक्तस्य ॥ रक्तवस्त्रं सदारम्यमादित्यस्यप्रियंसदा ॥ श्रीकरंरूपदंनित्यमतःशांतिंप्रयच्छ मे । नीलस्य।मनोहरंनीलवस्त्रंबलरामप्रियंसदा ॥ आयुर्विवर्द्धनंश्रीद मतः शांतिंप्रयच्छमे ।चित्रवस्त्रस्य।षण्मुखस्यप्रियंरम्यंचित्रवस्त्रंमनो रमम् ॥ तस्मादस्यप्रदानेनशांतिरस्तुसदाममं ॥ कृष्णवस्त्रस्य ॥ कृष्णं वासःप्रियंमृत्योःसर्वारिष्टविनाशनम् ॥ भयपीडामृतिहरमतःशांतिंप्र यच्छमे ॥ पट्टकूलस्य। पट्टकूलंसदारम्यंपवित्रंकामदंनृणां ॥ विष्णवा दीनांप्रीतिकरमतः शांतिंप्रयच्छमे ॥ ऊर्णावस्त्रदानं।ऊर्णावस्त्रंचारु चित्रंदेवानांप्रीतिवर्द्धनम् ॥ सुखस्पर्शकरंयस्मादतःशांतिंप्रयच्छमे 'कंबलस्य' शीतवर्षाहरः पुण्योदृष्टिबलविवर्द्धनः । कंबलस्य प्रदानेनशांतिरस्तुसदाममं ॥ चित्रकंबलस्य।ऊर्णापट्टश्चाविकादिसर्व देवप्रियःशुचिः । चित्रकंबलदानेनममसंतुमनोरथाः ॥ अथगृहदानं गृहमध्येदक्षिणभागेचंदनेनाष्टदलंपद्मंविलिख्य तदुपरिप्रस्थमात्रं

तिलान्निक्षिप्य । तदुपरिशय्यांसोपस्करांस्थापयित्वा । शय्यो
परि सौवर्णीलक्ष्मीनारायणप्रतिमांअग्न्युत्तारणपूर्वकं ॥ पंचामृते
नाभिषिच्यसंपूज्यप्रतिगृहीतारंचसंपूज्य ॥ सपत्नीकंवृत्वातंकरेगृंही
त्वामंगलतूर्य्यघोषेणगृहंप्रवेशयेत् । मंत्रास्तु ॥ एह्येहिनारायणदिव्य
रूपसर्वामरैर्वंदितपादपद्म ॥ शुभाशुभानंदशुचामधीशलक्ष्मीयुतःत्वंच
गृहंगृहाण ॥ नमःकौस्तुभनाभायहिण्यकवचायच ॥ क्षीरोदार्णवसु
प्तायजगद्धात्रेनमोस्तुते ॥ नमोहिरण्यगर्भायविश्वगर्भायवैनमः ॥
चराचरस्यजगतोगृहभूतायवैनमः ॥ भूर्लोकप्रमुखालोकास्तवदे
हेव्यवस्थिताः ॥ नंदंतियावत्कल्पांतंतथास्मिन्भवनेगृही ॥ त्वत्प्र
सादेनदेवेशपुत्रपौत्रावृतोगृहे ॥ पंचयज्ञक्रियायुक्तोवसेदाचं
द्रतारकमिति ॥ ततस्तंपूर्वस्थापितशय्यायामुदङ्मुख मुपवेश्यसपत्नी
कंयथाविभवंवस्त्रालंकारादिभिःसंपूज्यस्वयमासनेप्राङ्मुखोदर्भास
नेष्वासीनोदर्भान्धार्य्यमाणःप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यममसम
स्तपापक्षयपूर्वककल्पकोटिशतावधिब्रह्मलोकमहीयमानकामःशि
लाकाष्ठपक्वेष्टिकादिनिर्मितयथोपपत्तिसंपादितं ताम्रादिभाजनसर्व
धान्यलवणघृततैलगुडशर्करागोमहिषीबलीवर्ददासदासीमंचकतूली
वितानादर्शतांबूलायतनैलालवंगादिवर्षपर्य्याप्तसर्वोपकरणान्वितंस
दीपिकाप्रयोतितंविश्वकर्मदैवतंशक्रदैवतवंदगृहंगोत्रायशर्मणेअमुक
शाखाध्यायिने लक्ष्मीनारायणप्रतिमासहितंतुभ्यमहंसंप्रददेनमम ॥
मंत्रौ । इदंगृहंगृहाणत्वंसर्वोपस्करसंयुतं । तवविप्रप्रसादेनममसं
तुमनोरथाः ॥ गृहंममविभूत्यर्थंगृहाणत्वंद्विजोत्तम ॥ प्रीयतां
मेंजगयोनिर्वास्तुरूपीजनार्दनः । ततः प्रतिगृह्यता गृहमध्यस्तंभंगृह

द्वारदेहलीवासंस्पृश्य देवस्यत्वेति प्रतिगृह्य स्वस्तिवाक्यंपठेत् ततःसुवर्णमारभ्ययथाशक्तिदिक्षणांदद्यात् ॥ ततःपादुकोपानह छत्रचामरादिदत्वासंपन्नंगृहोपस्करादीत्युक्त्वा सर्वंसुसंपन्नंपूर्णमेवास्तु इतिप्रतिवचनंदद्यात् भूयसींदक्षिणांब्राह्मणेभ्योविभजेत् श्रमादादितिं० यस्यस्मृत्येतिकर्मेश्वरार्पणंकुर्य्यात्। गृहदानफलं यथेवंसर्वसंपन्नंपकेष्टमितिवेदयत् । कल्पकोटिशतंयावद्ब्रह्मलोकेमहीयते । शैलजंदारुजंवापियोदद्याद्विधिपूर्वकम् ॥ वसेत्क्षीरार्णवेरम्येनारायणसमीपतः । मृण्मयंवापियोदद्याद्धंसोपस्करान्वितं । पुरेषुलोकपालानां प्रतिमन्वंतरेवसेदिति । अस्मिन्मासेसुवर्णसहितंवस्त्रदानंप्रत्यहमुक्तं ॥ विधिस्तुपूर्वोक्तएव ॥ खरोष्ट्राश्वतराज्नागान् शूकराश्वमजादिकं ॥ दातव्यंकेशवप्रीत्यैमासिमार्गशिरेतरैः ॥ इतिमार्गशीर्षमासः । अथधनुस्संक्रांतौ । धनुःप्रवेशेवस्त्राणांयानानांचमहाफलम् । वस्त्रदानविधानम् वृश्चिकसंक्रांतिवज्ज्ञेयम् । अथरथदानं ॥ रथंचतुर्बलीवर्दैरूढंधान्यावृतंतथा ॥ क्षित्वानुसारात्सर्वैश्वरथोपकरणैर्युतं । सदक्षिणंचविप्रायदत्वाशिवपुरंव्रजेत् । धान्यावृतं । अष्टादशधान्यावृतं । दक्षिणातुत्रिंशतमाषमितिसुवर्णमुत्तमा द्वैशतेमध्यमा शतमेकमधमा दानवाक्यं अयेत्यादिगोत्रायशर्मणेसालंकृतायचतुर्बलीवर्दैर्वाघोटकैर्युतंसोपस्करंधान्याष्टादशश्रोत्रियंविश्वकर्मदैवतमक्षय्यस्वर्गादिसुखावाप्तिकामस्तुभ्यमहंसंप्रददे नममसंतस्तु । रथायरथनाथायनमस्तेविश्वकर्मणे । विश्वरूपायदेवायअरुणायनमोनमः । ततोदक्षिणादानं । तस्यैवभोदेगंत्रीदानं । गंत्रीरथविशेषःसाचतुर्भिर्गजैरश्वैर्वृषैर्वोपेताद्वाभ्यांवोपेता भवति । गंत्रीतुरंगसंयुक्तांयोददातिद्विजातये । सर्वकामसमृद्धात्मासरा

जायतेभुवि। दानवाक्यंपूर्ववत् मंत्रस्तुगंधीमिमांप्रयच्छामिविश्व कर्माधिदैवताम्। दानेनानेनभगवान् प्रीयतांमेपरःपुमान् ॥ ॥ अथशिबिकादानम् ॥ ॥ पुण्यदिनेशिबिकोपरिसुवर्णनिर्मितंह रिंसंपूज्य अद्येत्यादि० गोत्रायशर्मणेसुपूजिताय इमांशिबिकांस र्वोपस्करसहितां अंगिरोदैवतां इष्टलोकावाप्तयेतुभ्यमहंसंप्रददे नम मेति।ततःसुवर्णदक्षिणांदद्यात् तत्रैव देवलोकेविपुलभोगानंतरमंते विष्णुसायुज्यावाप्तिकामोविप्रस्यवर्षाशनंशिबिकावाहकानांचवर्ष पर्य्याप्तंद्रव्यंदद्यात् । प्रार्थना।शिबिकातेमयादत्तायथाशक्त्याविभू षिता । द्विजत्वंप्रतिगृह्णीष्वयांछितंतेनमेभवेत् । अस्मिन्मासे ॥ प्रासादनगरादीनिगृहवप्राणियानिच ।नारायणस्यप्रीत्यर्थंपौषेदेयानि यत्नतः ॥ शीतवारणमग्निदानंहेमंतशिशिरयोरुक्तम् ॥ अग्नि दानविधिः ॥ अग्निहेमंतशिशिरतौतीर्थेसुरालयेब्राह्मणगृहेवाका र्य्यं। उक्तंच॥ मठेदेवालयादौचअग्निप्रज्वालयेत्तुयः। षष्टिवर्षसहस्रा णिस्वर्गलोकेमहीयत इति तथाप्रज्वालयेद्वह्निंसेवनार्थंद्विजन्मनां दातव्योदीपकोखंडोदेवेषूद्दिश्यमाधवम्।अथमकरसंक्रांतौ ॥ मृग प्रवेशेदारूणांदानमग्नेस्तथैवचेतिवचनात् । तीर्थेजलाशयेदेवालयेमा र्गादौचशीतनिवारणंकाष्ठदानम् । अग्निदानविधिस्तुपूर्वोक्तोबो द्धव्यः । तथाच । कनकंकुलिशंनीलंमद्मरागंचमौक्तिकम् । एतानिरत्नजातानिदद्याद्देवस्यतुष्टये।कुलिशंहीरकं।रत्नानांचाप्यभा वेतुकर्षंकर्षार्द्धमेववा । सुवर्णंयोजयित्वातुतस्मिन्नेवोत्तरायणेवस्त्र कंबलदानंचभोजनंचानिवारितम् ॥ वस्त्रकंबलादिदानंवृश्चिक संक्रांतिविधावुक्तम् ॥ तिलधेनुःप्रदातव्यामाघेमकरगेरवौ । कस रान्नंब्राह्मणेभ्योदद्यात्स्वर्गार्थिभिर्नरैः । मासस्यांतेरथंदद्यात्सूर्यप्रीति

करंशुभम्। अथमकरसंक्रांतिदानविधावादौहीरकादिनवरत्नदानम्। माणिक्यंपद्मरागंचवैडूर्य्यंपद्ममेवच । मारकतंचगोमेदंपुष्परागंचमौक्तिकम् ।हरितंचनवैतानिरत्नान्युक्तानिसूरिभिः । रत्नदानाद्धरिर्लक्ष्मीःस्वपदंचप्रयच्छति॥अथेत्यादि०लक्ष्मीनारायणपदावाप्तिकामइत्यादि । मंत्रस्तु । यस्माद्रत्नेषुसर्वेषुसर्वेदेवाव्यवस्थिताःतस्माद्रत्नप्रदानेनवांछितंफलमश्नुते । मौक्तिकदानमंत्रः । मौक्तिकंभूषणंविष्णोःश्रियोगौर्य्याःशिवस्यच । दानेनास्यसुखंचास्तुऐहिकामुष्मिकंमम ॥ प्रवालदानमंत्रः ॥ प्रवालंपुष्टिदंश्रीदंकांतिदंशुभदंतथा ॥ दानेनास्यमहत्सौख्यंशांतिरस्तुसदामम ॥ कर्णभूषणदानमंत्रः ॥ भूषणंकर्णयोःस्त्रीणांस्वर्णरत्नादिसंयुतम् ॥ तार्टंकस्यप्रदानेनसौभाग्यंवर्द्धतांमम ॥ मांगल्यमणिदानमंत्रः ॥ मांगल्यमणयोलक्ष्म्या गौर्य्याःप्रीतिकराःसदा ॥ तस्मादेषांप्रदानेनशांतिरस्तुसदामम ॥ अथ सुवर्ण दानम् ॥ दत्वासुवर्णस्यशतंविप्रेभ्यःश्रद्धयान्वितः ॥ ब्रह्मलोकमनुप्राप्यब्रह्मणासहमोदते ॥ गव्येनभूमिंशकृताजलेनआलिप्यमध्येसिततंडुलैश्च ॥ सरोरुहंकेसरभूषणाढ्यंसकर्णिकंचाष्टदलंविलिख्य ॥ तस्मिन्हिरण्यंशतमानमात्रंनिधायतस्योपरितंविचिंत्य ॥ ब्रह्माणमितिशेषः । विसंवृत्वा ॥ अथेत्यादि० ॥ ममसमस्तपापक्षयपूर्वकंमेरुदानसमफलावाप्तयेदेयद्रव्यतृतीयांशदक्षिणासहितम् ॥ इदंसुवर्णमग्निदैवतम् ॥ अमुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे। नमम॥मंत्रः॥हिरण्यगर्भःसमवर्तताग्रेभूतस्यजातेति० ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थंहेमबीजंविभावसोः ॥ अनंतपुण्यफलदमतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ अथ तिलधेनु दानम् ॥

अनुलिप्तेमहीपृष्ठेवस्त्राजिनकुशोत्तरे ॥ धेनुंतिलमयींकृत्वासर्वरत्नै रलंकृताम् ॥ धेनुंद्रोणेनकुर्वीतआढकेनतुवत्सकम् ॥ स्वर्णशृंगींरौ प्यखुरांगंधघ्राणवतींतथा ॥ कुर्याच्चशर्कराजिह्वांगुडास्यामाविकं बलाम् ॥ इक्षुपादांताम्रपृष्ठींशुचिमुक्ताफलेक्षणाम् ॥ प्रशस्तपांत्र श्रवणांफलदंतमयींशुभाम् ॥ स्निग्दामपुच्छांकुर्वीतनवनीतस्तनान्वि ताम् ॥ सितवस्त्रयुगच्छन्नांघंट्राभरणभूषिताम् ॥ ईदृक्संस्थानसं पन्नांकृत्वाश्रद्धासमन्वितः ॥ कांस्योपदोहनांदद्यात्केशवप्रीयतामि ति ॥ तथाच ॥ उत्तमातिलधेनुःस्यात्सदाभारचतुष्टया ॥ वत्सभा रेणकुर्वीतअर्द्धभारेणवाभवेत् ॥ चतुर्थांशेनवाकुर्य्याद्गृहवित्तानुसा रतः ॥ तुलांपलशतंप्राहुर्भारःस्याद्विंशतिस्तुलेतिभारप्रमाणम् ॥ एवंरचित्वाधूपदीपादिभिरभ्यर्च्यवस्त्रमुक्तादीनि भारतोमानाधिक्ये फलाधिक्यम् ॥ अथ कृत्यम् ॥ आदौयजमानःकृतनित्य क्रियः ॥ गणेशादीन्संपूज्यधेनोःप्रतिकृतिंकृत्वा ॥ विप्रंवस्त्राभरणा दिभिः ॥ संपूज्यप्रदक्षिणीकृत्य अथेत्यादि० ॥ सर्वपापक्षयकाम इमांतिलधेनुंगोत्रायशर्मणेब्राह्मणायसुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददेनममे ति ॥ प्रार्थनामंत्रस्तु ॥ यालक्ष्मीःसर्वभूतानांयाचदेवेष्ववस्थिता॥ धेनुरूपेणसादेवीवांछितंमेप्रयच्छतु ॥ देहस्थायाचरुद्राणांशंकरस्य प्रियासदा ॥ धेनुरूपेणसादेवीवांछितंमेप्रयच्छतु ॥ देहस्थायाच रुद्राणांशंकरस्यप्रियासदा ॥ धेनुरूपेणसादेवीममपापंव्यपोहतु ॥ विष्णोर्वक्षस्थितालक्ष्मीः स्वाहायाचविभावसोः ॥ चंद्रार्कशक्रश क्रियाधेनुरूपास्तुसाश्रियः ॥ चतुर्मुखस्ययालक्ष्मीर्यालक्ष्मीर्धनद स्यच ॥ यालक्ष्मीर्लोकपालानांसाधेनुर्वरंदास्तुमे ॥ स्वधात्वंपितृ

मुख्यानांस्वाहायज्ञभुजांतथा ।। सर्वपापहराधेनुस्तस्माच्छांतिंप्रयच्छमे ।। इत्युक्तादद्यात् ।। एषएवविधिःसर्वधेनूनांप्रत्यक्षधेनूव्यतिरिक्तानांबोद्धव्यः ।। तिलधेनुप्रार्थनाविशेषः ।। तिलाश्चपितृदैवत्यानिर्मिताश्चेहगोसवे ॥ ब्रह्मणातन्मयीधेनुर्दत्तापीणातुकेशवः ॥ अतिमातिलधेन्वादीनांविक्रयाद्युक्तंहेमाद्रौब्रह्मवैवर्ते ।। दानकालेतु देवत्वंप्रतिमानांप्रकीर्तितम् ।। धेनूनामपिधेनुत्वंश्रुत्युक्तंदानयोगतः ।। दातुर्वैदानकालेतुधेनवःपरिकीर्त्तिताः ।। विप्रस्यव्ययकालेतुद्रव्यं तदितिनिश्चयः ।। दानसंबंधिविप्रेणद्रव्यमागच्छतागृहम् ॥ तत्सर्वं विदुषातेनविक्रेयंस्वेच्छयाविभो ।। कुटुंबभरणंकार्य्यंधर्मकार्य्यंच सर्वशः ॥ अन्यथानरकंयातीत्येवमाहप्रितामहः ॥

इति तिलधेनुदानम् ।।

अथ कृसरान्न दानम् ॥ कृसरंतुतंडुलमुद्गसहितम् ।। संपूज्यविप्रंचाभ्यर्च्यअय० सर्वपापक्षयपूर्वकंस्वन्नाद्याभिकाम इदंकृसरान्नम् ।। घृतलवणहरिद्राद्युपस्करयुतम् ।। तिलगुडनिर्मितलड्डुकसहितम् ।। गोत्रायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ मंत्रस्तु ।कृसरं सर्वशीतघ्नंशनिप्रीतिकरंसदा ।। तस्मादस्यप्रदानेनममसंतुमनोरथाः ॥ अथगुडदानम् ॥ गुडंपलषष्टिमितम् ॥ अद्येत्यादि०ममसमस्तपापक्षयपूर्वंकगृहेलक्ष्म्याःस्थैर्य्यसिद्धिकामोगोत्रायशर्मणेसपूजितायेमंगुडंरसब्रह्मदैवतंसदक्षिणंतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति।मंत्रस्तु ।गुडइक्षुरसोद्भूतोमधुवाणांवरोयथा।दानेनानेनचैतस्यपरालक्ष्मीःस्थिरागृहे॥ अथ षोडशफलदानम्॥मकरसंक्रमेसौभाग्यवतीनांविशेषः।दानंषोडशसंख्याकमेकैकस्यफलस्यचैवंषोडशविप्रेभ्योदत्वेप्सितमवाप्नुयात्

अद्येत्यादि० ममसमस्तपापक्षयपूर्वकसकलसौभाग्यपुत्रपौत्रादीप्सि
ताऽनंतफलावाप्तयेदीयमानफलसमसंख्यवर्षसहस्रावच्छिन्नदिव्यां
गनाभिःसहभोगोत्तरानेकसुखावाप्तिकामश्वनानानामगोत्रेभ्यःषोड
शसंख्याकेभ्यइमानिषोडशसंख्याकान्यमुकफलान्येकैकस्मैसगोधू
मतांबूलफलदक्षिणायुतानिवनस्पतिदैवतानिदातुमहमुत्सृजे नममेति
॥ स्त्रीणांतु॥ सौभाग्योत्तरपतिलोकप्राप्तिकामेतिसंकल्पः। दानवाक्यं
तुफलैःषोडशसंयुक्तैःस्वर्णधान्यादिसंयुतम् ॥ द्विजवर्य्यगृहाणत्वंमम
संतुमनोरथाः॥ तत्रैववर्द्धितफलदानम् ॥सतिलंगुडसंयुक्तंरसप्रीति
करंनृणां॥ वर्धितंसंगृहाणेदंमतःशांतिंप्रयच्छमे॥ सौभाग्यवतीनांशूर्प
स्थार्द्रतंडुलदानमंत्रः ॥ तंडुलाःशालिजाःशुक्लाःसार्द्राःसूर्यैव्यवस्थि
ताः।संप्रदानेनवैतेषांशांतिरस्तुसदामम ॥ तथैवपायसपूरितकांस्यपा
त्रदानमंत्रः ॥ सौभाग्यभाजनंकांस्यंपायसान्नेनपूरितं। दानेनानेनसौ
भाग्यंशांतिरस्तुसदामम ॥अस्मिन्मासेरथदानमुक्तम् । तद्विधिस्तुध
नुस्संक्रांतावुक्तमेव माघमासेव्रतेसत्यसतिवातिलकनकयज्ञोपवी
तप्रभृतंचंदनदानंप्रत्यहंकार्य्यं माघेमासितिलाःशस्तास्तिलधेनुस्तथै
वच ॥ तथैंधनादयश्चान्येमाधवप्रीणनायतु ॥

इतिमाघमासः ॥

अथ कुंभसंक्रांतौ ॥ कुंभप्रवेशेदानंतुगवामंबुतृणस्यच।कालच
क्रंतथादद्यादपमृत्युनिवृत्तये ॥ गवामंबुतृणदानंतु ॥ प्रातर्नित्य
कृत्यंविधाय गोमंडलंसंपूज्य अद्येत्यादि० मन्समस्तपापक्षयपूर्वक
गोलोकावाप्तिकामं अद्यारभ्यमासंयावत् गवांपूजनपूर्वंकतृणज
लदानंकरिष्ये मंत्रस्तु रस्यानिशाद्वलानीह तोययुक्तानिगोपते

प्रीतयेतवदास्यामिगोभ्यःपापहरोभवेति ॥ अपमृत्युहरंकालचक्रदानम् ॥ शतपलरौप्यस्यचंद्रबिंबसमंकालचक्रंसमंततोमुक्तादामानेकरश्मियुतंकृत्वा संपूज्यब्राह्मणंचसंपूज्य अद्येत्यादि० ममापमृत्युनिवारणार्थंरौप्यकृतंचंद्राकारमनेकमुक्तामालात्मकरश्मियुक्तंकालचक्रंतुभ्यमहंसंप्रददेनमम दानवाक्यंतु इदंमेराजतंचक्रमिंदुरश्मिसमाकुलम् ॥ अपमृत्युविनाशायदत्तमायुर्विवृद्धयेततःसुवर्णदक्षिणांदत्वाग्निंप्रतिष्ठाप्य ॥ ॐकालचक्रायस्वाहा ॥ इतिमंत्रेणाष्टोत्तरशतवारंघृताक्ततिलैर्हुत्वा ॥ पायसादिनाद्वादशब्राह्मणान्भोजयित्वा ॥ स्वयमक्षारलवणंसकृद्भुंजीत ॥ अस्मिन्मासेफाल्गुनेव्रीहियोगावोवस्त्रंकृष्णाजिनान्वितम् ॥ गोविंदप्रीणनार्थाय दातव्यंविधिपूर्वकम् ॥ व्रीहिदानमंत्रः ॥ व्रीहीतिधान्यकंसवल्कलंतंडुलकमिति ॥ ब्रह्मणानिर्मिताःपूर्वंव्रीहयोयज्ञसाधनाः ॥ अनेनव्रीहिदानेनममसंतुमनोरथाः ॥ अथ स्वरूपतोगोदानम् ॥ गौरेकस्यैवदातव्याश्रोत्रियायकुटुंबिने । साहितारयतेपूर्वान्सप्तसप्ततिसप्तच ॥ सुशीलांलक्षणवतींयुवतींवत्ससंयुताम् ॥ बहुदुग्धवतींस्निग्धांधेनुंदद्याद्विचक्षणे ॥ तत्र कर्त्ताकृतनित्यक्रियः ॥ पुण्यकाले ॥ अद्येत्यादि० ॥ यथाशक्तियथाज्ञानंगोदानमहंकरिष्येइतिसंकल्प्य ॥ सवत्सांधेनुंद्विजंचयथाविभवंसंपूज्य ॥ गोशृंगमूलादिस्तनांतस्थानादिषुदेवताःपूजयेत् ॥ तद्यथा ॥ शृंगमूलेब्रह्मविष्णुभ्यांनमः ॥ ब्रह्मविष्णूपूजयामि ॥ शृंगाग्रेसर्वतीर्थेभ्योनमः ॥ सर्वतीर्थानिपूजयामि ॥ एवंसर्वत्र । शिरोमध्येशिवाय० ललाटेरुद्रेभ्यै० नासिकायांषण्मुखाय० नासापुटेकंबलाश्वतरनागा

भ्यां० कर्णयोरश्विभ्यां० चक्षुषोः शशिभास्कराभ्यां० दंते
भ्यवायवे० जिह्वायांवरुणाय० हुंकारेसरस्वत्यै० गंडयोःपक्ष
मासाभ्यां० ओष्ठयोः संध्यायाभ्यां० ग्रीवायामिंद्राय० कुक्षिदे
शेरक्षोभ्यो० उरसिसाध्येभ्यो० पादेषुधर्माय० जंघासुअधर्माय०
खुरमध्येगंधर्वेभ्यो० खुराग्रेपन्नगेभ्यो० अप्सरोभ्यो० पृष्ठेएकादशरु
द्रेभ्यो० सर्वसंधिषुवसुभ्यो० श्रोणितटेपितृभ्यो० लांगूलेसोमाय०
गुह्येआदित्यरश्मिभ्यो० गोमूत्रेगंगायै० गोमयेयमुनायै०क्षीरेसरस्व
त्यै० दध्निनर्मदायै० घृतेअग्नये० रोमस्वष्टाविंशतिदेवकोटिभ्यो०
उदरेपृथिव्यै० पयोधरेषुचतुः समुद्रेभ्यो० एतादेवता अंगेषुसंपूज्य
अद्येत्यादि०गोत्रायशर्मणेसुपूजितायपृथ्वीदानसमफलकामः सर्वपा
पक्षयकामोविष्णुप्रीतिकामोवाइमांप्रत्यक्षधेनुंसुवर्णशृंगींरौप्यखुरां
ताम्रपृष्ठींघंटाग्रैवेयांमुक्तालांगूलांकांस्योपदोहांसितवस्त्रद्वयोपेतांसर्वा
भरणभूषितांसोपस्कारांरुद्रदैवत्यांतुभ्यमहंसंप्रददे नममेतितिलपात्रेघृ
ताक्तंगोपुच्छंकृत्वाविप्रहस्तेसतिलकुशोदकंदद्यात्।मंत्रस्तु। यज्ञसा
धनभूतायाविश्वस्याघौघनाशिनी ॥ विश्वरूपधरोदेवःप्रीयतांमनया
गवा ॥ ततोदातादानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थंसुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ नमो
गोभ्यःश्रीमतीभ्यःसौरभेयीभ्यएवच ॥नमोब्रह्मसुताभ्यश्चपवित्राभ्यो
नमोनमः ॥ पूजितासिवशिष्ठेनविश्वामित्रेणधीमता ॥ सुरभेहरमे
पापंयन्मयादुष्कृतंकृतम् ॥ गावोममाग्रतःसंतुगावोमेसंतुपृष्ठतः ॥
गावोमेहृदयेसंतुगवांमध्येवसाम्यहम् ॥ इतिपठित्वाधेनुंविप्रहस्ते
दत्वा ॥ तौप्रदक्षिणीकृत्यकिंचिदनुव्रजेदितिगोदानम् ॥ अथ
वस्त्रसहितकृष्णाजिनदानम् ॥ कृष्णाजिनंचमहिषीमेषीचदश

धेनवः ॥ ब्रह्मलोकप्रदायिस्यात्तुलापुरुषएवच ॥ तथाच वैशाखी पौर्णमासीचग्रहणेशशिसूर्य्ययोः ॥ पौर्णमासीतुयामाघेआषाढी कार्त्तिकीतथा ॥ उत्तरायणंद्वादशीवातस्यांदत्तंमहाफलमिति ॥ अथ प्रयोगः ॥ गोमयोपलिप्तदेशेआविकंकंवलंतदुपरि सशृंगंसखुरम् ॥ प्राग्ग्रीवंकृष्णाजिनमास्तीर्य्यसुवर्णखुरंरौप्यदंतं मौक्तिकपुच्छंसुवर्णनाभंकृत्वातदुपर्य्यरत्निप्रमाणांस्तिलान्संस्थाप्य वाससाच्छाद्यसगंधरत्नानिचत्वारिकांस्यपात्राणिघृतदुग्धदधिमधुयु तानिचत्वारोमृदश्चप्रागादिदिक्षुदानदेशाद्बहिश्चंपकशाखास्वव्रणंकुंभं चसंस्थाप्य ॥ देशकालौसंकीर्त्य ॥ ममसमस्तजन्मोपात्तपापनाश कमात्मपितृपुत्रापमृत्युपरिहारभाग्यधनदेशायवियोगकामः ॥ सकलेष्टफलावाप्तिब्रह्मलोकावाप्तिकामश्चकृष्णाजिनदानमहंकरिष्ये ॥ इतिसंकल्प्य ॥ जीर्णपीतवाससास्वांगानिसंमृज्य यानिकानि चपापानिमयालोभात्कृतानिच ॥ लोहपात्रप्रदानेनप्रणश्यंतुममा शुवै ॥ इतिमंत्रेणसतिलंलोहपात्रंकृष्णाजिनस्यवामपार्श्वेनिवेशयेत् ॥ यानिकानिचपापानिकर्णोत्थानिकृतानिच ॥ कांस्यपात्रप्रदा नेनतानिनश्यंतुमेसदा ॥ इतिमंत्रेणमधुमयंकांस्यपात्रंकृष्णाजिन स्यदक्षिणपादेनिवेश्य ॥ परापवादपैशून्यादभक्ष्यस्यचभक्षणात् ॥ यदुत्थितंतुमेपापंताम्रपात्रात्प्रणश्यतु ॥ इतिमंत्रेणसतिलंताम्रपात्रं वामहस्तेनिवेश्य । मयाजन्मसहस्रेषुकृतंपापंप्रबुद्धिना ॥ सुवर्णपात्र दानात्तन्नाशयाशुजनार्दन ॥ इतिमंत्रेणसाक्षतहैमपात्रंमध्येनिवेश्य ॥ कन्यानृतंगवांचैवपरदारप्रमर्शनम् ॥ रौप्यपात्रप्रदानेनक्षिप्रंनाशं प्रयातुमे ॥ इतिमंत्रेणमधुमयंराप्यपात्रम् दक्षिणहस्तेनिवेश्य ॥

तथा ॥ हेममुक्ताविद्रुमदाडिममातुलिंगानिनिधाय ॥ प्रशस्तपात्रे कर्णयोःसंस्थाप्य द्विजंवृत्वायथाविभवंवस्त्रालंकारादिभिःसंपूज्य पुनर्देशकालौसंकीर्त्य ममसमस्तजन्मोपात्तादित्रह्मलोकावाप्त्यंतमु क्तागोत्रायशर्मणेसुपूजितायतृप्तायइदंकृष्णाजिनंयथाशक्तिसोपस्क रंवृषभध्वजप्रीतये तुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ एतद्दक्षिणापरि माणसुवर्णनिष्कशतंतदर्द्धंवा ॥ ततोन्यूनत्वेनाधिकफलम् ॥ अस्पृश्यःसद्विजोज्ञेयश्चितिसूपसमोहिसः॥दानेचश्राद्धकृत्येचदूरतःप रिवर्जयेत् ॥ स्वगृहान्प्रेष्यतंविप्रंमंगलंस्नानमाचरेत् ॥ तद्वस्त्रंकुंभ सहितंनीत्वाक्षिपेत्चतुष्पथेइति ॥ ततोभूयसींदक्षिणांदत्वाशिषोगृह्णी यात् ॥ दानेनानेनसकलारिष्टपापनाशोभूमिदानफलंचेति ॥ हो मांदिविशेषस्तुग्रंथांतरादवगम्य ॥ इतिकृष्णाजिनदानम् ॥ इतिफा ल्गुनमासः ॥ अथमीनसंक्रमे ॥ मीनप्रवेशेस्थानानिमाल्यानिच ददातियः॥अजाःपंचपयस्विन्योदरिद्रायकुटुंबिने॥नजायतेपुनरसौ जीवलोकेकदाचन ॥अत्रस्थानशब्देनधर्मशालामंडपवेदिकादयोज्ञा यंते ॥ तथाचात्रप्रथमंधर्मशालायायथा ॥ कुर्यात्प्रतिश्रयगृहंपथि कानांहितावहम् ॥ निजगेहैकदेशंवासाधूनांयोनिवेदयेत् ॥ प्रति श्रयोधर्मशाला॥तथा॥अक्षय्यंपुण्यमुद्दिष्टंतस्यस्वर्गापवर्गदम् ॥सर्व कामसमृद्धोसौदेववद्दिविमोदते ॥ ग्रंथांतरे ॥ प्रतिश्रयेसुविस्तीर्णे कारितेसजलेंधने ॥ दीनानाथजलार्थायवदकिंनकृतंभवेदिति ॥ ॥ पुष्पदानमंत्रः ॥ मनोहराणिपुष्पाणिसदादेवप्रियाणिच ॥ अ तस्तेषांप्रदानेनममसंतुसुराःप्रियाः इति ॥ अथ अजादानम् ॥ अ यनेविषुवेचैवयुगादौग्रहणेषुच ॥ दर्शद्वयेअजादानंतथामीनगतेरवाः

विति॥अजापंचकंएकैकंवाविप्रंचवस्त्रालंकारादिभिःसंपूज्यअद्येत्या दि०गोत्रायशर्मणेइमामजांइदमजापंचकंवा धान्योपरिस्थितांवस्त्र माल्योपशोभितांवज्रने त्रांहेमशृंगींताम्रपृष्ठींरौप्यपादाम् सदोह हनपात्रांत्वाष्ट्रदैवतांतुभ्य महंसंप्रददेनममेति ॥ कुक्षौतिलोदकंदत्वा दद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ मंत्रवासेअजेश्लक्ष्णेयज्ञसंपत्करेशुभे ॥ सदा त्वंदहमेपापंजन्मांतरशतैःकृतम्॥तथाच॥त्वंपूर्वंब्रह्मणासृष्टापवित्रा कामदापरा । त्वत्प्रसूतौस्थितायज्ञास्तस्माच्छांतिंप्रयच्छमे ॥ देव स्येत्वेतिशृंगेप्रतिग्रहः॥ततःसुवर्णंदक्षिणांदद्यात्॥ अस्मिन्मासे ॥ वासंतीकामपूजायाम् । पूजायाअसंभवेवानित्यंहरिद्रासिंदूरकस्तूरी कर्पूरसुगंधिद्रव्यदानंकार्य्यम्॥तत्रादौहरिद्रादानमंत्रः ॥ हरिद्रासर्व मांगल्यानित्यंसौभाग्यवर्द्धिनी ॥ दानेनास्याःपापनाशंममजन्मनि जन्मनि।कुंकुमस्य।कुंकुमंशोभनंरम्यंसर्वदामंगलप्रदम् ॥ दानेनास्य महत्सौख्यंसौभाग्यंस्यात्सदामम । सिंदूरस्य । सिंदूरंशोभ नंरम्यंगणेशस्यप्रियंकरम् ॥ दानेनास्यपरालक्ष्मीःस्थिरामेचास्तुसं तातिः॥ कस्तूरिकायाः॥ कस्तूरीभाग्यदाभव्यादेवमर्त्यजनप्रिया। दा नेनास्याःसुखंभोगःशांतिरस्तुसदामम॥ कर्पूरस्य॥कर्पूरंशीतलंचारु देवर्षिगुरुसेवितम् ॥ तस्मादस्यप्रदानेनलक्ष्मीस्तिष्ठतुमद्गृहे ॥ ना नासुगंधिद्रव्यस्य ॥ गंधोमनोहरोदिव्यःशांतिदःसुखदस्तथा ॥ त स्मादस्यप्रदानेनसुगंधःस्यात्सदामम॥ अथ वासंतिकेदेवोपरिगलंति कादानम् ॥ वसंतसमयंज्ञात्वागत्वादेवालयंशुभम् ॥ शिवस्य विष्णोरर्कस्यइष्टदेवस्यवापुनःस्नपंतंकारयेत्कुंभसच्छिद्रंदेवमस्तकेदि वारात्रौस्नपवेदेवंजलंमासचतुष्टयम्॥स्नपत्तद्विंदुसंख्याकान्स्वर्गलोके

महीयते ॥ अथप्रयोगः ॥ शुभदिनेस्थिरलग्नादौकृतनित्यक्रियः॥ ॥ आचम्यप्राणानायम्य ॥ अद्येत्यादि०देवशिरसिस्नवज्जलबिं दुसमसंख्याकाब्द शिवपुरादिनिवासकामोमासचतुष्टयंदिवारात्रौ चदेवगलंतिकादानंकरिष्ये ॥ इतिसंकल्प्यप्रासादंसम्यक्प्रक्षाल्य देवंपंचामृताद्युपचारैरभ्यर्च्यदेवगलंतिकांबध्नीयात् ॥ मंत्रस्तु ॥ ॐ नमःशंकरःशंभुर्भवोधाताशिवोहरः ॥प्रीयतांमेमहारुद्रोजलसेक प्रदानतः ॥ एवंमासचतुष्टयंदेवगलंतिकादानंकृत्वा ॥ अंतेप्येवंपंचा मृतादिपूजांकृत्वायथाशक्तिब्राह्मणान्भोजयित्वातेभ्योदक्षिणांचद यादिति ॥ त्रयाणामपिजीवानांमुदकंजीवनंस्मृतम् ॥ पवि त्रममृतंयस्मात्तद्देयंपुण्यमिच्छता ॥ तथाच ॥ चैत्रेचित्राणिवस्त्रा णिशयनान्यासनानिच। विष्णोःप्रीत्यर्थमेतानिदेयानिब्राह्मणेष्वथ। दासीदासोह्यलंकारश्चान्नंषड्रससंयुतम्॥पुरुषोत्तमस्यतुष्टयर्थंप्रदेयंसा र्वकालिकम्॥यद्यदिष्टतमंकिंचियच्चाप्यस्तिशुभंगृहे ।तद्धिदेयंचभी त्यर्थंदेवदेवस्यचक्रिणः ॥अथमलमासेदानानि ॥ साज्यपात्रान् सहगुडान्नत्रयत्रिंशदपूपकान् ।कांस्यपात्रेविनिक्षिप्यसुवर्णेनसमन्वि तान्। उपानच्छत्रसंयुक्तान् विप्रायविनिवेदयेत् ॥ हेमाद्रौविशेषः अधिमासेतुसंप्राप्तेगुडसर्पिर्युतानिच ।चंद्रवद्वर्त्तुलान्यंगत्रीहिपिष्टकृता निच॥साज्यानिदधिमिश्राणिअधिमासेनृपोत्तम ॥अत्रत्रिंशदपूपानि दातव्यानिदिनेदिने॥व्यतीपातदिनेयद्वाद्वादश्यामथवानृप। पौर्णमा स्याममायांचनवम्यांवानृपोत्तम। अष्टम्यामथपंचम्यांकुर्य्याद्व्रतमनु त्तमं।अधिमासेतुसंप्राप्तेत्रयस्त्रिंशत्तुदेवताः।उद्दिश्यापूपदानेनपृथ्वीदान फलंलभेत्॥देवतानामानितुभविष्ये ॥विष्णु १जिष्णु २महाविष्णु ३

हरिं ४ कृष्ण ५ मधोक्षजम् ६ ॥ केशवं ७ माधवं ८ राम ९ मच्युतं १० पुरुषोत्तमम् ॥ ११ गोविंदं १२ वामनं १३ श्रीशं १४ श्रीकंठं १५ विश्वसाक्षिणम् ॥ १६ नारायणं १७ मधुरिपु १८ मनिरुद्धं १९ त्रिविक्रमम् ॥ २० वासुदेवं २१ जगद्योनि २२ मनंतं २३ शेषशायिनम् ॥ २४ संकर्षणंच २५ प्रद्युम्नं २६ दैत्यारिं २७ विश्वतोमुखं २८ जनार्दनं २९ धरावासं ३० दामोदर ३१ मधार्दनम् ३२ ॥ श्रीपतिंच ३३ त्रयस्त्रिंशदुद्दिश्यप्रीतिनामभिः । त्रयस्त्रिंशदपूपानिकांस्य पात्रेनिधायच । सघृतंसहिरण्यंचब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ अथेत्यादि० ममसमस्तपापक्षयपूर्वकसर्वसंपत्सिद्धये विष्ण्वादिश्रीपत्यंताःत्रयस्त्रिंशद्देवताउद्दिश्यश्रीपुरुषोत्तमभास्करप्रीतिकामश्चगोत्रायशर्मणेसुपूजितायइदंवायनकंत्रयस्त्रिंशदपूपोपेतंकांस्यपात्रसुवर्णघृततांबूलदक्षिणादिसोपस्करं श्रीविष्णुरूपायब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददेनममेतिदद्यात् ॥ दानमंत्रस्तु । विष्णुरूपीसहस्रांशुःसर्वपापप्रणाशनः अपूपान्नप्रदानेनममपापंव्यपोहतु ॥ नारायणजगद्बीजभास्करप्रभिरूपक ॥ दानेनानेपुत्रांश्चसंपदंचापिवर्द्धय ॥ यस्यहस्तेगदाचक्रेगरुडोयस्यवाहनः ॥ शंखःकरतलेयस्यसमेविष्णुःप्रसीदतु ॥ कलाकाष्ठादिरूपेणनिमेषघटिकादिना ॥ योवंचयतिभूतानितस्मैकालात्मनेनमः ॥ कुरुक्षेत्रमयंदेशः सूर्य्यपर्वद्विजोहरिः पृथ्वीसममिदंदानंगृहाणपुरुषोत्तम ॥ मलानांच विशुद्ध्यर्थंपापप्रशमनायच । पुत्रपौत्रविवृद्ध्यर्थंप्रदत्तंतवभास्कर ॥ मंत्रैरेतैश्चयोदद्यात्रयस्त्रिंशदपूपकान् ॥ प्राप्नोतिविपुलांलक्ष्मींपुत्रपौत्रादिसंपदमिति ॥ एतन्मलमासव्रतंतुदानरूपंसर्वेषांनित्यम् ॥ मलमासंयदाप्राप्यसंध्योपासनतर्पणम् श्राद्धादिनियमंजाप्यंनिष्फलं

तद्व्रतंविना ॥ इतिमलमासेदानम् ॥ क्षयमासेपिमलमासोक्तदानान्येवकुर्य्यात् ॥ व्रतविधानंतुव्रतखंडेद्रष्टव्यम् ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहे संक्रांतिसहितमासदानविधिर्नामपंचमः कोशः ॥ ५ ॥

---

अथतिथिपरत्वेनपर्वदानविधानम् ॥तत्रादौप्रतिपद्दानविधौ चैत्रशुक्लप्रतिपदिनवरात्रारंभस्तत्रप्रपादानम्अतीतेफाल्गुनेमासिप्राप्ते चैत्रमहोत्सवे।पुण्येह्निविप्रकथितेप्रपादानंसमारभेत्।अनिर्वार्यंततोदेयंजलंमासचतुष्टयंपुरमध्येचतुष्पथेजलरहितमागस्त्यवृक्षमूलेप्रपामंडपंकारयित्वातन्मध्येसुगंधकान्जलकुंभान्संस्थाप्यप्रपापालकंबटुपुत्रंसंस्थाप्यप्रार्थयेत् ॥प्रपेयंसर्वसामान्याभूतेभ्यःप्रतिपादिता अस्याःप्रदानात्सकलाममसंतुमनोरथाः ॥इति॥प्रत्यहंकारयेत्तस्यांगोजयेच्छक्तितोद्विजान् ॥अनेनविधिनायस्तुग्रीष्मेतापप्रणाशनम्॥पानीयमुत्तमंदद्यात्तस्यपुण्यफलंशृणु ॥ कपिलाशतदानस्यसम्यग्दत्तस्ययत्फलम्।तत्फलंसमवाप्नोतिसर्वदेवैःसुपूजितः।इति।प्रपादातुमशक्तेनविशेषाद्धर्ममीप्सुना॥प्रत्यहंधर्मघटकोवस्त्रसंवेष्टिताननः ॥ब्राह्मणस्यगृहेदेयःशीतामलजलश्शुचिः॥तत्रमंत्रः।एषधर्मघटोदत्तोब्रह्माविष्णुशिवात्मकः।।अस्यप्रदानात्सकलाममसंतुमनोरथाः॥इति।।अनेनविधिनायस्तुधर्मकुंभंप्रयच्छति॥प्रपादानफलंसोपिप्राप्नोतीहनसंशयः॥अस्यविधानंमेषसंक्रमविधानेद्रष्टव्यं॥ अथाद्यामारभ्यनवमीपर्य्यंतंदुर्गाप्रीतिकराणिदानानि ॥ अथमणिकदानम् ॥ मणिकंमृन्मयंपाकपात्रविशेषम् ॥ ग्रीष्मप्रवेशेमणिकं ददातिद्विजसद्मनि ॥ योंबुपरितमाप्नोतिसतडागकृतंफलम् । प्रपादातुमशक्तेनविशेषंधर्ममी

प्लुता ॥ मणिकंसजलंगंधपुष्पाद्यैरुपशोभितम् ॥ दद्यादितिशेषः पूजामंत्रस्तु ॥ आपोनाराइतिप्रोक्ताआदित्यवरुणोयमः ॥ मणिकंपृथिवीसर्वदातुः शांतिंप्रयच्छमे॥दानवाक्यंतु ॥ ॐआपःपवित्रं लोकानामप्सुसुतोजनार्द्दनः॥मणिकाप्सुप्रदानेनप्रीयतांजलशायिकः देवीपुराणे॥नारिकेलफलादीनिनवकंनवकंप्रिये । ताम्रमृन्मयपात्राणिसपयांसितथैवच ॥ वंशपात्राणिवस्त्राणिभक्ष्यभोज्यान्वितानिच यदिवातिलपात्राणिमृत्पात्राण्यथवापुनः ॥ अथवाचान्यपात्राणि पञ्चामृतभृतानिच ॥ सौभाग्यपात्राण्यथवाकुंकुमादिभृतानिच ॥ दुर्गादेवीप्रीयतामित्युक्त्वादानमाचरेत् ॥ दुर्गादेवीप्रसन्नास्यादिति संप्रार्थयेत्ततः ॥ इत्येवमाश्विनशुक्लप्रतिपदिच ॥ अथकार्तिकशुक्लप्रतिपदिधान्यशैलदानम् ॥ तत्रादौदशाचलसंज्ञा । प्रथमोधान्यशैलःस्याद्द्वितीयोलवणाचलः ॥ गुडाचलस्तृतीयः स्याच्चतुर्थो हेमपर्वतः ॥ तिलशैलःपंचमःस्यात्षष्ठःकार्पासपर्वतः ॥ सप्तमोघृतशैलःस्यादष्टमोरत्नपर्वतः ॥ नवमोराजतःशैलोदशमःशर्कराचल इति ॥ अयनेविषुवेचैवव्यतीपातेदिनक्षये ॥ शुक्लपक्षेतृतीयाया मुपरागेशशिक्षये ॥ विवाहोत्सवयज्ञेषुद्वादश्यामथवापुनः ॥ शुक्लायांपंचदश्यांवापुण्यर्क्षेपुण्यवासरे ॥ अन्येषुपुण्यकालेषुदातव्यानिविधानतः ॥ तीर्थेवायतनेवापिगोष्ठेवाथगवांगणे ॥ तत्रादौ धान्यशैलविधिः ॥ तत्रचतुरस्रंद्वादशहस्तंमंडपमुदङ्मुखंप्राङ्मुखं वाप्राच्यामुदीच्यांवाएकमेवद्वारंनचत्वारि तोरणमप्येकमेव ॥ मंडलंगोमयेनोपलिप्यकुशानास्तीर्य्यतन्मध्येपर्वतंकुर्य्यात् ॥ विष्कुंभैःपर्वतैर्युक्तम् ॥ धान्यद्रोणसहस्रेणभवेद्रिरिरहोत्तमः ॥ मध्य

मः पंचशतकः कनिष्ठः स्यात्त्रिभिःशतैः ॥ मेरुर्व्रीहिमयोमहान्मध्ये ॥ तदुपरिमंदारपारिजातककल्पवृक्षादयोहेममयाश्रयः ॥ मध्येकल्प तरुर्मंदारपारिजातौदक्षिणोत्तरयोः पूर्वपश्चिमयोर्हरिचंदनसंतानौ मुक्ताफलवज्रगोमेदकपुष्परागगारुत्मतनीलरत्नवैडूर्य्य सरोजरागर त्नानिद्वंद्वशः ॥ पूर्वादिदिगवस्थितरजतशृंगेषुचतुर्षुनिवेश्यानि मंदारः ॥ श्रीखंडखंडैरभितःप्रवालल्लतान्वितःशुक्तिशिलातलःस्या त् ॥ शर्कराचलेतुहरिचंदनसंतानौआवश्यकौ ॥ तत्रपूर्वादिदि क्षुब्रह्मविष्णुरुद्रसूर्य्यप्रतिमाः ॥ पक्षिसंघान्मुनिसंघांश्चहैमान्प्रागा दिदिक्चतुष्टयेक्रमेणपूर्वोक्तमुक्ताफलहीरकैर्गोमेदपुष्परागैर्मरकत नीलवैडूर्य्यपद्मरागैः ॥ समसंख्याकैर्भूषितंरौप्यशृंगचतुष्कंतद्वहिर्दि गष्टकेरौप्यमिंद्रादिलोकपालप्रतिमाष्टकम् ॥ समंताच्छ्रीखंडैर्लता नांस्थानेप्रवालशिलानांशक्तीः॥ प्रागादिषुमेघानांश्वेतपीतकर्बुररक्त वस्त्राणिवशानामिक्षून्जलस्यघृतगंधपुष्पनानाफलानिचपरितः ॥ संस्थाप्यपंचवर्णवितानकंचोपरिबध्नीयात् ॥ ततोयवैर्मेरोःषोड शांशेनप्राच्यांमंदारंतदुपरिनररूपंगणत्रयंकदंबकंचसौवर्णंकदंबमूले हैमःकामदेवःअरुणोदसरः ॥ स्थानेदुग्धपूर्णरौप्यपात्ररौप्यंचैत्रर थाख्यंवनम् ॥ गंधपुष्पफलवस्त्राणिचस्थापयेत् ॥ याम्येमेरुषोड शांशेनगोधूममयगंधमादनंतदुपरिसौवर्णंजंबुवृक्षम् ॥ तन्मूलेसौ वर्णमुदङ्मुखंधनदंमानससरः स्थानेसघृतंरौप्यपात्ररौप्यगंधर्वाख्य वनम् नानाफलवस्त्रमाल्यानिचस्थापयेत् ॥ पश्चिमेमेरुषोडशां शेनतिलमयंविपुलाख्यंपर्वतंतदुपरिसौवर्णंपिप्पलम् ॥ तन्मूलेप्रा ङ्मुखींसौवर्णहंसप्रतिमांसितोदसरः स्थानेदधिपूर्णरौप्यपात्रम् रौ

प्यंवैभ्राजंवनंवस्त्रफलमाल्यानिचस्थापयेत् ॥ उत्तरेमेरुषोडशांश मितमाषैः ॥ सुपार्श्वपर्वतंतदुपरिसौवर्णंवटंतन्मूलेदक्षिणाभिमुखीं सुवर्णधेनुंभद्रसरःस्थानेमधुपूर्णरौप्यपात्रंसावित्रंवनंवस्त्रफलमाल्यानि चस्थापयेत् ॥ एवंलवणादिनवपर्वतेष्वपिमेरुद्रव्यचतुर्थांशेनलवणा दिद्रव्येणप्रागादिषुविष्कुंभपर्वताःज्ञेयाःतत्राचार्य्यस्त्वेकःऋत्विजश्च त्वारः प्राच्यामेकमेवकुंडमितितत्रैवजुहुयुः ॥ अथयजमानःकृत नित्यक्रियः पुण्यकालेअयेत्यादि०अप्सरोगंधर्वयुतविमानकरणक स्वर्गलोकगमनसाग्रमन्वंतरकालंदेवलोक निवासोत्तरभूलोकराजरा जत्वकाम ईश्वरप्रीतिकामोवाश्वधान्यपर्वतदानंकरिष्ये ॥ इतिसं कल्पः ॥ तदंगत्वेनगणेशपूजननांदीश्राद्धानिचकृत्वा आचार्य्यमृ त्विजश्चवृत्वामधुपर्कादिनासंपूज्य मंडपपूजनायाचार्य्यनियोगांतंकु र्यात् ॥ ततआचार्य्योनवग्रहस्थापनादिकुंडसमीपस्थितकलशस्था पनांतंकुर्यात् ॥ अथाचार्य्यः॥प्राक्कुंडेनवग्रहादिद्वात्रिंशद्देवताभ्य स्तत्तन्मंत्रैर्घृताक्ततिलैःपृथक्यवघृताभ्यांकुशैश्चेतित्रिभिः साधनैःप्र त्येकमष्टवारंहुत्वा दशलोकपालेभ्योष्टवसुभ्यएकादशरुद्रेभ्योद्वाद शादित्येभ्यश्चप्रत्येकमष्टाष्टसंख्ययासमिच्चर्वाज्याहुतिभिर्जुहुयुः ॥ ततःपुरुषसूक्तेनब्रह्मविष्णुरुद्रेभ्यः समित्तिलैर्वासूर्य्यकामदेवधन दहंसकामधेनुभ्यस्तिलैर्घृतेनवाअष्टोत्तरशतंजुहुयुः ॥ ततश्चतुः पंचाशद्देवताभ्यस्तिलैर्घृतेनच॥ ततोयजमानोमेरुमवरुह्यपूजयेत्॥ तत्रमंत्रः ॥ त्वंसर्वदेवगणधामनिधिर्विरुद्धमस्मद्गृहेष्वमरपर्वतनाश याशु ॥ क्षेमंविधत्स्वकुरुशांतिमनुत्तमानः संपूजिताःपरमपाहि सनातनत्वम् ॥ त्वमेवभगवानीशोब्रह्माविष्णुर्दिवाकरः ॥ मूर्त्ता

मूर्तपरंबीजमतःशांतिंकुरुप्रभो ॥ यस्मात्त्वंलोकपालानांविश्वमूर्त्तेश्च मंदिरम् ॥ रुद्रादित्यवसूनांचततःशांतिंप्रयच्छमे ॥ यस्मादशून्य ममरैर्नारीभिश्चशिरस्तव ॥ तस्मान्मामुद्धराशेषदुःखसंसारसागरात् ॥ मंत्रस्तु ॥ यस्माच्चैत्ररथेनत्वंभद्राश्वप्रमुखेनच ॥ शोभसेमंदरक्षिप्रमलंपुष्टिकरोभव ॥ गंधमादनस्य ॥ यस्माच्चूडामणि र्जंबूद्वीपेत्वंगंधमादन ॥ गंधर्ववनशोभावानतःकीर्तिर्दृढास्तुमे ॥ विपुलस्य ॥ यस्मात्त्वंकेतुमालेनवैभ्राजेनवनेनच ॥ हिरण्मयाश्व त्थशिरास्तथापुष्टिर्दृढास्तुमे ॥ सुपार्श्वस्य ॥ उत्तरैःकुरुभिर्यस्मा त्सावित्रेणवनेनच ॥ सुपार्श्वशोभसेनित्यमतःश्रीरक्षयास्तुमे ॥ ततःसर्वैर्जागरणेकृतेप्रातःस्नात्वाकृतनित्यक्रियः कुंडसमीपस्थकल शजलेनसपरिवारंयजमानमभिषिंचेयुः ॥ ततोयजमानोगृहीतकुसु मोमेरुंप्रदक्षिणीकृत्योपविष्टेत् ॥ अन्नंब्रह्मरसःप्रोक्तमन्नेप्राणाःप्रति ष्ठिताः ॥ अन्नाद्भवंतिभूतानिजगदन्नेनवर्द्धते ॥ अन्नमेवयतोलक्ष्मी रन्नमेवजनार्दनः ॥ धान्यपर्वतरूपेणपाहितस्मान्नमोनमः ॥ इत्युप स्थायपुष्पांजलिंप्रक्षिप्य नमस्कृत्यप्राङ्मुखोपविश्योदङ्मुखेभ्यो गुर्वादिभ्यःक्रमेणगिरीन्दद्यात् ॥ अथेत्यादि० ॥ गोत्रायश र्मणेसालंकृतायगुरवेअप्सरोगंधर्वयुतविमानकरणकस्वर्गलोकगमना नंतरंसाग्रमन्वंतरशतावधिसमयदेवलोकनिवासोत्तरभूलोकराजा र्जत्वकामइमंधान्यमयंमेरुपर्वतम् सौवर्णमंदरादिवृक्षपंचकसौवर्ण ब्रह्मविष्णुरुद्रार्कादिप्रतिमायुक्तंमुक्ताहीरकादिभूषितम् रौप्यमयशृं गचतुष्कोपशोभितंरूप्यमयेंद्रादिदशलोकपालप्रतिमायुतम् रौ प्यमयनितंबान्वितम् इक्षुवंशमितकंदरादिकृचतुष्टयस्थापितरौप्य

पात्रस्थितंघृतोदकप्रस्रवणम् दिक्चतुष्टयस्थापितकर्पूररक्तवस्त्रांबु दधरंनानाफलवितानाद्युपकरणसाहितंतुभ्यमहंसंप्रददेनममेतिदद्यात्। चतुर्विंशतिधेनुपक्षे गावोष्टौगुरवे चतस्रश्चतुर्ऋत्विग्भ्यःदशपक्षेतु ॥ गुरवेषट्ऋत्विग्भ्यःएकैका एकधेनुपक्षेगुरवेएकामेवकपिलां ऋत्विग्भ्यःसुवर्णदक्षिणांदद्यादितिमदनरत्नादयः ॥ एवंपूर्वस्थितमंदराख्यंविष्कुंभसप्रतिमंसोपस्करम् गोत्रायशर्मणे ऋत्विजे तुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिदद्यात् ॥ एवमेवदक्षिणस्थंगोधूममयंगंधमादनम् तथापश्चिमस्थंतिलमयंविपुलाख्यंपर्वतम् ततउत्तरस्थंमाषमयंसुपार्श्वाख्यंऋत्विग्भ्योदद्यात् ॥ लवणाचलादिदानप्रयोगेषुधान्यपदस्थानेलवणादिपदंक्षेप्यम् ॥ तत्तत्फलानितुतत्रतत्रवक्ष्यामः ॥ ततोग्रहवेद्यांयजमानोदेवताःसंपूज्यावाहितदेवताश्चसंपूज्यनमस्कुर्य्यात् ॥ गुरुस्तासांदेवतानांविसर्जनंकुर्य्यात् ॥ ततोयजमानोमंडपग्रहपीठंप्रतिमोपस्करादिसर्वंगुरवेप्रतिपाद्य भूयसींदक्षिणांदत्वा प्रमादा० यस्यस्मृत्या० पठित्वाविष्णुंस्मृत्वा कर्मेश्वरार्पणंकृत्वाब्राह्मणान्भोजयित्वाशिषोगृह्णीयात् ॥ स्वयंसुहृद्युक्तोभुंजीतेति ॥ इतिधान्यमेरुपर्वतदानप्रयोगः ॥ दशाचलदानानियस्मिन्कस्मिन्पर्वे भवंति ॥ प्रसंगात्समस्ताचलदानविधानमत्रैव ॥ अथ लवणाचलदानम् ॥ उत्तमःषोडशद्रोणःकर्त्तव्योलवणाचलः ॥ मध्यमःस्यात्तदर्द्धेनचतुर्भिरधमःस्मृतः ॥ वित्तहीनोयथाशक्त्याद्रोणादूर्द्धंतुकारयेत् ॥ चतुर्थांशेनविष्कुंभपर्वतान्कारयेत्पृथक् ॥ अयंन्यायः ॥ सर्वविष्कुंभपर्वतेषुज्ञेयः ॥ विधानंतुधान्यशैलवत् ॥ हेमतरून्लोकपालान्कामदेवादीन्धान्याचलवत् तथैवसंपूज्यप्रार्थयेत् ॥ मंत्रास्तु ॥ सौभाग्यरससंभूतोयतोयंलवणोरसः ॥ तदात्मक

त्वेनचमांपाहिपापान्नमोनमः ॥ यस्मादन्नरसाःसर्वेनोत्कृष्टालवणं विना ॥ प्रियंचशिवयोर्नित्यंतस्माच्छांतिंप्रयच्छमे ॥ विद्युद्देहस मुद्भूतंयस्मादारोग्यवर्द्धनम् ॥ तस्मात्पर्वतरूपेणपाहिसंसारसागरात् ॥ अथेत्यादि० ॥ कल्पपर्यंतमुमालोकप्राप्त्यनंतरंपरमगतिप्राप्ति काम ईश्वरप्रीतिकामोवा लवणाचलदानंकरिष्येतिसंकल्पः ॥ अयमेवविशेषोन्यत्सर्वंधान्याचलवत् ॥ **अथ गुडाचल दानम्** अथातःसंप्रवक्ष्यामिगुडपर्वतमुत्तमम् ॥ यस्यप्रदानतःस्वर्गंप्राप्नोति सुरपूजितम् ॥ उत्तमोदशभिर्भारैर्मध्यमःपंचभिर्मतः ॥ त्रिभिर्भारैःक निष्ठःस्यात्तदर्द्धेनाल्पवित्तवान् ॥ तुलास्त्रियांपलशतंभारःस्याद्विंशति स्तुला ॥ इत्यमरः ॥ विधिस्तुधान्याचलवत् ॥ प्रार्थनामंत्रास्तु ॥ यथादेवेषुविश्वात्माप्रवरश्चजनार्दनः ॥ सामवेदस्तुवेदानांमहादेवस्तु योगिनाम् ॥ प्रणवःसर्वमंत्राणांनारीणांपार्वतीयथा ॥ तथारसा नांप्रवरःसदैवेक्षुरसोमतः ॥ ततस्तत्स्मात्परांलक्ष्मींददस्वगुडसर्वदा ॥ यस्मात्सौभाग्यदायिन्याभ्रातात्वंगुडपर्वत ॥ निवासश्चापिपार्वत्यास्त स्मान्मांपाहिसर्वदा ॥ **दानवाक्यम्** ॥ अथेत्यादि० सकलपापक्षयो त्तरंगंधर्वपूज्यमानत्वपूर्वककल्पशतावधिगौरीलोकप्राप्त्यनंतरसपत्नी पराजितायुरारोग्यपूर्वकंसप्तद्वीपाधिपतित्वकाम ईश्वरप्रीतिकामोवे तिसंकल्प्यदानेचविशेषोऽन्यत्सर्वंधान्यशैलवत् ॥ **अथसुवर्णाच लदानम्** ॥ पलसहस्रेणोत्तमपक्षः तदर्द्धेनमध्यमः तच्चतुर्थांशेना धमः अल्पवित्तः पलादूर्द्ध्वंयथाशक्तिकुर्यात् ॥ विधानंधान्यपर्व तवत् ॥ प्रार्थनाविशेषः ॥ नमस्तेब्रह्मगर्भायब्रह्मबीजायवैनमः ॥ यस्मादनंतफलदस्तस्मात्पाहिशिलोच्चय ॥ यस्मादग्नेरपत्यत्वं

यस्मात्तेजोजगत्पतेः ॥ हेमपर्वतरूपेणतस्मात्पाहिसदाममेति ॥
**दानवाक्यम्** ॥ अद्येत्यादि० सकलपापक्षयकल्पोत्तरशत
कल्पावधिआनंदकारकब्रह्मलोकभोगानंतरपरमपदप्राप्तिकामेति ॥
**अथतिलाचलदानम्** ॥ उत्तमोदशभिर्द्रोणैः पंचभिर्मध्यमोमतः
त्रिभिःकनिष्ठइति ॥ वृक्षविष्कुंभादिसर्वधान्यपर्वतवत् ॥ मंत्रास्तु
यस्मान्मधुवनेविष्णोर्देहस्वेदसमुद्भवाः ॥ तिलाःकुशाश्चमाषाश्चत
स्माच्छन्नोभवत्विह ॥ हव्यकव्येषुयस्माच्चतिलैरेवाभिरक्षणम् ॥ य
वादुद्धरशैलेंद्रतिलाचलनमोस्तुते ॥ दानवाक्यम् ॥ अद्येत्यादि० सक
लपापक्षयदीर्घायुष्यपुत्रपौत्रसमन्वितभोगानंतरपितृदेवगंधर्वलोकपू
ज्यमानत्वपूर्वकद्युलोकगमनानंतरमक्षय्यवैष्णवपद प्राप्तिकामेति ॥
अन्यत्सर्वधान्यशैलवत् ॥ **अथकार्पासाचलदानम्** ॥ कार्पा
सपर्वतोविंशतिभारैरुत्तमः ॥ दशभिर्मध्यमः ॥ पंचभिःकनिष्ठः ॥ अल्प
वित्तोभारैकेनवाकुर्यात् ॥ विधिस्तुधान्यपर्वतवत् ॥ अद्येत्यादि०
सकलपापक्षयोत्तराकल्परुद्रलोकंनिवासानंतरंभूलोकराज्यकामः ।
इति मंत्रस्तु ॥ त्वमेवावरणंयस्मालोकानामिहसर्वदा ॥ कार्पासांचलत
स्मात्त्वमघौघध्वंसनोभवेति ॥ **अथघृताचलदानम्** ॥ विंशतिघृत
कुंभैरुत्तमःअर्द्धनमध्यमःपादेननिकृष्टः अल्पवित्तस्तुद्वाभ्यांवापिकु
र्वीत कुंभःपलसहस्रात्मकःघृतकुंभःपात्रएव ॥ शालितंडुलपूर्णपात्रा
णिकुंभानामुपरिनिवेशयेत् ॥ अहत शुक्लवस्त्रैरावेष्टयेत् ॥ इक्षु
दंडफलान्वितः ॥ अन्यत्सर्वधान्यपर्वतवद्बोध्यम् ॥ सूर्य्योद
यात्पाक्घटिकाचतुष्टयमध्येदद्यात् ॥ अद्येत्यादि० सकलपाप
क्षयपूर्वकंहंससारसयुक्तकिंकिणीजालमालार्कवर्णविमानकरणकशं

करलोकगमनपूर्वकसिद्धचारण विद्याधरार्चितत्वविशिष्टपितृस
हितभूतसंप्लवपर्य्यन्तकामेतिसंकल्प्य ॥ मंत्रौतु॥ संयोगाद्घृतमुत्प
न्नंयस्मादमृततेजसः ॥ तस्माद्घृताच्चविश्वात्माप्रीयतांममशंकरः॥
यच्चतेजोमयंब्रह्मघृतेनित्यंप्रतिंष्ठितम् ॥ घृतपर्वतरूपेणतस्मान्नःपा
हिभूधरेति ॥ अथरत्नाचलदानम् ॥ मुक्काफलसहस्रेणपर्वतःस्या
दिहोत्तमः॥ मध्यमः पंचशतिकस्त्रिंशताचाधमः स्मृतः ॥ चतुर्थांशे
नविष्कुंभादयः वज्रगोमेदैः पूर्वेमंदरः इंद्रनीलैः पद्मरागयुतैर्दक्षिणेगं
धमादनः वैडूर्य्यविद्रुमैः पश्चाद्विपुलाचलः ससौवर्णैः पद्मरागैःसुपा
र्श्वउत्तरे इति ॥ दानवाक्यंतु ॥ अद्येत्यादि० अनेकजन्मकृतब्रह्म
हत्यादिपापक्षयोत्तरामरेश्वरपूजितत्वपूर्वकंसाग्रकल्पशतावधिविष्णु
लोकनिवासानंतरम् आयुरारोग्यरूपगुणोपेतसप्तद्वीपाधिपत्यका
मइतिसंकल्प्य ॥ मंत्रौतु॥यथादेवगणाःसर्वेरत्नेष्वेवव्यवस्थिताः॥
त्वंचरत्नमयोनित्यमतःपाहिसदाचल ॥ यस्माद्रत्नप्रसादेनवृष्टिंप्रकु
रुतेहरिः॥ रत्नाचलप्रसादेनतस्मान्नः पाहिपर्वत॥ इति ॥अन्यत्स
र्वंधान्यपर्वतवत् ॥ अथरौप्याचलदानम् ॥ दशसहस्रपलै
रुत्तमःपक्षः पंचभिर्मध्यमस्तदर्धननिकृष्टः अत्यशक्तौविंशति
पलाद्वृद्धंकुर्य्यात् ॥ विष्कुंभादयस्तुतुरीयांशेनेति अन्यत्सर्वं
धान्यपर्वतवत् ॥ दानवाक्यंतुअद्येत्यादि०सकलपापक्षयपूर्व
कदशसहस्रगोदानसमफलावाप्तिपूर्वकंगंधर्वाप्सरोगणपूज्यमानत्वावि
शिष्टवैभवेनयावदाभूतसंप्लवसोमलोकनिवासकाम इति ॥ मंत्रस्तु
पितृणांवल्लभंयस्माद्धर्मेन्द्वोः शंकरस्यतु ॥ रजतंपातुतस्मान्नः
शोकसंसारसागरात् ॥ इति ॥ अथशर्कराचलदानम् ॥

अष्टभारशर्कराभिरुत्तमःपक्षः तदर्द्धेनमध्यमस्तच्चतुर्थांशेनाधमः अल्पवित्तोभारैकेणापिकुर्य्यात् ॥ चतुर्थांशेनविष्कुंभादयः मंदारपारिजातकल्पवृक्षादयोहैमाःपूर्ववत् ॥ पूर्वपश्चिमेहरिचंदनसंतानौ प्रत्यङ्मुखःकामदेवोमंदरेधनद उदङ्मुखोगंधमादने॥ प्राङ्मुखःवेदमूर्तिर्विपुलाचलेहैमीसुपार्श्वेदक्षिणामुखीसुरभी ॥ अन्यत्सर्वधान्यपर्वतवत् ॥ अथेत्यादि० सकलपापक्षयानंतरं कल्पशतावधिविष्णुलोकनिवासानंतरंसप्तद्वीपाधिपत्योत्तरंजन्मायुतंयावदविच्छिन्नायुरारोग्यकामेति ॥ मंत्रस्तु ॥ आरोग्यामृतसारोयःपरमःशर्कराचलः ॥ तन्ममानंदकारीत्वंभवशैलेंद्रसर्वदा ॥ अमृतंपिबतांयेतुनिपेतुर्भुविसीकराः ॥ देवानांतत्समुत्थोयंपाहिनः शर्कराचलः ॥ मनोभवधनुर्मध्यादुद्भूताशर्करायतः ॥ तन्मयोसि महाशैलपाहिसंसारसागरात् ॥ इति॥ सर्वेषुपर्वतदानेषुब्राह्मणभोजनंशक्त्याकार्यमेव।तदापूर्वेद्युःकृतोपवासःपरेद्युर्दानानंतरमक्षारलवणं भुंजीत॥एवंप्रसन्नचित्तोदानंदद्यात् ॥ **अथ मार्गशीर्षकृष्णप्रतिपदारभ्यफाल्गुनंयावदष्टासुप्रतिपत्सुशयनदानं यथा॥** अथेत्यादि० गोत्रायशर्मणेइदंशयनंसुखस्पर्शंश्रीविष्णुप्रीतिकामस्तुभ्यमहंसंप्रददेनममेति॥ मंत्रस्तु॥ शयनंसुखदंकांतंकेशवस्यप्रियंसदा॥ दानेनानेनसौभाग्यंसर्वदास्तुगृहेमम॥ तेष्वेवकशिपुदानम्॥ अथेत्यादि० गोत्रायशर्मणेयावज्जीवंशीतवातोष्णनिवारणकामःकशिपुंतुभ्यमहंसंप्रददेनमम ॥ मंत्रस्तु ॥ मृदुस्त्वंबीजकार्पासपूरितंसुखदंनृणाम् । तस्मादस्यप्रदानेनसुखंस्यात्सर्वदाममम ॥ **अथ चैत्रकृष्णप्रतिपदारभ्याषाढ्यावदष्टासुप्रतिपत्सुश्वेतवस्त्रदानम्॥** वस्त्रंयथार्थिनेद

याच्छुभंवापियदृच्छया ॥ सभवेद्धनवान् श्रीमान् बृहस्पतिपुरेवसेत् ॥ दत्वाकार्पासिकंवस्त्रंस्वर्गलोकेमहीयते ॥ दत्वोर्णजंचतत्रापिफलंदशगुणंभवेत् । अयेत्यादि० गोत्रायशर्मणेइदंश्वेतवस्त्रंसूक्ष्मंशिवप्रियंदेहालंकरणंबृहस्पतिदैवतंतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ सितंसूक्ष्मंसुखस्पर्शमीशानादेःप्रियंसदा ॥ देहालंकरणंयस्मादतःशांतिंप्रयच्छमे ॥

**अथश्रावणकृष्णप्रतिपदारभ्योर्जयावदष्टासुप्रतिपत्सुघृतदुग्धपायससंयावापूपमिष्टान्नान्यतमद्रव्यपूरितस्थालीदानम् ॥**

कृत्वाताम्रमयींस्थालींपलानांपंचभिःशतैः ॥ अशक्तस्तुतदर्द्धेनतदर्द्धार्द्धेनवापुनः ॥ अत्यशक्तौमृन्मयींपायसादिपूर्णां घृतशर्कराशाकजलपात्रयुतांचसवस्त्रांमंडलेसंस्थाप्यालंकृत्य । अयेत्यादि० यावज्जीवंसकुटुंबस्ययथेष्टमन्नमक्षयभोज्यादिलाभकामइमांस्थालींयथासंभवद्रव्यपूर्णांघृतशर्कराशाकजलपात्रवस्त्रावृतांमंडलस्थामलंकृतांगोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददे नमम ॥ मंत्रस्तु ॥ इमांसद्रव्यपूर्णांयःस्थालींघृतजलादिभिः ॥ दद्यात्संपत्तिपात्रःस्यादतःपाहिमहेश्वरेति ॥ सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ इति प्रतिपदादानानि ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहप्रतिपदादानकथनंनामषष्ठःकोशः ॥ ६ ॥

**अथ द्वितीयादानविधानम् ॥** कार्तिकशुक्लद्वितीयायांभगिन्यैवस्त्रालंकरणादियथाविभवंदेयम् ॥ तथाचभगिनीकराद्भोक्तव्यम् ॥ उक्तंच ॥ सर्वासुभगिनीहस्ताद्भोक्तव्यंबलवर्द्धनमिति ॥ सर्वासुसर्वद्वितीयासुकार्तिकेमुख्यएव ॥ यतः ॥ कार्त्तिकेशुक्लपक्षेतुद्वितीयायांविधानतः ॥ यमोयमुनयापूर्वंभोजितःस्वगृहेस्वयम् ॥ अतोयमद्वितीयासौप्रोक्तालोकेषुपुण्यदा । अस्यांनिजगृहेकापिनभोक्तव्यमतो

बुधैः।यत्नेनभगिनीहस्ताद्रोक्तव्यंपुष्टिवर्द्धनं॥दानानिचप्रदेयानिभगिनीभ्योविशेषतः॥स्वर्णालंकारवस्त्राणिपूजासत्कारभोजनैः॥सर्वाभगिन्यःसंपूज्याअभावेप्रतिपन्नकाः॥ प्रतिपन्नाभगिनीत्वेनव्यवहृताइत्यर्थः॥दानमंत्रः॥ स्वसस्त्वंयमुनारूपाआगतास्वस्तयेमम॥गृहाणद्रव्यंमद्दत्तंशांतिपुष्टिप्रदाभव॥इतिनत्वाविसृजेदिति॥अथमाघचैत्रवैशाखाषाढभाद्रपदशुक्लद्वितीयाः॥हरगौरीसंज्ञकाः॥एतासुनाम्नाद्रव्यैस्तुलादानमुक्तम्॥ यथा॥ हरगौरीद्वितीयासुगौरीप्रीत्यैप्रदापयेत्॥ तुलांसुपूजितांद्रव्यैर्गौरीसालोक्यकांक्षिभिरिति॥ द्रव्यविशेषेणतुलाफलानि॥ प्रथमातुघृतस्योक्ताजोवृद्धिकरीशुभा॥ माक्षिकेणतुसौभाग्यंतैलेनबहुलाःप्रजाः॥ वस्त्रेणदिव्यवस्त्राणिप्राप्नोतितुलयाध्रुवम्॥ लवणेनतुलावण्यमरोगित्वंगुडेनच॥ असपत्नःशर्करयासुरूपंचंदनेनतु॥ अवियोगोभवेद्वर्त्रातुलयाकुंकुमस्यच॥ नसंतापोहृदिभवेत्क्षीरस्यतुलयातथा॥सर्वकामप्रदाःसर्वाःसर्वपापक्षयंकराः॥ यःकरोतितुलाःसर्वाःसगौर्य्यालयमाप्नुयादिति॥ तुलादानविधानंतु सामान्यतुलाविधानेद्रष्टव्यम्॥ अथव्रणनाशकंलक्ष्मीमूर्त्तिदानम्॥ लक्ष्मीदानंप्रवक्ष्यामिमहदैश्वर्य्यवर्द्धनम्॥ लूतादिव्रणनाशायविशेषेणशिवोदितम्॥ तत्रतु॥ शतसुवर्णेनकल्पपादपोक्तस्वरूपांलक्ष्मीमूर्तिंप्रकल्प्यकुंडमंडपादितुलापुरुषदानोक्तवत्कृत्वाश्रीसूक्तेनतांसंपूज्य यथाकाममुल्लिख्यदद्यात्॥ मंत्रस्तु॥लक्ष्मीमूर्त्तिप्रदानेन लूताविस्फोटकादयः॥ नाशमायांतुमेसर्वे पूर्वकर्मसमुद्भवाः॥ इति द्वितियादानानि॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेद्वितियादानकथनंनामसप्तमःकोशः॥ ७॥

तत्रचैत्रशुक्लतृतीयायांसौभाग्यवतीनांसौभाग्याष्टकदानम्॥ मंडलेघृतनिष्पावकुसुंभक्षीरकानिच ॥ स्तवराजेक्षुलवणंकुस्तुंबुरुमथाष्टमम् ॥ दत्तंसौभाग्यकृद्यस्मात्सौभाग्याष्टकमित्यतः ॥ कुस्तुंबुरुर्धान्याकम् ॥ अद्येत्यादि०गोत्रायशर्मणेतुभ्यमिदंसौभाग्याष्टकंजन्मजन्मांतरेअविच्छिन्नसौभाग्यप्राप्तयेऽहंददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ यथात्वंसुभगागौरिसर्वदाशंकरप्रिया ॥ तथांमांद्देविदाने नानेनसौभाग्यदाभव ॥ अथ वैशाखशुक्लपक्षेअक्षय्यतृतीयायां उदकुंभान्सकरकान्सान्नान्सर्वरसैःसह॥ यवगोधूमचणकान् सक्तून्दध्योदनंतथा ॥ छत्रोपानहकादींश्चगोभूस्वर्णान् प्रदापयेत् ॥ ग्रैष्मिकंसर्वमेवात्रसस्यंदानेप्रशस्यते।अद्येत्यादि०एतान्जलकुंभान् रसान्नफलसहितान्वरुणदैवतान् श्रीपरमात्मनोक्षय्यतृप्तिपूर्वकंसुखसौभाग्यायुरारोग्यसौभाग्यसंतत्यभिवृद्ध्युत्तरविष्णुसायुज्यकाम इत्यादि ॥ मंत्रस्तु ॥ एषधर्मघटोदत्तोब्रह्मविष्णुशिवात्मकः ॥ अस्यप्रदानात्सकलाममसंतुमनोरथाः ॥ गंधोदकतिलैर्मिश्रंसान्नंकुंभंफलान्वितम्॥ विष्णवेसंप्रदास्यामिअक्षय्यमुपतिष्ठतु॥ पितर्य्युद्दिस्यदानेतु॥ एषधर्मघटोदत्तोब्रह्माविष्णुशिवात्मकः ॥ अस्यप्रदानात्तृप्यंतु पितरश्चपितामहाः ॥ गंधोदकतिलैर्मिश्रंसान्नंकुंभंफलान्वितम् ॥ पितृभ्यःसंप्रदास्यामिअक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥ अक्षय्यतृतीयायांतांबूलदानमंत्रः॥ सोपस्करंचतांबूलंसर्वदामंगलप्रियम्॥ श्रियंचैवतुदेवानांसौगंध्यंवदनेस्तुमे ॥ पादुकादानमंत्रः ॥ कंटकोच्छिष्टपाषाणवृश्चिकादिनिवारणे॥ पादुकेसंप्रदत्तेमेद्विजप्रीत्याप्रगृह्यताम् ॥ उपानद्दानमंत्रः ॥ उपानहौप्रदत्तेमेकंटकादिनिवारणे॥ सर्वमार्गेषुसुख

देअतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ छत्रस्य ॥ इहामुत्रातपत्राणंकुरुमेकेशव प्रभो ॥ छत्रंत्वत्प्रीतयेदत्तंममास्तुचसदासुखम् ॥ व्यजनस्य ॥ व्यजनंवायुदैवत्यंग्रीष्मकालेसुखप्रदम् ॥ अस्यप्रदानात्सकला ममसंतुमनोरथाः ॥ अन्यद्विशेषस्तुदशहरादानविधौद्रष्टव्यः ॥ अस्यामेवलवणधेनुदानंयथा ॥ गोमयोपलिप्तेकुशोपरि आवि कंचर्मविन्यस्यतत्राढकेनलवणेनवस्त्राच्छादितांधेनुंप्रकल्प्य तां तुस्व र्णशृंगींरौप्यखुरांफलस्तनींमिक्षुपादांशर्करामजिह्वांगंधघ्राणवतीं स. मुद्रोदरजशुक्तिकर्णां चंदनलिप्तां मुक्ताफलनेत्रां सक्तुपिंडकपोलांयव मुखांपट्टसूत्रकंबलांतथाछत्रिकाभूषितग्रीवां ताम्रपृष्ठां गुडपिंडापान कां कंबललांगूलां रसक्षीरां मधुयोनिंसर्वांगेषुफलोपेतां विधाय चतु र्थांशेनवत्संकृत्वा माल्यवस्त्रभूषणाद्यैस्तांसंपूज्य ब्राह्मणंवरयित्वा अद्येत्यादि० ममसकलपापक्षयपूर्वकंयावदाभूतसंप्लवंनियतंस्वर्गवा सोत्तरसप्तद्वीपाधिपत्यत्वकाम इमांलवणधेनुंपूर्वोक्तोपस्करयुतां गो त्रायशर्मणेतुभ्यंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ लवणेवैरसाःसर्वेलवणेसर्वदे वताः।लवणंतुहरेत्पापमतःशांतिंप्रयच्छमे।सुवर्णदक्षिणांदत्वा प्रदक्षि णीकृत्यब्राह्मणान्भोजयेत्।अस्यमाहात्म्यम्।सर्वदानानिदत्तानिसर्व तुकफलानिच ॥ सर्वेरसाःसर्वमंत्राःसर्वमेतच्चराचरं।सौभाग्यंचपरंवृद्धि शरीरारोग्यसंपदः ॥ नृणांभवतिदत्वातुरसधेनुर्नसंशयः ॥ स्वर्गेचनिय तंवासोयावदाभूतसंप्लवः ॥ इतिरसधेनुदानम् ॥ अत्रैवकामना भेदेनाक्षय्यफलावाप्त्यैच ॥ तोलयेत्सितयात्मानंलवणेनगुडेनच कुंकुमेनाथवाशक्त्याकर्पूरागरुचंदनैरिति ॥ तथाचसर्वासुतृती यासु॥तथा॥ अयनविषुवन्मन्वादियुगाद्यादिषुपर्वसुच शिखरदान

मुक्तम्॥ अक्षय्यादिषुसर्वासुतथापुण्यदिनेषुच॥शिखराणामपीच्छं तिदानंकेचिच्चसूरयः ॥ अथनानाशिखरदानविधिः ॥ गुडेक्षुव स्त्रलवणधान्यकाज्याजिशर्करा ॥खर्जूरतंडुलाद्राक्षाक्षौद्रंमलयजेनच कलैर्मनोहरैश्चैवशिखराणिप्रदापयेत्॥माघेमार्गशीर्षेवैशाखे रोहिणी युतायांतृतीयायांप्रोष्ठपदशुक्लतृतीयायांचदद्यात् ॥ शिखरप्रमाणंतु आत्मसमप्रमाणं प्रादेशाभ्यधिकं शरीरार्धप्रमाणंवा ॥ अथदानप्रयो गः॥ उक्तकालेयजमानःकृतनित्यक्रियः पूर्वाह्णेअद्येत्यादि०दुःखदौ र्भाग्याभावपूर्वककल्पकोटिशतत्रयावच्छिन्नगौरीभवननिवासानंत रं पृथ्वीपतित्वकामःश्रीगुडशिखरदानंकरिष्ये ॥ इतिसंकल्प्य ॥ गणेशपूजादिनांदीश्राद्धांतंकृत्वा आचार्य्यवरणादियथाविभवंवस्त्रा लंकारादिभिर्मधुपर्कपूजांतंकृत्वा गोमयेनोपलिप्तायांभुविइक्षुपत्रा ण्यास्तीर्य्य मूलेद्विहस्तविस्तारंउपरिहस्तविस्तारं उपरिहस्तमात्र विस्तारं इक्षुदलमयंकुशूलंकृत्वा तदभ्यंतरेरक्तवस्त्रेणावेष्टय गुडादिदे यद्रव्येण पूर्वउपरिइक्षुपत्रकटकमास्तीर्य्य तत्रक्षौमादिवस्त्रोपरिशस्- दिंदुवर्णाभांचंद्रमौलिंपद्मासनाक्षसूत्रकमंडलुवरदाभयकरांहैमींगौरीं सशिखरांसूत्रेणावेष्टय कुंकुमादिनापूजयेत्॥अथांगपूजा॥ॐभवा न्यैनमःपादौपूजयामि ॐकामिन्यै०जानुनीपू० ॐकामदेव्यैनम ऊरूपू० ॐजगत्स्थित्यै० नाभिम् ॐआनंदायै० हृदयं० ॐनंदा यै० स्तनौ० ॐशस्त्रधारिण्यै० बाहूपू० ॐशितिकंठायै०कंठंपू० ॐसुमुखायै० मुखंपू० ॐत्रिलोचनायै० नेत्राणि०चंद्रशेखरायै० भालंपू० ॐललितायै०शिरःपू० ॐसर्वात्मिकायै०सर्वांगंपू०इत्यं गपूजा ॥ततोंजलिनापुष्पाण्यादाय प्रदक्षिणीकृत्यपठेत् ॥ यस्मान्नि

वासः पार्वत्याः शिखरत्वंसुरैर्वृतं ॥ तस्मान्मांपाहिभगवन्गौरीतिष्ठ तिसर्वदेति॥पुष्पांजलिंसमर्प्यनमस्कृत्यगतिवाद्यानिघोषैर्जागरंकुर्य्यात् ॥ ततःप्रभातेस्नानादिकृतनित्यक्रियः शिखरपश्चिमभागेप्राङ्मुखोपविश्य अद्येत्यादि०संकल्पोक्तफलं संकीर्त्य गोत्रायशर्मणेइदंगुडशिखरंगौरीप्रतिमासहितंसोपस्करंतुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिदद्यात् तंतःसुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ भूयसींचदत्वाब्राह्मणान्संभोज्य तद्दिनेक्षीरंघृतंवावाग्यतोमुक्तकेशस्तूष्णींप्राशयेत् ॥ इक्षुवस्त्रादिशिखरपदस्थानेसंकल्पादौतत्तत्पदंतत्रतत्रवक्तव्यमितिविशेषः अन्यत्सर्वंपूर्ववत् ॥ इतिगुडादिशिखरदानविधिः ॥ अथचैत्रादिमासेषुतृतीयादिनेसौभाग्यवतीनांदानविशेषाः ॥ चैत्रेमासितृतीयायांविशालाक्षिमुदेदधि॥ससुवर्णकुंकुमंचदत्वाशिवपुरेवसेत्॥ वैशाखेश्रीमुखीप्रीत्यैदत्वाकनकशर्कराम्॥सर्वान्कामानवाप्नोतिमृताशिवपुरंव्रजेत्॥ज्येष्ठेनारायणीप्रीत्यैतांबूलंससुवर्णकम् ॥ दत्वासुवासिनीःपूज्यपूर्वोक्तफलभाग्भवेत् ॥ आषाढेमाधवीप्रीत्यैहेमयुक्तगुडंतिलान् ॥ दत्वासर्वसुखंभुक्त्वादेव्याश्चानुचरीभवेत् ॥ श्रावणेकमलाप्रीत्यै दत्वाहेमतिलान्गुडम् ॥ भोगान्भुक्त्वामहीपृष्ठेगोलोकमधियच्छति ॥ भाद्रेसुभद्राभद्रायैदत्वाहेमफलैः सह ॥ सर्वलोकेश्वरीभुत्वा प्राप्नोतिसत्यलोकताम् ॥ आश्विनेपार्वतीप्रीत्यैचंदनंकांचनंतथा ॥ दत्वायज्ञफलंप्राप्यगौरीलोकेमहीयते ॥ कार्त्तिकेधनदाप्रीत्यैदत्वासाज्यंसुवर्णकम्॥इहलोकेसुखंभुक्त्वाअंतेगौरीपुरंव्रजेत् ॥ मार्गशीर्षेउमाप्रीत्यैलवणंससुवर्णकम् ॥ दत्वाचेहसुखंभुक्त्वा अंतेलक्ष्मीप्रियाभवेत् ॥ पौषेसान्नसुवर्णंचइंद्राणीप्रीतयेमुदा॥दत्वासौभाग्यमाप्नो

तिचांतेस्वर्गमहीयते ॥ माघेगौरीप्रीतयेतुददातितिलंगुडम् ॥ सुवर्णंचयथाशक्त्यागौरीसहचरीभवेत् ॥ फाल्गुनेराधिकाप्रीत्यैपीतवस्त्रंसुवर्णकम् ॥ दत्वासौभाग्यमतुलंप्राप्नोतिवरपुत्रताम् ॥ इतितृतीयादानानि ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेतृतीयादानकथनं नामाष्टमः कोशः ॥ ८ ॥

॥ अथचतुर्थीदानानि ॥ चैत्रशुक्लचतुर्थ्यांशंखदानम् ॥ अद्येत्यादि० गोत्रायशर्मणेइमंशंखंसर्वमंगलप्राप्तये विष्णुदैवतंतुभ्यमहंसंप्रददेनमम ॥ मंत्रस्तु ॥ शंखः शुभकरोनित्यंसर्वमंगलदायकः ॥ तस्मादस्यप्रदानेनशांतिरस्तुसदाममं ॥ वैशाखशुक्लचतुर्थ्यांफलदानम् ॥ अद्येत्यादि० गोत्रायशर्मणेइमानिफलानिवनस्पतिदैवतानिश्रीगौरीप्रीतिकामस्तुभ्यमहंसंप्रददेनमम ॥ ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यांकंदमूलदानम् । अद्येत्यादि० गोत्रायशर्मणेइमानिमूलानिकंदानिचवनस्पतिदैवतानिगौरीप्रीतये गोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददेनमम ॥ मंत्रस्तु ॥ ब्रह्मणानिर्मिताःपूर्वंव्रतीनांपुष्टिहेतवे ॥ तस्मादेषांप्रदानेनपुष्टिरस्तुसदाममं ॥ आषाढशुक्लचतुर्थ्यांशाकपत्रतांबूलदानम् ॥ अद्येत्यादि० गोत्रायशर्मणेतुभ्यमेतानिशाकविशेषाणिवनस्पतिदैवतानिब्रह्मणः प्रीतये० ॥ मंत्रस्तु ॥ नानाविधानिपत्राणितथोवृद्धिकराणिच । स्वाद्यानिब्रह्मप्रीणातुमांरसैःशाकदानतः ॥ सर्वासुचतुर्थीषुगणेशप्रीतयेमोदकदानमुक्तम् ॥ विशेषतोभाद्रमाघशुक्लपक्षेगणेशचतुर्थींबहुलायांचदद्यात् ॥ मोदकदानमंत्रस्तु ॥ श्रीविघ्नायनमस्तुभ्यंसाक्षाद्देवस्वरूपिणे ॥ गणेशश्री

तयेतुभ्यंमोदकान्वैददाम्यहम् ॥ मोदकान्सफलान्मुद्रान्दक्षिणाभिः समन्वितान् ॥ आवयोस्तारणार्थायगृहाणेमान्नमोनमः ॥ गणेशः प्रतिगृह्णातुगणेशोवैददातिच ॥ गणेशस्तारकोभाभ्यांगणेशायनमोनमः ॥ **भौमवारयुतायांचतुर्थ्यांमंगारकमूर्त्तिदानम्** ॥ दशसौवर्णिकंमुख्यंदशार्द्धार्द्धमथापिवा ॥ मूर्त्तिं मांगारिकींदत्वास्वर्गलोकेमहीयते ॥ सुवर्णपात्रेरौप्येवाभक्त्याताम्रमयेपिवा ॥ विंशत्पलानिपात्राणि विंशत्यर्द्धमयानिवा ॥ शक्त्यावित्तस्यभक्त्यातुपात्रेताम्रमयेपिवा ॥ प्रतिष्ठाप्यकुजंपात्रेरक्तवस्त्रेणवेष्टितम् ॥ पुष्पमंडपिकांकृत्वादिव्यैर्धूपैश्चधूपितां ॥ तत्रस्थंपूजयेद्देवंवेदमंत्रैःसुसंस्कृतैः ॥ भक्ष्यभोज्यैरनेकैश्चफलैरत्नैश्च संयुतैःवस्त्रैःप्रावरणैर्यानैःशय्योपानद्वरासनैः ॥ छत्रैःपुष्पैर्गंधवरैःशक्त्या वित्तानुसारतः ॥ ब्राह्मणायचतंदद्याद्दक्षिणासहितंशुभम् ॥ अद्येत्यादि० गोत्रायशर्मणेइमामंगारकमूर्तिंपूर्वोक्तोपस्करसहितांगणेशप्रीतये० ॥ मंत्रः ॥ सौवर्णैर्लक्षणैर्युक्तांमूर्तिंमांगारिकींशुभाम् ॥ गणेशप्रीतयेदत्तां गृह्णविप्रनमोस्तुते ॥ सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ **सर्वासुचतुर्थीषुगणेशप्रीतयेस्वर्णवारणदानम्** ॥ शतकर्षसुवर्णेनतदर्द्धार्द्धेनवापुनः ॥ कृत्वेभंराजतेपात्रेरक्तवस्त्रेणवेष्टयेत् ॥ एवंवारणदानेनसर्वविघ्नंविनश्यति ॥ अद्येत्यादि० इमंसौवर्णंवारणंगणभंतिदैवतं गणपतिप्रसादसिद्धिद्वारासर्वविघ्नोपशांत्युत्तरगणेशसायुज्यकामोगोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददे नमम ॥ मंत्रस्तु ॥ सुवर्णेभंमयादत्तंसर्वालंकारसंयुतम् ॥ निर्विघ्नंममसर्वत्रजायतांगणनायकेति ॥ विशेषविधिस्तुगजदानविधौद्रष्टव्यः ॥ अथान्यत्सुगमोपायम् ॥ चतुर्थ्यांवारणंहैमंपलाद्दूर्द्धंसुशोभनम् ॥ कारयित्वाकुशयुतंतिलद्रोणो

परिस्थितम् ॥ वस्त्रपुष्पैःपूजयित्वा नैवेद्यंविनिवेदयेत् ॥ ततस्तु ब्राह्मणेदद्याद्गणेशःप्रीयतामिति ॥ कार्य्यारंभेषुसर्वेषुतस्यविघ्ननजायते ॥ राज्यकामस्तथाराज्यंश्रीकामःश्रियमाप्नुयात् ॥ वारणाःसप्तजन्मनिभवंतिमदविह्वलाः ॥ इदंचैत्रेश्रावणेकार्त्तिकेवाकार्य्यारंभेकार्य्यम् ॥ अथगणेशमूर्तिदानंसर्वासुचतुर्थीषु अयनादिपर्वेषुवा ॥ रौप्यपलशतकंनिर्मितसिंहासनेदशवापंचकर्षसुवर्णनिर्मितमूषकोपरि मणिमयींस्वर्णादिद्रव्यमयींवायथादिभवंगणेशमूर्त्तिसंस्थाप्यसंपूज्य ब्राह्मणं चवस्त्राभरणैः संपूज्य अद्येत्यादि०ममानेकजन्मोपार्जितपापक्षयपूर्वकंसशैलवनकाननससप्तसागरपृथ्वीदानसमफलवाप्तयेइमांगणेशमूर्तिंसालंकृतांसोपस्करांगोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददे नमम ॥ प्रार्थना ॥ यमामनंतिईशाद्याविश्वनाथमुमासुतम् ॥ विघ्नेशरक्षप्रचुरं तुभ्यंदास्याम्यभीष्टदम् ॥ दानवाक्यंतु ॥ गणनाथोविघ्नहरोगौरीसूनुरभीष्टदः ॥ अस्यदानेनमेशांतिर्भूयात्संसारसागरे ॥ गुल्मरोगीतु पूर्वोक्तविधिनागणेशंदद्यात्तत्रमंत्रः ।विनायकगणेशानसर्वदेवनस्कृत। पार्वतीनंदनममगुल्ममाशुविनाशय ।तथाच ॥ विनायकगणेशानलंबोदरगणाधिप ॥ विघ्नान्तकद्विकतुंडशमयव्याधिमौदरम् ॥ गुल्मपीडाहानमष्टीलंव्याधिजातंयदौदरम् ॥ तवदानेनमहतायुक्तेनाखुरतेनहि ॥ नाशयाशुमरेशानपुत्रभक्तस्यमेप्रभो ॥ एवंकुर्य्याद्गणपतेर्दानंव्याधिविमोचनम् ॥ इत्युदररोगघ्नंगणेशमूर्तिदानम् ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेचतुर्थीदानविधिर्नाम नवमःकोशः ॥ ९ ॥

---

अथपंचमीदानानि ॥ तत्रचैत्रशुक्लपंचम्यांफाल्गुनेवागायनो

पयोगितंत्रीमृदंगादिवादित्रदानम् ॥ वादित्रेभ्योनमइतिसंपूज्य ब्राह्मणंचसंपूज्यअद्येत्यादि० गोत्रायशर्मणेतुभ्यमेतानिगेयोपयोग्यानिवादित्राणिगंधर्वदैवतानिममसौभाग्याभिवृद्धिपूर्वकंश्रीतांडवेश्वरशिवप्रीतयेऽहंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ नानाविधानियंत्राणिशिवप्रीतिकराणिच ॥ रूपलावण्यसौभाग्यवर्द्धनानिगृहाणमे ॥ दानेनानेनसर्वात्माशिवःप्रीतोस्तुसर्वदेति ॥ अथयस्मिन्कस्मिन्पंचम्यांवामन्वादिविषुवायनादिपर्वसुदारिद्र्यहरंकुबेरमूर्त्तिदानम् दरिद्रोजायतेमर्त्योदानविघ्नंकरोतियः ।कुबेरमूर्त्तिदानेनऐश्वर्य्यंलभतेपुनः ॥ अत्रसार्द्धमाषद्वयादारभ्यपंचाशन्माषावधिवावित्तशाठ्यराहित्येनपुष्पविमानस्थांकुबेरमूर्त्तिपार्श्वयोःपद्मशंखाकारयुतांकृत्वाशुभेह्निवा ॥ अद्येत्यादि० ममेहजन्मनिपूर्वजन्मनिवादानविघ्नजनितदारिद्र्यविनाशपूर्वकयथेप्सितधनप्राप्त्यर्थंकुबेरमूर्तिदानंकरिष्ये ॥ इतिसंकल्प्यगोमयोपलिप्तेद्विचतुष्केद्रोणतंडुलराशौकुबेरप्रतिमांराजाधिराजेतिसंपूज्य ततअग्नेय्यांस्वगृह्यविधिनाग्निंप्रतिष्ठाप्यसमिद्व्यज्यचरुभिः प्रत्येकमष्टोत्तरशतंराजाधिराजायेति मंत्रेणहुत्वातत्संख्ययाघृताक्तातिलैर्व्याहृतिभिश्चहुत्वाकुबेरमूर्तिंदद्यात् ॥ अद्येत्यादि० ममेहजन्मनिजन्मांतरेवाकृतदानविघ्नजनिततीव्रदारिद्र्यविनाशनपूर्वकंयथेप्सितधनप्राप्त्यर्थंचइमांकुबेरमूर्तिंपुष्पविमानस्थांपार्श्वयोः पद्मशंखाकारयुतांसोपस्करांगोत्रायशर्मणेसुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ उत्तराशापतेदेवकुबेरनरवाहन ॥ पद्मशंखनिधीनांत्वंपतिःश्रीकंठवल्लभः ॥ दानविघ्नान्मयाप्राप्तंदारिद्र्यंममदुःखदम् ॥ त

त्सर्वंतवदानेनपापमाशुविनाशयेति ॥ देयद्रव्यतृतीयांशंचतुर्थांशं वादक्षिणांदद्यात् ॥ ततोब्राह्मणभोजनंसंकल्प्य भूयसींदक्षिणां दद्यात् ॥ अथ श्रावणशुक्लपक्षेनागपंचम्यांसर्पभयंनिवृत्यर्थं नागदानम् ॥ कृत्वाहेममयान्नागान्सतःसप्तपलैःशुभान् ॥ तद्ध्यर्द्धेनवाकुर्य्याद्वित्तशाठ्यंविवर्जयेत् ॥ तेषुनागान्प्रतिष्ठाप्यनाममंत्रैःपृथक्पृथक् ॥ अनंतंवासुकिंशंखंपद्मंकंबलमेवच ॥ तथाकर्कोटकंनागंनागमश्वतरंतथा ॥ संपूज्यविधिवत्पश्चाद्दानंतेषांसमाचरेत् ॥ यएवंकुरुतेमर्त्यस्तस्यसर्पभयंनहि ॥ तेषांदानेपूजनेचैंविंष निषेधकमंत्रो॥यथा ॥ ॐकुरुकुल्योहुंफट्स्वाहा॥ देयद्रव्यंब्राह्मणं चसंपूज्य ॥ अद्येत्यादि० ॥ ममसर्पादिसमस्तविषभीतिनिराकरणपूर्वकसौभाग्यशौर्य्याभिवृद्धये एतान्नागान्सुवर्णमयान्गोत्रायशर्मणेतुभ्यंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ वसुंधराधरोदेवःशेषोविषविनाशकः॥ प्रीतोस्तुनागदानेनअभयंमेप्रयच्छतु ॥ तेषांफणासुमौक्तिकानिनिधायंताम्रपात्रेषुसतिलान्नागान्दद्यादितिविशेषः ॥ अथाश्विनकार्त्तिकयोःशुक्लपंचम्योर्वेणुपात्रदानम् ॥ यथाशक्तिवेणुपात्रेषुसप्तधान्यफलसौभाग्यद्रव्यंनिधाय तत्रललितांनाममंत्रैःसंपूज्य यथा॥ ॐतुष्टचैनमः ॐश्रियै० ॐनंदायै० ॐविजयायै०ॐसर्वार्थदायिन्यै० इतिसंपूज्य ब्राह्मणान्संपूज्य अद्येत्यादि० ममसर्वसंपत्प्राप्त्युत्तरश्रीदेवीसालोक्यप्राप्तिकाम० ॥ मंत्रस्तु॥ वेणुपात्रप्रदानेन तुष्यतेललितासदा॥ तथाहिमेशिवंसर्वंजायतांश्रीप्रसादतइति॥अथ माघशुक्लपक्षेश्रीपंचम्यांरतिकामप्रीतयेकुंकुमहरिद्रासिंदूररोचनाकस्तूरीकर्पूरादिनानासुगंधिदानम्॥ एतेषांविधानंतु

मीनसंक्रमणदानंविधौद्रष्टव्यम्॥ अथ रतिकाममूर्तिदानम्॥ रतिकामप्रतिमांसौवर्णींसर्वलक्षणसंपन्नांकृत्वा तथथा।शुभारतिःप्रकर्त्तव्यावसंतोज्वलभूषणानृत्यमानाशुभादेवीसमस्ताभरणैर्युता। वीणावादनशीलाचमदकर्पूरचर्चिता॥ कामदेवस्तुकर्त्तव्योरूपेणाप्रतिमोभुवि।अष्टबाहुस्त्रिनेत्रश्चशंखपद्मविभूषणः।चापबाणकरश्चैकमदार्द्रचितलोचनः॥ रतिप्रीतिस्तथाशक्तिर्मदशक्तिस्तथोज्वला।चतस्रस्तस्यकर्त्तव्याःपत्न्योरूपमनोहराः।केतुश्चमकरःकार्य्यःपंचबाणमुखोमहान् एवंविधायवसंतोत्सवपूजांविधायब्राह्मणंवस्त्रालंकारादिभिर्वृत्वा अद्येत्यादि० सकलपापक्षयपूर्वकगंधर्वाप्सरोगणपूज्यमानत्वविशिष्टवैभवेनयावदाभूतसंप्लवसोमलोकनिवासकाम इमांरतिकाममूर्तिं सर्वावयवसंपन्नांसौभाग्यभूषितांगोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ।दानवाक्यंतु।सर्वलोकप्रियःश्रीमान्कामस्त्वंसौख्यवर्द्धनः।दानेनानेनदेवेशममस्वस्तिकरोभवेति॥ अनेनविधिनायस्तुकाममूर्तिंप्रदापयेत्॥ कुरूपत्वंपत्निशोकंदारिद्र्यंचनपश्यति । कामरूपीभवेन्मर्त्यःसर्वसौभाग्यसंयुतः। पुत्रवान्धनवांश्चैवजायतेसप्तजन्मनि।अस्यामेवगुडाच्छन्नं ताम्रस्वर्णसहितंवृषभदानं।वसंतोत्सवपंचम्यामनड्वाहंददातियः।सोरिष्टान्विनिहत्वाशुदीर्घायुत्वंचविंदति।अथप्रयोगः।कर्ताकृतनित्यक्रियःगोमयोपलिप्तेमंडपेगणेशंसंपूज्य।अद्येत्यादि०ममसमस्तारिष्टापन्निवारणपूर्वकंदीर्घायुष्यकामः वसंतोत्सवपंचम्यामद्यगुडाढकीसहितस्वर्णतिलकमुक्ताग्रैवेयप्रवालपुच्छवस्त्रोपशोभितवृषदानमहंकरिष्ये इतिप्रतिज्ञाप्याचार्य्यंवृत्वा यथोक्तोपस्करसहितंवृषभंसंपूज्यपूजनमंत्रोयथा॥ वृषध्वजस्यवाहस्त्वंधर्ममूर्तिःसनातनः॥ गृहाणमत्कृतांपू

जांप्रसन्नोवरदोभवेति ॥ संकल्पस्तु ॥ अद्येत्यादि० ममानेकजन्मार्जि
तपापसंसूचितानेकविधदुष्टारिष्टानेकोपद्रवापमृत्युनिराकरणपूर्वकंनै
रुज्यबलपुष्टिदीर्घायुष्यावाप्तयेऽमुंवृषभंतुवरीगुडसहितंस्वर्णालक्तक
प्रवालपुच्छमुक्ताग्रैवेयदुकूलोपशोभितंरुद्रदैवतंगोत्रायशर्मणेतुभ्यम
हंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ धर्मस्त्वंवृषरूपेणजगदानंदका
रकः ॥ अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ अथ हिरण्यवृष
भदानम् ॥ हिरण्यवृषदानंचकथयामिसमासतः ॥ वृषरूपंहिरण्ये
नसहस्रेणाथकारयेत् ॥ तदर्द्धेनाथवाधीमांस्तदर्द्धार्द्धेनवापुनः ॥ अष्टो
त्तरशतेनापिवृषभंधर्मरूपिणम् ॥ ललाटेकारयेत्पुंड्रमर्द्धचंद्रंकलाक
तिम् ।स्फाटिकेनतुकर्तव्याःखुराश्चरजतेनच ॥ ग्रीवांतुपद्मरागेणककु
द्देमदकेनच ॥ ग्रीवायांघंटावलयंरत्नचित्रंतुकारयेत् ॥ वृषांकं
कारयेत्तत्रकिंकिणीकृतपन्नगम् ॥ वृषांकंशिवमुक्तलक्षणंकार्य्य
मिति ॥ देशकालकुंडमंडपवेदिकादितुलापुरुषदानोक्तवद्विधेयम् ॥
वृषंचस्थापयेत्तत्रपश्चिमाभिमुखन्ततः ॥ ईश्वरंपूजयेद्भक्त्यावृषारूढं
वृषध्वजम् ॥ वृषेंद्रपूज्यगाय्यानमस्कृत्यसमाहितः ॥ ओंतीक्ष्णशृं
गायविद्महेधर्मपादायधीमहि तन्नोवृषःप्रचोदयात् ॥ इतिवृषगाय
त्री ॥ ततोयथाकाममुक्त्वा विप्रायदद्यात् ॥ सुवर्णदक्षिणाचदेया
अन्यत्सर्वंतुलावद्बोध्यम् ॥ एतद्यःकुरुतेभक्त्यावृषदानमनुत्तमम्
शिवस्यानुचरोभूत्वासुचिरंतत्रमोदते ॥ शिवायस्वर्णवृषभदानेप्येतदे
वविधिः ।पश्चाच्छिवस्यपश्चिमेवृषभंस्थापयेदितिशेषः ॥ अथकुष्ठहरं
रौप्यवृषभदानम् ॥ अथकुष्ठहरंवक्ष्येवृषदानमनुत्तमं ॥ यत्कार्य्यंकु
ष्ठरोगार्तैःशरीरसुखकारकं ।तत्तुहेमशृंगखुरयुतं पलत्रयरौप्यनिर्मितंवृ

षभंसौवर्ण्युमामाहेश्वरीप्रतिमायुतं पलाष्टककांस्यनिर्मितपात्रेश्वेतव स्त्रयुतंसंपूज्य केयूरकटकवस्त्रमाल्यांगुलीयकादिभिर्ब्राह्मणंसलक्षणं संपूज्य यथाकामंसंकल्प्यदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ अष्टमूर्तिर्भवे शानःकृष्यावृषभध्वजः ॥ श्वेतमौदुंबरंसर्वमथवाचित्रमेवच ॥ त्वग्दोषजनितंयच्चमण्डलान्यथवानघ ॥ सर्वकर्मविपाकोत्थंपार्वती नाथसर्वग ॥ कुष्ठहाभवसर्वेशरक्षमांपार्वतीपतेति ॥ अन्यत्सर्वंस्वर्ण वृषभदानवत्कर्त्तव्यम् ॥ कृतेनानेनकुष्ठानिवर्जंतिविलयंध्रुवम् ॥ तस्मात्कुष्ठाभिभूतानांकरणीयमिदंजगुः ॥ शिवाय वृषभदानंविधि स्तुपूर्ववत् ॥ मंत्रोयंविशेषः ॥ यथा ॥ उमाप तेत्रिलोकेश जगत्कारणकारणम् ॥ स्ववाहनप्रदानेनप्रीतोभवनमोस्तुतेइति ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेपंचमीदानविधि
र्नामदशमःकोशः ॥ १० ॥

अथषष्ठीदानानि॥तत्रादौकपिलाषष्ठ्यांकपिलादानम्॥ भाद्रे मासिसितेपक्षे भानौचैवकरेस्थिते ॥ पातेकुजेचरोहिण्यांसाषष्ठीक पिलाभवेत् ॥ कपिलाषष्ठ्यांकपिलादानम्॥साचदशधोक्ता । सुवर्णकपिलापूर्वाद्वितीयागौरीपिंगला।तृतीयाचैवरक्ताक्षीचतुर्थीगुड पिंगला।पंचमीचबहुवर्णास्यात्षष्ठीचश्वेतपिंगला।सप्तमीश्वेतपिंगाक्षीअ ष्टमीकृष्णपिंगला।नवमीपाटलाप्रोक्तादशमीपुच्छपिंगला।एषादशवि धाख्याताकपिला मुक्तिमुक्तिदा।।सर्वाह्येतामहाभागास्तारयंतिनसं शयः॥ इति॥सहस्रंयोगवांदद्यात्कपिलांत्वेकदैवहि।।समंवपुराणाह ब्रह्माब्रह्मविदांवरः।स्वर्णशृंग्योरौप्यखुराःसवत्सायाभवंतिहि। सुरभी लोकमातायत्रमतेतावतीःसमाः ॥ अथप्रयोगः॥ब्राह्मणंवस्त्रालंकारा दिभिः संपूज्यकपिलांचसंपूज्य अद्येत्यादि० मनसोसहस्रदानफ

लावात्तिसवत्सकपिलायाः रोमपरिमितवत्सरपर्यंतकामधेनुलोक निवासकामइमांकपिलांसुवर्णशृंगींरौप्यखुरांताम्रपृष्ठीकांस्योपदोहां घंटाचामरभूषितांश्वेतवस्त्रयुगच्छन्नांचंदनरश्विभूषितांसोपस्करांरु द्रदैवत्यांगोत्रायशर्मणेसुपूजितायब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रेदद नममेति मंत्रस्तु। कपिलेसर्वदेवानांपूजनीयासिरोहिणी। तीर्थदेवमयीयस्मादतः शांतिंप्रयच्छमे॥ यालक्ष्मीःसर्वदेवानांयाचदेवेष्ववस्थिता॥ धेनुरूपेणसादेवीममशांतिंप्रयच्छतु। देहस्थायचरुद्राणांशंकरस्यचयाप्रिया धेनुरूपेणसादेवीममपापंव्यपोहतु। विष्णोर्वक्षसि० चतुर्मुखस्यसुधात्वं पितृमुख्यानां० गावोममाग्रतःसंतु ०नमस्तेकपिलेदेविसर्वपापप्रणा शिनि॥ संसारार्णवमग्नंमांगोमातस्त्रातुमर्हसि॥ हिरण्यगर्भगर्भेतिच इतिमंत्रांतेप्रदक्षिणांकुर्य्यात् सुवर्णदक्षिणांदद्यात्॥ इतिकपिला॥ महाकपिलातु॥ वस्त्रंचतुर्गुणंदत्वादक्षिणांचचतुर्गुणं। सर्वालंकारकादी नितथैवपरिकल्पयेत्॥ दत्तामहासाकपिलास्वर्गमोक्षफलप्रदा। सप्तज न्मकृतात्पापान्मुच्यतेनात्रसंशयः यान्यान्प्रार्थयतेकामांस्तांस्तान्प्रा प्नोतिमानवइति अथ माघशुक्लेसूर्य्यषष्ठ्यांसूर्य्यमूर्त्तिदानं॥एत द्दानंसर्वासुषष्ठीषुभवति॥ स्थंडिलंकारयेच्छुभंचतुरस्रंसुशोभनं॥ स्था पयेदव्रणंकुंभंपंचरत्नसमन्वितं। रक्तवस्त्रयुगच्छन्नंरक्तचंदनचर्चितं॥ तस्योपरिन्यसेत्पात्रंसौवर्णंताम्रमेववा॥ कुंकुमेनलिखेत्पद्मंद्वादशारं सकर्णिकं। तस्योपरिन्यसेत्सूर्य्यंसौवर्णंसरथारुणं। शक्त्यावावित्तसा रेणवित्तशाठ्या विवर्जितः। तमर्चयेद्गंधपुष्पैर्विधिमंत्रपुरस्सरं। पंचा मृतेनस्नपनंकुर्य्याद्देवस्यसंयतः। गंधैर्नानाविधैर्दिव्यैः कर्पूरागरुकुंकु मैः। फलैस्तदुत्थसंभूतैरनेकैश्चसुगंधिभिः। ततस्तुकमलोपरि पूजनंयथा।

ॐआदित्यायनमः।तपनाय पूष्णे० भानुमते० भानवे० अर्यम्णे० विश्वचक्राय० अंशुमते० सहस्रांशवे० खनायकाय० सूराय० सूर्य्याय० खगाय० ॥ इति जन्मांतरसहस्रेणदुष्कृतं यन्मयाकृतं। तत्सर्वनाशमायातुदिवाकरतवार्चनात् ॥ प्रार्थना ॥ विनतातनयोदेवः कर्मसाक्षीतमोनुदः ॥ सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्चअरुणोमेप्रसीदतु ॥ ततः संपूजयेच्छुक्लांसवत्सांगांपयस्विनीं।सवस्त्रकण्ठाभरणांसुघंटाभिरलंकृतां।पूजनमंत्रास्तु॥ ब्रह्मणोत्पादितेदेविसर्वपापविनाशिनि ।संसारार्णवमग्नंमांगोमातस्त्रातुमर्हसि॥ सुरूपांबहुरूपाश्चमातरोलोकमातरः।गावो मामुपसर्पंतुसरितःसागरंयथा।यालक्ष्मीःसर्वदेवानांयाचदेवेषुसंस्थिता धेनुरूपेणसादेवीममपापंव्यपोहतु ततोब्राह्मणंवस्त्रालंकारादिभिःसंपूज्य अद्येत्यादि०सकलपापक्षयानंतरं कल्पशतावधिसूर्य्यलोकनिवासानंतरंसप्तद्वीपाधिपत्योत्तरं जन्मायुतंयावदविच्छिन्नायुरारोग्यकामइमांसौवर्णीसूर्य्यमूर्तिरौप्यरथोपरिस्थितांरत्नगर्भकलशयुतांसालंकारश्वेतगोसहितांगोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददेनममेतिदद्यात् ॥ वाक्यंतु॥ सकुंभवस्त्रैरत्नैश्चसर्वोपस्करणैःसह॥ ददामिभानोभवतेसर्वोपस्करसंयुतम्॥ मनोभिलषितावाप्तिंकरोतुममभास्करः ॥ प्रतिग्रहमंत्रस्तु॥ गृह्णामिभास्कररवेभवंतंविश्वतोमुखम् ॥ मनोभिलषितावाप्तिमुभयोः कर्तुमर्हसि॥ ततोद्वादशविप्रान्संभोज्यदक्षिणांचदद्यात् **अथ प्रतिषष्ठ्यांदुग्धशर्करायुतोदनदानम्** ॥ षष्ठींतिथिंसमुद्दिश्यब्राह्मणस्यतुभोजनम्॥ शाल्योदनंचपयसिकृत्वाशर्करयायुतम् वर्तुलंघृतसंयुक्तंकर्षमेकंप्रदापयेत् ॥ कुलेतस्यैवयेजातायेभविष्यंतिमानवाः ॥ अक्षय्यास्तेमहात्मानोदानेनानेनपावनाः॥ इहतस्यै

वयेसंतिदरिद्रानभवंतितेइति ॥ दानवाक्यंतु ॥ अन्नंब्रह्ममयंसाक्षात्सदु ग्धघृतशर्करम् ॥ ओदनंतेप्रयच्छामिदारिद्र्यंमेविनाशयेति ॥ इति महीधरकृतेदानसंग्रहेषष्ठीदानविधिर्नामैकादशःकोशः ॥ ६ ॥

---

**अथ सप्तमीदानानि ॥** तत्रादौवैशाखशुक्लपक्षेगंगासप्तम्यांगं गाप्रीतयेसुवर्णकमलदानं ॥ शयनंवस्त्रसंवीतंशर्कराकलशान्वितम् ॥ सर्वोपस्करसंयुक्तं तथैकांगांपयस्विनीम् ॥ गृहंचशक्तितोदद्यात् सम स्तोपस्करान्वितम् ॥ सहस्रेणाथनिष्काणांकृत्वादद्याच्छतेनवा ॥ दशभिर्वात्रिभिर्वापिपद्मंकृत्वाविधानतः ॥ सौवर्णंशक्तितोवापिवित्त शाठ्यविवर्जितः ॥ संपूज्यपद्मसौवर्णंसर्वोपस्करसंयुतम् ॥ ब्राह्मणंच ततोवृत्वावस्त्रालंकरणादिभिः ॥ अद्येत्यादि० ममश्रीगंगाप्रीतिपूर्व कानेकविधपातकोपपातकक्षयोत्तरंहस्त्रीपुत्रधनधान्याद्यैश्वर्य्यभोगा नंतरंश्रीविष्णुलोकगतिप्राप्तिकामइदंसौवर्णंपद्मंपूर्वोक्तोपस्करयुतं गो त्राय शर्मणेतुभ्यंसंप्रददे नममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ एषपद्मोमयादत्तःसर्वोपस्करसंयुतः ॥ प्रीतयेतवगंगेहप्रसन्नावरदाभव ॥ **अंत्रवृद्धिरोगहरंनारायणमूर्तिदानम् ॥** यज्ञविघ्नकरोमर्त्योजायतेअंत्रवृद्धिमान् ॥ वक्ष्यामितत्प्रतीकारंदानहोमादिकर्मणा ॥ निष्कमितसुवर्णस्ययथोक्तलक्षणांनारायणींमूर्तिंप्रकल्प्यश्वेतवस्त्रैःसंवेष्टयषोडशोपचारैःसंपूज्यब्राह्मणंचवासोलंकारादिभिर्वृत्वायथाकाममुद्धिश्यदद्यात् ॥ मंत्रः ॥ नारायणजगन्नाथशंखचक्रगदाधर ॥ पूर्वजन्मनियज्ञादेर्विघ्नाद्यैर्दैवतंमम ॥ अंत्रवृद्धिमहारोगदानेनानेनतोषितः ॥ चक्रहस्तगदापाणेशमयाशुजगत्पते ॥ अन्यत्सर्वंतुलापुरुषदानवद्बोध्यम् ॥ **अथाश्विनशुक्लसप्तम्यांआमुक्ताभरणंवापुत्रशोकहरंसुवर्णनि**

र्मितवृषदानम्॥बालोपघातीपशुहान्यासहारीचमित्रध्रुक् ॥ दावा
ग्निज्वालकोपश्च अभिचारक्रियारतः। विश्वासघातीगरदोधर्मविघ्नंक
रोतियः।एतेहिपुत्रशोकार्त्ताजायंतेमानवाभुवि॥तेषांपापोपशांत्यर्थंसु
खसंतानवृद्धये।सौवर्णिकंबलीवर्ददानमुक्तंपुरातनैः॥तद्यथा ॥शतक
र्षसुवर्णेनतदर्द्धार्द्धेनवापुनः।वृषभंसर्वशृंगारयुतंसर्वांगपूरितम्।मुक्तादा
मयुतंरम्यंसर्वरत्नोपशोभितं। ताम्रपात्रेतिलद्रोण्यांवृषभंपूजयेत्सुधीः
आचार्य्यंवस्त्रभूषाद्यैर्वृत्वादानंसमाचरेत् ॥ अद्येत्यादि०ममानेक
जन्मांतरार्जितेहपुत्रशोकादिदुष्टपरिपाकसंसूचकज्ञाताज्ञातबालोप
घातभ्रूणहत्यादिमहापापोपपापजनित अपुत्रत्ववामृतापत्यत्वदो
षनिराकरणोत्तरसंततिसुखाभिवृद्धये० ॥ अन्यत्सर्वंस्ववुद्ध्याकल्प
नीयं॥पूर्वोक्तोपस्करसहितंसुवर्णवृषभंरुद्रदैवतमितिशेषः ॥ दानमंत्र
स्तु॥धर्मोसिवृषरूपेणह्यधर्मनाशयाशुमे।पुत्रशोकाकुलंदीनंपाहिमांशं
करप्रिय॥अथ माघेरथसप्तम्यामचलाख्यायांसूर्य्यमूर्तिदानं॥
तत्तुषष्ठीदानविधावुक्तम् ॥ अथ चतस्यामेवरथदानमुक्तंतत्तुधनुस्सं
क्रमदानविधौद्रष्टव्यम्॥अथ ताटंकदानम्॥ ताम्रादिपात्रेकांचनं
क्रर्णाभरणंरत्नखचितं घृतगुडतिलपिष्टसहितंसंस्थाप्यरक्तवस्त्रेणा
च्छाद्य पुष्पादिभिःसंपूज्यब्राह्मणैःस्वस्तिवाचनंकुर्य्यात् ॥अद्येत्या
दि०ममसर्वापन्निवारणपूर्वकसर्वसंपत्प्राप्तये सौभाग्याभिवृद्धयेवा०
॥ मंत्रस्तु ॥ भूषणंकर्णयोःस्वच्छंस्वर्णरत्नादिसंयुतम्। ताटंकस्य
प्रदानेनसौभाग्यंवर्द्धतांमम । आदित्यस्यप्रसादेनविप्रस्यपूजनेनच
दुष्टदौर्भाग्यदुःखघ्नंमयादत्तंतुताटकम् ॥ अथास्यामेवकूष्मांडदा
नम् ॥रथसप्तमीकार्तिकशुक्लपक्षेचेतिमतांतरम्।ब्रह्महत्यादिपापघ्नंकू

ष्मांडंसुतसौख्यदम् ।कार्तिकेरथसप्तम्यांदद्यात्पुण्यदिनेष्वपीति।अद्ये त्यादि०ममब्रह्महननादिसमस्तपापक्षयपूर्वकंबहुपुत्रपौत्रसौभाग्यादि सकलमनोरथावाप्तिकूष्मांडबीजसहस्रसंख्याकाब्दब्रह्मलोकनिवास कामोगोत्रायशर्मणेसुपूजितायइदंकूष्मांडंघृतप्लुतंतिलैलिप्तंमुक्ताप्रवा लरत्नहेमफलतांबूलवस्त्रादियुतंगोधूमराशिस्थितंवनस्पति दैवतंसुव र्णदक्षिणायुतंतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ **दानवाक्यम्** ॥ ब्रह्महत्या दिपापघ्नंब्रह्मणानिर्मितंपुरा । कूष्मांडंबहुबीजाढ्यंपुत्रपौत्रादिवृद्धिदं मुक्ताप्रवालहेमादियुक्तंदत्तंतवद्विज । अनंतपुण्यफलदमतः शांतिंप्र यच्छमे ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेसप्तमीदानविधिर्नाम द्वादशःकोशः ॥ १२ ॥

---

**अथाष्टमीदानानि** ॥ तत्रादौमधुमाधवयोरष्टमीषुपंचसुगंधिसं ज्ञकफलदानम् ॥ कंकोलपूगकर्पूरजातीफललवंगके । सुगंधिपंचकंप्रो क्तमायुर्वेदप्रकाशकैः।देयद्रव्यंसंपूज्यब्राह्मणंचसंपूज्य ।अद्येत्यादि० ममसमस्तपापक्षयपूर्वकसर्वसौभाग्यमांगल्यप्राप्तये० ॥ मंत्रस्तु॥सुगं धिपंचकफलंनित्यंसौभाग्यवर्द्धनम् ।सर्वमांगल्यजनकमतःशांतिंप्रय च्छमेइति ।अथाश्विनचैत्रशुक्लपक्षेऽष्टम्यांजगदंबिकामूर्तिदानं।पलैर्द्वा दशभिःकुर्यात्तदर्द्धार्द्धेनवापुनः । कर्षैस्ततुल्यसंख्यैर्वानिजवित्तानुसा रतः।सिंहंरुक्ममयंकृत्वामूर्त्तिसर्वांगशोभनां।त्रिनेत्रांशशिचूडांचचतु र्बाहुंस्मितानना्म्। रत्नकंकणवैडूर्य्यमुक्ताहारादिशोभिताम् ।विधा यदुर्गांसंपूज्यविधिवद्भक्तिभावतः । ब्राह्मणंचसुवस्त्राद्यैर्वृत्वादानंसमा चरेत् ॥ अद्येत्यादि०सशैलवनकाननससागरपृथ्वीदानसमफला

वाग्नये इमांश्रीजगदंबिकामूर्त्तिमणिभूषणभूषितांसिंहारूढांगोत्राय शर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ आदिमायामहाशक्ति र्विश्वमाताजगन्मयी॥ दानेनास्याःप्रसन्नास्तुसर्वदाममशांभवी॥ अथ **यस्मिन्कस्मिन्नष्टम्यांरात्र्यंधत्वापहंगोपालमूर्त्तिदानम्** ॥ नक्तांध्यंजायतेतस्ययोगवांनयनद्वये ।करोतिशूलप्रक्षेपंतस्यवक्ष्यामि निष्कृतिम् । यथाशक्तिसुवर्णेनकर्षादूर्द्धेनगोपवेषांगोपालमूर्तिंकृत्वा तंडुलोपरिसंस्थाप्यषोडशोपचारैःसंपूज्यहोमादिस्तुतुलापुरुषदानो क्तवत्कृत्वा ब्राह्मणंसंपूज्ययथाकाममुल्लिख्यदद्यात् ॥ मंत्रः ॥ गो विंदगोपीजनवल्लभेशकंसासुरघ्नत्रिदशेशवंद्य।गोवर्द्धनाद्रिप्रवरैकहस्त संरक्षिताशेषगवामनीक । गोचक्षुषांचातिनिरोधजेनपापेनमेनाशय आंध्यमेतत् ॥ त्वदीयदानेनसुहृष्टरूपंनक्तांध्यमेतत्समुपाकरोतु॥ इति **अथयस्मिन्कस्मिन्नष्टम्यांसमस्तपापक्षयकरंत्रिशूलदानम्॥** श्रुताध्ययनसंपन्नंपावितारमकिंचनम् ॥ ब्राह्मणंदांतमाहूयदाना र्थंनददातियः ॥ मनुष्याणांहिंसकश्चजठरेशूलवान्भवेत् ॥ कृष्ण पक्षेचतुर्दश्यामष्टम्यांवासमाहितः ॥ कुर्य्याद्वादशनिष्केणत्रिशूलं लक्षणान्वितम् ॥ सुवर्णमानंतुनिष्कचतुरस्कःसौवर्णिकः षट्पंचा शदधिकशतद्वयपलमूल्योवा ॥ नाभौनिधायसंपूर्णतिलानांताम्रनिर्मि तम् । पात्रमाढकमानंस्यात्तत्रशूलंन्यसेत्पुनः ॥ ततःशैवपंचा क्षरेणरुद्रप्रकाशकवैदिकमंत्रेणत्रिशूलायनमः । इतिनाममंत्रेणवा त्रिशूलंसंपूज्य हैमंविरूपाक्षंकमलोपरिसंपूज्य ॐअघोरेभ्यइति मंत्रेणपूजांतेप्रणिपत्य ततोविप्रंवृत्वायथाविभवंवस्त्रालंकारादिभिःसं पूज्य अद्येत्यादि०ममबुद्ध्यबुद्धिपूर्वककायवाङ्मनःकृतकर्मोद्याज

न्मार्जितान्यजन्मोपार्जितमनुष्यहिंसनार्थाहूतब्राह्मणनिराकरणज न्योदरशूलजनितपीडापनोदकामइदंस्वर्णमयंत्रिशूलंविरूपाक्षप्रति मायुतं सोपस्करंगोत्रायशर्मणेसुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति मंत्रस्तु॥ भगवन्भगनेत्रघ्नदक्षयज्ञप्रमर्दन ॥ तवायुधप्रदानेनपापंनश्यतु शंकरः ॥युगांतेयेनलोकानांत्वमंतक विनाशनः॥विदग्धंयत्स्वपापेन पापौघंचव्यपोथय॥येनदग्धंक्षणार्धेनत्रिपुरंसुरदुर्जयम् ॥तेनपाशुपते नाशुममशूलंविनाशय॥यदाबुद्धिकृतंपापंमनोवाक्कायचाक्षुषं।तत्सर्व क्षयमेवाशुशूलदानप्रभावतः ॥ इति ॥ ततः सुवर्णपरिमितांदक्षिणां दत्वा द्विजभोजनसंकल्पंविधाय भूयसींदत्वा कर्मेश्वरार्पणंकुर्य्यात् अथ चक्षुरोगहरंगरुडमूर्तिदानम् ॥ तत्तुएकादश्यामष्टम्यांवा कार्य्यं॥जन्मांतराक्षिरोधेनजायतेह्यक्षिवेदना ।तन्नाशार्थमहंवक्ष्येगा रुडंदानमुत्तमं॥पलान्वितसुवर्णेनसलक्षणंगरुडंकृत्वा मणिमयनेत्रयुत मितिविशेषः ॥ तुलापुरुषदानोक्तवत्सर्वंविधायगरुडगायत्र्याहोमंकु र्य्यात् ॥ दानवाक्यम् ॥ देवदेवजगन्नाथलक्ष्मीप्रियपरात्पर ॥ वाहनस्यप्रदानेनतुष्टःकर्मविपाकजम् ॥ अक्षिरोगंजगन्नाथनारा यणजगन्मय पुष्पंवापटलंवापिवातरक्तमथापिवा ॥ रक्तंवाप्यथ नक्तांध्यंतथान्यद्बुद्बुदादिकमिति ॥ अन्यत्सर्वंतुलापुरुषदानवत् कार्य्यं ॥ गरुडगायत्रीयथा ॥ ॐतत्पुरुषायविद्महे वायुवेगायधी महितन्नोमृतमथनः प्रचोदयात् ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहे अष्टमीदान
विधिर्नामत्रयोदशः कोशः ॥१३॥

अथ नवमीदानानि॥तत्रादौचैत्रशुक्लपक्षेश्रीरामचंद्रमूर्त्तिदानंत

त्र ॥ श्रीराममूर्तिंसौवर्णींशतकर्षामितांशुभां॥ धनुर्बाणधरांदिव्यांमणि कुंडलमंडितां॥ मंडपेपूजयेद्भक्त्यारथस्थांवस्त्रसंयुतां ।ततोद्विजंसमामंत्र्यपूजयेद्विधिपूर्वकं॥ कुंडलाभ्यांसुरत्नाभ्यामंगुलीयैरनेकधा ॥ गंधपुष्पाक्षतैर्वस्त्रैर्विचित्रैःसुमनोहरैः॥ अद्येत्यादि० ममानेकजन्मकृतब्रह्महत्यादिपापक्षयोत्तरामरेश्वरपूजितत्वपूर्वकंसाग्रकल्पशतावधिविष्णुलोकनिवासानंतरंआयुरारोग्यरूपगुणोपेतसप्तद्वीपाधिपत्यकामइमां श्रीराममूर्तिंमणिमंडितांसोपस्करांगोत्रायशर्मणेसुपूजितायतुभ्यमहं संप्रददेनममेति॥ मंत्रस्तु॥ इमांस्वर्णमयींरामप्रतिमांसमलंकृतां॥ चित्रवस्त्रयुगच्छन्नांरामोहंराघवायते ।श्रीरामप्रीतयेदास्येतुष्टोभवतुराघवः तत्प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थंगोभूहिरण्ययथाशक्तिदद्यात्॥ अथ चैत्राश्विन शुक्लनवम्यांदुर्गामूर्त्तिदानम्॥ कृत्वास्वर्णमयींदुर्गांमहिषासनशोभिताम् ॥ दुर्गास्वरूपंतु ॥ आलीढस्थानसंस्थानात्तथाकुर्य्याच्चतुर्भुजा असृक्पात्रकरादेवीशूलखड्गधरातथा ॥ चतुर्थश्चकरस्तस्यास्तथाकार्य्यस्तुसामिषः इति ।रौप्यरथमध्येतांसंस्थाप्ययथोक्तविधिनातांसंपूज्यसंकल्पादिस्तुअष्टमीदानविधावुक्तं अपरंच॥ श्रीदुर्गाप्रीतयेशय्यादानंशूलांकितवृषदानंचकर्त्तव्यं ॥ तदुक्तं॥ रत्नोपकरणैर्युक्तांदंतदारुमयींशुभाम्॥ शय्यांनिवेदयेद्यस्तुभगवत्यैविधानतः॥ संपूज्यगंधपुष्पाद्यैर्विधिवच्चंडिकांनरः॥ दुकूलवस्त्रतूलानांपरिसंख्यातुयावती ॥ तावद्वर्षसहस्राणिदुर्गालोकेमहीयते ।वृषंशूलांकितंयश्चभगवत्यैनिवेदयेत् आसप्तमंसतुकुलंमहादेवालयंव्रजेत् ॥ अत्रशय्यादानविधिस्तुमिथुनसंक्रांतिदानविधावुक्तः ॥ वृषदानविधानंतुकन्यासंक्रमदानविधावुक्तं ॥ अथ वैशाख्यांप्रौष्ठपद्यांवाकार्तिक्यांवातथैवच ॥ माघ्यांवा

पितृवम्यांचपितृणांप्रीतयेमुदा ॥ यत्किंचिद्वस्तुमात्रंचदीयतेऽनुपकारिणे॥देवान्पितॄन्समभ्यर्च्यतदनंत्यायकल्पतेइति॥अथकार्त्तिकमाघशुक्लनवम्योः कूष्मांडदानमुक्तंतद्विधिस्तुसप्तमीदानविधावुक्तः॥अथनवम्यामायुधदानं ॥तत्रादावायुधं।अमुकायुधायनमइति संपूज्यब्राह्मणंचसंपूज्य अथेत्यादि० ममसमस्तपापक्षयोत्तरंश्रीदुर्गाप्रीतिद्वाराविजयायुरारोग्यप्राप्तये० ॥ अथदानमंत्राः तत्रादौखड्गस्य।असिर्विशसनःखड्गस्तीक्ष्णधारोदुरासदःश्रीगर्भोविजयश्चैवधर्मधारस्त्वमेवच॥तवदानेनसुप्रीताभवेचंडीसदाममम ॥ तथासंसारचक्रेस्मिन्नभवेच्छत्रुताक्वचित्॥कट्टारस्य ॥ कट्टारकमहातीक्ष्णशत्रूणांहृद्विदारण॥दानेनतवतीक्ष्णस्यनश्यंतुममशत्रवः ॥ छुरिकायाः॥सर्वायुधानांप्रथमंनिर्मितासिपिनाकिना ॥ शूलायुधाद्विनिष्कृष्यकृत्वामुष्टिग्रहंशुभम् ॥ चंडिकायाः प्रदत्तासिसर्वदुष्टनिबर्हिणी तयाविस्तारिताचासिदेवानांप्रतिमानिता ॥ सर्वसत्वांगभूतासिसर्वाशुभनिबर्हिणी ॥ छुरिकेतवदानेनशांतिरस्तुसदाममम ॥ कवचस्य रक्षमांचंडिकेदुर्गेसमरेशर्मदायिनि ॥ प्रसीदचर्म्मदानेनशांतिंकुरुसदाममम ॥ चर्मणः॥ चंडिकायाःप्रदत्तंत्वंसर्वदुष्टनिबर्हणम् ॥ त्वयाविस्तारितादेवाःसुप्रतिष्ठंपितामहैः ॥ अतस्त्वयिबलंसर्वंविन्यस्तंदेवसत्तमैः ॥ तवदानेनमेरक्षाभवेत् संग्राममूर्द्धनि ॥ धनुषः ॥ सर्वायुधमहामात्रसर्वदेवारिसूदन ॥ धृतःकृष्णेनरक्षार्थंसंहारायहरेण च॥दानेनतवशस्त्रेशचंडिकामेप्रसीदतु॥ शक्तेः॥शक्तित्वंसर्वदेवानांग्रहाणांचविशेषतः॥शक्तिरूपेणदेवित्वंरक्षांकुरुनमोस्तुमे। कुंतस्य॥ प्रासपातकशत्रूणांशिरसांविजयप्रदः ॥ दानेनानेनसौभाग्यंसर्वदास्तु

गृहेमम ॥ अग्नियंत्रस्य ॥ तोपबंदूकेत्यादिप्रसिद्धस्य॥ अग्नि शस्त्रोमहातेजादूरतःशत्रुमर्दनः ॥ दानेनास्यभवेन्मह्यंशत्रुभ्योनिर्भयं सदा॥ पाशस्य ॥ पाशत्वंनागरूपोसिविषपूर्णोविषोद्भवः॥ तवदाने नमेरक्षांकरोतुसुरसुंदरी॥ परशोः ॥ तीक्ष्णाग्रभागःपरशुःसर्वदेवारि सूदनः ॥ दानेनास्यविनश्यंतुशत्रवोमेमहाहवे॥ ध्वजस्य॥शक्रकेतु र्महावीर्य्यः पत्तिराजःसुदारुणः॥ दानेनास्यप्रसन्नास्याचंडिकालोकप जिता ॥ पताकायाः ॥ पूतनारेवतीनाम्नाकालरात्रिश्चयास्मृता ॥ दहत्वाशुममारिष्टान्पताकायाःप्रदानतः ॥

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेनवमीदानवि धिर्नामचतुर्दशःकोशः ॥ १४ ॥

---

अथ नवमीदानानि ॥ तत्रादौज्येष्ठशुक्लपक्षेदशहरायथा ॥ ज्येष्ठमासिसितेपक्षेदशम्यांबुधहस्तयोः ॥ गरानंदव्यतीपातेकन्या चंद्रेवृषेरवाविति ॥ अस्यांयद्दीयतेदानंतदनंत्यायकल्पते ॥ दशपा पहरायस्माच्चेनदशहरास्मृता॥ गंगापूजनमंत्रोयथा॥ ॐनमोभगवत्यै दशपापहरायैश्रीगंगायैनारायण्यैरेवत्यैशिवायैदक्षायै अमृतानं दिन्यैनमोनमइति ॥ अथवा ॥ ॐनमःशिवायैनारायण्यैद शहरायैगंगायैस्वाहा ॥ अथास्यादानानि ॥ सौवर्णिप्रतिमादि द्रव्यंसंपूज्य अद्येत्यादि० ममानेकजन्मोपार्जितादत्तदानोपदान विधानहिंसापरदारोपसेवारूपंत्रिविधंकायिकंतथाच पारुष्यानृतपै शून्यासंबंधप्रलापरूपंचतुर्विधंवाचिकम् ॥ तथाच ॥ परद्रव्याभि ध्यानमनसानिष्टचिंतनवितथाभिनिवेशनरूपंत्रिविधंमानसिकातिदश विधपापापनोदनोत्तरैहिकामुष्मिकतापत्रयरहितत्वकामेत्यादि०ततो

दानवाक्यानि ॥ तत्रादौसक्तूनाम् ॥ प्राजापत्यायतःप्रोक्तासक्तवो यवसूनवः।अतस्तद्दानकरणान्ममाभीष्टप्रदोभव॥ घृतस्य॥कामधेनु समुत्पन्नंदेवानांपरमंहविः।आयुर्विवर्द्धनंदातुःसौख्यंदेहिनमोस्तुते॥ म धुनः।यस्मात्पितृणांश्राद्धादौप्रीतंमध्वमृतोद्भवम्। तस्मात्तवप्रदानेनर क्षमांदुःखसागरात्।तंडुलानाम् ॥ अन्नेनजायतेप्राणीप्राणिनांप्राण रक्षणं॥तंडुलाविश्वदैवत्याःपाकेनान्नंभवंतिये ॥ पावनाःसर्वयज्ञेषुप्रश स्ताहोमकर्माणि।तस्मात्तंडुलदानेनप्रीयतांविश्वदेवताः॥ तिलानाम्॥ तिलाःपुण्याःपवित्राश्चसर्वकामफलप्रदाः।शुक्लाश्चैवतथाकृष्णाविष्णु गात्रसमुद्भवाः॥ यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यादिकानिच॥ तिलपात्र प्रदानेनतानिनश्यंतुमेसदा ॥ शर्कराया: ॥ अमृतस्यकुलोत्पन्नाइ क्षुधारातिशर्करा॥ सूर्यप्रीतिकरानित्यमतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ लव णस्य ॥ लवणेवैरसाःसर्वेलवणेसर्वदेवताः ॥ लवणंतुहरेत्पापमतः शांतिंप्रयच्छमे ॥ चणकान्नस्य ॥ पुरागोवर्द्धनोद्धारसमयेहरिभ क्षिताः॥ चणकाःसर्वपापघ्नाःअतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ मुद्गान्नस्य ॥ मुद्गाहविश्यावैयस्मात्प्रियाणिपरमेष्ठिनः। तस्मादेषांप्रदानेनब्रह्मप्रीतो स्तुसर्वदा ॥ अपूपान्नस्य ॥ आदित्यतेजसाभ्यक्तंजातिश्रेष्ठकरंप रम्॥ तस्मादस्यप्रदानेनशांतिरस्तुसदामम ॥ घटदानमंत्रः ॥ एष धर्मघटोदत्तोब्रह्माविष्णुशिवात्मकः ॥ अस्यप्रदानात्तुष्यंतुपितरश्चपि तामहाः ॥ उपानद्दानवाक्यम् ॥ उपानद्दौप्रदास्यामिकंटका दिनिवारणे॥ सर्वस्थानेषुसुखदेअतःशांतिंप्रयच्छमे॥ व्यजनस्य॥ पत्रिकासर्वजंतूनांशैत्यानंदकरीशुभा। पितृणांतृप्तिदानित्यमतःशांतिं प्रयच्छमे ॥ छत्रस्य ॥ इहामुत्रपरित्राणंकुरुकेशवमेप्रभो ॥ छत्र

त्वत्प्रीतयेदत्तंब्राह्मणायमयाशुभम् ॥ सुवर्णप्रतिमादानवाक्यम्॥ श्रीविष्णुप्रतिमामेतांस्वर्णेनरचितांशुभाम् ॥ विष्णुभक्तायदास्यामि श्रीविष्णुःप्रीयतांमम ॥ वाससः ॥ शरण्यंसर्वलोकानांलज्जायारक्षणंपरम् ॥ सुवेषधारीत्वंयस्माद्वासःशांतिंप्रयच्छमे ॥ सुवर्णदानम् ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थंहेमबीजविभावसोः।अनंतपुण्यफलदमतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ सर्वान्नस्य ॥ अन्नमेवसदालक्ष्मीरन्नमेवजनार्दनः॥अन्नं ब्रह्माखिलत्राणमस्तुमेजन्मजन्मनि ॥ दशम्यांसुवर्णनिर्मितमंडूकमत्स्यकूर्ममकरादिदानम् ॥ कर्षोत्तरानुसारेणप्रत्येकंजलचरजीवंविधाय संपूज्य अद्येत्यादि० ममसमस्तपापक्षयपूर्वकब्रह्मांडेजलस्थित्रिपर्यंतविष्णुलोकनिवासकामेत्यादि०।मंत्रस्तु॥तोयजाविष्णुसंभूतानित्यतुष्टानिरंकुशाःभयस्मात्तस्माच्छिवंमेस्याद्दानस्यास्यप्रभावतइति॥अस्यांदशम्यांतिलाचलदानमुक्तंतद्विधिस्तुप्रतिपद्दानविधावुक्तः॥तथाशिखरदानंचोक्तंतद्विधिस्तुतृतीयादानविधौद्रष्टव्यः॥ अथाश्विनशुक्लपक्षेविजयादशम्यांसरस्वतीमूर्तिदानम् ॥ वाग्विरोधंगुरोःकृत्वाभवेद्वद्रदवाङ्नरः ॥तस्यवक्ष्येप्रतीकारंदानेनऋषिभाषितं॥मूर्तिंशतसुवर्णेनकारयेद्रत्नभूषिताम्॥वीणांचपुस्तकंचैवमभयंस्फाटिकींस्रज।चतुर्बाहुयुकर्त्तव्याकमलासनसंस्थितां।संपूज्यविधिवत्तांतुब्राह्मणंवरयेत्ततः ॥ तद्दानपूर्णतायांचगोभूस्वर्णंप्रदापयेत् अद्येत्यादि० ससागरवनंकाननसद्वीपपृथ्वीदानसमफलावाप्त्यनंतरं शतजन्मनिज्ञानविज्ञानादिसद्बुद्धिप्राप्तये इमांसौवर्णींसरस्वतींप्रतिमांरत्नालंकारशोभितांसोपस्करांगोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददेनमम॥ मंत्रस्तु॥वीणापुस्तकसंयुक्तावाङ्मूर्त्तिःसमलंकृता॥गृहाणत्वं

द्विजश्रेष्ठवाक्सिद्धिस्तुकुलेमम।यावच्चेब्रह्मणेदेवीयासावागीश्वरीपरा ब्रह्मविष्णुशिवैश्चान्यैःपूजितासर्ववंदिता ॥ तुष्टाभवतुदानेनदत्तेनानेनवाक्परा ॥ वाग्विरोधंगुरोःकृत्वायन्मेगद्गदभाषणम् ॥ तत्सर्वंक्षपयक्षिप्रंब्राह्मीत्वंलोकपावनी ॥ मूकत्वनिवृत्तयेत्विमंमंत्रमुदीरयेत् ॥ सौम्येदेविमहाभागेसर्वदेवनमस्कृते ॥ पद्मासनगतेसर्वजगतामार्त्तिहारिणी ॥ स्वरोपघातान्ममवैप्रज्ञाजाड्यमपानुद ॥ अस्यादानप्रतिष्ठार्थंगोभूहिरण्यंदेयम् ॥ अस्मिन्दशम्यांसिंहासनछत्रकनकदंडचामरशंखघंटादुंदुभि भेर्य्यादिमुखवाद्यवादित्रदानमुक्तं ॥ तद्यथा ॥ प्रत्येकंद्रव्यंसंपूज्यब्राह्मणंचसंपूज्य स्वकामनाकथनपूर्वकंसाधारणसंकल्पंकृत्वादानवाक्यंपठेत् ॥ तत्रादौसिंहासनस्य ॥ विजयोदयदोजेतारिपुहंताशुभंकरः ॥ दुःखहाधर्मदःशांतःसर्वारिष्टविनाशनः ॥ एतादृशगुणोपेतःसिंहाख्यःपीठकोत्तमः ॥ दत्तंमेचंडिकातुष्टयैगृह्णविप्रनमोस्तुते ॥ छत्रस्य ॥ शीतवातातपत्राणंसर्वसौभाग्यदंमहत् ॥ छत्रंदत्तंद्विजाग्र्यायसुखसंपत्तिहेतवे ॥ कनकदंडस्य ॥ प्रेतसारणायदुष्टानांसाधुसंरक्षणायच ॥ छत्राधारंददाम्यद्यदंडंपापविनाशनम् ॥ अथयष्टिकादानम् ॥ यतिभ्योवैणवंदंडंद्विजेभ्योपिखनित्रकम् ॥ प्रदानात्परलोकेसौयमदंडंनगच्छति ॥ प्रददातियथावर्णंयोदंडंब्रह्मचारिणे ॥ समहाब्राह्मणोभूत्वा ब्रह्मचर्यंसमश्नुते ॥ मंत्रस्तु ॥ गोसर्पोद्धिदिवृत्तिश्चभीतानांभयनाशनम् ॥ शंकापंकादिदोषाणांशमनंयष्टिमुत्तमम् ॥ दत्ताविप्रमयातुभ्यं सुखंमेस्तुभवार्णवादिति ॥ दुंदुभिः ॥ यथाजीमूतघोषेणप्रहृष्यंतिचबर्हिणः ॥ तथात्वद्दानतोभूयाद्धर्षोस्माकंमुदावहः ॥ व्यजनदानम् ॥ योददातिद्विजाग्रे

क्ष्योव्यजनंजननंदनम् ॥ सनंदनवनामोदमोदमानमनादिवि॥वसेदशो षकल्पांतपर्यंतमपकल्मषः ॥ **चामरस्य** ॥ यस्तुभक्त्याद्विजा ग्र्योदद्याच्चामरमुज्वलम् ॥ सभूपत्वमवाप्नोतिनिःशेषावनिमंडले **चामरस्य** ॥ चामरस्त्वंमंगलदनिशाकरकरप्रभः ॥ तवदाना द्भवेन्मह्यमैश्वर्य्यंजन्मजन्मनि ॥ **शंखस्य** ॥ शंखःशुभकरोनि त्यंसर्वमंगलदायकः ॥ तस्मादस्यप्रदानेनशांतिरस्तुसदामम ॥ **घंटायाः** ॥ घंटादेवप्रियानित्यंदैत्यनाशकरीसदा ॥ संप्रदानेनचैत स्याविजयोस्तुसदामम ॥ **काम्यघंटादानम्** ॥ गुरुणाह्यननु ज्ञातोयोवेदाध्ययनंचरेत् ॥ सप्रज्ञयाविहीनस्तुसंसारेजायतेनरः तेनघंटादानंकुर्य्यादितिशेषः ॥ घंटातुसुस्वराविंशत्पलादूर्द्धंस्व शक्तितःदानमंत्रास्तु ॥ सरस्वतिजगन्मातर्जगज्जाड्यविनाशिनी ॥ साक्षाद्ब्रह्मकलत्रत्वंविष्णुरुद्रादिभिःस्तुता ॥तन्ममाध्ययनोत्पन्नंजा ड्यंहरवरानने।घंटादानेनतुष्टात्वंब्रह्माणीलोकपाविनी॥**अग्न्यादीनां**॥ अस्यानादेनहृष्यंतिदेवताःपितरस्तथा॥तस्मादस्याःप्रदानेनहर्षःस्या न्ममसर्वदा॥**अथाश्विनकार्त्तिकमाघदशमीषुतिलपूर्णकरकदा नम्**।करकंतिलसंपूर्णमंडलेवह्निदैवतेशिवंवह्निवदाराध्यपूजयेत्करवी रकैः॥पूजातुरक्तचंदनेनसर्जरसधूपेनधूपयेत्॥वह्निमंडलंत्रिकोणम्। मंडलंशिवंवह्निवदिति ॥ वह्निस्वरूपंशिवम् ॥ आदर्शंचततोदद्या द्दीपानांचचतुष्टयम् ॥ वह्निरुपीयतःशंभुर्वह्निरूपास्तिलाश्चये ॥ तेजोरूपंकृतंपापंचाक्षुषंचव्यपोहतु ॥ इतिदत्तेषुनश्यंतिपापान्यग्ने कृतानिच ॥ परदारपरद्रव्यपुत्रदर्शनजानिच ॥ शवादिदर्शनोत्था निनेत्रदोषकृतानिच॥ यएवंकुरुतेदानंशिवभक्त्यायतव्रतः॥शिवलो

केवसेद्भूयःकल्पत्रयमशंकितः ॥ अथमार्गशीर्षदशम्यांगुडधेनु दानम् ॥ अजिनंतुचतुर्हस्तंप्राग्ग्रीवंविन्यसेद्भुवि ॥ गोमयेनोपलिप्ता यांदर्भानास्तीर्य्यसर्वतः॥ तत्रैणंवाजिनंतद्वद्वत्सस्यपरिकल्पयेत् ॥ प्राङ्मुखींकल्पयेद्धेनुमुदक्पादांसवत्सकां॥ उत्तमागुडधेनुः स्यात्सदाभा रचतुष्टया ॥ वत्संभारेणकुर्वीतभाराभ्यांमध्यमास्मृता॥ अर्द्धभारेण वत्सःस्यात्कनिष्ठाभारकेणतु। चतुर्थांशेनवत्सःस्याद्बुहवित्तानुसारतः। भारःपलसहस्रात्मकः ॥ धेनुवत्सौगुडस्यैतौसितसूक्ष्मांबरावृतौ ॥ शुक्तिकर्णाविक्षुपादौशुचिमुक्ताफलेक्षणौ ॥ सितसूत्रशिरालौतौसित कंबलकंबलौ॥ ताम्रनिर्मितपृष्ठौतौसितचामररोमकौ॥ विद्रुमभ्रूयुगोपे तौनवनीतस्तनान्वितौ।क्षौमपुच्छौकांस्यदोहाविंद्रनीलकतालुकौ । सुवर्णशृंगाभरणौराजताक्षरसंयुतौ ॥ नानाफलमयौदंतौप्राणगंधकरंड कौ।गंधकरंडकःकर्पूरादिपात्रविशेषः॥ एवंरचित्वाधूपदीपादिभिरभ्य र्च्यब्राह्मणंचवस्त्रालंकारादिभिःसंपूज्य अद्येत्यादि० ममसमस्तपापक्ष यद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमिमांगुडधेनुंपूर्वोक्तोपस्करयुतांगोत्रायशर्म णेतुभ्यं० सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ प्रार्थना ॥ मंत्रस्तु ॥ यालक्ष्मीः सर्वभूतानांयाचदेवेष्ववस्थिता ॥ धेनुरूपेणसादेवीवांछितंमेप्रयच्छतु देहस्थायाचरुद्राणांशंकरस्यसदाप्रिया ॥ धेनुरूपेणसादेवीममपार्थ्य पोहतु॥ विष्णोर्वक्षसियालक्ष्मीःस्वाहायाचविभावसोः ॥ चंद्रार्कशक्र शक्तिर्याधेनुरूपास्तुसाश्रिये। चतुर्मुखस्ययालक्ष्मीर्यालक्ष्मीर्धनदस्यच यालक्ष्मीर्लोकपालानांसाधेनुर्वरदास्तुमे ॥ स्वधात्वंपितृमुख्यानांस्वा हायज्ञभुजांस्तथा॥ सर्वपापहराधेनुस्तस्माच्छांतिंप्रयच्छमे। ततोभूय सींदक्षिणांदद्यात् ब्राह्मणभोजनंचदेयम् एतदेवविधानंगुडादिदशधे

नूनांज्ञातव्यम् ॥ तथैताःअयनविषुवोपरागव्यतीपादादिपर्वसुचकर्तव्यः ॥ अथ माघशुक्लदशम्यांकार्पासधेनुदानम् ॥ अतः परंप्रवक्ष्यामिधेनुंकार्पासिकींशुभे ॥ सर्वविश्वस्यगुप्त्यर्थंब्रह्मणाचांशुकीकृता ॥ साचकार्पासभारेणश्रेष्ठाधेनुःप्रकीर्त्तिता ॥ मध्यमाचतदर्द्धेनतदर्द्धेनकनीयसी ॥ पूर्ववस्त्रंचधान्यंचहिरण्यंचतथैवच ॥ वत्सकंतुच तुर्थांशान्मानमत्राभिधीयते ॥ कुर्वीतपूर्ववद्वत्संवस्त्रधान्याद्युपस्करम् पूर्ववत्तिलधेनुवत् क्रियासंकल्पादिसर्वंकार्य्यम् ॥ तत्तुसंक्रमदानविधौद्रष्टव्यम् ॥ प्रार्थनाविशेषोयथा ॥ हेमकुंदेंदुसदृशेक्षीरार्णवसमुद्भवे ॥ सोमप्रियेसुधेन्वाख्येसौरभेयिनमोस्तुते ॥ दत्तेयमुडुनाथायशशांकायामृतायच ॥ अत्रिनेत्रप्रजातायसोमराजायवैनमः ॥ यस्त्वैवंपरयाभक्त्याब्राह्मणायप्रयच्छति ॥ सयातिचंद्रलोकंतुसोमेनसहमोदते ॥ पौषशुक्लदशम्यांगुडाचलदानम्, माघेधान्याचलदानम् ॥ फाल्गुनदशम्यांलवणाचलदानंकर्तव्यमुक्तम्, सर्वपर्वतदानविधिस्तुप्रतिपद्दानविधौवुक्तः ॥

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेदशमीदानविधिर्नामपंचदशःकोशः ॥ १५ ॥

---

अथैकादशीदानानि ॥ तत्रादौचैत्रशुक्लपक्षेकामदैकादश्यांतथाचभाद्रपदेवामनद्वादश्यांवामनमूर्त्तिदानम् ॥ सौवर्णरत्नसंयुक्तंद्वादशांगुलमुच्छ्रितम् ॥ पीतवस्त्रैःशुभैर्वेष्टयंश्रृंगारेनिर्व्रणेनवेति ॥ तथा ॥ कांचनींवामनींमूर्त्तिंचतुर्बाहुसुबिभ्रतीं ॥ शंखचक्रगदापद्मकिरीटोज्वलमस्तकाम् ॥ रौप्यसिंहासनेस्थाप्यपूजयेद्विधिवन्नरः ॥ वामनायेतिपादौतुविष्णवेकटिमर्चयेत् ॥ वासुदेवेतिजठरेउरः

संकर्षणायच॥ कंठेविश्वभृतेपूज्यःशिरोवैव्योमरूपिणे ॥ बाहूविश्व जितेपूज्यःस्वनाम्नाशंखचक्रके ॥ अनेनविधिनाभ्यर्च्यदेवदेवंजनार्द नम् ॥ प्राग्वद्रक्तोदरंकुंभंसयुग्मपुरतोन्यसेत् ॥ युग्मंवस्त्रयुग्मम् ॥ कुंडिकांस्थापयेत्पश्चाच्छत्रिकांपादुकेतथा॥ अक्षमालांचसंस्थाप्य यष्टिकांचविशेषतः ॥ एतैरुपस्करैर्युक्तंप्रभातेब्राह्मणायतु ॥ दापये त्प्रीयतांविष्णुर्नृस्वरूपीतिकीर्त्तयेत् ॥ ब्राह्मणंसंपूज्य अद्येत्या दि० ममसमस्तजन्मोपात्तपापनाशकामात्मपितृपुत्रापमृत्युपरिहा रभार्याधनदेशाद्यवियोगकामःसकलेष्टफलावाप्तिकामश्च इमांसौव र्णींवामनमूर्तिंपूर्वोक्तोपस्करयुतांगोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति प्रार्थना ॥ यथादितेरपुत्रायाःस्वयंपुत्रत्वमागतः ।। भगवांस्तेन सत्येनममाप्यस्तुसुतोवरः॥ दानेनानेनगोविंदरक्षमांदुःखसागरात् ॥ तवप्रसादाद्भूयान्मेसंततिःसुखवर्द्धिनीति॥ प्रार्थ्य ब्राह्मणान्संभोज्यभू यसींदक्षिणांदद्यात् ॥ माहात्म्यंयथा ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रान्धनहीनो लभेद्धनम् ।। भ्रष्टराज्योभवेद्राजास्वर्वमूर्तिप्रदानतः ।। अस्यामेकाद श्यांदशहरोक्तवच्छक्तिदानप्रभृतिजलजंतुदानपर्यंतंसर्वविधेयम् ।। तथा चात्रजलधेनुघृतधेनुदानंचोक्तम् ॥ जलधेनुविधिस्तुज्ये ष्ठसंक्रांतिदानविधावुक्तः घृतधेनुदानंतुकर्कसंक्रांतिदानविधावुक्त मेवबोध्यम् ॥तथा चात्रैवसुवर्णाचलदानमुक्तम् ॥ तद्विधिस्तुप्र तिपद्दानविधावुक्तः॥अथास्यांशालग्रामशिलादानम्॥इदंतुहरि शयनीबोधिनीपौर्णमास्यादिषुपर्वसुभवत्येव ॥ विधानंतु ॥ शाल. ग्रामशिलाचकंयोदद्याद्दानमुत्तमम् ॥ भूचक्रंतेनदत्तंस्यात्सशैलव नकाननम् ॥ यथाशक्तिस्वर्णमयंरौप्यमयंवा छत्रसिंहासनपूज्योप

करणद्रव्यंचसंपाद्य तांशिलांसंपूज्यब्राह्मणंचवासोलंकारादिभि र्वृत्वा अद्येत्यादि० सशैलवनकाननभूचक्रदानसमफलकामइमंशा लग्रामंघंटाशंखादिशोभितंसोपस्करणंकंतुलसीपत्रार्चितंसवस्त्रफ लकंस्वर्णादिसिंहासनेस्थितंगोत्रायशर्मणेसालंकृतायतुभ्यमहंसंप्रदद े नममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ महाकोशनिवासेनचक्राद्यैरुपशोभितः ॥ शालग्रामप्रदानेनममसंतुमनोरथाः ॥ सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ तथैवशिवनाभिदानंचतथैवकर्त्तव्यम् मंत्रस्तुविशेषः ॥ शालग्रामशिलापुण्या भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ॥ शिवनाभेःप्रदाने नपुर्णाः संतुमनोरथाः ॥ तथा ॥ महाकोशेनिवासत्वं शालग्राममह ेश्वर ॥ प्रीयतांतवदानेनब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ इतिनिर्जलादाना नि ॥ अथाषाढशुक्लपक्षे॥ हरिशयिन्यांचातुर्मास्यनियममुक्तंतद्वि धानंत्वग्रेवक्ष्यते ॥ देवस्यशयनोत्सवानंतरंश्रीभगवतोमत्स्यमूर्तिदान म् ॥ यथा ॥ दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यभीताह्यसौख्यकांक्षिणः ॥ तेषां मुद्धरणार्थायमत्स्यदानंवदाम्यहम् ॥ निर्मायमीनंसौवर्णंवित्तशा ठ्यविवर्जितः ॥ नावंरौप्यमयींकृत्वातस्योपरिसमर्चयेत् ॥ नारा यणंमत्स्यरूपंवज्रनेत्रविभूषितम् ॥ ब्राह्मणंचततोवृत्वावस्त्रालंकर णादिभिः॥ अद्येत्यादि० ममसमस्तस्थूलसूक्ष्माणुरूपज्ञाताज्ञातपाप दुःखदौर्भाग्यदारिद्र्यविनाशनपूर्वकसुखसौभाग्यायुरारोग्यवर्द्धनोत्तर श्रीविष्णुसायुज्यकाम इमांनारायणींमत्स्यमूर्तिंवज्रनेत्रांरौप्यनाव्यु परिस्थितांगोत्रायशर्मणेसुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति॥ मंत्रस्तु। यथामत्स्यावतारेणवेदोद्धारःकृतस्त्वया । संसारार्णवमग्नंमांतथो द्धरजगत्पते।सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ।अथ कार्तिकेबोधिन्यांबोधनो

त्सवानंतरंवराहदानम् ॥ अपुत्रायेमृतापत्याःकल्मषैःपूर्वसंचितैः तेषांसंतानसौख्यायवाराहंदानमीरितम् ॥ सौवर्णंसूकरंकृत्वासर्वावयवसंयुतम् ॥ शुक्तिकर्णंवज्रनेत्रंरौप्यदंतायुधोज्वलम् । मुक्तापुच्छं ताम्रपृष्ठंलोहपादंखुरान्वितम् । कृत्वाकुंभोपरिस्थाप्यपूजयेद्विधिवन्मुदा ॥ ब्राह्मणंचसमभ्यर्च्यवेदवेदांगपारगम् । दानांतेभूहिरण्यादिदक्षिणार्थंप्रदापयेत् । अद्येत्यादि० ममानेकजन्मार्जितानेकविधपापापनोदनपूर्वकापुत्रत्वमृतापत्यत्वदोषनिराकरणद्वारापुत्रसुखप्राप्तयेइत्यादि० ॥ संसारोद्धरणार्थायह्यवतीर्णोहरिःस्वयम् । वाराहंवपुरास्थायमर्यादामभ्यबंधयत् । तेनसत्येनदेवेशमेपापान्यपनोदयतथावराहदानेनसप्रजंमांकुरुप्रभो । पूर्वोक्तदक्षिणांदद्यात् ॥ अथ पौषेपुत्रदैकादश्यांपुत्रप्राप्तिकरंकूर्मदानम् ॥ कूर्मायपादौप्रथमंतुपूज्यनारायणयेतिकटिंहरेस्तु ॥ संकर्षणायेत्युदरंसपार्श्वमुरोविशोकायभवायकंठम् ॥ सुबाहवेत्येवभुजौ शिरश्चनमोविशालायरथांगशंखौ ॥ स्वनामभिर्मंत्रैश्चसुगंधधूपैर्नानाविधैर्विविधैःफलैश्च ॥ अभ्यर्च्यदेवंकलशंतदग्रेसंस्थाप्यमाल्यास्तृतदामकंठम् ॥ तंरत्नगर्भंतुपुरैवकृत्वा स्वशक्तितोहेममयंचदेवम् ॥ समंदरंकूर्मरूपंतुकृत्वासंस्थापयेत्ताम्रपात्रेघृतस्य । पूर्णेघटोपर्य्यथसंनिवेश्यदद्याद्विजाय्यायसुरत्नभूषितम् ॥ संकल्पस्तुवराहमूर्त्तिदानोक्तवत्कर्त्तव्यः ॥ स्वीयकामनानुरूपोवा । मंत्रस्तु । नारायणजगद्योनेमंदराचलधारक । कौर्मींमूर्तिप्रदानेनसंततिर्वर्द्धतांममेति । ततोद्विजान्भोज्यसदक्षिणांश्चयथाशक्त्याप्रीणयेद्देवदेवम् ॥ नारायणंकूर्मरूपेणपश्चात्स्वयंभुंजीतभार्य्ययाभृत्यवर्गैः । एवंकृतेवैत्रिविधंहिपापंवि

नश्यतेविंदतेपुत्रपौत्रान् ॥ संसारचक्रंतुविहायशुद्धमामोतिलोकंतुहरेः पुराणम् ॥ **अथ माघेषट्तिलैकादश्यामादौतिलदानम्** । तिलागावोहिरण्यंचअलंकृत्यवसुंधरा ॥ दत्तान्येतानिविधिवत्तारयंतिमहाभयात् । तथा । तिलस्नायीतिलोद्वर्त्तीतिलहोमीतिलोदकी । तिलभुक्तिलदाताचषट्तिलापापनाशिनी । कृष्णाजिनेतिलान्कृत्वासुवर्णमधुसर्पिषी । द्रोणैकंवाससाच्छन्नं त्रिधातद्वत्सदक्षिणम् । ब्राह्मणायचतद्दत्वासर्वंतरतिदुष्कृतम् । अद्येत्यादि० अमुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायसुपूजितायकृष्णाजिनस्थंसुवर्णमधुसर्पिर्युतंवस्त्राच्छन्नंतिलद्रोणंसोमदैवतंसर्वपापक्षयकामस्तुभ्यमहंसंप्रददे । सुवर्णदक्षिणांदद्यात् । **अथतिलपात्रदानम्** ॥ ताम्रपात्रंतिलैःपूर्णंप्रस्थमात्रंद्विजायच । सहिरण्यंचयोदद्यात्प्रत्यहंश्रद्धयान्वितः । सर्वपापविशुद्धात्मालभतेपरमां गतिम् । संकल्पंतुपूर्ववत् । मंत्रस्तु० । तिलाःस्वर्णयुतास्तुभ्यंप्रदत्ताह्यघनाशनाः । विष्णुप्रीतिकरानित्यमतःशांतिंप्रयच्छमे **अथ फाल्गुनोभयपक्षयोरेकादश्योर्नृसिंहमूर्त्तिदानम्** । रत्नगर्भंघटंस्थाप्यसितवस्त्रयुगान्वितम् । तस्योपरिनृसिंहंतुसौवर्णंरौप्यभाजने । शक्तितःसर्वसंभारयुतंकृत्वाप्रपूजयेत् । नरसिंहायपादौतुगोविंदायोदरंतथा । कटिंविश्वभुजेपूज्यअनिरुद्धायऊरूच । कंठंतुशितिकंठायपिंगकेशायवैशिरः । असुरध्वंसनायेतिवक्त्रंतोयात्मनेतथा । शंखमित्येवसंपूज्यगंधपुष्पफलैस्तथा । अद्येत्यादि० ममानेकजन्मार्जितपापक्षयोत्तरसप्तद्वीपसागरवतीपृथ्वीदानसमफलावाप्तये इमांसौवर्णींनृसिंहमूर्त्तिंरत्नपूरितघटोपरिरौप्यपात्रस्थितां

यथाशक्तिसंभारसंभृतामित्यादि० ॥ प्रल्हादस्ययथारक्षाकृतानर
हरेत्वया ॥ तथामांदुःखदौर्भाग्यपापेभ्योरक्षगोपते ॥ इतिमंत्रः॥
एतद्दानंकृतंपूर्वंपार्थिवेणमहात्मना ॥तत्प्रभावात्सपत्नानांध्वंसनंचक्र
मापह ॥ तेनास्त्रेणस्वकंराज्यंजितवान्सनृपोत्तमः ॥ राज्येस्थि
त्वाश्वमेधानांसहस्रमकरोत्प्रभुः ॥ अंतेचब्रह्मलोकाख्यंपदमागाच्चस
त्तमः ॥ एवंयःकुरुतेमर्त्योभक्तिश्रद्धासमन्वितः ॥ तदेवफलमाप्नोति
नान्यथाब्रह्मणोदितम् ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेएकादशीदानविधिर्नाम
षोडशः कोशः ॥ १६ ॥

---

अथ द्वादशीदानानि ॥ तत्रादौमधुमाधवयोःसर्वासुद्वादशी
षुलक्ष्मीनारायणमूर्तिदानम् । जलकुंभंताम्रमयंस्थापयित्वाविच
क्षणैः । पंचरत्नसमोपेतंसोपवीतंसुपूजितम् । तस्यस्कंधेसुघटि
तंस्थापयित्वाजनार्दनम् ॥ यथाशक्त्यास्वर्णमयंशंखशार्ङ्गविभूषि
तम् । स्नापयित्वाविधानेनसितचंदनचर्चितम् । सितवस्त्रयुग
च्छन्नंछत्रोपानयुगान्वितम् ॥ ॐनमोवासुदेवायशिरः संपूजयेत्त
तः ॥ श्रीधरायमुखंतद्वद्वैकुंठायहृशौनमः ॥ नमःश्रीपतयेवक्षंभुजौ
सर्वास्त्रधारिणे ॥ व्यापकायनमः कुक्षीकेशवायोदरंनमः । त्रैलो
क्यजनकायेतिमेढ्रंसंपूजयेद्धरेः । सर्वाधिपतयेजंघेपादौसर्वात्मनेन
मः॥तथातद्वामपार्श्वेतुलक्ष्मींस्वर्णमयींबुधः॥पूजयेद्वंधपुष्पाद्यैर्लक्ष्मी
सूक्तेनभक्तितः ॥ ब्राह्मणंचततोवृत्वावस्त्रालंकरणादिभिः ॥ अद्ये
त्यादि०ममसमस्तपापक्षयोत्तरसशैलवनकाननभूचक्रदानसमफला
वाप्तिकाम०ऐश्वर्य्यादिवृद्धिकामोवा ॥ मंत्रः॥ लक्ष्मीनिवासदेवेश

शंखचक्रगदाधर ॥ तवदानात्स्थिरालक्ष्मीर्मद्गृहेस्यात्सदाध्रुवम् ॥ सुवर्णंगोभूदक्षिणांदत्वाब्राह्मणाँश्चभोजयेत् ॥ **भाद्रपदशुक्लद्वादश्यांवाममंमूर्तिदानम् ॥** तत्तुकामदैकादशीदानविधावुक्तम् ॥ **अथ कार्तिकेवत्सद्वादश्यांशर्कराधेनुदानम् ॥** अनुलिप्तेमहीपृष्ठेकृष्णाजिनकुशोत्तरे । भारचतुष्टयपरिमिता । तच्चतुर्थांशोवत्सः । भारद्वयेअष्टमांशइति । स्वशक्त्यावाकार्य्या । सर्वधान्यानिचतुर्द्दिक्षुसंस्थाप्य । अद्येत्यादि० गोत्रायशर्मणेसालंकृतायइमांशर्कराधेनुंसुवर्णशृंगींमौक्तिकनयनांगुडमुखींपिष्टमयजिह्वांकंबलपट्टसूत्रेणवेष्टितांकंठाभरणभूषितांइक्षुपादांरौप्यखुरांनवनीतस्तनींप्रशस्तपर्णश्रवणांसितचामरभूषितां पंचरत्नसमायुक्तांदर्भरोमांकांस्यदोहां गंधपुष्पाद्यर्चितांसमस्तपापक्षयकामस्तुभ्यमहंसंप्रददे नममेति । सुवर्णदक्षिणांदद्यात् । ततोयालक्ष्मीरित्यादिमंत्रेणसंप्रार्थ्य भूयसींदद्यात् विप्रमुखंनेक्षेदिति ॥ प्रार्थनामंत्रास्तु ॥ तिलधेनुदानविधौद्रष्टव्याः ॥ अत्रपंचरत्नानितु ॥ कनकंहीरकंनीलं पद्मरागंचमौक्तिकम् ॥ पंचरत्नमिदंप्रोक्तमृषिभिः पूर्वदर्शिभिरिति **कार्त्तिकमाघयोर्द्वादशीषुतिलाचलदानम् ॥ फाल्गुनशुक्लद्वादश्यांरत्नाचलदानम् ॥** एतेषांदानविधिस्तु प्रतिपद्दानविधावुक्तः ॥ **अथसर्वासुद्वादशीषुतथायथावकाशंसर्वेषुदिनेष्वन्नदानम् ॥** देयद्रव्यंसंपूज्य ब्राह्मणंचसंपूज्य । अद्येत्यादि० ममसपत्नीकस्यापापनोदनपूर्वकं सर्वाभीष्टफलावाप्तये० वा यथाकाममुल्लिख्यदत्वा ॥ प्रार्थयेत् । तत्रादौतंडुलान्नप्रार्थना । पावनाःसर्वयज्ञेषुप्रशस्ताहोमकर्मणि ॥ तंडुलानांप्रदानेन

प्रीयतामग्निदेवता ॥ तथा । व्रीहिजास्तंडुलाःशुद्धाःपितृदेवद्विज प्रियाः ॥ तस्मादेषांप्रदानेनसर्वेकामाश्चमेसदा ॥ व्रीहि० । ब्रह्मणा निर्मिताःपूर्वंव्रीहयोयज्ञसाधनाः ॥ अनेनव्रीहिदानेनममसंतुमनोरथाः ॥ यव० ॥ धान्यराजाश्चमांगल्येद्विजप्रीतिकरायवाः ॥ तस्मादेषांप्रदानेनममास्त्वभिमतंफलम् । तथा । पूर्वमेवहियज्ञार्थंनिर्मिताब्रह्मणायवाः ॥ अनेनयवदानेनशांतिरस्तुसदामम ॥ गोधूम० । धान्यचूडामणेर्जंबूद्वीपेगोधूमसंभवः ॥ गंधर्वसौख्यतृप्तिःस्यादतः शांतिंप्रयच्छमे ॥ मुद्ग० । मुद्गधान्यंप्रियंचैवमनुष्याणांचनित्यशः ॥ तस्मादेषांप्रदानेनशांतिःस्वस्त्ययनंमम ॥ माष० ॥ यस्मान्मधुवधेकालेविष्णुदेहसमुद्भवाः ॥ पितृणांतृप्तिदामाषाअतःशांतिं प्रयच्छमे ॥ चणकान्न० ॥ पुरागोवर्द्धनोद्धारसमयेकृष्णभाक्षिताः। चणकाःसर्वपापघ्नाअतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ कुलित्थदानमंत्रः ॥ अग्निगर्भोद्भवाःसौम्याबलारोग्ययशःप्रदाः ॥ कुलित्थानांप्रदानेन शांतिरस्तुसदामम ॥ तिल० ॥ तिलाःपापहरानित्यंविष्णुदेहसमुद्भवाः ॥ तस्मादेषांप्रदानेनपापनाशनमुच्यते ॥ निष्पाव ॥ निष्पावानिर्मिताःपूर्वंलोकानांहितकाम्यया ॥ तस्मादेषांप्रदानेनममपापंव्यपोहतु ॥ प्रियंगू० ॥ प्रियंगवःप्रियायस्मादग्नेश्चहव्यसाधनाः ॥ तस्मादेषांप्रदानेनप्रीणातुपुरुषोत्तमः ॥ श्यामाक० ॥ श्यामाकास्तुसदापुण्याःपवित्रायज्ञसाधनाः ॥ अतस्तेषांप्रदानेनपावको वरदःसदा ॥ कोद्रव० ॥ कोद्रवानिर्मितादेवैःप्राणिनांजीवनायवै ॥ तस्मादेषांप्रदानेनप्रीणातिपुरुषोत्तमः ॥ लंक० ॥ वातप्रधर्षकालंकाबलदाःपुष्टिकारकाः ॥ प्राणिप्रीतिकरानित्यमतः

शांतिंप्रयच्छमे ॥ यावनाल० ॥ यावनालाःप्रीतिकराःकांतिपुष्टि बलप्रदाः ॥ तस्मादेषांप्रदानेनसस्यपूर्णंगृहंमम ॥ मसूरिका० ॥ सवल्कलामसूरास्तुदुरितक्षयकारकाः ॥ तस्मादेषांप्रदानेनविष्णुः प्रीतिकरोमम ॥

इति धान्यदानमंत्राः ॥

**अथान्नानाम्** ॥ तत्रादौपायसान्नस्य ॥ पायसंशर्करायुक्तं सघृतंकांस्यभाजने ॥ प्रदानान्मेफलंचास्तुऐहिकामुष्मिकंचयत् ॥ **कमंडलुः**॥सूर्य्यमंडलसंभूतागव्यदुग्धयुताःप्रियाः ॥ जनार्द्दनादिदेवानामतःशांतिंप्रयच्छमे॥ **ओदनम्** ॥ अन्नंब्रह्ममयंसाक्षान्नराणां जीवरक्षणम्॥ओदनस्यप्रदानेनममसंतुमनोरथाः॥ **दध्यन्न०**॥चंद्रमंडलमध्यस्थंचंद्रांबुदसमप्रभम्॥दध्यन्नंचास्यदानेनप्रीयतांवामनोमम **कृसरान्न०** ॥ कृसरान्नंस्वादुवर्य्यंदेवानांप्रीतिवर्द्धनम् ॥ घृतव्यंजनसंयुक्तंदत्वारोगैःप्रमुच्यते ॥ **नानाभक्ष्य०** ॥ केशवस्यप्रियाभक्ष्याःशंभुब्रह्मादितुष्टिदाः ॥ पृथग्विधापूपकाद्यायच्छंतुबलमौरसम् सर्वान्न॥अन्नमेवयतोलक्ष्मीरन्नमेवजनार्दनः ॥ अन्नंब्रह्माखिलत्राणमस्तुमेसर्वजन्मनि ॥ **सक्तु०** ॥ प्राजापत्यायतःप्रोक्ताःसक्तवोयज्ञकर्मणि ॥ तस्मादेषांप्रदानेनप्रीयतांमेप्रजापतिः ॥ **शर्करा०** ॥ अमृतस्यकुलोत्पन्नाइक्षवोप्यथशर्करा ॥ सूर्य्यप्रीतिकरानित्यमतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ तथा ॥ शर्करेक्षुरसोद्भूतासदास्वादुकरा प्रिया ॥ दानेनास्यास्तुमेनित्यंतुष्टाः स्युर्द्विजदेवताः ॥ **गुड०** ॥ प्रणवःसर्वमंत्राणांनारीणांपार्वतीयथा ॥ तथारसानांप्रवरःसदैवेक्षुरसोमतः ॥ ममतस्मात्परांशांतिंददस्वगुडसर्वदा ॥ इक्षुदं

ड ॥ इक्षुदंडंगुरुतरंरसालंसर्वकामदम् ॥ दानेनानेनतस्याशुप्रीयतां परमेश्वरः ॥ मधु॥यस्मात्पितृणांश्राद्धेषुपीतंमध्वमृतोद्भवम् ॥ सदा तस्यप्रदानेनमोक्षःस्याद्दुःखसागरात् ॥ घृतस्य ॥ कामधेनोःसमुद्भूतं देवानामुत्तमंहविः ॥ आयुर्विवर्द्धनंदातूराज्यंपातुसदाममं ॥ तैल॥ तैलंपुष्टिकरंनित्यमायुर्वृद्ध्यघनाशनम् ॥ ममांगल्यहरंश्रीमदतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ नवनीत ॥ कामधेनोःसमुद्भूतंविष्णोःप्रीतिकरं परम् ॥ नवनीतप्रदानेनबलंपुष्टिंचमेसदा ॥ तथा ॥ क्षीरार्णवसमुद्भूतंविष्णोस्तुष्टिकरंसदा ॥ नवनीतप्रदानेनवांछितंचास्तुमेसदा ॥ क्षीर ॥ अलक्ष्मीहरणंचैवसौभाग्यबलवर्द्धनम् ॥ क्षीरंमंगलमायुष्यमतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ तथा ॥ शिशूनांजीवनंक्षीरंपितृदेवप्रियंसदा ॥ कांतिदंपुष्टिदंनित्यमतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ दधि० ॥ क्षीरेणाम्लसमुद्भूतंदेवर्षिपितृतृप्तिदम् ॥ दधिस्यान्मेऽमृतंनित्यमतः शांतिंप्रयच्छमे ॥ तक्र ॥ तक्रंदधिसमुद्भूतंप्राणिनांतृप्तिदंपरम् ॥ अतस्तस्यप्रदानेनशांतिरस्तुसदाममं ॥ पुष्प ॥ मनोहराणिपुष्पाणिसदादेवप्रियाणिच ॥ अतस्तेषांप्रदानेनममसंतुसुराःप्रियाः ॥ फल ॥ मनोहराणिरम्याणिनित्यंस्वादुकराणिच ।। फलानांसंप्रदानेनसंततिंस्त्वमलाममं ॥ तथा ॥ फलानिमधुराणीहमुनिदेवप्रियाणिच ॥ तस्मात्तेषांप्रदानेनसफलामेमनोरथाः।।ताबूलदानमंत्रः ॥ सोपस्करंचतांबूलंसर्वदामंगलप्रदम् ॥ प्रियंचैवतुदेवानांसौगंध्यं वदनेस्तुमे ।।

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेद्वादशीदानविधिर्नाम सप्तदशःकोशः ॥ १७ ॥

अथ त्रयोदशी दानानि ॥ तत्रचैत्रकृष्णत्रयोदशीवारुणी संज्ञकातस्यांकामदेवपूजनपूर्वकम् रतिकाममूर्तिदानमुक्तम् ॥ तद्विधिस्तुपंचमीदानविधावुक्तएवबोध्यः ॥ तथाचास्यामेवाजादानमुक्तंतद्विधिस्तुमीनसंक्रमणदानविधौद्रष्टव्यः ॥ वैशाखेकार्त्तिकेवा त्रयोदश्यांघृताचलदानमुक्तम् तद्विधिस्तुप्रतिपद्दानविधावुक्तः ॥ अथकार्त्तिककृष्णत्रयोदश्यामपमृत्युनिवारकयमप्रीतिदीपदानम् । तत्तुनिशामुखेगेहाद्बहिर्दद्यात् ॥ मंत्रश्च ॥ मृत्युनादंडपाशाभ्यां कालेनश्यामयासह ॥ त्रयोदश्यांदीपदानात्सूर्य्यजःप्रीयतांममेति ॥ यमदैवत्यादत्रदीपदानंदक्षिणमुखंकार्य्यम् ॥ आचारादीपपूजनंच ॥ अथास्यांगोवर्द्धनदानार्थमारंभः ॥ गोष्ठेचतुष्पथेवाहस्तच तुरस्रंभूमिगृहमंडपंकृत्वा ॥ विधानंपुष्पमालाफलादिभिरलंकृत्य ॥ तस्मिन्सर्वतोभद्रंलिखित्वा ॥ तस्यमध्येगोवर्द्धनधरस्य पर्वतसहितांतदाकारांस्वशक्त्यास्वर्णमयींमूर्त्तिंसंस्थाप्य ॥ तद्वामे रुक्मिणींमित्रविंदां शैब्यांजांबवतींसत्यभामां लक्ष्मणांसुदेवींनाग्नजितीं संपूज्य ॥ दक्षभागे नंदंयशोदां बलभद्रम् ॥ पृष्ठे ॥ सुरभिंसुनंदांसुभद्रांकामधेनुंपूज्य ॥ एतेषांपूजार्थेसुवर्णप्रतिमानिर्मा यपूजयेत् ॥ गोवर्द्धनश्चकर्तव्यःसौवर्णःपलसंमितः ॥ छत्राकारोमहावृक्षैःशोभितःपक्षिभिश्शुभः ॥ गोपीगोपसमाकीर्णोमहावृक्षसमन्वितः ॥ पूजातुवेदागमपुराणोक्तमंत्रैःसर्वेषांकुर्य्यात् ॥ तदनंतरम् ॥ गोपूजनविधिनागोपूजनंकृत्वागोपूजनविधिस्तुगोदानविधावग्रेद्रष्टव्यः ॥ एवंदिनत्रयंसंपूजयेच्चतुर्थेह्निगायत्र्यायथाशक्तिहोमंकृत्वा द्वादशाष्टौवागोमिथुनदानंकुर्य्यात् ॥ गुरोर्दांपत्यमर्चित्वावासोभूषणसंयुतः

मूर्त्यादिप्रतिमासहितंयथाकामंसंकल्प्यब्राह्मणायदद्यात् ॥ माहात्म्य॥ दीपोत्सवेदंशुचिमानसेनकृत्वानरः संततिवृद्धिकारी॥ भुक्त्वा सभोगान्सुखसंप्रयुक्तश्चांतेमुरारेर्भवनंप्रयाति ॥ **अथपौषेत्रयोदश्यांघृतदानम्** ॥ पौषेमासित्रयोदश्यां घृतंविप्रायदापयेत् ॥ समभ्यर्च्याच्युतंदेवंसर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ घृतंसंपूज्य ॥ अद्येत्यादि० ममसमस्तकायिकाशौचनिराकरणसमस्तकामनावाप्तिपूर्वकश्रीपरमेश्वरप्रीतये ॥ इदंघृतंद्रोणमितंतदर्द्धंवागोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ मंत्रः॥ कामधेनोःसमुत्पन्नंदेवानामुत्तमंहविः ॥ आयुर्विवर्द्धनंयस्मादतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ **अथ माघफाल्गुनत्रयोदश्योर्दारिद्र्यहरंकुबेरमूर्तिदानमुक्तंतद्विधिस्तु पंचमीदानविधौद्रष्टव्यः ॥ अथ सर्वासुत्रयोदशीषुदद्रुरोगहरंउमामहेश्वरमूर्त्तिदानम् ॥ यथा॥** ब्राह्मणांगानियोहन्याद्दद्रुरोगीभवेत्तुसः॥ तस्योपशमनंवक्ष्येदानंगौरीश्वराभिधम् ॥ तत्रसौवर्णींमणिमयींवायथाशक्त्योमामाहेश्वरींमूर्त्तिंप्रकल्प्ययथोक्तविधिनासंपूज्य ॥ ब्राह्मणंचवासोलंकारादिभिः संपूज्य ॥ अद्येत्यादि० ॥ सशैलवनकाननसप्तसागरपृथ्वीदानसमफलावाप्तये ॥ इमामुमामाहेश्वरींमूर्त्तिंसालंकृतांसोपस्करांगोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददे ममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ शिवशक्त्यात्मकंयस्माज्जगदेतच्चराचरम् ॥ तवदानेनमेवश्यापृथिवीस्यात्सुनिश्चला॥ सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ **अथ सर्वासुत्रयोदशीषुशर्कराचलदानमुक्तंतद्विधिस्तुप्रतिपद्दानविधावुक्तः** ॥ अथयस्मिन्कस्मिन्त्रयोदश्यांवाअयनादिपर्वदिनेषुसुवर्णधेनुदानम् ॥ यथा ॥

सुवर्णधेनुश्चाप्यत्रसुवर्णाश्चचतुर्दश ॥ सुनिर्णिक्तासुवर्णैश्चसप्तभिर्मध्यमामता ॥ चतुर्भिश्चकनिष्ठास्याच्चतुर्थांशेनवत्सकः ॥ गुडधेनुविधानेनदत्तासर्वफलप्रदा ॥ गुडधेनुदानविधानंतुदशमीदानविधौ द्रष्टव्यम् ॥ अथेत्यादि० प्रवालशृंगींघृतपात्रंस्तनवतींपद्मरोमांकर्पूरागरुनासिकां मिष्टान्नरसवासितां शंखशृंगांतरांशुक्लिललाटस्थांनारिकेलश्रवणांगुडजानुकां पंचगव्यापानवतीं कांस्यपृष्ठां पट्टसूत्रलांगूलांसप्तधान्यसमायुक्तांफलपुष्पोपेतांछत्रोपानत्समन्वितां सुवर्णधेनुंरुद्रदैवत्यांसहस्राश्वमेधफलावाप्तिकामःकुलसहस्रस्य स्वर्गेनिवासकामश्च गोत्रायशर्मणेसुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ सुवर्णधेनुंविप्रायप्रतिपद्येदृशींनरः ॥ हिरण्यरेताः पुरुषःपुराणःकृष्णपिंगलः ॥ सप्तहेमच्छविःस्रष्टाविश्वात्माप्रीयतांममेति ॥ अनेनैवतुमंत्रेणधेनुदानंप्रकीर्त्तितम् ॥ अश्वमेधसहस्रस्यफलमाप्नोत्यसंशयम् ॥ कुलानांचसहस्रस्य स्वर्गं नयतिगोप्रद ॥ इति ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेत्रयोदशीदानविधि
र्नामाष्टादशःकोशः ॥ १८॥

अथ चतुर्दशीदानानि ॥ तत्रादौचैत्रशुक्लचतुर्दश्यामन्येषुपुण्यदिवसेषुवारौप्याचलदानमुक्तम् ॥ तद्विधिस्तुप्रतिपद्दानविधावुक्तः अथ वैशाखशुक्लपक्षेनृसिंहचतुर्दश्यांनृसिंहमूर्त्तिदानम् ॥ ॥ तद्विधिस्तु ॥ एकादशीदानविधावुक्तः॥ ज्येष्ठशुक्लचतुर्दश्यांहेमधेनुदानमुक्तम् ॥ तद्विधिस्तुत्रयोदशीदानविधावुक्तः ॥ अथ भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यांसौवर्णराजतंकार्पासिकंवा यथाविभ

वमनंतदानम् ॥ उक्तविधिनासंपूज्य ब्राह्मणंचसंपूज्य सर्वपापक्षयो त्तरानंतपुण्यफलप्राप्तयेइत्यादि० यथाकामंसंकल्प्य प्रार्थयेत् ॥ दाता चविष्णुर्भगवाननंतःप्रतिग्रहीताचसएवविष्णुः ॥ तस्मात्त्वयासर्वमिदं ततंचप्रसीददेवेशवरान्ददस्व ॥ प्रतिगृह्णद्विजश्रेष्ठअनंतंफलदायकम्। पक्वान्नफलसंयुक्तंसघृतंदक्षिणान्वितम् ॥ अनंतंप्रतिगृह्णातिह्यनंत वैददातिच ॥ अनंतस्तारकोभाभ्यामनंतायनमोनमः ॥ अथ कार्तिककृष्णचतुर्दश्यांप्रदोषदीपदानम् ॥ अमावास्यांचतुर्दश्योः प्रदोषेदीपदानतः ॥ यममार्गान्धकारेभ्योमुच्यतेकार्त्तिकेनरः ॥ इत्युक्तत्वात् ॥ ततःप्रदोषसमयेदीपान्दद्यान्मनोरमान् ॥ ब्रह्मविष्णु शिवादीनांभवनेषुमठेषुच ॥ प्राकारोद्यानवापीषुप्रतोलीनिष्कुटेषुच ॥ मंदुरासुविविक्तासुहस्तिशालासुचैवहि ॥ अस्मिन्दिनेभोजन दानम् ॥ यथा ॥ ततःप्रेतचतुर्दश्यांभोजयित्वातपोधनात् ॥ शैवा न्विप्रांस्तथान्यांश्चशिवलोकेमहीयते ॥ दानंदत्वातुतेभ्यस्तुयमलोकं सगच्छति ॥ तत्रप्रदोषेनरकोद्देशेनचतुर्वर्त्तियुक्तदीपदानंपूर्वाभिमुखोभू त्वादीपंसंपूज्यदीपदानंकुर्य्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ दत्तोदीपश्चतुर्दश्यांनरक प्रीतयेमया ॥ चतुर्वर्त्तिसमायुक्तः सर्वपापापनुत्तये ॥ पश्चादन्या नपिदीपान्दद्यात् ॥ ततोल्काग्रहणम् ॥ तुलासंस्थेसहस्रांशौ प्रदोषेभूतदर्शयोः ॥ उल्काहस्तानराःकुर्युः पितृणांमार्गदर्शनम् ॥ तत्रमंत्रः ॥ शस्त्रसंघहतानांचभूतानांभूतदर्शयोः ॥ उज्वलज्योति षादेहोदहेतांव्योमवह्निना ॥ अग्निदग्धाश्चयेजीवा येप्यदग्धाःकुले मम ॥ उज्वलज्योतिषादग्धास्तेयांतुपरमांगतिम् ॥ ममलोकंपरि त्यज्य आगतायेमहालये ॥ उज्वलज्योतिषावर्त्मप्रपश्यंतोव्रजं

सुवर्णधेनुश्चाप्यत्रसुवर्णाश्चचतुर्दश ॥ सुनिर्णिक्तासुवर्णैश्चसप्तभिर्मध्यमामता ॥ चतुर्भिश्चकनिष्ठास्याच्चतुर्थांशेनवत्सकः ॥ गुडधेनुविधानेनदत्तासर्वफलप्रदा ॥ गुडधेनुदानविधानंतुदशमीदानविधौद्रष्टव्यम् ॥ अथेत्यादि० प्रवालशृंगींघृतपात्रस्तनवतींपद्मरोमांकर्पूरागरुनासिकां मिष्टान्नरसवासितां शंखशृंगांतरांशुक्तिललाटस्थांनारिकेलश्रवणांगुडजानुकां पंचगव्यापानवतीं कांस्यपृष्ठांपट्टसूत्रलांगूलांसप्तधान्यसमायुक्तांफलपुष्पोपेतांछत्रोपानत्समन्वितां सुवर्णधेनुरुद्रदैवत्यांसहस्राश्वमेधफलावाप्तिकामःकुलसहस्रस्यस्वर्गेनिवासकामश्च गोत्रायशर्मणेसुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ सुवर्णधेनुंविप्रायप्रतिपद्येदशींनरः ॥ हिरण्यरेताःपुरुषःपुराणःकृष्णपिंगलः ॥ सप्तहेमच्छविःस्रष्टाविश्वात्माप्रीयतांममेति ॥ अनेनैवतुमंत्रेणधेनुदानंप्रकीर्त्तितम् ॥ अश्वमेधसहस्रस्यफलमाप्नोत्यसंशयम् ॥ कुलानांचसहस्रस्य स्वर्गंनयतिगोप्रद ॥ इति ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेत्रयोदशीदानविधिर्नामाष्टादशःकोशः ॥ १८॥

अथ चतुर्दशीदानानि ॥ तत्रादौचैत्रशुक्लचतुर्दश्यामन्येष्वपुण्यदिवसेषुवारौप्याचलदानमुक्तम् ॥ तद्विधिस्तुप्रतिपद्दानविधावुक्तः अथ वैशाखशुक्लपक्षेनृसिंहचतुर्दश्यांनृसिंहमूर्त्तिदानम् ॥ ॥ तद्विधिस्तु ॥ एकादशीदानविधावुक्तः॥ ज्येष्ठशुक्लचतुर्दश्यांहेमधेनुदानमुक्तम् ॥ तद्विधिस्तुत्रयोदशीदानविधावुक्तः ॥ अथ भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यांसौवर्णराजतंकार्पासिकंवा यथाविभ

वमनंतदानम् ॥ उक्तविधिनासंपूज्य ब्राह्मणंचसंपूज्य सर्वपापक्षयो त्तरानंतपुण्यफलप्राप्तयेइत्यादि० यथाकामंसंकल्प्य प्रार्थयेत् ॥ दाता चविष्णुर्भगवाननंतःप्रतिग्रहीताचसएवविष्णुः ॥ तस्मात्त्वयासर्वमिदं ततंचप्रसीददेवेशवरान्ददस्व ॥ प्रतिगृह्णद्विजश्रेष्ठअनंतंफलदायकम् । पक्वान्नफलसंयुक्तंसघृतंदक्षिणान्वितम् ॥ अनंतंप्रतिगृह्णातिह्यनंत वैददातिच ॥ अनंतस्तारकोभाभ्यामनंतायनमोनमः ॥ अथ कार्त्तिककृष्णचतुर्दश्यांप्रदोषेदीपदानम् ॥ अमावास्यांचतुर्दश्योः प्रदोषेदीपदानतः ॥ यममार्गान्धकारेभ्योमुच्यतेकार्त्तिकेनरः ॥ इत्युक्तत्वात् ॥ ततःप्रदोषसमयेदीपान्दद्यान्मनोरमान् ॥ ब्रह्मविष्णु शिवादीनांभवनेषुमठेषुच ॥ प्राकारोद्यानवापीषुप्रतोलीनिष्कुटेषुच ॥ मंदुरासुविविक्तासुहस्तिशालासुचैवहि ॥ अस्मिन्दिनेभोजन दानम् ॥ यथा ॥ ततःप्रेतचतुर्दश्यांभोजयित्वातपोधनात् ॥ शैवा न्विप्रांस्तथान्यांश्चशिवलोकेमहीयते ॥ दानंदत्वातुतेभ्यस्तुयमलोकं सगच्छति ॥ तत्रप्रदोषेनरकोद्देशेनचतुर्वर्त्तियुक्तदीपदानंपूर्वाभिमुखोभू त्वादीपंसंपूज्यदीपदानंकुर्य्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ दत्तोदीपश्चतुर्दश्यांनरक प्रीतयेमया ॥ चतुर्वर्त्तिसमायुक्तः सर्वपापापनुत्तये ॥ पश्चादन्या नपिदीपान्ददयात् ॥ ततोल्काग्रहणम् ॥ तुलासंस्थेसहस्रांशौ प्रदोषेभूतदर्शयोः ॥ उल्काहस्तानराःकुर्युः पितृणांमार्गदर्शनम् ॥ तत्रमंत्रः ॥ शस्त्रसंघहतानांचभूतानांभूतदर्शयोः ॥ उज्वलज्योति षादेहोदहेतांव्योमवह्निना ॥ अग्निदग्धाश्चयेजीवा येप्यदग्धाःकुले मम ॥ उज्वलज्योतिषादग्धास्तेयांतुपरमांगतिम् ॥ ममलोकंपरि त्यज्य आगतायेमहालये ॥ उज्वलज्योतिषावर्त्मप्रपश्यंतोव्रजं

तुते ॥ अथ कार्तिकशुक्लचतुर्दश्यांशिवसन्निधौषष्ट्युत्तरश तत्रयवर्त्तिकापूरितदीपदानम् ॥ दीपंसंपूज्ययथाकामंसंकल्प प्रतिज्ञायदीपंप्रज्वाल्यशिवायनिवेदयेत् ॥ तत्रमंत्रः ॥ कीटाःपतं गामशकाश्चवृक्षाजलेस्थलेयेविचरंतिजीवाः ॥ दृष्ट्वाप्रदीपंनहिजन्म भाजोभवंतिनित्यंश्वपचाहिविप्राः ॥ अथ माघशुक्लचतुर्दश्यांवा यस्मिन्कस्मिंश्चतुर्दश्यांरुद्राक्षमालादानम् ॥ तत्रसुवर्णसूत्रथं थितांमुक्तामणिप्रवालादियुतांमालांसंपूज्यब्राह्मणंवृत्वाअथेत्यादि० सर्वसंपदायुरारोग्यसमस्तपापनाशपुत्रपौत्रादिवृद्धिशिवलोकनिवास मोक्षेष्टसिद्धिकामेत्यादि० ॥ पापघ्नाःसर्वसुखदारुद्राक्षानिर्मितायतः॥ रुद्राक्षाःशिवदानित्यमतः शांतिंप्रयच्छमे ॥ योददातिद्विजाति भ्योरुद्राक्षान्मणिसंयुतान् ॥ तस्यप्रीतोभवेद्रुद्रः स्वपदंचप्रयच्छ ति ॥ अथमाघफाल्गुनयोश्चतुर्दशीषुवृषदानंतद्विधिस्तुक न्यासंक्रमदानविधावुक्तः ॥ अथसर्वासुचतुर्दशीषुरौप्या चलदानमुक्तंतद्विधिस्तुप्रतिपद्दानविधावुक्तः ॥ अथचतु र्दश्यांवान्यत्सुपर्वसुलवणधेनुदानम्॥गोमयेनानुलिप्तेतुदर्भसंस्त रसंस्थितम्॥आविकंचर्मविन्यस्यपूर्वाशाभिमुखंस्थितम् ॥ वस्त्रेणा च्छादितांकृत्वाधेनुंकुर्वीतबुद्धिमान् ॥ आढकेनैवकुर्वीतषहुवित्तोप कल्पिताम् ॥ गांविप्रंचयथाविभवंवस्त्रालंकारादिभिःसंपूज्य अ द्येत्यादि० गोत्रायशर्मणेसुपूजितायइमांलवणधेनुंफलस्तनींसिंधुशु क्तिवर्णांसक्तुपिंडकपोलांयवास्यांकंबलपट्टसूत्रग्रैवेयकांताम्रपृष्ठींगु डापानांकंबललांगूलांमधुयोनिकांसर्वाभरणभूषितांसर्वपापक्षयकामो विष्णुप्रीतिकामोवातुभ्यमहंसंप्रददे नममेति ॥ पुत्रभार्य्या दियुतःम

दक्षिणीकृत्यदद्यात् ॥ शेषंमधुधेनुवत् ॥ तत्तुकार्त्तिकसंक्रमणदानवि धौद्रष्टव्यम् ॥ दानवाक्यंतु ॥ लवणेवैरसाःसर्वेसर्वास्तिष्ठंतिदेवताः सर्वदेवमयेदेविलवणाख्येनमोस्तुते ॥ **अथसर्वासुचतुर्दशीषु संक्रांत्यादिपर्वसुवाशिवलिंगदानम् ॥** पारदंसौवर्णराजतंता म्रंपार्षदंनर्मदादिजंमृण्मयंवायथाश्राद्धम् लिंगंयथोक्तविधिनासंपू ज्य पूजोपकरणादिभिःसंयोज्य ब्राह्मणंवासोलंकरणादिभिः संपू ज्य अद्येत्यादि०सशैलवनकाननभूचक्रदानसमफलकाम०वायथा भिलाषमुल्लिख्य इदममुकद्रव्यनिर्मितंशिवलिंगंसर्वोपस्करयुतंसवस्त्र फलंस्वर्णादिपात्रेस्थितं सालंकृतं गोत्रायशर्मणेसालंकृतायतुभ्य महंसंप्रददेनममेति ॥ सुवर्णंगांभूमिंचदक्षिणार्थेदद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ सालंकारंमहालिंगंनिवसत्वांवृषध्वज ॥ प्रीयतांतवदानेनशिवोगौर्या युतस्तुमे ॥ तथा ॥ कैलासवासोगौरीशोभगवान्भगनेत्रभित् चराचरात्मकोलिंगरूपीदिशतुवांछितम् ॥ रुद्राक्षमालासहितं लिंगंदत्वा कोटिगुणंपुण्यंभवति ॥ **अथमारकतमणिमयलिंग दानम् ॥** संकल्पादिपुर्ववत् ॥ मंत्रस्तु ॥ इदंमारकतंलिंगंरौप्यपी ठसमन्वितम् ॥ धान्यैर्द्वादशभिर्युक्तमेकादशफलान्वितम् ॥ संप्रदद्याद्विधानेनपृथ्वीदानफलंलभेत् ॥ **काश्मीरलिंगदानेतु ॥** मारकतस्थानेकाश्मीरपदंवदेत् ॥ अन्यत्सर्वंलिंगदानंवदेत् ॥ मंत्रस्तु ॥ मृत्युंजयेशगौरीशसूनुभ्यांवृषवाहन ॥ संप्रदानेनमेशं भोममसंतुमनोरथाः ॥

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेचतुर्दशीदान
विधिर्नामैकोनविंशःकोशः ॥ १९ ॥

अथपौर्णमासीदानानि॥तत्रादौचैत्र्यांभाण्डदानम् ॥ यथाभि लाषंसंकल्प्य।दानवाक्यम्। हिरण्मयानिभांडानिपात्राणिमृन्मयानि च।गृहाणेमानिवैयस्माद्रास्करःप्रीयतांमम ॥तत्रैवगोधूमपिष्टदान मंत्रः ॥ गोधूमजनितंपिष्टंशर्करावृतसंयुतम् ॥ द्विजवर्य्यगृहाण त्वमतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ अथ वैशाख्यांसान्नोदकसातिलकुंभ दानमुक्तम् ॥ यथा ॥ वैशाख्यांपौर्णमास्यांतुस्रष्टाकमलयोनि ना ॥ तिलाःकृष्णाश्चगाश्चैवतृतयेसर्वदेहिनाम् ॥ तस्मात्काय्यंति लैःस्नानंतत्राग्नौजुहुयात्तिलान् ॥ निवेदितव्यंविधिवत्तिलपात्रंद्वि जातये ॥ तिलैतिलेनदीपाश्चदेयादेवेभ्यएवच ॥ सोदकैश्चातिलैःसा र्द्धंकर्त्तव्यंपितृतर्पणम् ॥ सतिलैर्मधुभिर्युक्तैर्ब्राह्मणेभ्यश्चतर्पणम्॥दा तव्यादक्षिणाचापिस्वर्णंवित्तानुसारतः।अत्रातिलदानंतिलपात्रदानंक न्यासंक्रमणदानविधावुक्तवद्बोध्यम् ॥ सान्नोदककुंभदानंतुमेषसंक्रां तिदानविधावुक्तवत् तथात्रतिलदानेमंत्रविशेषः ॥ तिलावैसोमदै वत्याःसुरैःसृष्टास्तुगोसवे॥स्वर्गप्रदाःस्वतंत्राश्चतेमांरक्षन्तुनित्यशः।इ ति॥अथास्यांपौर्णमास्यांश्रावण्यांवादधिधेनुदानम्॥तत्रगोम योपलिप्तभूमौकुशकृष्णाजिनेआस्तीर्णेसप्तधान्योपरिदधिकुंभंसंस्था प्य ॥ तच्चतुर्थांशेनवत्संकृत्वा अद्येत्यादि० गोत्रायशर्मणेसुपूजि ताय सुवर्णमुखींप्रशस्तपत्रश्रवणांमुक्ताफलेक्षणांचंदनागरुशृंगींमुखे विशेषगंधद्रव्यैर्युक्तांशर्करयाकृताजिह्वांश्रीखंडेनकृतघ्राणांफलमयदं तांसितकंचलच्छन्नांदर्भरोमांसूत्रमयपुच्छांरौप्याखुरींनवनीतस्त नवतीमिक्षुपादांसर्वाभरणभूषितांवस्त्रयुग्मेनाच्छादितांगंधपुष्पार्चि तांइमांदधिधेनुंसर्वपापक्षयकामो दधिक्राष्ण इतिमंत्रंपठित्वातुभ्य

महंसंप्रददेनममेतिगुडधेनूक्तमंत्रेणवादद्यात् ॥ ततःसुवर्णदक्षिणां दत्वा ॥ यालक्ष्मीरित्यादिमंत्रैःप्रार्थयेत् ॥ शेषविधानंसर्वंगुडधेनुवद्ज्ञातव्यम् ॥ वैशाखकार्त्तिकमाघफाल्गुनपूर्णिमासु कृष्णाजिनमतिपुण्यदानम् ॥ तद्विधिस्तुमकरसंक्रमणदानविधावुक्तः ॥ गोदानंतुसार्वकालिकम् ॥ अथ ज्येष्ठीपौर्णमास्यांछत्रोपानद्व्यजनदानमुक्तम् ॥ यथा ॥ ज्येष्ठेमासितिलान्दद्याच्छत्रोपानद्युगान्वितान् ॥ व्यजनंचाश्वमेधस्यफलंप्राप्नोतिमानवः ॥ असिपत्रवनंघोरंक्षुरधारासमन्वितम् ॥ तीक्ष्णातपंचतरतिछत्रोपानत्प्रदोनरः ॥ एतेषांविधिस्तुकर्कसंक्रांतिविधावुक्तः ॥ आथाषाढ्यां पुराणदानम् ॥ यथारुचिपुस्तकदानंवा ॥ स्वर्णादिसिंहासनेस्थितं पुस्तकंसंपूज्य ब्राह्मणंवस्त्रालंकारादिभिर्वृत्वा अद्येत्यादि ममब्रह्महत्यादिसमस्तपापक्षयपूर्वकबहुपुत्रपौत्रसौभाग्यादिसकलमनोरथावाप्तिपुस्तकलिखिताक्षरसंख्यसहस्राब्दब्रह्मलोकनिवासकामोगोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददे नममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ मातृकाब्रह्मणोरूपंवेदव्यासंतथापरम् ॥ तस्मादस्यप्रदानेनममसंतुमनोरथाः ॥ पुस्तकदानंतुयथाश्रद्धंसर्वकालेभवति ॥ अथ श्रावण्यांयज्ञोपवीतदानंतत्वेनादौरक्षाबंधनमंत्रः ॥ येनबद्धोबलीराजादानवेंद्रोमहाबलः ॥ तेनत्वांप्रतिबध्नामिरक्षेमाचलमाचल ॥ वैदिकंच ॥ यदाबध्नन्दाक्षायण २ शतानीकायसुमनस्यमानातन्मआबध्नामिशतंशारदायायुष्मानजरदष्टिर्यथासत् ॥ ततःफलपुष्पाहिरण्यसहितंयज्ञोपवीतंसंपूज्य ॥ अद्येत्यादिममसमस्तपातकोपपातकनिरसन ब्रह्मवर्चस्यायुर्बलाभिवृद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्ये

गोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ उपाकर्मणिविप्रेभ्योदद्याद्यज्ञोपवीतकम् ॥ आयुष्मान्जायतेतेनकर्मणामानवोभुवि ॥ **अथशिरोरोगघ्नयज्ञोपवीतदानम्** ॥ यथाशक्त्या सुवर्णेननिर्मितंब्रह्मसूत्रकम् ॥ सोत्तरीयंरौप्ययुतंदद्यादारोग्यहेतवे ॥ मंत्रस्तु ॥ धातविधाताजगतांपरमात्माचतुर्मुखः ॥ विनाशयतु मेक्षिप्रंरोगवेगंशिरोगतमिति ॥ **अथगर्भस्रावघ्नयज्ञोपवीतदानम्** ॥ यज्ञोपवीतंसौवर्णमित्यादिसर्वंपूर्ववत् ॥ विशेषस्तुतद्ग्रन्थिप्रदेशेमौक्तिकंवज्रौनिधापयेत् ॥ पूजातुघृतपात्रोपरिस्थाप्यकुर्यात् ॥ दानवाक्यंतु ॥ उपवीतंपरमिदंब्रह्मणाविधृतंपुरा ॥ अनेन कांस्यदानेनगर्भंसंधारयेह्यहम् ॥ फलान्यपिब्राह्मणेभ्योतस्मिन्काले प्रदापयेत् ॥ अनुव्रज्यतथाचार्य्यंप्रणिपत्यक्षमापयेत् ॥ गर्भस्रावभवाद्दोषादेवंकृत्वाविमुच्यते ॥ **अथ प्रौष्ठपद्यांपौर्णमास्यां भागवतादिपुराणदानम्** ॥ प्रौष्ठपद्यांपौर्णमास्यांस्वर्णसिंहासनस्थितम् ॥ श्रीमद्भागवतंदत्वानरोमोक्षमवाप्नुयात् ॥ इत्युक्त्वात्महद्विधिस्तुआषाढीपौर्णिमायांपुराणदानविधावुक्तः ॥ अथाश्विन्यांकोजाग्रेरात्रौलक्ष्मींसंपूज्य ॥ यथाशक्तियाचदातव्यादीपाः स्वर्णविनिर्मिताः ॥ ब्राह्मणेभ्योविधानेनचिरंलक्ष्मीःप्रसीदति अद्येत्यादि० ममानेकजन्मार्जितकूटसाक्ष्यादिपापक्षयसूचितनेत्रविकारोपशमनपूर्वकलक्ष्मीप्रीतये एतान्स्वर्णमयदीपान् ॥ मंत्रस्तु ॥ प्रभाकरकरस्पृष्टादीपाअंधत्वनाशकाः ॥ तस्मादेषाप्रदानेनसद्दृष्टिर्वर्धतांममेति ॥ वरान्दत्वायतोविष्णुर्मत्स्यरूपी भवत्ततः तत्पादत्तंहुतंजप्तंदक्षयज्ञफलंस्मृतम् ॥ **अथनानाफलदानम्** ॥

फलानियानिविधंतेसुगंधान्यगदानिच ॥ कंकोलकट्फलंजातिलवं गीलवलीफलम् ॥ खर्जूरंनारिकेलंचकदलीफलमेवच ॥ दाडिमं मातुलिंगंचकर्कोटंत्रपुसंतथा ॥ वृन्ताकंकारवेल्लंचचिंचाकूष्मांडमेव च ॥ इति ॥ फलानामप्रदानेनयेषांतुतिथयोगताः ॥ तेव्याधितादरिद्राश्चजायंतेभुविमानवाः ॥ फलदानंतु मकरसंक्रातिदानविधावुक्तव त् ज्ञातव्यम् ॥ अथ प्रदोषसमये त्रिपुरोत्सवार्थदीपदान म् ॥ तस्यविधिस्तुवैकुंठचतुर्दशीदानविधावुक्तएव ॥ अथचत द्दिनेतिलदानम् ॥ कृष्णाजिनेतिलान्कृत्वासुवर्णमधुसर्पिषी ॥ द्रोणे कंवाससाच्छन्नंदद्यात्तद्वत्सदक्षिणम् ॥ ब्राह्मणायचतंदत्वासवंत रतिदुष्कृतमिति ॥ अद्येत्यादि० अमुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्म णायसुपूजिताय कृष्णाजिनस्थंसुवर्णमधुसर्पिर्युतंवस्त्राच्छन्नंतिलद्रो णंसोमदैवतंसर्वपापक्षयकामस्तुभ्यमहंसंप्रददेनममेतिदद्यात् ॥ कृते सत्तिलद्रोणस्यसांगतासिद्ध्यर्थंइदंसुवर्णमग्निदैवतंदक्षिणात्वेनतुभ्यम हंसंप्रददे नममेतिदद्यात् ॥ प्रतिग्रहीतातुदेवस्यत्वेतितांसंगृह्णयथा शास्त्रंकामस्तुतिंपठित्वासमापयेत् ॥ अथ कार्त्तिक्यांमाघ्यांवै शाख्यांवानीलवृषभदानम् ॥ गजाश्वरथदानंचघृतधेन्वादय स्तथा ॥ प्रदेयाःपुण्यकृद्भिस्तुशिवलोकप्रकांक्षिभिः ॥ तत्रादौ नीलवृषलक्षणम् ॥ लोहितोयस्तुवर्णेनमुखेपुच्छेचपांडुरः ॥ श्वेतः खुरविषाणाभ्यांसवृषोनीलउच्यते ॥ तथाच ॥ चरणाश्वमुखं पुच्छंयस्यश्वेतानिगोपतेः ॥ लाक्षारसमवर्णश्चतंनीलमितिनिर्दिशे त् ॥ भ्रूमौकुर्वतिलांगूलंप्रलंबंस्थूलघोणकः ॥ पुरस्तादुन्नतोनीलो वृषभःसःप्रशस्यते ॥ अथवा ॥ तत्तोदरः कृष्णपृष्ठोब्राह्मणस्यप्र

शस्यते ॥ स्निग्धवर्णेनरक्तेनक्षत्रियस्यप्रशस्यते ॥ कांचनेनच वैश्यस्यकृष्णः शूद्रस्यशस्यते ॥ यस्यप्रागायतेशृंगेभ्रूमुखात्रिमुखेसदा ॥ सर्वेषामेववर्णानांसचसर्वार्थसाधकः ॥ एतादृशंवृषभंसुवर्णतिलकालंकृतंमुक्तादामविभूषितंप्रवालपुच्छंरौप्यखुरंस्वर्णशृंगं दुकूलाच्छादितं घंटाद्वैवेयकंकृत्वाब्राह्मणंवस्त्रालंकारादिभिःसंपूज्य दद्यात् ॥ अद्येत्यादि०ममानेकजन्मार्जितसंकरीकरणमलिनीकरणादीनांपातकोपपातकानांविनाशनपूर्वकं सुखसौभाग्यायुरारोग्याभिवृद्ध्युत्तरवृषांगजरोमसंख्याकदिव्याब्दसहस्रावधिगोलोकनिवास० ॥ मंत्रस्तु ॥ दानार्थंब्रह्मणासृष्टोवृषभोनीलसंज्ञकः ॥ तस्मादस्यप्रदानेनममसंतुमनोरथाः ॥ सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ अस्यामेवगजाश्वादिदानमुक्तम् ॥ तद्विधिस्त्वग्रेद्रष्टव्यः ॥ अथमार्गशीर्ष्यांपौर्णमास्यांदशाचलदानमुक्तम् ॥ तद्विधिस्तु प्रतिपद्दानविधौद्रष्टव्यः ॥ अथपौष्यांतिलपात्रदानमुक्तम् ॥ तद्विधिस्तु एकादशीदानविधावुक्तः ॥ अथ माघ्याम् ॥ तैलमामलकाश्चैवतीर्थदेयास्तुनित्यशः ॥ ततःप्रज्वालयेत्वह्निंसेवनार्थंद्विजन्मनाम् ॥ इतिमाघमासपरत्वम् ॥ एवंस्नात्वावसानेतुभोज्यंदेयमवारितम् ॥ भोजयेद्विजदांपत्यंभूषयेद्वस्त्रभूषणैः ॥ कंबलाजिनरत्नानिवासांसिविविधानिच ॥ लोचकानिचदेयानिप्रच्छादनपटास्तथा ॥ उपानद्धौतथागुप्तामोचकौपाममोचकौ ॥ अनेनविधिनाद्यानमाधवःप्रीयतामिति ॥ अत्रावसानेमाघपौर्णमास्यामिति ॥ तथा चैवघृतकंबलदानम् ॥ अग्निलोकेदिवंयंतंनोदयाद्वृतकंबलम् ॥ तस्मात्तंभवेत्पुण्यंमाघपूर्णिमपर्वणि ॥ अद्येत्यादिम

मसर्वपापक्षयपूर्वकं ॥ इहामुत्रशीतोष्णादिदुःखनिवारणोत्तरविष्णुसायुज्यकामः॥ मंत्रस्तु॥ शीतवातहरंदिव्यंवृतकुंभंसकंचलम् ॥ दानेनानेनसंतुष्टोभवेद्गौरीपतिःशिवः ॥ अथाऽऽज्यामेवगोमिथुनदानम् ॥ सवृषभांगांसंपूज्यथाविभवमलंकृत्यशुद्धंब्राह्मणंवृत्वा ॥ अद्येत्यादि० सवृषभरुद्रदैवतसहिरण्यदक्षिणंयथाशक्त्यलंकृतांगांसमस्तपापक्षयोत्तरविष्णुसायुज्यावाप्तिकामोगोत्रायशर्मणेतुभ्यमिमंगोमिथुनंयथाशक्त्यलंकृतंसंप्रददेनममेति ॥ यालक्ष्मीरित्यादिभिःगांप्रार्थयेत् ॥ ततोवृषभप्रार्थना॥ धर्मस्त्वंवृषरूपेणजगदानंदाकारक॥ अष्टमूर्त्तेरधिष्ठानमतःपाहिसनातन ॥ अथफाल्गुन्याम् दोलास्थितंविष्णुमूर्त्तिदानम् ॥ तद्विधिस्तुद्वादशीदानविधावुक्तः ॥ तदंगत्वेनशय्यादानंचकर्त्तव्यम् ॥ शय्यादानविधिस्तुमिथुनसंक्रांतिदानविधावुक्तः ॥ अथसर्वासुपौर्णमासीषु मुख्यपर्वसुवा हरिहरमूर्त्तिदानम् ॥ हरेर्हरस्यचतथासुवर्णशतकेनतु ॥ तदर्द्धेनाथवाकुर्यान्मूर्तीर्लक्षणसंयुते ॥ सर्वोपस्करसंयुक्तेसर्वाभरणभूषिते ॥ योददातिनरःसम्यक्सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ एवमुक्तविधानेनहरिहरमूर्तीसंपाद्य विधिवत्संपूज्य ब्राह्मणंचवासोलंकारादिभिर्वृत्वा ॥ अद्येत्यादि० अपमृत्युव्याधिसर्वबाधानिवारणाव्याहतैश्वर्य्यप्राप्ति धर्मश्रीपुत्रपौत्रादिकर्तृकराज्यांतेपरपदावाप्तिकामः ॥ मंत्रस्तु ॥ शिवोनामशिवःसाक्षात्तथानारायणोपिच ॥ अस्यदानाद्धरिहरौप्रसन्नौस्तांसदाममः ॥

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेपौर्णमासीदानविधि
र्नामविंशतितमःकोशः ॥ २० ॥

अथामावास्यादानानि ॥ तथात्रयस्मिन्कस्मिन्नमादिनेहिरण्यरजतलवणदानान्युक्तानि ॥ तत्रादौहिरण्यदानम् ॥ तच्चनिष्कत्रयमितंकनिष्ठद्वादशमाषकोनिष्कः ॥ अद्येत्यादि०गोत्रायशर्मणेइदंहिरण्यं- अग्निदैवतंसमस्तपापक्षयकामस्तुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थंहेमबीजंविभावसोः ॥ अनंतपुण्यफलदमतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ अथ रजतदानम् ॥ पलत्रयमितंरौप्यंदद्यात् ॥ अद्येत्यादि ममसमस्तपापक्षयपूर्वकशिवविष्णुपितृप्रीतिकामोगोत्रायशर्मणेसुपूजितायइदंरजतंविष्णुदैवतंसदक्षिणंतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ प्रीतिर्यतःपितॄणांच विष्णुशंकरयोः सदा ॥ शिवनेत्रोद्भवंरूप्यमतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ ॥ इति रजतदानम् ॥ अथ लवणदानम् ॥ लवणंसार्द्धखारीकंदद्यात् ॥ अद्येत्यादि० ममसमस्तपापक्षयपूर्वकशिवप्रीतिकामोगोत्रायशर्मणेसुपूजिताय इदंलवणंसर्वरसोत्कृष्टंसोमदैवत्यंसदक्षिणंतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ यस्मादन्यरसाः सर्वेनोत्कृष्टालवणंविना ॥ शोभाप्रीतिकरंयस्मादतः शांतिंप्रयच्छमे ॥ इतिलवणदानम् ॥ अथकार्तिक्यांमामायांदीपदानम् ॥ अत्रलक्ष्मीपूजनोत्सवम् पूजनग्रंथोक्तंकृत्वादेवब्राह्मणगृहादिषुदीपदानंकुर्य्यात्तदुक्तम् ॥ कार्त्तिकेमास्यमायांयःकुर्य्यादीपप्रदीपनम् ॥ देवब्राह्मणगेहादौसगच्छेद्वैष्णवंपदमिति ॥ तत्रमंत्रः ॥ अग्निर्ज्योतिरविर्ज्योतिश्चंद्रोज्योतिस्तथैवच ॥ उत्तमःसर्वज्योतींनांदीपोयंप्रतिगृह्यताम् ॥ अथमाघ्यांममायांनवनीतधेनुदानम् ॥ अमायांमाघमासस्यपूज

यित्वापितामहम् ॥ गायत्र्यासहितंदेववेदवेदांगभूषितम् ॥ न
वनीतमयीधेनुंफलैर्नानाविधैर्युताम् ॥ सहिरण्यांसवत्सांचब्राह्म
णायनिवेदयेत् ॥ अत्रघृतधेनुचत्सर्वंविधानंज्ञातव्यम् ॥ की
र्त्तंब्रह्मेत्प्रीयतामत्रपद्मयोनिःसनातनः ॥ स्थानंस्वर्गेथपातालेय
न्मर्त्येकिंचिदुत्तमम् ॥ तदवाप्नोत्यसंदिग्धंपद्मयोनेः प्रसादतः ॥
यानिचान्यानिदानानि दीयंते तु बहून्यपि ॥ युगादिषु च सर्वे
षुअक्षय्याण्यभवंतिहि ॥ वित्तहीनःस्वशक्त्यायोददातिस्वल्पकं
बहु ॥ तदप्यक्षय्यतांयातिनात्रकार्य्याविचारणा ॥ वित्तानुसारंस्वं
दद्याद्धनीवानिर्द्धनीभुवम् ॥ भूहिरण्यंगृहंवासःशयनान्यासनानि
च ॥ छत्रोपानद्यानानिदेयानिशुभमिच्छता ॥ एवंदत्वायथाश
क्त्याभोजयित्वाद्विजोत्तमान् ॥ पश्चाद्भुंजीतसुमनावाग्यतोबंधु
भिःसह ॥ यत्किंचिद्वाचिकंपापंमानसंकायिकंतथा ॥ तत्सर्वंनाश
मायातियुगाऽदिविधिदानतः ॥ गीयमानोथगंधर्वैःस्तूयमानःसुरा
सुरैः ॥ रुद्रस्यानुचरोभूत्वारुद्रलोकेवसेन्नरः ॥ यद्दीयतेकिमपिको
टिगुणंतदाहुःस्नानंजपोनियतमक्षयमेवसर्वम् ॥ स्यादक्षयंतुयुगपूर्व
तिथीषुसर्वं व्यासादयोमुनिवराइदमाजगंथ ॥ अथ पौषमाघयोर
मायामद्धोदयदानानितद्यथा ॥ अमार्कपातश्रवणयुक्तान्चेत्पौष
माघयोः ॥ अर्द्धोदयः सविज्ञेयः किंचिन्यूनोमहोदयइति ॥
तत्र ॥ सहस्रार्कग्रहैःसममितिदानफलमुक्तंपूर्वैः ॥ अर्द्धोदयेतुसं
प्राप्तेसर्वेगंगासमंजलम् ॥ शुद्धात्मानोद्विजाःसर्वेभवेयुर्ब्रह्मसन्निधाः ॥
यत्किंचित्क्रियतेदानंसर्वंमेरुसमंभवेत् ॥ अत्रविशेषतः ॥
पात्रदानमुक्तंयथा ॥ चतुःषष्टिपलंमुख्यममत्रंतत्रकारयेत् ॥ कृत्वा

रिंशत्पलंवाथपंचविंशतिमेववा ॥ अमत्रंपात्रविशेषम् ॥ तच्चसुवर्णरजतादिघटितंयथाविभवंबोध्यम् ॥ निधायपायसंशुद्धंपद्ममष्टदलं लिखेत् ॥ पद्मस्यकर्णिकायांतुकर्षमात्रंसुवर्णकम् ॥ तदभावेतद र्द्धंवातदर्द्धंवातुकारयेत् ॥ भूमौतुतंडुलैःशुद्धैःपद्ममष्टदलंशुभम् ॥ अमत्रंस्थापयेत्तत्रब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ॥ शेषापूजातःकार्य्या श्वेतमाल्यैःसुशोभनैः ॥ वस्त्रादिभिरलंकृत्यब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ तत्रमंत्रः ॥ सुवर्णपयसामत्रंयस्मादेतत्त्रयीमयी ॥ आवयोस्तार कंयस्मात्तद्गृहाणद्विजोत्तम ॥ समुद्रमेखलांपृथ्वींसम्यग्दत्वातुयत्फ लम् ॥ तत्फलंलभतेमर्त्यःकृत्वादानममत्रकमिति ॥ आवयोस्ता रकमित्यनेनप्रतिग्रहदोषाभावउक्तः ॥ गंगागयाप्रयागेषुपुष्करेणां त्रयेतथा ॥ मानसादितुतीर्थेषुयत्पुण्यंस्नानदानतः ॥ तत्समंलभ तेमर्त्यउदयार्द्धस्यदानतः ॥ अश्वमेधायुतंचेष्टमिष्टापूर्त्तंचतैःकृतम् ॥ अर्द्धोदयेकृतंयेनदानंसम्यगमत्रकम् ॥ अथार्द्धोदयेतिलपर्वत दानम् ॥ पूर्वाह्णेसंगमेस्नात्वाशुचिर्भूत्वासमाहितः ॥ सर्वपापवि शुद्ध्यर्थंनियमस्थोभवेन्नरः ॥ तत्रमंत्रः ॥ त्रिदेवत्यंव्रतंदेवाःकरि ष्येमुक्तिमुक्तिदम् ॥ भवंतुसन्निधौमेयत्रयोदेवास्त्रयोग्नयः ॥ तथा ब्रह्मविष्णुमहेशानांसौवर्णपलसंख्यया ॥ प्रतिमास्तुप्रकर्त्तव्यास्तद र्द्धेनाथवापुनः ॥ साग्रंशतत्रयंशंभोर्द्रोणानांतिलपर्वतः ॥ कर्त्तव्यः पर्वतोविष्णोर्ब्रह्मणःपूर्वसंख्यया ॥ शय्यात्रयंततःकुर्य्यादुपस्कर समन्वितम् ॥ संपूज्यविप्रवर्य्येभ्योदत्वेप्सितमवाप्नुयात् ॥ अथा स्यदानप्रयोगः ॥ यजमानःकृतनित्यक्रियःपुण्यकालेतीर्थादौ स्नात्वाऽस्य ॥ अद्येत्यादि० ममेप्सितफलावाप्तयेसकलपापक्षया

वाप्तयेवार्द्धोदयेतिलपर्वबदानंकरिष्येतिसंकल्प्य ॥ वेदपारगान्ब्राह्मणान्वृत्वा यथाविभवंवस्त्रालंकारादिभिःसंपूज्य ॥ तन्नस्तिलपर्वते ब्रह्मादीनांप्रतिमाःस्वर्णमयाःसंस्थाप्यषोडशोपचारैःसंपूज्य ॥ ब्रह्मादीनामंगपूजांकुर्यात्तद्यथा ॥ नमोविश्वसृजेतुभ्यंसत्यायपरमात्मात्मने ॥ देवायदेवपतयेयज्ञानांपतयेनमः ॥ ॐ ब्रह्मणेनमःपादौ पूजयामि ॥ इत्यक्षतगंधपुष्पाणिचप्रक्षिपेत् ॥ ॐ हिरण्यगर्भाय०उरू० ॐ परमात्मने०जानू० ॐ वेधसे०जंघे० ॐ पद्मोद्भवाय०गुह्यं० ॐ हंसवाहनाय०कटी० ॐ शतानंदा०वक्षः ॐ सावित्रीपतये०बाहू० ॐ ऋग्वेदाय०पूर्ववक्त्रं०ॐ यजुर्वेदाय०दक्षिणवक्त्रं० ॐ सामवेदाय०पश्चिमव०ॐ अथर्वणवे० उत्तरव० ॐ चतुर्वक्त्राय०वक्त्राणि० ॐ हंसवाहनाय०नेत्राणि० ॐ कमलासनाय०शिरांसि० ॐ लोकेशाय०सर्वांगं० ततोकपालात्परितस्तत्तन्मंत्रैः पूजयेत् ॥ ततोविष्वंगपूजा ॥ हिरण्यरूपपुरुषप्रधानाव्यक्तरूपधृक् ॥ प्रसीदसुमुखानंतपूजांस्वीकुरुमत्कृताम् ॥ इतिप्रार्थ्यपूजयेत् ॥ अनंताय०पादौ० ॐ विश्वरूपवते०ऊरू०ॐमुकुंदाय० जानुनी०ॐगोविंदाय० जंघे० ॐ प्रद्युम्नाय० गुह्यं० ॐपद्मनाभायनाभिं ॐलंबोदराय० उदरं० ॐ कौस्तुभवक्षसे० वक्षः० ॐ चतुर्भुजाय०बाहु० ॐ ॐविश्वमुखाय० मुखं० ॐसहस्रशिरसे० शिरांसि० ॐसर्वेश्वराय० सर्वांगम् ० ॥ ततः शिवांगपूजा ॥ आदित्यचंद्रनयनदिग्वासोदैत्यसूदन ॥ पूजांदत्तांमयाभक्त्यागृहाणकरुणाकरेति ॥ तथा॥ महेश्वरमहेशाननमस्तेत्रिपुरांतक ॥ जीमूतकेशायनमोनमस्तेवृषभध्व

जेति।ॐईशानायनमःपादौ०ॐशंकराय०ऊरू०ॐउमाकांताय०गुह्यं०ॐनीललोहिताय०नाभिं०ॐकृत्तिवाससे०उदरं०ॐनागयज्ञोपवीतिने०बाहु०ॐपंचवक्त्राय०वक्त्राणि०ॐत्रिलोचनाय०नेत्राणि०ॐरुद्राय०शिर०ॐविश्वेश्वरायं०सर्वांगं इत्यंगपूजा ततः पंचामृतादुपचारैःपीठत्रयंकमंडलुःश्वेतवस्त्रयुगं ब्रह्मणे पीतांबरद्वयं विष्णवेलोहितवस्त्रयुगं शंकराय कमलैस्तुलसीपत्रैर्विल्वपत्रैश्चक्रमेणसंपूज्य । ततोब्रह्मविष्णुशिवानांनाममंत्रेणाष्टोत्तरशतंतिलैर्घृताक्तैर्हुत्वागामेकांदद्यात् ॥ ततस्तिलपर्वतम् प्रतिमात्रयंशय्यात्रयंचदद्यात् । संकल्पोक्तफलंसंकीर्त्य गोत्रायशर्मणेसुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति । मंत्रौतु ॥ यस्मान्मधुवनेविष्णो र्देहस्वेदसमुद्भवाः ।। तिलाःकुशाश्चमाषाश्चतस्माच्छन्नोभवत्विह ।। हव्यकव्येषुयस्माच्चतिलैरेवाभिरक्षणम् ॥ भवाद्दुद्धरशैलेंद्रतिलाचलनमोस्तुते ।। अन्यत्सर्वंतिलाचलदानवत्कुर्य्यात् । तत्तुप्रतिपदानविधावुक्तम् ॥ यत्किंचिद्दीयतेदानंमेरुतुल्यंतुतद्भवेत् ।।

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेअमादानविधिर्नामैकविंशतितमःकोशः ॥ २१ ॥

अथ सूर्य्यादिवारेषुग्रहदोषोपशांतयेवाकेवलंपुण्यवृद्धयेदानानि।।तत्रादौग्रहाणांमणिदानम् ॥ माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि गारुत्मकंपुष्पकवज्रनीलम् ॥ गोमेदवैडूर्य्यकमरकताःस्युरत्नान्यथोज्ञस्यमुदेसुवर्णम् ॥ दद्यादितिशेषः ॥ अथमहामूल्यरत्नदानेसस्यसामर्थ्याभावस्तदर्थमल्पमूल्यानिरत्नान्युक्तानि ॥ देयंतुष्टचैत्यसुभौमशान्घोरूप्यशुक्रेंद्वोश्चहेमगुरोश्च ॥ मुक्तासूरेर्लोहमर्कात्मजस्य

लाजावर्त्तः कीर्त्तितः शेषयोश्चेति ॥ अथ प्रत्येकग्रहस्य पृथग्द्रव्यदानानि ॥ ग्रहदानक्रमंवक्ष्येसर्वसिद्धिकरंपरम् ॥ सर्व शांतिकरंनृणांसर्वपापप्रणाशनम् ॥ आदौसूर्य्यस्य ॥ कौसुंभ वस्त्रंगुडहेमताम्रंमाणिक्यगोधूमसुवर्णपद्मम् ॥ सवत्सगोदानमितिप्रणी तंसूर्य्यस्यतुष्टयेसुमसूरिकाचं ॥ द्रव्यंसंपूज्यब्राह्मणंचसंपूज्य ॥ यथा कामंसंकल्प्यदद्यादितिसर्वत्रबोध्यं ॥ अथदानवाक्यम् ॥ दिवाकरः पद्मसंस्थःसमस्तप्राणिबोधनः ॥ दानेनानेनसंतुष्टोजायतांमेकिरीट भृत् ॥ चंद्रस्य ॥ घृतकलशंसितवस्त्रंदधिशंखंमौक्तिकंसुवर्णंच ॥ रजतं चतंडुलान्नंतुष्टयेदद्याद्विधोःक्षीरम् ॥ दानवाक्यम् ॥ अमृतां शुःप्राणिजीवोकिरीटीवरदःशशी ॥ दानेनानेनभवतुप्रसन्नोवरदोम म ॥ भौमस्य ॥ प्रवालगोधूममसूरिकाश्च वृषंसताम्रंकरवीरपु ष्पम् ॥ अरक्तवस्त्रंगुडहेमधेनुं दद्याद्विधिज्ञोहिकुजस्यतुष्टये ॥ दान वाक्यम् ॥ चतुर्भुजोमेषगतःशूलीरक्तांबरःकुजः ॥ तुष्टोभूयात्स दास्माकंदानस्यास्यप्रभावतः ॥ बुधस्य ॥ नीलंवस्त्रंमुद्गदानंबुधा य रत्नंपाचींदासिकांहेमसर्पिः ॥ कांस्यंदंतंकुंजरस्याथमेषोरौप्यंस स्यंपुष्पजात्यादिकंच ॥ दानवाक्यम् ॥ चतुर्भुजःपीतवपुः किरीटीचर्म्मासिभृद्दंडधरश्चहारी ॥ पीतांबरःसोमसुतोबुधस्तुदाने नशांतिंममसंप्रयच्छतु ॥ गुरोः ॥ अश्वः सुवर्णंशुभपीतवस्त्रंस पीतधान्यंलवणंसपुष्पं ॥ सशर्करंरजनीभिश्चयुक्तंदानायचोक्तंसुरस जमंत्रिणः ॥ दानवाक्यम् ॥ किरीटीपीतवदनः पीतवासाश्च तुर्भुजः दानेनानेनसंतुष्टोभूयादेवपतिर्गुरुः ॥ शुक्रस्य ॥ चित्रवस्त्रमपिदानवांछितप्रीतयेमुनिवरैःप्रणोदितम् ॥ तंडुलंवृ

तसुवर्णरूप्यकं वज्रकंपरिमलोहिवीहकः ॥ पाठांतरेक्षयकं पारिमलंसव्रालशाविति क्षयकंयक्षकर्दमंतथथा ॥ कस्तूरिका यादौभागौद्वौभागौकुंकुमस्यच ॥ चंदनस्यत्रयोभागाःशशिन स्तबेकएवहि ॥ यक्षकर्दमइत्येषसमस्तसुरवल्लभः ॥ इति दानवाक्यम् ॥ दैत्यमंत्रीचतुर्बाहुःकिरीटीशांतिदःसदा ॥ दानेनभूयान्मंत्रज्ञोभार्गवःकविनायकः ॥ शनेः ॥ नीलकंमहिषी वस्त्रंकृष्णलोहंपयस्विनी ॥ तैलमाषकुलित्थाश्चदेयाःसौरिमुद्दिसदा दा० वा० ॥ नीलद्युतिःशूलधरःकिरीटीगृध्रसंस्थितः ॥ दानेन वरदोभूयादानेनग्रहनायकः ॥ राहोः ॥ राहोर्दानंकृष्णमेषोगोमेदं लोहकंबलम् ॥ सुवर्णनागरूप्यंचसातिलंताम्रभाजनम् ॥ दा० वा० ॥ अर्द्धकायोनीलवपुश्चंद्रादित्यविमर्दनः ॥ दानेनानेनवरदो भूयाच्चर्मधरस्तमः ॥ केतोः ॥ केतोर्वैडूर्यममलंतैलंमृगमदस्तथा ॥ ऊर्णातिलैस्तुसंयुक्तंदद्यात्सर्वार्थसिद्धये ॥ दानवाक्यम् ॥ धूम्र वर्णोरौप्यवक्त्रोगृध्रस्थस्तारकाग्रहः ॥ प्रसन्नोवरदोभूयाद्दानेनमम सर्वदा ॥ अथान्यच्चवारेषुदानद्रव्यम् ॥ भानुस्तांबूलदानादप हरतिनृणांविकर्तनवासरोत्थंसोमः श्रीखंडदानादवनिसुतभवोरक्तपुष्प प्रदानात् ॥ सौम्यःशक्रस्यमंत्रीघृतदधिपयसोर्भार्गवः शुभ्रवस्त्रा त्तैलाद्लोहाच्चसौरिस्तिलरजतसुवर्णैश्चसर्वेग्रहेंद्राः ॥ ग्रहान्स्वर्णमया न्कृत्वायोविप्रेभ्यःप्रयच्छति ॥ तद्दिनेषुयथाशक्त्यासर्वान्कामान्स विंदति ॥ अथनक्षत्रदानानि ॥ अश्विन्यामश्विनाविष्टारथमश्व समन्वितम् ॥ दत्वाव्याधिविनिर्मुक्तोदीर्घायुर्जायतेनरः ॥ रूप्य रथसंपन्नेवर्चस्वीजायतेकुले ॥ भरण्यामग्नयेवर्षकुसुमैस्तिलैः

शुभैः ॥ तिलधेनुप्रदातव्यादीर्घायुत्वंप्रकांक्षिभिः ॥ कर्मणानेनगोलोकं प्राप्नुवंतियशस्तथा ॥ अनलंकृतिकायांतुरक्तमाल्यादिनार्चयेत् ॥ ससर्पिःप्रायसंदत्वालोकान्प्राप्नोत्यनुत्तमान् ॥ सोहिण्यांपूजयित्वागोजाविकुंजरान् ॥ दद्यान्मासंचमांसंचस्वर्गलोकसुखाप्तये ॥ मृगेसोमंसमभ्यर्च्यदोग्ध्रींदत्वासवत्सकाम् ॥ गच्छतिमानुषाल्लोकात्सर्वलोकोत्तमोत्तमम् ॥ आर्द्रायांशंकरंपूज्यसितपद्मैर्यथाविधि ॥ सतिलंकलशंदत्वादुर्गाण्यातरतेनरः ॥ अदितिंविदितिंपूज्यदत्वापूपान्घृतान्वितान् ॥ यशस्वीरूपसंपन्नोयज्वनांजायतेकुले ॥ पुष्पैर्बृहस्पतिंपूज्यदत्वाहेमंसुपुष्कलम् ॥ अनालोकेषुलोकेषुसोमवत्सविराजते ॥ अश्लेषायांनागपूजांकृत्वानक्षत्रायुपस्करैः ॥ रौप्यंच वृषभंदत्वासर्वसौख्यमवाप्नुयात् ॥ पैत्र्येपितॄन्समभ्यर्च्यहव्यकव्यांस्तिलांस्तथा ॥ दत्वेहपुत्रसुखवान्जायतेसचमुक्तिभाक् ॥ फाल्गुन्यांभगमभ्यर्च्यवस्त्रालंकारभाजनान् ॥ दत्वासौभाग्यमाप्नोतिनारीवानरएववा ॥ अर्यम्णमर्यमेभ्यर्च्यघृतक्षीरंच दापयेत् ॥ यद्यदिष्टतमंवस्तुतद्देयंसुखमिछता ॥ रवौरविंसमभ्यर्च्यदत्वाहस्तिरथं तथा ॥ वस्त्राणिचधनीभूत्वादुर्गाण्यातरतेसदा ॥ चित्रायांचैवत्वष्टारंसंपूज्यवृषभंशुभम् ॥ दत्वाराज्यंनिस्सपत्नंभुक्त्वास्वर्गेमहीयते ॥ स्वातावित्तंधनंदत्वावायुंसंपूज्यभक्तितः ॥ धनंचराज्यमतुलंप्राप्नोतिविपुलंयशः ॥ इंद्राग्नीयुग्मदेवर्क्षेभ्यर्च्यगावंपयस्विनीम् ॥ दत्वादेवान्पितॄंश्चैवप्रीणयित्वादिवंव्रजेत् ॥ मैत्रेमित्रंसमभ्यर्च्यप्रवालंवस्त्रसंयुतम् ॥ दत्वाराज्यसुखंभुक्त्वास्वर्गलोकेमहीयते ॥ ज्येष्ठायांकलशान्दत्वासवस्त्रान्हेमसंयुतान् ॥

इंद्रंसंपूज्यविधिवद्दतिमिष्टामवाप्नुयात् ॥ मूलेमूलफलान्दित्वातथा भक्ष्यंसमांसकम् ॥ संपूज्यनिर्ऋतिंसम्यग्भोगंमोक्षंचविंदति ९ ॥ तोयेवरुणमभ्यर्च्यकमलैर्दधिदुग्धकम् ॥ ससुवर्णंसवस्त्रंचगोलोकं प्राप्नुयान्नरः॥ वैश्यदेवेवैश्यदेवंसंपूज्यान्नेनसर्पिषम् ॥ फाणितंचैवभूतं च्चदत्वासौख्यमवाप्नुयात् ॥ दुग्धंचाभिजितेयोगेदत्वाघृतसमन्वितम् ॥ विधिंसंपूज्यविधिवत्स्वर्गलोकेमहीयते ॥ श्रवणेकंबलंदत्वावस्त्रांतरितमेवच ॥ विष्णुंसंपूज्यविधिवत्स्वर्गेवसतिनिर्भयः ॥ वृषयानंधनिष्ठायांसांगंसंपूज्यवासवम् ॥ वस्त्राणिदत्वाविप्रायस्वर्गसौख्यमवाप्नुयात् ॥ वरुणे वरुणं गंधमाल्यप्रभृतिभिर्नरः ॥ संपूज्यागरुकस्तूरीदंतैश्वर्यमवाप्नुयात् ॥ पूर्वा भाद्रे राजमाषान् सर्व भक्ष्ययुतान् शुभान् । दत्वाजपादं संपूज्य स्वर्गसौख्यमवाप्नुयात् + अदभमुत्तरायोगे यस्तु मांसं प्रयच्छति ॥ अहिर्बुध्न्यं च संपूज्य स्वर्गेयातिपितॄन्सह ॥ पौष्णेपूषार्चनं कृत्वा ददाति विविधान् पशून् ॥ कांस्योपदोहां मुद्रां च सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ नक्षत्रदेवतानां च साधकानां हितायवै । भक्त्या वित्तानुसारेण भवंति फलदाः कृताः ॥ गंतुमिच्छेद्यदान्यत्र क्रियां प्रारब्धमेवच ॥ नक्षत्र देवतादानं दत्वा सर्वं समाचरेत् । एवं कृते हि तत्सर्वंफलमाप्नोति मानवः ॥ अथयोगदानानि ॥ विष्कंभादिषु योगेषु घृततैलफलेक्षवः । यवगोधूमचणककनिष्पावाञ्छालितंडुलान् । लवणं दधि दुग्धं च वस्त्रं कनक मेव च । कंबलं गां वृषक्षेत्रमुपानद्युग्ममेवच ॥ लोहं ताम्रं च कांस्यं चरौप्यं चेति यथाक्रमम् ॥ दत्वा स्वशक्त्याविधिवत्सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ न

वियोगमवाप्नोति योगदानप्रभावतः ॥ अत्रव्यतीपातवैधृत्योर्वि शेषः ॥ व्यतीपाते वैधृतौ च सुवर्णं गां तथैव च ॥ भूमिवासांसि रत्नानिशय्यान्नादीनि यानि च ॥ मुख्यानि यानि प्रोक्तानि तानि देयानि सर्वशः।अनामयत्वं शूरत्व मिंद्रत्वं चापि मानवाः ॥ पश्चात्स्वर्गापवर्गं च लभंते नात्र संशयः ॥ संकल्पादयस्तु पूर्वोक्ता । एव ॥ तथाच ॥ गोक्षीरेणैव संपूर्णं कांस्यभाजनमुत्तमम् ॥ स्थापयेद्देवदेवस्य स्थानं तत्रैव कल्पयेत् ॥ शंखचक्रगदापाणिं पद्महस्तंहिरण्मयम् ॥ वस्त्रयुग्मेन संवेष्टय पूजयेद्गरुडध्वजम् ॥ अनंतशयनं देवमनंतफलदं प्रभुम् ॥ लक्ष्म्या समन्वितं विष्णुं भक्त्या संपूजयेद्गुरुम् ॥ वैदिकैस्तांत्रिकैर्मंत्रैर्जातीपुष्पैः सम र्चयेत् ॥ तिलैः पूर्णं शरावं च सगुडं गुरवेर्पयेत् ॥ तथासोप स्करां शय्यां गां च दद्याद्विजातये ॥ तत्र मंत्रः ॥ व्यतीपाते द्रव्यमिदं तवानंत समर्पितम् ॥ भवत्वनंतफलदो मम जन्मनि जन्मनि ॥ स्वर्गापवर्गदं नृणां मनंतफलदं शुभम् ॥ मोच नं किल्विषाणां च दानमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ अथान्यत्प्रका रेणयोगदानानि ॥ विष्कंभादिषु योगेषु दानधर्मं महाफलम् तदहं संप्रवक्ष्यामि यथोक्तमृषिभिः पुरा ॥ विष्कंभे स र्वधान्यानां दानं सर्वाघनाशनम् ॥ प्रीतौतथान्नपानानामा युष्मति घृतस्य च ॥ कुंकुमस्य च सौभाग्ये यददानं च शोभने ॥ अतिगंडे च वस्त्राणां पायसस्य सुकर्मणि ॥ धृतौ रजत दानं च शूले मूलादिदानकम् ॥ गंडे मंडनदानं च वृद्धौगोत दानमिष्यते॥ध्रुवे च पंचरत्नानां व्याघाते कार्पितस्य च ॥ हर्षणे

गंधदानं स्याद्गुरुके दद्यान्मणीनपि ॥ सिद्धौसिद्धार्थकान् दे
या व्यतीपाते तु कांचनम् ॥ वरीयसि तिलान्दद्याद्वस्त्रा
णि परिघे तथा ॥ जलकुंभाः शिवेदेयाः सिद्धेसिद्धान्नमिष्यते
साध्येलवणदानंच छत्रदानंशुभेशुभम् ॥ शुक्लेचोपानहौदेयौ
शुक्लब्रह्मणिसर्पिषा ॥ ऐन्द्रेचदीपान्दद्याद्वैधृतौकनकंहितम् ॥
दानान्येतेषु योगेषु यथाशक्त्या विधानतः ॥ भक्तियुक्तोद्विजे
दत्वा लोके वसति चक्रियः ॥ अथ करणदानानि ॥ बवेप
यसदानंस्यात्सकुदानंचबालवे ॥ कौलवेगोरसान्दद्यात्तिलांस्तैति
लनामनि ॥ गराभिधानेलवणंवणिजेदेयमंबरम् ॥ विष्टौचषष्ठिका
न्यनिशकुनौसर्पिरेवच ॥ मधुदानंचतुष्पादेशस्तेनागेचवाससी ॥
दानंप्रियंगोःकिंस्तुघ्नश्रेष्ठमुक्तं द्विजोत्तमैः ॥ अथ मक्षदानानि ॥
पुष्पाणांचसितेपक्षेदानंलक्ष्मीकरंस्मृतम् ॥ फलानांचतथादानंकृ-
ष्णपक्षेमहाफलम् ॥ मासदानानिपूर्वोक्तानि ॥ अथ ऋतुदानानि ॥
स्नानानुलेपनादीनांवसंतेदानमिष्यते ॥ पानकानांतथाग्रीष्मेछत्रा
णांवर्षनंतरे ॥ यःपुनर्विधिनाभक्त्यादेवीमुद्दिश्यप्रावृषि ॥ विप्रेषुविप्र
कन्यासुतिलाधेनूःसंप्रयच्छति ॥ तस्य सा तुष्यतेदेवीश्रुत्रि
रेणतुविद्यया ॥ शरद्यन्नस्यधर्मज्ञोवस्त्राणामपिहैमजे ॥ बर्हिदानंनरःकृ
त्वासूर्य्यस्योदयनंप्रति ॥ लभतेऽभांशुकेलोकेपरत्रसुखमाप्नुयात् ॥
बर्हिदानं शीतापनुत्त्यर्थंबर्हिदानम् ॥ शिशिरेसतलंबर्हितर्पयित्वा
तथातिलैः ॥ कुल्माषंसघृतंदत्त्वायथाशक्त्याद्विजातिषु ॥ कामा
ग्निदीप्तिप्राकाश्यंशत्रुनाशंचविंदति ॥ सकुसिताखंडघृतंत्रपुपक्व
कांचितम् ॥ लवणाज्ययुतंदत्वातथाहरितकांचितम् ॥ मक्ष

ह्लेप्रावृषिस्नातःसततंनरपुंगवः॥ जलकुंभोपरिक्रंतंह्यक्षयंफलमश्नुते॥ कृसरंभोजयित्वातुस्वशक्त्याशिशिरेद्विजान् ॥दीप्तान्नित्वंसमाप्नोति स्वर्गलोकंचगच्छति ॥ अथ संवत्सरदानानि ॥ संवत्सरेतुदातॄणां तिलदानंमहाफलम् । परिपूर्वेतथादानंयवानांचविशेषतः ॥ परिपूर्वे परिवत्सरे ॥ इडापूर्वेचवस्त्राणांधान्यानांचानुपूर्वकम् ॥ इत्पूर्वेरज तस्यापिदानंप्रोक्तंमहाफलम् ॥इडापूर्वइत्यादिइडावत्सरःअनुवत्सरः इद्वत्सरइत्यादिज्योतिश्शास्त्रेप्रसिद्धाः ॥ अथ दानार्थेतिथिवा रक्षेयोगजपर्वाणि ॥ रोहिण्यांचंद्रवारेचाष्टमीयोगोयदाभवे त् ॥ अथ वासोमसंयुक्तोदानकालोविधीयते ॥ पायसंघृत संयुक्तंशिवप्रीत्यैप्रदापयेत् ॥ आदित्यरेवतीयोगश्चतुर्दश्यांयदा भवेत् ॥ अष्टम्यांचमघायोगेशिवंसंपूज्यपूर्ववत् ॥ तिलाढकीं सुवर्णंचदद्यात्क्लेशापनुत्तये ॥ आरोग्यंजायतेतस्यपुत्रबंधुजनैःसह॥ अश्विनीभौमसंयोगश्चतुर्दश्यांयदाभवेत् ॥ अष्टम्यांभरणीयोगस्त दासंपूज्यशंकरम् ॥ रक्तोत्पलंसुवर्णंचदत्वासौख्यमवाप्नुयात् ॥ रोहिणीबुधसंयोगश्चतुर्दश्यांयदाभवेत् ॥ अष्टम्यांवातदादेयंसुवर्णं घृतपायसम् ॥दत्वासौख्यमवाप्नोतिपुत्रदारधनादिभिः ॥ रेवतीगुरुसं योगश्चतुर्दश्यांयदाभवेत् ॥ अष्टम्यांतिष्यसंयोगेवाथपूजागुरोर्मता॥ घावोन्नमाज्यंदुग्धंचदत्वावाचस्पतिर्भवेत् ॥ श्रवणंभार्गवयुतंच तुर्दश्यांयदाभवेत् ॥ पुनर्वस्वष्टमीयोगेवाथदद्याद्घृतंमधु॥ससुवर्णंब्रा ह्मणायवांछितार्थंचविंदति ॥ भरणीशनियोगस्तुचतुर्दश्यांयदा भवेत् ॥ आर्द्रायोगेथवाष्टम्यांशनिवारोथवाभवेत् ॥ तदालोहं प्रदातव्यमायुरारोग्यमिच्छता ॥ एषुयोगेषुदुष्टानांग्रहाणांपूजनेनच

दानेनविलयंयांतिदुष्टारिष्टाग्रहोत्थिताः ॥ दुष्टस्थानस्थितावा पिग्रहादानार्चनादिभिः ॥ फलंशुभंप्रयच्छंतिसर्वावस्थासुसर्वदा ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेवारनक्षत्रयोगदानकथनं नाम द्वाविंशतितमःकोशः ॥ २२ ॥

---

अथषोडशमहादानानि ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामिमहादानानु कीर्त्तनम् ॥ दानधर्मेपियत्प्रोक्तंविष्णुनाप्रभविष्णुना ॥ सर्वपाप क्षयकरंनृणांदुःखविनाशनम् ॥ यत्तत्षोडशधाप्रोक्तंवासुदेवेनभू तले ॥ पुण्यंपवित्रमायुष्यंसर्वपापहरंशुभम् ॥ पूजितंदेवताभि श्चब्रह्मविष्णुशिवादिभिः ॥ आद्यंतुसर्वदानानांतुलापुरुषसंज्ञितम् ॥ हिरण्यगर्भदानंचब्रह्मांडंतदनंतरम् ॥ कल्पपादपदानंचगोसहस्रंचपं चमम् ॥ हिरण्यंकामधेनुश्चहिरण्याश्वस्तथैवच ॥ हिरण्याश्व रथस्तद्वद्धेमहस्तिरथस्तथा ॥ पंचलांगलकंतद्वद्धरादानंतथैवच ॥ द्वादशंविश्वचक्रंचततःकल्पलतात्मकम् ॥ सप्तसागरदानंचरत्नधेनु स्तथैवच ॥ महाभूतघटस्तद्वत्षोडशःपरिकीर्त्तितः ॥ यस्माद्विघ्न सहस्रेभ्योमहादानानिसर्वदा ॥ रक्षंतिदेवताःसर्वाएकैकमपिभूतले ॥ एषामन्यतमंकुर्य्याद्वासुदेवप्रसादतः ॥ नशक्यमन्यथाकर्त्तुम पिशक्रेणभूतले ॥ तस्मादाराध्यगोविंदमुमापतिविनायकौ ॥ महा क्षनमखंकुर्य्याद्विप्रैश्चैवानुमोदितः ॥ तत्रादौतुलापुरुषदानम् ॥ अनेनविधिनायस्तु तुलापुरुषमाचरेत् ॥ प्रतिलोकाधिपस्थाने प्रतिमन्वंतरंवसेत् ॥ विमानेनार्कवर्णेनकिंकिणीजालमालिना पूज्यमानोप्सरोभिश्चततोविष्णुपुरंव्रजेत् ॥ कल्पकोटिशतंयावच्च त्रिलोकेमहीयते ॥ कर्मक्षयादिहपुनर्भुविराजराजोभूपालमौलि

णिरंजितपादपीठः ॥ श्रद्धान्वितोभवतियज्ञसहस्रयाजीदीप्तप्रताप जितसर्वमहीपलोकः ॥ योदीयमानमपिपश्यतिभूतियुक्तः कांलांतरेस्मरतिवाचयतीहलोके ॥ योवाशृणोतिपठतीहसमानरूपः प्राप्नोतिधामसपुरंदरदेवजुष्टमिति ॥ एवंदत्वासुवर्णंतुब्रह्महत्यादिकंच यत् ॥ पापंनिहत्यपुरुषः स्वर्गलोकंसगच्छति ॥ तत्रस्थित्वाचिरंराजन्यदायातिमहीतले ॥ राजराजेश्वरःश्रीमान्वीतशोकोनिरामयः ॥ रूपसौभाग्यसंपन्नोनित्यंविष्णुपरायणः ॥ पुनर्विष्णुपदंयातियत्रगत्वा नशोचति ॥ इति सुवर्णादितुलापुरुषदानफलम् ॥ अथ कुंडमंडपादि ॥ तच्चसुवर्णतुलायामेवावश्यकमितिहेमाद्यादयः ॥ रत्नरजतादितुलायांतुकृताकृतमित्युक्तंतत्रैव । होमाद्यशक्तौतुमंडपादिरहितमेवकुर्यात् ॥ नतत्रमंत्रोहोमोवाएवमेवप्रदीयते । इतिमात्स्योक्तेः ॥ ग्रहमंत्राद्वारजापमंत्राश्चनेत्यर्थः ॥ अथ तुलावेदिपरिमाणंचाहतत्रैव ॥ तत्रादौशुभेह्निशोभार्थंकुंडमंडपमात्रंवाकृत्वासमहस्तांवापंचहस्तांवातृतीयांशेनचतुर्थांशेनवोचांवेदिंकृत्वातदुपरिपूर्वपश्चिमयोःस्तंभद्वयंनिखेयम् । हेमाद्रौमात्स्येशाकेंगुदीचंदनदेवदारुश्रीपर्णिबिल्वप्रियकांचनोत्थम् । स्तंभद्वयंहस्तयुगावखातंकृत्वादृढंपंचकरोच्छ्रितंतत् । तदंतरंहस्तचतुष्टयंस्यादथोत्तरांगंचतुरस्रमेवेति । शाकोवृक्षविशेषोमहासार इतिप्रसिद्धः श्रीपर्णीभद्रतरुःप्रियकोजीवकः । सारमतेकदंबः । अंजनःकांचनतुल्यपर्णोवृक्षविशेषः । स्तंभद्वयंचचतुरस्रीकृत्यवेदिमध्येपूर्वपश्चिमभागयोर्निखेयम् ॥ उत्तरांगंस्तंभयोरुपरितिर्यक्काष्ठम् । तच्चपंचकरयोःस्तंभयोर्हस्तचतुष्टयं परिनिधेयं चतुरस्रं । अथोत्तरांगंचतदंगमेवेतिपाठेतदीयमितिस्तंभसजातीयकाष्ठमित्य

र्थः ॥ समानजातिश्चतुलावलंब्याहैमेनमध्येपुरुषेणयुक्ता दैर्घ्येणसा हस्तचतुष्टयंस्यात्पृथुत्वमस्याश्चदशांगुलानि ॥ सुवर्णपट्टाभरणाच कार्यासलोहपाशद्वयशृंखलाभिः युतासुवर्णेनचरत्नमालाविभूषिता माल्यविभूषणाढ्या ॥ समानजातिस्तोरणसमानजातिः ॥ तुलो त्तरांगमध्येद्वादशभिरंगुलैरधस्तादुदगग्राअवलंब्यापुरुषेणविष्णुनाशृं खलावलंवितयोःसुवर्णनिर्मितयोःतत्प्रतिमयोःद्वयेनयुक्तेतिज्ञेयम् ॥ तयोर्बहिः स्थितमंगुलषट्कंविहायविज्ञेयं समतुलायाअष्टोत्तर शतांगुलमितत्वात् ॥ पृथुत्वंचास्यादशांगुलपरिमितेनवलयाकृ तिसूत्रेणसंमितंविधेयमित्यर्थः ॥ सलोहपाशद्वयशृंखलाभिर्युक्ता कार्येत्यर्थः ॥ आश्वत्थींखादिरींचापिपालाशींप्लक्षजांतुवा ॥ चतुर्हस्तप्रमाणेनसुश्लक्ष्णांसुदृढांनवाम् ॥ सुवर्तुलांसमांतद्वत्स्निग्धांछिद्रत्रयान्वितां॥ मौंजशिक्यद्वयोपेतां बद्धांस्तंभेतुयज्ञियेइत्याहनारदः ॥ चतुरस्रातुलाकार्यापादौचापितथाविधौ ॥ चतुर्ष्वपिचपार्श्वेषुमानंस्याच्चतुरंगुलम् ॥ मुक्तावत्तुकुटकावंतयोर्विन्यसेद्बुधः ॥ चतुर्हस्तावटतुलामध्यशृंखलयान्विता ॥ शिवंहस्तत्रयंकुर्यात्कुटंकंचतुरंगुलमिति॥ यदाहतत्रैवविश्वकर्मा॥ विशेषदानं कथितंतुलादितस्मात्तुलालक्षणमुच्यतेप्राक् ॥ तुलाप्रमाणंस्मृतमंगुलानिदैर्घ्येणगुलैःषण्णवतिप्रमाणैः ॥ प्रतिद्वयेष्वंगुलषट्कषट्कंशतांगुलाष्टोत्तरमंगुलानाम् ॥ स्युर्विंशतिःपंचचधातुबंधाबंधेष्वधिष्ठानसुरानिवेश्याः ॥ ईशःशशीमारुतरुद्रसूर्य्याःस्याद्विश्वकर्मागुरुरंगिरास्त्री ॥ प्रजापतिर्विश्वजगद्विधातापर्जन्यशंभूपितृदेववाच्च ॥ सौम्य यमोमरराजअश्विनौजलेशमित्रावरुणामरुद्गणाः ॥ धनेशगंधर्व

जलेशविष्णुर्दंडेचतुर्विंशतिरेवदेवताः ॥ अत्रसौम्योबुधः ॥ स्या त्पंचविंशःपुरुषःसएकोयस्तोल्पमानस्तुलयामहात्मा ॥ एताविधेयास्तपनीयमय्योरत्नार्चितादैवतमूर्तयस्ताः ॥ षडंगुलःस्याच्चतुरस्रपिंडःप्रांतद्वयेविष्णुरनंतनामा ॥ पार्श्वद्वयंतच्चतुरंगुलंस्यादेवंमयातेकथितंप्रमाणम् ॥ मध्येकुटशंकुलिकांगुलानिपंचाधिकाविंशतिरेवदैर्घ्ये ॥ एकांगुलःस्याद्भवतीहपिंडस्तत्राधिदेवःकिलवासुकिःस्यात् ॥ एकैकरज्जुर्लभतेंगुलानित्रिःसप्ततिंपिंडगतांगुलानि ॥ तच्चेलकद्वंद्वमथांगुलानित्रिंशत्तथापंचदशाधिकंस्युः ॥ तद्धातुबद्धंशुभकाष्ठपीठंपिंडेतथाद्वंद्वमथोविधेयम् ॥ अधोघटाद्भूम्यधिदेवतास्यात्तुलांतरेभूमिपतिर्निवेश्यः ॥ इति हेमाद्रौमात्स्योक्तेः ॥ वेद्यादितुलाकृत्यलक्षणंच ॥ अथ वेद्यांषोडशशाखाचक्रलेखनप्रकारउक्तोमदनरत्ने ॥ तत्राचार्योवेद्यांमध्येत्रिहस्तव्यासंचतुरस्रंप्रसाध्यप्रागपरं दक्षिणोत्तरनवरेखाभिस्तच्चतुष्षष्टिकोष्ठंकुर्यात् ॥ तत्रकोष्ठानिप्रत्येकंनवनवांगुलानिसंपद्यंते ॥ ततोबहिरंत्यपंक्तिषुचतुर्दिक्षुमध्यकोष्ठानिचत्वारिमार्जयित्वातदुपर्युपांत्यपंक्तिषुपार्श्वयोःत्रयंत्रयंत्यत्कापतिदिशंप्रतिमध्यकोष्ठद्वयंमार्जयेत् ॥ तच्चतुर्दिक्षुषट्षट्कोष्ठानिचत्वारिद्वाराणिसिध्यंति ॥ ततोमध्यस्थितषोडशकोष्ठानिमार्जयेत् ॥ ततोबाह्ये एकैकंकोणकोष्ठंविहायकोणकोष्ठद्वारपीठांतरालवर्तीन्यवशिष्टानिपंचपंचकोष्ठनिमार्जयेत् ॥ तथाचमध्यचतुरस्रपीठपादाःसिद्ध्यंति ॥ ततोमध्याच्चत्वारिवृत्तानिकुर्यात् ॥ तत्राद्ये चत्वार्यंगुलानिव्यासः द्वितीयेऽष्टौ तृतीयेचतुर्विंशतिः चतुर्थेषट्त्रिंशतिरिति ॥ तच्चतुरंगुलंवृत्तंकर्णिकारूपंपीतेनरजसापूरयित्वाकर्णिकावधिरेखांसितेनरजसानिर्मायतद्बहिर

ष्टांगुलात्मकेवृत्तेपीतरक्तासितरजोभिःसंपादितमूलमध्याग्राणिषोड
शकेसराणिसंपाद्य तत्केसरावधिरेखांसितेनैवरजसांगुलोन्नतांसंपा
द्यचतुर्विंशांगुलात्मकेतद्बहिर्वृत्तेरजसाष्टदिक्ष्वष्टौपत्राणिरक्ताग्राणि
कुर्यात् ॥ ततोदलांतररेखांसितेनरजसाविधायदलांतराणिकृष्णे
नरजसापूरयित्वातद्बहिरेकांगुलांतरांबहिर्वृत्तरेखांसितेनैवरजसासंपा
द्यवृत्तद्वयांतरंपरितोष्टदलायतंतन्मध्यंचिन्हैःषोडशधाविभज्यप्रति
भागंयवाकारान्षोडशारान् श्यामपीतारुणश्वेतरजोभिःकल्पयि
त्वातदंतरेणयथायोगंरजोभिः पूरयित्वातद्बहिः सितपीतारुणश्याम
हरिताः पंचरेखालिखेत् ॥ तद्बहिः पीठक्षेत्रंचतुरस्रंयथाशोभंर
जोभिःरक्तंकृत्वापीठावधिरेखांसितेनरजसा चतुरस्रांरचयेत् ॥
द्वारक्षेत्राणिपूर्वादितःपीतश्यामसितहरितरजोभिःपूरयेत् ॥ आग्नेया
दिकोणकोष्ठचतुष्टयं लोहितहरितश्यामधवलैःपूरयेत् ॥ आग्नेया
दिपीठपादचतुष्टयंपंचकोष्ठात्मकंतुक्रमात्सितरक्तपीतकृष्णरजोभिः
पूरयेत् ॥ ततःसितेनरजसांगुलोन्नतेनबहिश्चतुरस्ररेखांकुर्यादितिम
दनरत्नादयः ॥ ठक्कुरमतेतु ॥ चतुरस्रंचतुर्हस्तम् ॥ तत्रप्रत्येकं
द्वादशांगुलानिनवकोष्ठानि । वृत्तानितुपंचातत्रायवृत्तेचत्वार्यंगुलानि
व्यासः द्वितीयेऽष्टौतृतीयेविंशतिःचतुर्थेचतुर्विंशतिःपंचमेचतुरस्रं
बहिस्तत्रोष्टत्रिंशदितिपंचकोष्ठात्मकंपीठपादचतुष्टयम् ॥ आग्नेयादि
क्रमेणरक्तहरितश्यामसितैःपूरणीयम् ॥ कोणकोष्ठचतुष्टयंप्रत्येकंत्रि
भिस्त्रिभिर्वर्णैरितिविशेषः । इदमेववारुणंमंडलंजलाशयोत्सर्गादौज्ञेयं ।
॥ पुनस्तत्रैव ॥ वज्रंप्रागुत्तमेभागेआग्नेय्यांशक्तिमुज्ज्वलां ॥ आलिखे
द्दक्षिणेदंडंनैर्ऋत्यांखड्गमालिखेत् ॥ पाशंतुवारुणंलेख्यंध्वजंवैवायु

गोचरे ॥ कौबेर्यांतुगदांलिख्यईशान्यांशूलमालिखेत् ॥ शूलस्यवा मदेशेतुचक्रंपद्मंचदक्षिणे ॥ ततोमहावेद्युपरिपंचवर्णफलपुष्पोप शोभितंवितानंकुंडमंडपेवह्नीयादिति ॥ ॥इतिवेद्युपरिषोडशारचक्र म् ॥ अथ घृतादितुलाफलमुक्तंहेमाद्रौविष्णुधर्मोत्तरे ॥ प्रथमातुवृतस्नोक्ततेजोवृद्धिकरीशुभा ॥ माक्षिकेणतुसौभाग्यंतैलेन बहुलाःप्रजाः॥ वस्त्रेणदिव्यवस्त्राणिप्राप्नोतितुलयाध्रुवम् ॥ लवणेनतु लावण्यमरोगित्वंगुडेनच॥ असपत्नःशर्करयासुरूपंचंदनेनतु ॥अवि योगोभवेद्भर्त्रातुलयाकुंकुमस्यच ॥नसंतापोहृदिभवेत्क्षीरस्यतुलया तथा ॥ सर्वकामप्रदाःसर्वाःसर्वपापक्षयंकराः ॥ यःकरोतितुलाःस र्वाः सगौर्यालयमाप्नुयात् ॥ मंत्रेणदद्यादभिमंत्रितांतुसकृत्तुलामेक तमांद्विजेभ्यः॥ सयातिगौर्याःसदनंसपुण्यंनशोकदौर्भाग्यमुपाश्नुतेपुमा न् ॥ त्वंतुलेसर्वभूतानांप्रमाणमिहकीर्त्तिता ॥ मांतोलयंतीसंसारा दुद्धरस्वनमोस्तुते ॥ इत्यारुह्य ॥ गोदोहकालं तत्रैव चिंत यित्वाहरिप्रियाम् ॥ अवरुह्यततोदद्यादर्घ्यंपाद्यमथापिवा ॥ गुरुं संपूज्यविधिवद्वस्त्रालंकारभूषणैः ॥ विसर्जयेन्नमस्कृत्यभोजयेद्वि जपुंगवान् ॥ शेषंद्विजेभ्योदातव्यंस्त्रीभ्योन्येभ्यस्तथैवच ॥ कद लीदलसंस्थाचपंचपिंडाहिमाद्रिजा ॥ कर्पूरस्यतुलांचार्च्यकुंकुमे नालभेततां ॥ विधिनानेनयोदद्यात्तुलादानंविमत्सरः ॥ सलोकमे तिपार्वत्याःसेव्यमानोप्सरोगणैः ॥ तत्रापिकालंरुचिरमिहलोकेनृ पोभवेत् ॥ आत्मतुल्यंसुवर्णंवारजतंरत्नमेववा।योददातिद्विजाग्रेभ्यः सह्येतद्धिफलंभवेत् ॥ एतद्भूमिदानजन्यंब्रह्महत्यादिपापायैर्मुक्तःशि वपुरंव्रजेत् सचयत्पापनिर्मुक्तःप्रोक्तंविष्णुपुरंव्रजेत् ॥ तुलापुरुषभूमिं

चदीयमानेतुयेनराः ॥ पश्यंतितेपिवायांतियेवास्यरनुमोदकाः ॥ गुडंवा यदिवाखंडंलवणंवापितोलितम् ॥ योदद्यादात्मनातुल्यंनारीवापुरुषोपिवा ॥ पुमान्प्रद्युम्नवत्स्यात्तुनारीस्यात्पार्वतीसमा ॥ सुभगोरूपसंपन्नोभुंजीतांतेत्रिविष्टपम् ॥ हिरण्यदक्षिणायुक्तंसवस्त्रंभूषणान्वितम् ॥ अलंकृत्वाद्विजाय्यंतंपरिधाप्यचवाससी ॥ खंडादितोलितंपश्चाद्गुरवे प्रतिपादयेत् ॥ सर्वकामसमृद्धात्मानंतंकालंवसेद्दिवीति ॥ इति घृतादितुलादानफलम् ॥ अथनानारोगनिरासार्थद्रव्यविशेष तुलादानान्युक्तानि ॥ तुलापुरुषदानंतुशृणुमृत्युंजयोद्भवम् ॥ अथलोहंप्रदातव्यंसर्वरोगोपशांतये ॥ कांस्यंचयक्ष्मणेदेयंत्रपुचार्शोविकारके ॥ अपस्मारेतुसीसंस्यात्ताम्रंकुष्ठेचदारुणे ॥ पित्तलंरक्तपित्तेचरूप्यंप्रदरमेहयोः ॥ सुवर्णंसर्वरोगेषुप्रदद्यान्मृत्युनाशनम् ॥ फलोद्भवंतथादेयं ग्राहिण्यांदीर्घवाहिने ॥ गौडंभस्मकरोगेचपौगंस्याद्वंडमालके ॥ पौगंपूगीफलम् ॥ काष्ठजंचाग्निमांद्येस्याद्रोगोत्पत्तौतुपैष्टकम् ॥ मधूद्भवंतथादेयंकासश्वासजलोदरे ॥ घृतोद्भवंतथादेयंछर्दिरोगोपशांतये ॥ क्षीरंपित्तविनाशायदधिस्याद्वगदारणे ॥ लवणंवेपनाशायपौष्टंदद्रुविनाशने ॥ धान्यंचसर्वरोगस्यनाशनेमुनिभिः स्मृतमिति ॥ अत्रायंसंक्षेपोदानोद्योतेपि ॥ रूप्यतुलायांसुवर्णतुलाफलमेवपितृतृप्तिःप्रदरमेहनाशश्च ॥ रत्नतुलायांस्वर्णतुलाफलमेव ॥ ताम्रेणकुष्ठनाशः ॥ घृतेनतेजोवृद्धिःछर्दिनाशश्च ॥ गुडेनारोगित्वंसौभाग्यवृद्धिश्च ॥ लवणेनलावण्यंसौभाग्यंच ॥ मधुनासौभाग्यंकासश्वासजलोदरनाशश्च ॥ तैलेनप्रजावान्भवति ॥ क्षीरेणपित्तनाशःसंतापनिवृत्तिश्च ॥ दध्नाभगंदरनाशःशर्कर

यासपत्नबाधानिवृत्तिः ॥ अन्नेनारोगित्वम्॥पिष्टेनदद्रुनाशः॥फलैः संग्रहणीनाशः ॥ क्रमुकैर्गंडमालानाशःमुखदुर्गंधनाशनंदद्रुनाशश्च क्रमुकंपूगीफलम् ॥ चंदनेनसौंदर्यवान् ॥ गंधेनसौभाग्यम् ॥ वस्त्रेणदिव्यवस्त्रावाप्तिः ॥ काष्ठैरग्निमांद्यनाशः । विष्णुप्रीतिर्वास र्वैद्रव्यैरपीति ॥ ॥ इतिनानारोगनिरासद्रव्यविशेषतुलाः ॥ अथ पूजार्थंतत्र द्रव्याधिदेवतामाह ॥ अधिदैवंतुलोहेवैमहाभैर वउच्यते ॥ कांस्येत्रपुण्यश्विनौचवायुर्वैसीसकेस्मृतः । ताम्रेसूर्यस्त थाप्रोक्तःपैतलेचकुहूस्तथा॥रौप्येचपितरोज्ञेयाःसौवर्णेसर्वदेवताः । फलेसोमोगुडेचापस्तांबूलेचविनायकः॥ गंधर्वाःकुसुमेचैवजांगलेऽग्नि स्तथास्मृतः॥मधौयक्षंप्रयत्नेनघृतमृत्युंजयंतथा॥ क्षीरेतारागणाःस र्वेदध्निसर्पाःप्रकीर्तिताः ॥ लवणेपार्वतीदेवीसमुद्दिष्टाधिदेवता।पिष्टप्र जापतिर्दैवोअन्नेसर्वाश्चदेवताः॥आर्तिर्यदास्यात्पात्राणांप्राप्नुयात्पुण्य देशतःनित्यंमृत्युंजयप्राप्तिर्विधिनायत्प्रदीयते।तदेवसर्वशांत्यर्थंभवती तिनसंशयः ॥ तुलापुरुषदानेनमृत्युंजयतिमानवः॥ आगमोक्तमृत्युं जयमंत्रेणपूजयित्वेतिशेषः ॥ नाममंत्रेणवायथाधिकारंयोज्यम्॥ इतिद्रव्याधिदेवताः ॥ अथ कालविशेषः ॥ आदित्येराहुणाग्र स्तेसुवर्णैस्तोलयेत्तनुम् ॥ सोमग्रहेतुरौप्येणयद्वादानंयथाविधि । प्रैवर्ग्यस्यमुखेजातउत्पन्नः पितृदेहतः ॥ सर्वपापहरंचैतद्ददामिप्री यतांविधुः ॥ इत्युच्चार्घ्यजलंत्वाशुनिक्षिपेद्विजहस्तके ॥ अथ तुलापुरुषदानविधिः ॥ तुलादानंप्रवक्ष्यामिसर्वपापप्रणाशनम् ॥ यद्गौर्याचरितं पूर्वंलक्ष्मीनारायणेनतु ॥ पुण्यंदिनमथासाद्यतृतीया यांविशेषतः ॥ गोमयेनानुलिप्तायांभूमौकृत्वाघटंशुभम् ॥ दारवं

शुभवृक्षस्यचतुर्हस्तप्रमाणतः।सुवर्णंतत्रबध्नीयात्स्वशक्त्याघटितंघटे सौवर्णंस्थापयेत्तत्रवासुदेवंचतुर्भुजम् ॥ शिक्यद्वयंचबध्नीयात्स्थाप येत्पीठकेततः ॥ तत्रारोहेत्सवस्त्रास्त्रःसर्वालंकारभूषितः ॥ अत्रीष्टदे वतांगृह्यस्नापयित्वाघृतादिभिः।तुलापुरुषदानस्यविधिरेषः प्रकीर्ति तःअत्रविधिरेषः प्रकीर्तित इत्यनेन एतावत्यत्रकर्तव्यतेत्युक्तं भवतीतिदामोदरः ॥ नान्यदितितुलादानमधिकृत्यलिंगपुराणे ॥ दक्षिणांचशतंसार्द्धंतदर्धंवापिदापयेत् ॥ गुरोरितिशेषः ॥ ऋत्विजां चैवसर्वेषांदशनिष्कान्प्रदापयेदिति ॥ तथायजमानःअयनग्रहण संक्रमादिपुण्यकालमासाद्यपूर्वेद्यूरेकभक्तःआचरितप्रायश्चित्तश्च । कृतनित्यक्रियोदर्भेष्वासीनोदर्भान्धारयमाणः शुचिराचम्यदेशका लौसंकीर्त्यममामुककामनासिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं अमुकद्र व्यतुलापुरुषदानंकरिष्ये इतिसंकल्पः ॥ तथारोगनिरासार्थंतुम मामुकरोगनिरासेनममास्यशिशोर्वामुकरोगनिरासेनक्षिप्रारोग्यसिद्धि द्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमिति ॥ तथा यदातुशिष्टाचारवशात्ताम्रा दितुलासु अष्टमांशंचतुर्थांशंवासुवर्णरजतादि प्रक्षिप्यते चेत्तदासु वर्णादितुलयाचतुर्थांशाष्टमांशादितुलाविशेषफलावाप्तिद्वाराइत्युक्ते स्वःकार्यः । तदंगतयागणपतिपूजनंपुण्याहवाचनमाचार्यवरणमं गदेवतापूजनमहंकरिष्ये इतिसं कल्प्य ॥ गणपतिंसंपूज्यपुण्या हंस्वस्तिऋद्धिश्रीकल्याणमितिशब्दपंचात्मकंवोधायनोक्तंब्राह्मणै स्त्रिस्त्रिर्वाचयित्वाचार्यंवृत्वाचार्यंतुलायांगौरीविष्ण्वादितुलांगण ॥ देवताश्चपूजयित्वारोगनिरासार्थंतुमहामृत्युंजयमंत्रेणप्रतिमायांमृत्युं जयंताम्रादितोलनीयद्रव्यादिदेवताश्चपूजयेदिति ॥ ॥ इतितुल।

पुरुषदानविधौविशेषः ॥ अथ तुलादानप्रयोगः ॥यजमानःशुचि
राचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यएकैकमन्वंतरकालावच्छि
न्नप्रतिलोकपालस्थाननिवासपूर्वकार्कवर्णकिंकिणीजालमालिविमा
नकरणकाप्सरःपूजासहितशिवपुरगमनपूर्वककल्पकोटिशतावच्छि
न्नविष्णुपुराधिकरणकनिवासकामःसुवर्णरत्नरौप्यतुलापुरुषमहादा
नमहंकरिष्ये ॥ यद्वाब्रह्महत्यादिसकलपापक्षयद्वाराश्रीपरमेश्वर
प्रीत्यर्थंसुवर्णरत्नरौप्यतुलापुरुषमहादानंकरिष्ये ॥ तत्रादौगणपति
पूजनंपुण्याहवाचनंमातृकापूजननांदीश्राद्धाचार्यवरणादिकुर्यात् ॥
ताम्रादितुलायांतुसंकल्पोत्तरंगणपतिपूजनंपूर्वोक्तंपुण्याहवाचनमात्रं
कृत्वाचार्यंवृत्वायथाविभवंवस्त्रालंकारादिभिःपूजयेत् ॥ ततआ
चार्योगोमयोपलिप्तवेद्यादौसर्षपविकिरणपंचगव्यप्रोक्षणेकृत्वावेद्यां
वारुणमंडलंविलिख्यउपरिकंडमंडपेपंचवर्णंवितानंफलपुष्पोपशोभि
तध्वजंबद्ध्वावेद्यादौघटमावध्यतत्रदक्षिणोदकशिक्यांतुलांबध्नीयात्
गौरीप्रीत्यर्थंतुलायांकर्पूरकृतपंचपिंडिकारूपांगौरींकुंकुमेनानुपूजये
त्।ततोधर्मराजसूर्यविष्णुप्रतिमास्तिस्रोमाषमात्रसुवर्णनिर्मिता अ
ग्न्युत्तारणादिपूर्वकंसंपूज्य०इष्टदेवतांचपंचामृतेनाभिषिच्याभ्यर्च्य
विष्णुप्रतिमांतुलामध्येबध्वापूर्वोक्ततोलनीयद्रव्यादिदेवतांसंपूज्यतु
लायैनम इति तुलांचतुलापांतकूटयोर्विष्णुमनंतं मध्यकूटेवासुकिं
फलकद्वयेभूमिंच संपूज्यरक्तवस्त्रेणतुलांसंवेष्टयशक्तौसत्यांतुलादंडे
सुवर्णनिर्मितासुचतुर्विंशतिप्रतिमासुउदक्संस्थादेवताआवाहयेत् ॥
पूजयेच्च ॥ तदित्थम् ॥ ॐईशानायनमः ईशानमावाहयामि१एवं
सर्वत्रॐशशिनेनमःशशिनमावाहयामि२ ॐमारुतायं० ३ ॐ

रुद्राय० ४ ॐ सूर्याय० ५ ॐविश्वकर्मणेनमः६ॐगुरवे० ७ ॐ अंगिरोग्निभ्यांन० ८ॐप्रजापतयेन० ९ॐविश्वेभ्यो देवेभ्योन० १० ॐ धात्रेन० ११ ॐपर्जन्यशंभुभ्यां० १२ ॐपितृभ्योन० १३ ॐसोम्याय० १४ ॐधर्माय० १५ ॐअमरराजायन० १६ ॐअश्विभ्यांनम १७ ॐजलेशया० १८ ॐमित्रावरुणाभ्यां न० १९ ॐमरुद्गणेभ्यो० २० ॐधनेशाय० २१ ॐगंधर्वाय० २२ ॐजलेशाय० २३ ॐविष्णवे० २४ इत्यावाह्यसंपूज्यय जमानोवस्त्राभरणगंधमाल्याद्यलंकृतः कुसुमांजलिंगृहीत्वातुलांत्रिः प्रदक्षिणीकृत्यप्राङ्मुखउपविश्यप्रार्थयेत् ॥ ॐनमस्तेसर्वदेवानांश क्तिस्त्वंसत्यमाश्रिता ॥ साक्षिभूताजगद्धात्रीनिर्मितात्रिश्वयोनिना॥ एकतःसर्वसत्यानितथानृतशतानिच । धर्माधर्मैकृतांमध्येस्थापिता सिजगद्धिते ॥ त्वंतुलेसर्वभूतानांप्रमाणमिहकीर्तिता । मांतोलयंती संसारादुद्धरष्वनमोस्कृते ॥ योसौतत्वाधिपोदेवःपुरुषःपंचविंशकः सएषोधिष्ठितोदेवित्वायितस्मान्नमोनमः ॥ नमोनमस्तेगोविंदतुलापुरु षसंज्ञक ॥ त्वंहरेतारयस्वास्मानस्मात्संसारसागरादितिपठित्वातुलो परिपुष्पांजलिंक्षिपेत् ॥ पुनस्तुलांत्रिः प्रदक्षिणीकृत्यवामहस्तेध र्मराजंदक्षिणेसूर्यमंकेस्वाभीष्टदेवतांपंचामृताभिषिक्तार्चितांचादाय प्राङ्मुखस्तुलायामुत्तरफलकमारुहेत् ॥ दक्षिणेनसुवर्णःस्यादुत्तरे णनराधिपः ॥ नराधिपइत्युपलक्षणम् ॥ ततःआचार्यो दक्षिणफलकेतोलनीयद्रव्यमारोपयेत् ॥ सवर्णार्घंवत्समधिकं स्यात् पुष्टिकामेनभूयिष्टमधिकंकार्यम् ॥ ततोयजमानस्तुलाम ध्यदंडस्थितदृष्टिर्हरेर्मुखंपश्यन्मंत्रौपठेत् ॥ ॐनमस्तेसर्वभूतानां साक्षिभूतेसनातनी ॥ पितामहेनदेवित्वंनिर्मितापरमेष्ठिना ॥

त्वयावृतंजगत्सर्वंसहस्थावरजंगमम् ॥ सर्वभूतात्मभूतस्थेनमस्ते विश्वधारिणी इति ॥ गोदोहकालंतत्रस्थित्वातुलामवतीर्यतोलितद्रव्येतुलसीपत्रंनिधायदेशकालौसंकीर्त्यामुककामइदममुकद्रव्यमात्मसमतोलितमाचार्यादिभ्योन्येभ्योब्राह्मणेभ्यःसमस्ताश्रितबंधुवर्गेभ्योदीनानाथेभ्यश्चदातुमहमुत्सृजेनममेत्युत्सृज्यकृतस्यामुकतुलापुरुषदानकर्मणः सांगतासिध्यर्थमाचार्यायइदंसुवर्णमग्निदैवत्यंदक्षिणात्वेनतुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिदद्यात् ॥ पुनःकृतस्यामुकतुलापुरुषदानकर्मणः सांगतासिद्धयर्थंनानानामगोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्योयथाशक्तिभूयसींदक्षिणांदातुमहमुत्सृजे तथा कृतस्यामुकतुलापुरुषदानकर्मणःसांगतासिद्धयर्थंयथाशक्तिब्राह्मणान् यथाकालंयथोपपन्नेनान्नेनभोजयिष्ये ॥ इति संकल्पयेत् ॥ ततआचार्यस्त्वावाहितदेवताःसर्वाः अर्चनपूर्वकंविसृजेत् ॥ आचार्यायतुलार्धंपादंवा प्रतिमावस्त्राभरणादिसर्वंतुभ्यमहंसंप्रददे नममइतिदत्वासदस्यायादावेतदर्धंदत्वातुलाशेषंचसघृतंयथोद्देशंदत्वा प्रमादात्कुर्वतांकर्मयस्यस्मृत्येतिजपित्वाकर्मेश्वरार्पणंकृत्वासुहृद्युतोभुंजीतेति॥केचित्तु अत्रतुलापूजोत्तरमग्निसंस्थाप्यईशानादितुलास्थदेवताभ्योष्टाष्टाज्याहुतयश्चेच्छंतीति ॥ तुलाप्रतिग्रहप्रायश्चित्तंत्वाचार्यश्चांद्रायणमेकंकुर्यात्प्रतिग्रहानुसारेणेत्युक्तंदानोद्योतेरहस्येषुहेमाद्रौमात्स्ये ॥ नचिरं धारयेद्देहेसुवर्णंतोलितंबुधः।। तिष्ठेद्यावद्दहेयस्माच्छोकव्याधिकरंनृणाम् ॥ शीघ्रंपरस्वकरणाच्छ्रेयः प्राप्नोतिपुष्कलमितिसुवर्णादिसर्वद्रव्यतुलात्वेकैमुतिकन्यायात्॥अत्रत्यः सुवर्णशब्दोरजतादिसर्वद्रव्यतुलोपलक्षकोबोध्यः ॥ इति कुंडमंडपवेदिकासहिततुला

दानविधिः ॥ अथ हिरण्यगर्भदानम् ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामि महादानमनुत्तमम् ॥ हेम्नाहिरण्यगर्भाख्यंमहापातकनाशनम् ॥ पुण्यंदिनमथासाद्यतुलापुरुषदानवत् ॥ ऋत्विग्मंडपसंभारभूषणाच्छादनादिकम् ॥ कुर्य्यादुपोषितस्तद्वल्लोकेशावाहनंविधिम् ॥ पुण्याहवाचनंकृत्वातद्वत्कृत्वाधिवासनम् ॥ अत्रदेशकालवृद्धिश्राद्धशिवादिपूजापुण्याहवाचनगुरुऋत्विग्वरणमधुपर्कदानकुंडमंडपवेदिसंभारहोमाधिवासनादि सर्वंहिरण्यगर्भादिपंचदशमहादानप्रकृतिभूतंतुलापुरुषदानविहितंवेदितव्यम् ॥ ब्राह्मणैरानयेत्कुंडंतपनीयमयंशुभम् ॥ द्वासप्तत्यंगुलोच्छ्रायंहेमपंकजगर्भवत् ॥ त्रिभागहीनविस्तारंप्रशस्तंमुरजाकृति ॥ कुंडमितिहिरण्यगर्भाख्यंपात्रं तपनीयमयंस्वर्णमयं हेमपंकजं अष्टदलं तंदेवनाभिशब्दवाच्यम् ॥ त्रिभागहीनविस्तारमिति ॥ अष्टाचत्वारिंशदंगुलविस्तारमित्यर्थः ॥ मुरजाकृतिःमृदंगाकृतिः ॥ आज्यक्षीराभिपूरितमितिकचित्पाठः ॥ तत्रघृतक्षीरतुल्यपरिमाणे यद्यपिचाभिपूरितमित्युच्यते तथापि यजमानप्रवेशेन यथातन्नबहिरुच्चलतितथापूरणीयम् ॥ दशांत्राणिसरत्नानिदात्रंसूचीतथैवच ॥ हेमनालंसपिटकंबहिरादित्यसंयुतम् ॥ तथैवावरणंनाभेरुपवीतंचकांचनम् ॥ पार्श्वतःस्थापयेत्तद्वद्धेमदंडंकमंडलुम् ॥ दशांत्राणिदशखंडानि ॥ अभ्राणीतिकचित्पाठः ॥ तानिकांचनानि अभ्राकारतया ॥ अभंखनित्रमितिकेचित् ॥ रत्नानिपंचप्रसिद्धानि ॥ सपिटकंमंजूषान्वितम् ॥ बहिरिति ॥ हेमकुंडाद्बाह्यप्रदेशेपार्श्वतःस्थापयेदित्यनेनसंबंधः ॥ बहिरादित्यसंयुतमितिचपाठांतरम् ॥ बहिर्भास्करयो

र्लक्षणंब्रह्मांडदानेवक्ष्यते वह्निमप्ययसंयुतमिति तदा अप्ययः वरुणः ॥ तल्लक्षणमपित्रैव ॥ नाभेरावरणमितिनाभ्या वरणार्थंसौवर्णंवस्त्रम् दशांत्रादीन्यपिसुवर्णमयान्येवकार्य्याणि ॥ पद्माकारंविधानंस्यात् समंतादंगुलाधिकम् ॥ मुक्तावलीसमो पेतंपद्मरागदलान्वितम् ॥ तिलद्रोणोपरिगतंवेदिमध्येततोर्च येत् ॥ इहखलु हिरण्यगर्भनिर्माणसुवर्णपरिमाणस्यानान्नान त् ॥ यावतायजमानस्यप्रवेशधारणोपयिकं कुण्डंभवति ताव ताघटनीयम् ॥ तच्चवेदिकामध्येलिखितचक्रस्योपरितिलद्रोणंनि धायतदुपरिसंस्थाप्यपूजयेत् ॥ अथ तुलापुरुषदानंतदधिवासनदि नादन्येयुर्ब्राह्मणवाचनं विधाय पूर्णाहुतिप्रभृतिकर्मशेषसमाप्तिंकु र्य्यात् ॥ ततश्च कुंडसमीपवर्त्तिकलशजलैः पूर्ववदभिषेकः तदु च्यते ॥ ततोमंगलशब्देनब्रह्मघोषरवेणच ॥ सर्वौषध्योदकस्नानस्ना पितोवेदपुंगवैः ॥ शुक्लमाल्यांबरधरः सर्वाभरणभूषितः ॥ इम मुच्चारयेन्मंत्रंगृहीतकुसुमांजलिः ॥ नमोहिरण्यगर्भायहिरण्यकव. चायच ॥ सप्तलोकसुराध्यक्षजगद्धात्रेनमोनमः ॥ भूर्लोक प्रमुखालोकास्तवगर्भेव्यवस्थिताः ॥ ब्रह्मादयस्तथादेवानमस्ते विश्वधारिणे॥नमस्तेभुवनाधारनमस्तेभुवनाश्रय ॥ नमोहिरण्यगर्भा यगर्भायस्यपितामहः॥ यतस्त्वमेवभूतात्माभूतमूर्तेव्यवस्थितः।तस्मा न्मामुद्धराशेषदुःखसंसारसागरात् ॥ एवमामंत्र्यतन्मध्यमाविष्या स्तउदङ्मुखः॥मुष्टिभ्यांपरिसंगृह्यधर्मराजंचतुर्मुखौ। जानुमध्येशिरः कृत्वातिष्ठेदुच्छ्वासपंचकम् ॥ धर्मराजोत्रसुवर्णमयः । तल्लक्षणंच तुलापुरुषेभिहितम् ॥ चतुर्मुखोपिसौवर्णः ॥ तल्लक्षणंब्रह्मांडदाने

वक्ष्यते ॥ तत्रदक्षिणमुष्टौधर्मराजःवाममुष्टौचतुर्मुखइति ॥ गर्भा धानंपुंसवनंसीमंतोन्नयनंतथा ॥ कुर्य्युर्हिरण्यगर्भस्यततस्तेद्विजपुं गवाः ॥ अनवलोभनमप्यत्रावेज्ञेषु ॥ एतेषुगर्भाधानादिषुवक्ष्यमा णेषुमंत्रयुक्तमनुध्यानमात्रमत्राचरणम् ॥ गीतमंगलघोषेणगुरुंसं तोषयेत्ततः ॥ जातकर्म १ नामकरणम् ॥ २ निष्क्रमणम् ॥ ३ अन्नाशनम् ॥ ४ चूडा ॥ ५ उपनयनम् ॥ ६ प्राजापत्यम्। ७ ऐंद्रम् ॥ ८ आग्नेयम् ॥ ९ सौम्यम् ॥ १० इति चत्वारिंगो दानम् ॥ ११ केशांतश्चेति ॥ १२ द्वादशपूर्वाश्चतस्रइत्युभयेषुषो डशत्वम् ॥ सूच्यादिकंचगुरवेदत्वामंत्रमिमंजपेत् ॥ नमोहिरण्य गर्भायविश्वगर्भायतेनमः ॥ चराचरस्यजगतोगृहभूतायवैनमः ॥ मंत्रोऽहंजनितःपूर्वमर्त्यधर्माद्विजोत्तमः ॥ त्वद्गर्भसंभवादेषदिव्यदे होभवाम्यहम् ॥ चतुर्भिःकलशैर्भूयस्ततस्तेद्विजपुंगवाः ॥ स्नानं कुर्युःप्रसन्नाश्चसर्वाभरणभूषिताः ॥ कलशैःकुंडसमीपस्थैरेवस्नानं कुर्युर्यजमानस्येतिशेषः ॥ देवस्यत्वेतिमंत्रेणस्थितस्यकनकासने॥ अग्रजातस्यतेङ्गानिचाभिषेक्ष्यामहेवयम् ॥ दिव्येनानेनवपुषाचिरं जीवसुखीभव ॥ ततोहिरण्यगर्भंतत्तेभ्योदद्याद्विचक्षणः ॥ तत्र दानवाक्यप्रयोगोद्रव्यविभागश्चऋत्विगाचार्य्याणांतुलापुरुषवद्वेदित व्यः ॥ तेपूज्याःसर्वभावेनवदेद्वाचातदाज्ञया ॥ तत्रोपकरणंसर्वं गुरवेविनिवेदयेत् ॥ पादुकोपानहच्छत्रचामरासनभाजनम् ॥ ग्रामंवाविषयंवापियचान्यदपिसंभवेत् ॥ विषयःग्रामसमूहः ॥ अन्यत्स्त्रीआदि ॥ अत्राप्यात्मालंकारंगुरवेदद्यात् ॥ ग्रासादयश्च दक्षिणात्वेनैवसंबध्यते ॥ प्राकृतौयथादर्शनात् ॥ ततःपूर्ववत्पुण्या

ह्वाचनेकृतेदेवतापूजाविसर्जनादिविधेयम् ॥ अनेनविधिनायस्तुपु ण्येह्निविनिवेदयेत् ॥ हिरण्यगर्भदानंसब्रह्मलोकेनिधीयते ॥ पुरेषु लोकपालानांप्रतिमन्वंतरेवसेत् ॥ कल्पकोटिशतंयावद्ब्रह्मलोकेम हीयते ॥ इति हिरण्यगर्भदानम् ॥ अथब्रह्मांडदानम् ॥ अथ ब्रह्मांडदानस्यविधिंवक्ष्याम्यशेषतः ॥ सर्वभोगीभवेद्येनमोक्षभाक्चैव जायते ॥ पीठंनिष्कसहस्रेणपद्मंतत्रप्रकल्पयेत् ॥ तत्रब्रह्मातत्रमध्ये पद्मरागैरलंकृतः ॥ सावित्र्याचैवगायत्र्याऋषिभिर्मुनिभिःसह ॥ नारदाद्यैःसुतैःसर्वैरिंद्राद्यैश्चसुरैस्तथा ॥ सौवर्णविग्रहाःसर्वेब्रह्माद्यास्त पुरस्सराः ॥ वराहरूपोभगवान्लक्ष्म्यासहसनातनः ॥ नीलान्मर कतांश्चैवभूषणंतस्यकारयेत् ॥ रजतस्यविशुद्धस्यदेहंरुद्रस्यकार येत् ॥ योमौक्तिकैस्तस्यशोभांकारयेदत्रबुद्धिमान् ॥ मौक्तिकैश्चा पिसोमस्यशोभांवल्कैर्दिवाकरैः ॥ सावित्रीगायत्र्यौतुब्रह्मणःपार्श्व भागेस्थापनीयौ ॥ ऋषयःसप्तगौतमाद्याः ॥ सप्तर्षयस्तुजटिलाः कमंडल्वक्षसूत्रिणः ॥ ध्याननिष्ठावशिष्ठस्तुकार्य्योभार्य्यासमन्वि तः ॥ मुनयोवानप्रस्थानारदाद्याइतितेषांविशेषणानि ॥ नारदस्तु कर्पूरगौरःसाक्षसूत्रकमंडलुः ॥ इंद्रादिरूपाणितुध्यानोक्तवत् ॥ वाराहरूपंतु ॥ वाराहरूपःकार्य्यस्तुशेषोपरिगतःप्रभुः ॥ शेषश्चतु र्भुजःकार्य्यश्चारुरूपफणान्वितः ॥ कर्त्तव्यौसीरमुसलौकरयोस्त स्ययत्नतः ॥ सर्परूपश्चकर्त्तव्यस्तथैवरचितांजलिः ॥ तस्यपृष्ठेभ गवान् ॥ वामेस्त्रीरूपापृथ्वी ॥ शंखकरांपद्मासनेसर्वाभरणाभूषितां श्रियंकृत्वा ॥ रौप्यंरुद्रं ॥ नवग्रहाश्चस्वस्ववर्णाःकार्य्याः ॥ ब्रह्मांडं सर्वधातुभिः ॥ पीठंतुसौवर्णंकुर्य्यात् ॥ पीठात्सप्तगुणंरौप्यंरौप्या

त्तांम्रंतथाविधम् ॥ ताम्रात्सप्तगुणंकार्य्यंकांस्यंसर्वांगसुंदरम् ॥ त्र
पुणःपरतःसीसंतावल्लोहंचकारयेत् ॥ सप्तद्वीपाःसमुद्राश्चसप्तैवकु
लपर्वताः ॥ अनयासंख्ययाज्ञात्वानिपुणैःशिल्पिभिःकृताः ॥ त
थाविधंसप्तगुणमित्यर्थः । सप्तद्वीपाइत्यादि ॥ एतेषामेकैकधातुनाए
कैकंद्वीपंसमुद्रंकुलाचलंचरचयेदित्यर्थः ॥ यादृशानिचभूतानिराज
तान्येवकारयेत् ॥ अरण्यानिचसत्वानिसौवर्णानिचकारयेत् ॥
वृक्षान्वनस्पतींश्चात्रतृणवल्लीस्सवीरुधः॥ यादृशानिजलसंभवानि ।
पुष्पफलवंतोवृक्षाः ॥ अपुष्पाःफलिनोवनस्पतयः ॥ वीरुधोगु
च्छगुल्मादयः ॥ सर्वंप्रकल्प्यविधिवत्तीर्थदेयंविचक्षणैः ॥ दिन
च्छिद्रेषुसर्वेषुअयनेदक्षिणोत्तरे ॥ व्यतीपातेबहुगुणंविषुवेचविशेष
तः ॥ बालाग्निहोत्रिणंविप्रंसुरूपंचगुणान्वितम् ॥ सपत्नीकंच
संपूज्यभूषयित्वाविभूषणैः ॥ पुरोहितंमुख्यतमंकृत्वान्यांश्चतथर्त्वि
जः ॥ चतुर्विंशद्गुणोपेतान्सपत्नीकान्निमंत्रितान् ॥ अहतांबरसं
छन्नान्स्रग्विणःसुविभूषितान् ॥ अंगुलीयकरत्नानिकर्णवेष्टांश्च
दापयेत् ॥ एवंविधांश्चसंपूज्यतेषामग्रेस्वयंस्थितः ॥ अष्टांग
प्रणिपातेनप्रणम्यचपुनःपुनः॥ पुरोहितायपुरतःकृत्वावैकरसंपुटम्॥
यूयंवैब्राह्मणाधात्रामैत्रत्वेनानुबोधिताः ॥ सौमुख्यमत्रभवताम्भवेत्पू
तोनरःस्वयम् ॥ भवतांप्रीतियोगेनस्वयंप्रीतःपितामहः ॥ ब्रह्मांडे
नतुदत्तेनतोषमेतिजनार्दनः ॥ पिनाकपाणिर्भगवान्शक्रश्चत्रिदशे
श्वरः ॥ एतेवैतोषमायांतिअनुध्याताद्विजोत्तमैः ॥ इति
स्तुत्वागुरवेदद्यात् ॥ गुरुस्तुब्राह्मणैःसहविभागंकुर्यात् ॥ यतः ॥
ब्रह्मांडंभूमिदानंचशय्यांनैकेनतद्भवेत्॥ गृह्णन्दोषमवाप्नोतिब्रह्महत्यां

नसंशयः ॥ दीयमानंचपश्यंतितेपिपूताभवंतिहीति ॥ इति ब्रह्मांड दानम ॥ अथ कल्पपादप दानम् ॥ अथान्यत्संप्रवक्ष्यामिकल्प पादपमुत्तमम ॥ शतनिष्केणकर्त्तव्यंसर्वशाखासमन्वितम् ॥ शा खायांविधिनाकृत्वामुक्तादामप्रलंबितम् ॥ दिव्यैर्मरकतैश्चैवचांकु राणिप्रविन्यसेत् ॥ प्रवालंकारयेद्धीमान्प्रवालेनद्रुमस्यच ॥ प्रवा लावालपल्लवाइत्यर्थः ॥ फलानिपद्मरागैश्चपारिजातस्यशोभनम् ॥ मूलदंडंचनीलेनवज्रेणस्कंधमुत्तमम् ॥ वैडूर्य्येणद्रुमाग्रंचपुष्परागेण मस्तकम् ॥ गोमेदकेनवैस्कंधंसूर्य्यकांतेनवेदिकाम् ॥ चंद्रकांतेन वैकार्य्यास्फाटिकेनद्रुमस्यवा ॥ वितस्तिमात्रआयामोवृक्षस्यपरि कीर्तितः ॥ शाखाष्टकसमानंचविस्तारंचोर्द्धतस्तथा ॥ तन्मूले स्थापयेल्लिंगंलोकपालसमावृतम् ॥ पूर्वोक्तवेदिमध्येतु मंडले स्थाप्यपादपम् ॥ पूजयेद्देवमीशानंलोकपालांश्चयत्नतः ॥ पूर्ववज्जपहोमार्थंतुलाभारवदाजपेत् ॥ निवेदयेद्द्रुमंशंभोर्ब्राह्मणाया थवैशुभम् ॥ ब्राह्मणेभ्योथवाराजासार्वभौमोभविष्यति ॥ अत्रा पिवृद्धिश्राद्धंशिवादिपूजागुरुऋत्विग्वरणंमधुपर्कदानंहोमवेदिकोपरि चक्रलेखनपंचवर्णवितानपताकातोरणादितुलापुरुषदानवद्वेदितव्य म् ॥ अथगोसहस्रदानम् ॥ गोसहस्रदानंचिकीर्षुरधिवासनादिना त्पाक्त्रिरात्रमेकरात्रंवाशक्तितःपयोव्रतोधिवासनादिनेशुचिर्यजमा नोदेशकालौसंकीर्त्यममसमस्तपापक्षयोत्तरसिद्धचारणसेवितार्कवर्ण किंकिणीजालमालिविमानारोहणोत्तरानेकमन्वंतरावच्छिन्नेंद्रादिस कललोकपाललोकाधिकरणंकपुत्रपौत्रसमन्वितशिवलोकगमनै कोत्तरसंख्येयपितृतृप्तिमातामहकुलतारणकल्पशतावच्छिन्नशिवपु

रनिवासानंतरराजराजीभवनाश्वमेधशतकर्तृत्वशिवध्यानपरत्वावि
ष्णुसादृश्यापन्नयोगस्थानकसंसारमोचनकामःश्वोगोसहस्रदानंप्रति
पादयिष्ये इति संकल्पयेत् ॥ ततउपवासगुर्वादिनियोगांतं
तुलापुरुषमहादानवत्कुर्य्यात् ॥ अथाचार्य्यः ॥ एकंलक्षण्यंनंदि
केश्वरंवृषंसवत्सदशोत्तरगोसहस्रात्सवत्संधेनुदशकंचस्वर्णघंटास्वर्ण
पट्टकौशेयवस्त्रमाल्यहेमरत्नयुतशृंगरौप्यखुरचामरोपशोभितंसताम्र
दोहनंपादुकोपानच्छत्राद्यनेकोपस्करयुतंवेदीपरितःस्थापयेत् ॥
मंडपाद्बहिस्तुयथावकाशंगोसहस्रंवस्त्रमाल्यस्वर्णशृंगरौप्यखुराद्यैरलं
कृत्याधिवासयेत् ॥ अथासादितसगोवृषदशकमध्येचक्रोप
रिस्थापितलवणद्रोणोपरिपूर्वोक्तलक्षणंकौशेयसंवीतंनानाभरणभूषि
तंमाल्येक्षुफलसंयुक्तंनंदिकेश्वरंस्थापयेत् ॥ वेधुपरिफलपुष्पा
दिशोभितंपंचवर्णवितानंकूटेबध्नीयात् ॥ ततः आचा
र्य्यादयः स्वस्वकुंडसन्निधौसर्वौषध्यादियुतकलशचतुष्टयस्थाप
नादियजमानाभिषेकांतंतुलादानवत्कुर्य्युः ॥ ततः शुक्ल
माल्यांबरधरःसकुसुमांजलिनासवृषगोदशकमात्रंप्रार्थयेत् ॥
तत्रमंत्रः ॥ नमोवोविश्वमूर्त्तिभ्योविश्वमातृभ्यएवच ॥ लोका
धिवासिनीभ्यश्चरोहिणीभ्योनमोनमः ॥ गवामंगेषुतिष्ठंतिभुवना
निचतुर्दश ॥ ब्रह्मादयस्तथादेवारोहिण्यःपांतुमातरः ॥ गावोमेअग्रतः
संतुगावोमेसंतुपृष्ठतः ॥ गावोमेहृदयेसंतुगवांमध्येवसाम्यहम् ॥
यस्मात्त्वंवृषरूपेणधर्मएवसनातनः ॥ अष्टमूर्त्तेरधिष्ठानमतःपाहिसदा
हिमाम् ॥ पुष्पांजलिनासंपूज्यवेदिपश्चिमेप्राङ्मुखउपविश्य
पूर्ववद्देशकालादिसंकीर्त्य ममसमस्तपापक्षयादिसंसारमोचन

कामइमंवृषमिमाःसवत्सधेनुदशकसहिताःसहस्रंगाःसांगोपांगाःअमु
कगोत्रामुकवेदाध्यायकामुकशर्मण्योगुर्वृत्विगादिभ्यश्चसंप्रददे नम
मेति गुर्वादिहस्तेषुजलंदद्यात् ॥ तेचदेवस्यत्वेतियजुषा
रुद्रायगामित्युक्त्वापुच्छेषुप्रतिगृह्यस्वस्तीत्युक्त्वायथाशाखंकामस्तु
तिंकइदंकस्माअदादितिपठेयुः ॥ ततोयजमानःकृतस्यगोसहस्रम
हादानकर्मणःसांगतासिद्ध्यर्थंग्रामंभूमिंवादत्वासुवर्णदक्षिणात्वेनतु
भ्यमहंसंप्रददे नममेतिप्रत्येकंतेभ्योदक्षिणांदद्यात् ॥ ततःकृत
स्यगोसहस्रदानस्यसांगतासिद्ध्यर्थंनानानामगोत्रेभ्योब्रह्मणेभ्योयथा
शक्तिभूयसींदक्षिणांदातुमहमुत्सृजेनममेतिसंकल्पयेत् ॥ तथाच
यथाशक्तिब्राह्मणांश्चभोजयेत् ॥ ततआचार्य्यःपुण्याहवाचनाया
वाहितदेवताःसंपूज्य उत्तिष्ठब्रह्मणस्पत इति देवान्विसृजेत् । तद्दि
नेपयोव्रतमशक्तौयजमानोनक्ताशीब्रह्मचारीभवेत् ॥ ततःप्रमादा
त्कुर्वतांकर्म०यस्यस्मृत्या० इति कर्मेश्वरार्पणंकुर्य्यात्॥ एवमेवगो
शतदानंच ॥ सहस्रस्थानेशतमुदीरयेदितिविशेषः ॥ इति गोसहस्र
दानंगोशतदानंच ॥ अथ हिरण्यकामधेनुदानम् ॥ अथातः
संप्रवक्ष्यामिहेमधेनुविधिंक्रमात् ॥ सर्वपापप्रशमनंदेशदुर्भिक्षनाश
नम् ॥ उपसर्गविनाशंचसर्वव्याधिविनाशनम् ॥ निष्काणांतुसहस्रे
णसुवर्णेनतुकारयेत् ॥ तदर्द्धेनापिवासम्यक्तदर्द्धार्द्धेनवापुनः ॥
शतेनवाप्रकर्त्तव्यंसर्वकार्य्येषुसुव्रतः ॥ शिक्यग्रेकामधेनुंतुपलानां
पंचभिःशतैः ॥ योददातिविधानेनराहुग्रस्तेदिवाकरे ॥ तेनदत्तंभ
वेत्सर्वमाब्रह्मभुवनांतिकम् ॥ गोरूपंसखुरंदिव्यंसर्वलक्षणसंयुतम्॥
खुराग्रेविन्यसेद्वज्रंशृंगेवैपद्मरागकम् ॥ भ्रुवोर्मध्येन्यसेद्दिव्यंमौक्ति

कंरत्नसत्तमम् ॥ वैडूर्य्येणस्तनान्कुर्याल्लांगूलंनीलनिर्मितम् ॥ दंत स्थानंप्रकर्त्तव्यंसर्वरत्नविभूषितम् ॥ पशुवत्कारयित्वातुवत्संकुर्य्या त्सुशोभनम् ॥ दशांशकेनकर्त्तव्यंसर्वरत्नविभूषितम् ॥ ततःपूर्वोदित वेदिकामध्यमंडलेसुरभिंसंस्थाप्यवस्त्रयुग्मेनाच्छाद्यगायत्र्यासंपूज्य होमादिपूर्ववत् कुर्यात् ॥ शिवंसंपूज्यपूर्ववत्संकल्प्यदद्यात् ॥ त्रिंश न्निष्कदक्षिणादेया ॥ ततोगोसावित्रींपठेत् ॥ त्रिस्सप्तकुलसंयुक्तोवि मानैर्दिव्यवर्चसैः ॥ शिवलोकमवाप्नोतियावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ तदंतेच क्रवर्त्तीस्याज्ज्ञानवांस्तुशिवंव्रजेत् ॥ एतस्यास्तुप्रदातायस्तेनदत्तं चराचरम् ॥ इति हिरण्यकामधेनुदानविधिः ॥ अथ हिरण्या श्वदानम् ॥ हिरण्याश्वप्रदानंचवदामिविजयावहम् ॥ अश्वमेधा युतश्रेष्ठंरहस्यंभोगमोक्षदम् ॥ शक्तिताश्चिपलादूर्द्ध्वंमासहस्रपलावधि। अल्पेत्वेकाग्निवत्कुर्य्याद्धेमवाजिमखंबुधः ॥ पंचकल्याणकंसम्यक् रजतेनतुकारयेत् ॥ चतुर्षुपादेषुमुखेचश्वेतोहयःपंचकल्याणकः।श्वेत स्थाने रजतेनान्यत्रसुवर्णेनेति ॥ सर्वलक्षणान्वितंसर्वायुधयुक्तंमंडप मध्येसंस्थाप्यउच्चैश्श्रवस्समंज्ञात्वार्चयेत् ॥ मंडपतिलद्रोणीविधा नंतुलादानवज्ज्ञातव्यम् ॥ तस्यपूर्वदिशोभागेब्राह्मणंवेदपारग म् ॥ सुरेंद्रबुद्ध्यासंपूज्यपंचनिष्कंप्रदापयेत् ॥ आचार्य्यंसंपूज्य घृतेनशिवंसंपूज्यहोमसंकल्पादिपूर्वोक्तवत्कुर्यात् ॥ श्रोत्रियादिभ्यो हिरण्यमाचार्य्यायाश्वंनिवेदयेत् ॥ भूयसींदक्षिणांचदद्याद्ब्रह्म णांश्चभोजयेत् ॥ इतिहिरण्याश्वदानम् ॥ अथहिरण्याश्वर थदानम् ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामिमहादानमनुत्तमम् ॥ पुण्यमश्व रथंनाममहापातकनाशनम् ॥ तत्तुतुलापुरुषदानवत्पुण्याहवाचन

लोकपालपूजनादिकंकृत्वा—कृष्णाजिनेतिलान्कृत्वाकांचनंकारये
द्रथम् ॥ अष्टाश्वंचतुरश्वंवाचतुश्चक्रंसकूबरम् ॥ इंद्रनीलेनकूर्मे
नध्वजरूपेणसंयुतम् ॥ लोकपालाष्टकोपेतंपद्मरागदलान्वितम् ॥
रथंसुवर्णस्य ॥ तदुपरिइंद्रनीलमणिमयंकलशंसंस्थाप्य—लोकपाल
लक्षणंतुपूर्वोक्तंज्ञेयम् ॥ चत्वारःपूर्णकलशाधान्यान्यष्टौ दशैवतु ॥
कौशेयवस्त्रसंयुक्तमुपरिष्टाद्वितानकम् ॥ माल्येक्षुपलसंयुक्तंपुरुषेण
समन्वितम् ॥ योयद्भक्तःपुमान्कुर्य्याच्छतनाम्नाधिवासनम् ॥
वितानंपंचवर्णम् । पुरुषइष्टदेवताकारः सौवर्णरथेस्थापनीयः । व
स्त्रोपानत्पादुकागोमिथुनादिविभवेन सार्द्धंदद्याच्छयनासनम् ॥
आभारात्रिपलादूर्द्धंशक्तितःकारयेद्बुधः॥ हेमसिंहयुतंच ।चक्रक्षावु
भौतस्यतुरगास्यावथाश्विनौ ॥ तल्लक्षणम् ॥ द्विभुजौदेवभिषजौक
र्त्तव्यावश्ववाहनौ ॥ तयोरोषधयःकार्य्यादिव्यादक्षिणहस्तयोः ॥
वामयोःपुस्तकेकार्य्येदर्शनीयौतथाद्विजौ ॥ विधिवत्संपूज्य
आचार्य्यंचवस्त्रालंकरादिभिःसंपूज्य पूर्वोक्तसंकल्पेनदद्यात् ॥ ततः
पुष्पांजलिंगृहीत्वापठेत् ॥ ॐनमोनमः पापविनाशनाय
विश्वात्मने वेदतुरंगमाय ॥ धाम्नामधीशायभवाभवायपापौघदा
वानलवारणाय ॥ वस्वष्टकादित्यमरुद्गणानांत्वमेवधातापरमंनिधा
नम् ॥ यतस्ततोमेहृदयंप्रयातुधर्मैकतानत्वमघौघनाशात् ॥ सर्वे
षामेवदानानांफलंयत्तत्प्रकीर्त्तितम् ॥ तत्तदाप्नोतिविप्रेभ्योविधिना
श्वरथंददत् ॥ अनामयंस्थानमवाप्यदेवैरलंघनीयंसुकृतंहिरण्मयैः॥
सुवर्णतेजाःप्रविमुक्तपापोरथैश्वरन्दीव्यतिसूर्य्यलोके ॥ इति हिरण्य
रथदानम् ॥ अथ हेमहस्तिरथदानम् ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामिहे

महास्तिरथंशुभम्।। यस्यप्रसादाद्भवनंवैष्णवंयांतिमानवाः।।तत्तुपुण्य दिनेतुलापुरुषदानविधिवत्कार्यम् ।। विप्रवाचनलोकेशावाहनक त्विङ्मंडपसंभारभूषणाच्छादनदेशकालवृद्धिश्राद्धादिसर्वंकर्त्तव्यम्। तल्लक्षणम्।।कुर्य्यात्पुष्परथाकारंकांचनंमणिमंडितम् । वलभीभिर्वि चित्राभिश्चतुश्चक्रसमन्वितम् । लोकपालाष्टकोपेतंशिवार्कब्रह्मसंयुत म् ॥ मध्येनारायणोपेतंलक्ष्मीपुष्टिसमन्वितम् । नारायणादिलक्षणंतु नारायणश्चतुर्बाहुःशंखादियुतःइत्याद्यन्यत्रकृष्णाजिनेतिलद्रोणो परिरथंतथाष्टादशधान्यानिचदीपिकोपानच्छत्रदर्पणानिसंस्थाप्य ध्वजाग्रेगरुडंकुबेरंविनायकंचतुःकलशाष्टगोयुतंचतुर्भिर्हयैर्मातंगैर्वा युतं पंचपलादूर्द्धंकृत्वाप्रदापयेत् ॥ संकल्पादिपूर्ववत् ॥ दान मंत्रस्तु ॥ नमोनमःशंकरपद्मजार्कलोकेशविद्याधरवासुदेवैः ॥ त्वंसेव्यसेवेदपुराणयज्ञतेजोमयस्त्यंदनपाहिचास्मान् ॥ यत्तत्पदंगुह्य तमंमुरारेरानंदहेतुंगुणरूपमंतः ॥ योगैःसमानसुदृशोमुनयःसमाधौप श्यंतितत्त्वमसिनाथरथेधिरूढः ॥ यस्मात्त्वमेवभवसागरसंस्थिताना मानंदभांडमृतमध्वरपानपात्रम् ॥ तस्मादघौघशमनेनकुरुप्रसादंचा मीकरेभरथसाधनसंप्रदानात् ॥ इतिप्रणम्यसुवर्णदक्षिणामुपकल्प्य भूयसींदक्षिणांदद्यात् ।। आचार्योयजमानमभिषिच्यावाहितदेवान् विसर्जयेत्।।इति हेमहस्तिरथदानम् ॥ अथपंचलांगलदानम् ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामिपंचलांगलमुत्तमम् ॥ दानंयेनमहापापैर्मुच्यते तत्क्षणान्नरः॥पुण्यांतिथिंसमासाद्ययुगादिग्रहणादिकाम् ॥ भूमिदानं नरोदद्यात्पंचलांगलकान्वितम् ॥ खर्वटंखेटकंवापिग्रामंवासस्यशालि नं।निवर्त्तनंशतंवापितदर्द्धंवापिशक्तितः।सारद्रुमयान्कृत्वाहलान्पं

चविचक्षणः॥ सर्वोपकरणैर्युक्तांस्तथान्यांश्चैवकांचनान् ॥ खर्वटादि रूपंतु सोत्सेधवप्राकारखातावृतं योजनार्द्धार्द्धविष्कुंभंतदर्द्धेनखे टकंसुसमृद्धवसतीति॥ सारदारुचंदनेगुदीत्यादि ।उपकरणानियुगयो क्रफालकरज्जुप्राजनादीनि॥ वृषांस्तुसलक्षणान्सुवर्णशृंगरौप्यपादमु क्तालांगूलरक्तकौशेयरज्जुदामचंदनयुतान् शालायामधिवासये त् ॥ एकस्मिन्कुंडेपर्जन्यादित्यरुद्रेभ्यःपायसचरुंनिर्वपेत् ॥ अ त्रपलाशसमिधः ॥ अत्रैकंकुंडम् ॥ आचार्यएवऋत्विग् ॥ अ न्यत् लोकेशावाहनदेशकालवृद्धिश्राद्धशिवपूजागुरुवरणमधुप र्कदानकुंडमंडपवेदिकावितानचक्रलेखनतोरणपताकादि तुलापुरुष विहितंगृह्यते ॥ ततः पूर्वप्रयोगेणतंप्रतिपाद्य—दानमंत्रः ॥ यस्मादेवगणाःसर्वेस्थावराणिचराणिच ॥ धुरंधरांगेतिष्ठंतितस्मा द्भक्तिःशिवेस्तुमे ॥यस्माच्चभूमिदानस्यकलांनार्हंतिषोडशीम्॥दाना न्यन्यानिमेभक्तिर्धर्मएषदृढोभवेत् ॥ इत्युच्चार्य्यसुवर्णंगांचदक्षिणां प्रकल्प्यभूयसीं दक्षिणांदद्यादन्यत्सर्वंपूर्ववत् ॥ इति पंचलांग लाख्यंमहादानम् ॥ अथ धरादानम् ॥ सुवर्णमेदिनीदानं प्रवक्ष्यमिसमासतः ॥ पूर्वोक्तदेशकालेतुकारयेन्मुनिभिःसह ॥ पूर्वोक्तकुंडमंडपादिलोकपालपूजनहोमादिकंविधाय सहस्रसुव र्णेनवापंचपलादूर्द्धंयथाशक्त्याहस्तमितांचतुरस्रांसप्तद्वीपसमुद्रपर्वत तीर्थयुतांमध्येमेरुशोभितांनवखंडात्मिकांपृथ्वींकृत्वा सहस्रक लशायैःशंकरंसंपूज्यान्यत्सर्वंतुलादानविधिवत्कृत्यंनिर्वर्त्तयेत् ॥ तदधस्तदर्द्धेनकूर्मंपद्मंचकुर्य्यात् ॥ पृथ्वीतुल्यसुवर्णेनमेरुंतद्द्विगुणे नद्वादशपर्वतान्कुर्य्यात् ॥ तथाच तद्दशांशेनग्रहान्राशी

नूनक्षत्राणिद्वीपान्समुद्रान्पातालंलोकसप्तकंभूर्लोकादिसप्तकंपरिक
ल्प्यअघोरेभ्यइति संपूज्य पूर्ववद्विधिनादद्यात् ॥ परमाणवो
हियावंत्योब्रह्मांडस्यभवंतिहि ॥ तावत्कल्पसहस्राणिशिवलोके
महीयते ॥ पितरस्तस्यनंदंतिवल्गंतिचयथासुखम् ॥ रुद्रायुर्यावदंते
चरुद्रलोकेवसंतिच ॥ महीभुजस्तदंतेतुशिवभक्त्याभवंतिहि ॥ मो
क्षःप्रजायतेतेषांशिवभावानुदीक्षया ॥ इति सुवर्णपृथ्वीदानम् ॥
अथ प्रसंगाद्वैष्णवलोकप्रदम् ॥ भुक्तिमुक्तिदंचजंबूद्वीपदानवि
धानंशिवोक्तम् ॥ तत्रविंशतिहस्तामितांभूमिंगोमयेनोपलिप्यसमं
ताल्लवणेनोदधिंविधायाक्षतपुष्पैःसंशोभ्यतन्मध्येधान्यभारत्रयेणमे
रुंकृत्वा सुवर्णकल्पद्रुमंपूर्वेमुक्तावज्रयुतंदक्षिणेगोमेदयुतंपश्चिमे
गारुत्मतनीलमणियुतंउत्तरेवैडूर्य्यपद्मरागयुतंशुक्तिशिलातलयुतंव
स्त्रान्वितंसुवर्णब्रह्मणायुतम् । चतुर्दिक्षुजलकुंभान्संस्थाप्यलोकपा
लादीन् पूर्ववत्संपूज्यपरितःमंदरादिसप्ताचलान्सुवर्णेनविधायस
प्तद्वीपविभागंमंडलेकृत्वापूर्ववच्छेषकार्य्यंविधाय मेरुमूलेशिवंसंपू
ज्य होमादिकंतुपृथ्वीदानवद्बोध्यम् ॥ देवस्तथोत्तरकुरुष्वपिनित्य
मास्तेमत्स्यःसुरेंद्रगणपूजितपादपद्मः ॥रक्षत्वशेषजगतांपतिरच्युतो
सौसंसारदुःखचलितंशरणागतंमाम् ॥ दत्वातिमात्रमघनाशनदानमा
त्रंप्रत्येकमेवशुभदंद्विजपुंगवानाम् ॥ भुक्त्वाशुभानिमनसेच्छतिया
निवासौगच्छेच्चयत्रनिवर्त्ततएवमर्त्यः॥प्रदद्याद्विजमुख्येभ्यः सुवर्णं
चैववाससी ॥ यागोपकरणंसर्वंगुरवेविनिवेदयेत् ॥ अथ
पांडुरोगशमनार्थंपृथ्वीदानम् पलयत्रजरतेनपृथ्वींसमुद्रवेष्टि
तांनवरत्नयुतांवस्त्रवेष्टितांकांस्यपात्रेनिधाय—आवाहनंयथा—एह्ये

हिदेविधात्रीत्वंरूपेस्मिन्सम्यगाविश ॥ सहितापर्वतद्वीपसमुद्रैः सुमनाभव ॥ ततःषोडशोपचारैराचार्य्यहस्तेनतांसंपूज्य— भूमिर्भूमिमगात्मा नामातामातरमित्यपि इति मंत्रेणसमिद्धोमंकुर्य्यात्॥ अग्नेरुत्तरतोवस्त्रवेष्टितंकुंभंसंस्थाप्य पवमानेतिमंत्रेणयजमानमभिषिच्य शन्नोदेवीत्यनुवाकेनशांतिंकृत्वा यथाभिलषितमुक्षिरूप्याचार्यायदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ धात्रीधरित्रीभूतानांवराहेणोद्धृतापुरा ॥ रत्नगर्भसमुद्रैकवसनासर्वशोभना ॥ दानेनानेनसुप्रीतापांडुरोगंव्यपोहतु ॥ अेननविधिनादत्वापृथ्वीदानंप्रयत्नतः ॥ यद्दानंवैकृतंमर्त्यैरंत्यजागमनेनतु ॥ तत्सर्वंनाशमायातिपांडुरोगादिकंमहत् ॥ शांत्यर्थंब्राह्मणैःसार्द्धंकुर्य्यात्पुण्याहवाचनम् ॥ इतिपांडुरोगहरंपृथ्वीदानम्॥ अथविश्वचक्रदानम् ॥ शुद्धसुवर्णसहस्रपलात्मकंभ्रमन्नेम्यष्टकावृतषोडशारंचक्रंविधाय नातिसमृद्धौविंशत्पलादूर्द्धंसहस्रपलपर्यंतंयथाशक्तिचक्रंरचयेत् ॥ तस्यकर्णिकायांयोगारूढंविष्णुमष्टदलेविमलाद्यष्टशक्तियुतं— द्वितीयावरणेजलशायिनम् ॥ अत्रिभृगुवसिष्ठब्रह्मकश्यपमत्स्यकूर्मवराहनृसिंहवामनश्रीरामरामकृष्णबुद्धकल्कीनितिक्रमेणविधाय— तृतीयावरणेमातृसहितांगौरीं— चतुर्थावरणेअष्टवसून्द्वादशादित्यान् पंचमावरणेलोकपालान् षष्ठेदिग्गजान्वज्राद्यायुधांश्च सप्तमेवेदान् अष्टमेपंचभूतानि यथामूर्तिचक्रमानातिरिक्तसुवर्णेनकृत्वातत्तन्मंत्रैःसंपूज्यहोमंचतेषामेवमंत्रैःकृत्वा चक्रंकृष्णाजिनतिलोपरिनिधायतस्यसमंतद्दक्षिणावर्त्तं शंखरोचनाचंदनमुक्ताफलहिरण्येति पंचमांगल्यद्रव्याणिस्थापयित्वातद्बहिर्मंडपेसमंतादष्टादशधान्यानि

लवणादिरसांश्चसंस्थाप्य वस्त्रमाल्येक्षुपल्लवरत्नादियुतानष्टौ पूर्णकलशानष्टदिक्षुसंस्थाप्यान्यद्वृद्धिश्राद्धशिवादिपूजाब्राह्मणवाचनकुंडहोमदेवतापूजनादिसर्वंविधानंतुलापुरुषवत्संपाद्य यथाकाम मुल्लिख्याचार्य्यायदद्यात् ॥ ततस्त्रिःप्रदक्षिणीकृत्वापठेत् । नमो विश्वमयायेतिविश्वचक्रात्मनेनमः ॥ परमानंतरूपीत्वंपाहिसंसार कर्दमात् ॥ तेजोमयमिदंयस्मात्सदापश्यंतियोगिनः ॥ हृदि तत्त्वंगुणातीतंविश्वचक्रंनमाम्यहम् ॥ वासुदेवेस्थितंचक्रंचक्रमध्ये चमाधवः ॥ अन्योन्याधाररूपेणप्रणमामिस्थितावहि ॥ विश्वच क्रमिदंयस्मात्सर्वपापहरंपरम् ॥ आयुर्धंचाधिवासस्यभवादुद्धरमाम तः ॥ इत्यामंत्र्यचयोदद्याद्विश्वचक्रंविमत्सरः ॥ विमुक्तः सर्वपापे भ्योविष्णुलोकेमहीयते ॥ वैकुंठलोकमासाद्यचतुर्बाहुस्सनातनः ॥ सेव्यतेप्सरसांसंघैस्तिष्ठेत्कल्पशतत्रयम् ॥ यथाशक्तिसुवर्णदक्षि णासहितंजलपूर्णमाचार्य्यादिभ्यः प्रतिपादनं तदनुज्ञयान्येभ्योपिद द्याद्दीनानाथतर्पणम् ॥ स्वल्पेत्वेकाग्निविधानमृत्विगाचार्य्याणां विभागव्यवस्थाचेतिसर्वंप्रकृतिवदनुष्ठेयम् ॥ ततः पुण्याहवाचनदेव तापूजनविसर्जनानिकुर्य्यादिति ॥ इति विश्वचक्रदानम् ॥ अथ कल्पलतादानंत्रयोदशम् ॥ अत्रापिकृत्विक्मंडपसंभारभूषणा च्छादनलोकेशावाहनादितुलापुरुषवत्कुर्य्यात् ।शुद्धसुवर्णस्यनाना पुष्पफलांशुकविद्याधरसुपर्णसहितादशकल्पलताः कृत्वा वेदिकोप रिलिखितचक्रस्योपरिलोकपालानुसारिण्यः कर्त्तव्याःपूज्याश्च ॥ यथा ॥ मध्ये ब्राह्मीकल्पलता लवणराश्युपरि ऐंद्रीपूर्वेगुडराशौ याम्यांयमी तंडुलोपरि आग्नेय्यामाग्नेयी सुवर्णोपरि नैर्ऋत्यांनै

क्रेती घृते वारुण्यां वारुणीक्षारे वायव्ये वायवी शर्करोपरिसौम्यां शंखिनीनिधिसंस्थिता ईशान्यां ईशानी वृषे प्रत्येकं कल्पलता पंच पलादूर्ध्वमासहस्रात् यथाविभवं कर्त्तव्या । सर्वासामुपरि पंचवर्ण वितानकं कुर्यात् ॥ ततः सांगतायांदशधेनूर्दशकुंभांश्च वस्त्रस हितान् दद्यात् ॥ होमाधिवासनादि सर्वंपूर्ववत् निर्वर्त्य यथाकाममुल्लिख्याचार्य्यादिभ्योदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ नमोनमः पापविनाशिनीभ्यः ब्रह्मांडलोकेश्वरपालनीभ्यः ॥ आशंसिताधिक्यफलप्रदाभ्योदि गभ्यस्तथाकल्पलतावधूभ्यः ॥ इतिसकलदिगंगनाप्रदानंभवभयसू दनकारियःकरोति ॥ अभिमतफलदेसनाकलोके वसतिपितामहवत्सराणित्रिंशत् ॥ पितृशतमवतारयेद्भवाब्धेःसचदुरितौघविनाशशुद्धदेहः ॥ सुरपतिवनितासहस्रसंख्यैः परिवृतमंबुजसंसदाभिवंद्यः ॥ इति कल्पलतादानम् ॥ अथ सप्तसागरदानं चतुर्दशम् ॥ तत्रपुण्यदिनेस्वस्तिवाचनलोकेशावाहनऋत्विङ्मंडपसंभारभूषणाच्छादनवृद्धिश्राद्धपुण्याहवाचनादिसर्वंतुलापुरुषदानवत् कर्त्तव्यम् ॥ प्रादेशमात्राणितथाऽरत्निमात्राणि सप्तकुंडानिसप्तपलादूर्द्धमासहस्रायथाशक्तिसुवर्णेनकृत्वाकृष्णाजिने तिलोपरिसर्वाणि संस्थाप्यानि ॥ प्रथमंकुंडंलवणेनद्वितीयंपयसातृतीयंसर्पिषा चतुर्थंगुडेनपंचमंदध्नाषष्ठंशर्करयासप्तमंतीर्थवारिणा परिपूर्य्यक्षीरमध्येकांचनंब्राह्मणंवृतेतथैवमहेश्वरंगुडेभास्करं ॥ दर्भैर्दंशर्करायांलक्ष्मींजलेपार्वतींसंस्थाप्य—सर्वेषांमूर्तीःसौवर्णीःसर्वेषुसर्वरत्नानिनिधाय तुलापुरुषवत्शेषंपरिकल्पयेत् ॥ त्रिःप्रदक्षिणानंतरंयथाकाममुल्लिख्य आचार्यादिभ्योदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥

नमोवःसर्वसिंधूनामाधारेभ्यःसनातनाः ॥ जंतूनांप्राणदेभ्यश्चसमुद्रे भ्योनमोनमः ॥ क्षीरोदकाज्यदधिमाधवलावणेक्षु,सौरामृ तेनभुवनत्रयजीवसंघान् ॥ आनंदयंतिवसुभिश्चयतोभवंतस्तस्मा न्ममाप्यघविनाशमलंविदद्धम् ॥ यस्मात्समस्तभुवनेषुभवंतएव तीर्थामरासुरसुबद्धमणिप्रतानाः ॥ पापक्षयांबरविलेपनभूषणाय लोकस्यविभ्रतितदस्तुममापिलक्ष्मीः ॥ ततोयथाशक्तिदक्षिणासहि तसंप्रदानांतेपुर्ववत् पुण्याहवाचनदेवतापूजनविसर्जनानिकुर्यात् ॥ इतिददातिरसामरसंयुतान् सुचिरविस्मयवानिहसागरान् ॥ अमल कांचनवर्णमयानसौपदमुपैतिहरेरमरावृतः ॥ सकलपापविघातविरा जितःपितृपितामहपुत्रकलत्रकम् ॥ नरकलोकसमाकुलमप्यलंज्ञगि तिसोपर्यतेशिवमंदिरम् ॥ इति सप्तसागरदानविधिः॥ अथरत्नसंज्ञ कंपंचदशं महादानंविवक्ष्यते ॥ अत्रापि देशकालवृद्धिश्राद्धशि वादिपूजाब्राह्मणवाचनगुर्वृत्विग्वरणमधुपर्कदानकुंडमंडपवेदिकाच क्रलेखनवितानतोरणपताकालोकपालावाहनादिसर्वंतुलापुरुषविहि तंबोध्यम् ॥ लवणद्रोणोपरिप्राङ्मुखीमुदक्पादांरेखाभिःसवत्सां गवाकृतिंरचयेत् ॥ गोरूपंतु—एकाशीतिपद्मरागेणमुखम् ॥ शतपुष्परागेणघोणाम् ॥ हेमतिलकंललाटे ॥ मुक्ताफलशतंदृशोः ॥ भ्रूयुगेविद्रुमशतम् ॥ शुक्तीकर्णद्वये ॥ शृंगेकांचने ॥ वज्र शतात्मकंशिरः ॥ गोमेदशतंग्रीवायाम् ॥ इंद्रनीलशतंपृष्ठे ॥ वैडूर्यशतंपार्श्वयोः ॥ स्फटिकैरुदरम् ॥ सौगंधिकशतात्मिका कटिः ॥ खुरा हेममयाः ॥ मुक्तावलीपुच्छम् ॥ सूर्य्यकां तचंद्रकांतकर्पूरचंदनयुतंघ्राणम् ॥ कुंकुमानिरोमाणि ॥ रौप्य

नाभिः ॥ गारुत्मकापानम् । अन्यन्माणिक्यादीनिरत्नानिसंधिषु॥ एवंविधांगांपरिकल्प्य शर्कराजिह्वांगुडगोमयामाज्यगोमूत्रांस्व रूपतोदधिदुग्धयुतांचामरयुतपुच्छां हेमकुंडलांधान्येक्षुपादांगांगोपू जाविधानेनसंपूज्य गूडधेनुवदामंत्र्य यथाकाममुल्लिख्यगुर्वादिभ्यो दद्यात् ॥ मंत्रास्तु ॥ त्वांसर्वदेवगणधामयतःपठंतिरुद्रेंद्रविष्णुकमलास नवासुदेवाः ॥ तस्मात्समस्तभुवनत्रयदेवयुक्तेमांपाहिदेविभवसागरपी ड्यमानम् ॥ आमंत्र्यचेत्थमभितःपरिवृत्यभक्त्यादद्याद्द्विजायगुरवेज लपूर्वकांताम् ॥ यःपुण्यमाप्यदिनमत्रकृतोपवासःपापैर्विमुक्ततनुरे तिपदंमुरारेः ॥ इति ॥ ततःसुवर्णदक्षिणांदत्वा पुण्याहवाचनदेव तांविसर्जनादिकंपूर्ववदेवकुर्य्यात् ॥ इति रत्नधेनुदानम् ॥ अथमहा भूतघटंषोडशंमहादानम् ॥ तत्तुमहारत्नाचितंकांचनकुंभंप्रादेशा दांगुलशतंक्षीराज्यपूरितंकल्पवृक्षसमन्वितंकृत्वा तत्रब्रह्मविष्णुमहे श्वरपृथ्वीवरुणहुताशनगणेशवेदचतुष्टयलोकपालान्सौवर्णान्कृत्वा तत्तन्मंत्रैःसंपूज्य परितःसर्वधान्यचामरासनदर्पणपादुकोपानच्छ त्रदीपिकाभूषणशय्याजलपूर्णकलशाष्टकपंचवर्णवितानानिविधाय स्वस्तिवाचनगुर्वादिवरणपुण्याहवाचनवृद्धिश्राद्धकुंडमंडपसंभारशि वादिपूजालोकपालावाहनादि पूर्णाहुतिपर्यंतंकर्मशेषंसमाप्यत्रिः प्रदक्षिणमावृत्ययथाकाममुल्लिख्यगुर्वादिभ्योदद्यात् ॥ तत्रमंत्राः ॥ नमोवःसर्वदेवानामाधारेभ्यश्चराचरे ॥ महाभूतादिदेवेभ्यःशांतिर स्तुशिवंमम ॥ यस्मान्नकिंचिदप्यस्तिमहाभूतैर्विनाकृतम् ॥ ब्रह्मांडेसर्वभूतेषुतस्माच्छ्रीरक्षयास्तुमे ॥ इत्युच्चार्य्यमहाभूतघटंगो विनिवेदयेत् ॥ सर्वपापैर्विनिर्मुक्तःप्रयातिपरमांगतिम् ॥ विमाने

नार्कवर्णेनपितृबंधुसमावृतः ॥ स्तूयमानोमरस्त्रीभिःपदमभ्येतिवै ष्णवम् ॥ दानांतेसुवर्णदक्षिणामाचार्य्यायतदनुज्ञयाऋत्विग्भ्योपि दानंदीनानाथकामनापूरणंचकर्त्तव्यम् ॥ अन्यद्विप्रागादिकंपूजादि विसर्जनांतंतुलापुरुषदानवत्कर्त्तव्यम् ॥ इतिमहाभूतघटदानंषोड शम् ॥ षोडशैतानियःकुर्य्यान्महादानानिमानवः ॥ नतस्यपुनरा वृत्तिरिहलोकेभिजायते ॥

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेषोडशमहादानविधिर्नाम त्रयोविंशःकोशः ॥ २३ ॥

---

अथातिदानानि ॥ त्रीण्युद्धरंतिदानानिगावःपृथ्वीसरस्वती । नरकादुद्धरंत्येवजपवापनदोहनैरिति ॥ अत्रापिगोशब्देनगुडधेन्वा दयोदशधेनवः । तेषांतुविधानानिपूर्वोक्तानि ॥ अथ स्वरूपतोगो दानमधिकृत्यश्वेतवर्णादिगोदानविधानसहितं कामनामु द्दिश्यगोदानप्रकरणम् ॥ तत्रादौस्वरूपगोदानविधिः ॥ गौरेक स्यैवदातव्याश्रोत्रियायकुटुंबिने ॥ साहितारयतेपूर्वान्सप्तसप्तचसप्त चेति ॥ देवलः ॥ सुशीलांलक्षणवतींयुवतींवत्ससंयुताम् ॥ बहुदुग्ध वतींस्निग्धांधेनुंदद्याद्विचक्षणे ॥ अथ गोदानप्रयोगः ॥ कर्ता कृतनित्यक्रियःपुण्यकाले अद्येत्यादियथाशक्तियथाज्ञानंगोदानम हंकरिष्ये इति संकल्प्यसवत्सांधेनुंद्विजंचयथाविभवंवस्त्रालंकारा दिभिः संपूज्य गोशृंगमूलादिस्तनांतस्थानादिषुदेवताः पूजयेत् ॥ तयथा ॥ शृंगमूलेब्रह्मविष्णुभ्यांनमः ब्रह्मविष्णूपूजयामि ॥ शृंगाग्रेसर्वतीर्थेभ्योनमःसर्वतीर्थानिपूजयामि ॥ एवंसर्वत्र ॥ शिरो मध्येशिवाय० ॥ ललाटदेव्यैनमः ॥ नासिकायांषण्मुखाय० ॥

नासापुटयोःकंबलाश्वतरनागाभ्यां० ॥ कर्णयोरश्विभ्यां० ॥ च क्षुषोःशशिभास्कराभ्यां० ॥ दंतेषुवायवे० ॥ जिह्वायांवरुणाय हुंकारेसरस्वत्यै० ॥ गंडयोःपक्ष्मासाभ्यां० ॥ ओष्ठयोः० संध्या द्वया० ॥ ग्रीवायांइंद्राय० ॥ कुक्षिदेशेरक्षोभ्यो० ॥ उरसिसा ध्येभ्यो० ॥ पादेषुधर्माय० ॥ जंघासुअधर्माय० ॥ खुरमध्येगं धर्वेभ्यो० ॥ खुराग्रेपन्नगेभ्यो० ॥ खुरपश्चिमाग्रेअप्सरोभ्यो० ॥ पृष्ठेएकादशंरुद्रेभ्यो० ॥ सर्वसंधिषुवसुभ्यो० ॥ श्रोणितटेपितृ भ्यो० ॥ लांगूलेसोमाय० ॥ गुह्येआदित्यरश्मिभ्यो० ॥ गोमूत्रे गंगायै० ॥ गोमयेयमुनायै० ॥ क्षीरेसरस्वत्यै० ॥ दध्निनर्म दायै० घृतेअग्नये० ॥ रोमस्वष्टाविंशतिकोटिदेवताभ्योन० ॥ उदरेपृथिव्यै० पयोधरेषुचतुस्समुद्रेभ्यो० ॥ चतुरःसमुद्रान्पूजया मि । एतादेवता अंगेषुसंपूज्य ॥ अद्येत्यादिगोत्रायशर्मणे सुपूजितायपृथ्वीदानसमफलप्राप्तिकामः सर्वपापक्षयकामो वि ष्णुप्रीतिकामोवाइमांप्रत्यक्षधेनुंसुवर्णशृंगींरौप्यखुरांताम्रपृष्ठांघंटाग्रै वेयांमुक्तालांगूलांकांस्योपदोहनींसितवस्त्रद्वयोपेतां सर्वाभरणभूषि तां सोपस्करां रुद्रदैवत्यां तुभ्यमहंसंप्रददेनममेति तिलपात्रेघृ ताक्तंमोक्तुंच्छंकृत्वाविप्रहस्तेसतिलकुशोदकंदद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ यज्ञसाधनभूतायाविश्वस्याघौघनाशिनी ॥ विश्वरूपधरादेवीप्री यतामनयागवा ॥ ततोदातादानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थंसुवर्णंदक्षिणांदत्वा प्रार्थयेत् ॥ नमोगोभ्यःश्रीमतीभ्यःसौरभेयीभ्यएवच ॥ नमोब्रह्म सुताभ्यश्चपवित्राभ्योनमोनमः ॥ पूजितासिवसिष्ठेनविश्वामित्रेणधी मता ॥ सुरभेहरमेपापंयन्मयादुष्कृतंकृतमिति ॥ गावोममाग्रतः

संतुगावोमेसंतुपृष्ठतः ॥ गावोमेहृदयेसंतुगवांमध्येवसाम्यहमिति पठित्वा—धेनुंद्विजंचप्रदक्षिणीकृत्यकिंचिदनुव्रजेदिति ॥ इति गो दानप्रयोगः ॥ अथश्वेतादिवर्णगोदानफलम् ॥ श्वेतासु तप्रदाप्रोक्ताचंद्रलोकप्रदायिनी ॥ कृष्णास्वर्गप्रदाज्ञेयागौरी स्यात्कुलवर्द्धिनी ॥ कपिलासर्वपापघ्नानानावर्णाचमोक्षदेति ॥ अथ समानवर्णगोवत्सदान फलम् ॥ महाभारते॥ रोहिणींतुल्य वर्णांतुसवत्सांचपयस्विनीम् ॥ प्रदत्वावस्त्रसंवीतांसूर्य्यलोकेमही यते ॥ समानवत्सांकृष्णांतुधेनुंसर्वाघनाशिनीम् ॥ सुव्रतांवस्त्रसंवी तामस्मिल्लोकेमहीयते ॥ वातरेणुसवर्णांतुसवत्साकांस्यदोहनीम् ॥ प्रदायवस्त्रसंवीतांवारुणंलोकमश्नुते ॥ हिरण्यवर्णांपिंगाक्षींसवत्सां दक्षिणायुताम् ॥ प्रदद्याद्वस्त्रसंवीतांकौबेरंलोकमाप्नुयात् ॥ पला लधूम्रवर्णांतुपितृलोकेमहीयते ॥ सवत्सांपीवरांदत्वाशितिकंठामलं कृताम् ॥ वैश्वदेवमसंबाधंस्थानश्रेष्ठंप्रपद्यते ॥ समानवत्सांगौरीं तुधेनुंसर्वाघनाशिनीम् ॥ सवत्सांकांस्यदोहांतुवसूनांलोकमाप्नु यात् ॥ वत्सोपपन्नांनीलांगींसर्वरत्नसमन्विताम् ॥ गंधर्वाप्सरसां लोकान्दत्वाप्नोतिमानवः॥ इतिसंकल्प्यतुतत्फलंसंकीर्त्यदद्यात् ॥ इति समानवर्णसवत्सगोदानफलम् ॥ अथ कृष्णधेनुदानम् ॥ संकल्पादिपूर्ववत् ॥ मंत्रस्तु ॥ कृष्णधेनोनमस्तुभ्यंब्रह्मविष्णु शिवात्मके ॥ त्रिजन्मार्जितपापानिध्रुवंदानात्प्रणाशयेति ॥ अथ हेमशृंगीदानम् ॥ मात्स्ये ॥ दशशौवर्णिकेशृंगेखुरांःपंचपला न्विताः ॥ पंचाशत्पलकंकांस्यंताम्रंचापितथैवच ॥ वस्त्रंचत्रिगुणं धेन्वादक्षिणाचचतुर्गुणेति ॥ एवंविधिवद्दातुःफलमुक्तम् ॥ नंदिपुरा

णे ॥ विधिनातुयदादत्तापात्रेधेनुःसदक्षिणा ॥ दातुस्तारयतेजं तून्कुलानामयुतंशतमिति ॥ महाभारतेपि ॥ प्रासादा यत्रसौव र्णाश्शय्यारत्नोज्ज्वलास्तथा ॥ वराश्चाप्सरसोयत्रंतत्रगच्छंतिगोप्र दाः ॥ तथा ॥ यावंतिरोमाणिभवंतितस्यास्तावंतिवर्षाणिमही यतेसः ॥ स्वर्गाच्च्युतश्चापितत्रलोकेकुलेसमुत्पत्स्यतिगोमतां सः ॥ तथा—सालंकृतांसवत्सांचधेनुंसंपूज्यभक्तितः ॥ सरत्नपूर्णा पृथिवीतेनदत्तानसंशयंइति ॥ इति स्वरूपतोगोदानम् ॥ अथ प्रमे हघ्नसुवर्णधेनुदानम् ॥ धेनुंस्वर्णमयींकुर्य्यात्पूर्वेणविधिनाततः ॥ पूर्वेण पूर्वोक्तस्वर्णधेनूक्तवदिति ॥ स्वर्णशृंगींरत्नयुतांरौप्यखुरामष्ट मांशेनवत्ससहितां गांनिर्माय सर्वलक्षणसंपन्नंब्राह्मणंवृत्वापलाशस मिद्भिःपूर्ववद्धोमंसमाप्यहोमांतेअद्येत्यादिममपूर्वार्जितज्ञाताज्ञातपाप क्षयोत्तरंहप्रमेहरोगनाशनपूर्वकबलपुष्टिशरीरसौख्यप्राप्तयेइत्यादिय थाकाममुद्धिश्यदद्यात् ॥ मंत्रः ॥ चक्रंसुदर्शनंयस्यराजतेजस्तथै वहि ॥ प्रमेहंहरतुक्षिप्रंविष्णुर्गरुडवाहनः ॥ दानंप्रमेहरोगघ्नमेतत्का र्य्यंमनीषिभिः ॥ कृतेनानेनशाम्यंतिप्रमेहादारुणाअपि ॥ अथा शोंघ्रसुवर्णधेनुदानम् ॥ सौवर्णींगांप्रकुर्वीतपलेनार्द्धेनवापुनः ॥ वित्तशाठ्यंनकुर्वीतकुर्वन्नैवफलंलभेत् ॥ तांतु रत्नशृंगींरौप्यखु रांनानावस्त्रयुतांग्रहमंडपेनवधान्योपरिसंस्थाप्यपूर्ववद्धोमादिसर्वंवि धाय प्रतद्विष्णुस्तवतेतिमंत्रेणप्रधानहोमंसमिदाज्यचरुभिःकृत्वा पूर्णाहुत्यंतंसमाप्य सलक्षणंब्राह्मणंमंगुलीयकोपानच्छत्रादिभिः संपूज्यअद्येत्यादि०ममानेकजन्मार्जितपापनिर्हारद्वारास्वकृतदुष्क र्मजनितार्शोरोगनिवृत्तिपूर्वकसुखसौभाग्यायुरारोग्याभिवृद्धयेइमां

सुवर्णधेनुंसोपस्करामित्यादि० ॥ गोविंदंमनसाध्यायन्गवांमध्येस्थितंशिशुम् ॥ बर्हापीडकसंयुक्तंवेणुवादनतत्परम् ॥ गोपीजनैःपरिवृतंवन्यपुष्पावतंसकम् ॥ मंत्रः ॥ गोविंदगोपीजनवल्लभेशकंसासुरंघ्नत्रिदशेंद्रवंद्य ॥ गोदानतृप्तः कुरुमेदयालोह्यशोविनाशंक्षयितारिवर्गः ॥ दानेनानेननियतमशंसांजायतेक्षयः ॥ तस्मात्कुर्य्यात्प्रयत्नेनसुखार्थंमामनर्शसम् ॥ अथवंध्यात्वहरंसुवर्णधेनुदानम् । चतुर्विधाचयावंध्याभवेद्वत्सवियोजनात् ॥ वक्ष्येतस्यप्रतीकारं येनपुत्रवतीभवेत् ॥ पलादूर्द्धंसुवर्णेनधेनुंचतुर्थांशेनवत्सकंचकृत्वा—धेनुंतुरौप्यखुरां रत्नपुच्छांघंटाचामरभूषितांगंधानुलेपनार्चितां पायसापूपमोदकगुडलवणजीरकपूरितसूर्यमेकंधेनवोदशाष्टौवापुत्रवतीभ्यस्त्रीभ्योदद्यात् ॥ ततोब्राह्मणंसलक्षणंवस्त्रायैःसंपूज्य सोमोधेनुमितिमंत्रेणसमिदाज्यचरूञ्जुहुयात् ॥ अन्यत्सर्वंपूर्वोक्तसुवर्णधेनुवत्कर्मसमाप्य अद्येत्यादि० ममानेकजन्मोपार्जितवंत्सवियोजनादिपापसंसूचितवंध्यात्वनिराकरणपूर्वकपुत्रसुखप्राप्तयेइत्यांदियथाकाममुल्लिख्यदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ धेनुर्योगिरसःसातुवसिष्ठेसुरभीचया ॥ दुहितायातथाभानोरश्व्यश्ववरुणस्यच ॥ याश्चगावःप्रवर्त्ततेवनेषूपवनेषुच ॥ प्रीणंतुतामम्मसदापुत्रपौत्रप्रदाःसुखम् ॥ प्रयच्छंतुदिवारात्रमविच्छेदंचसंततेः ॥ ततःसुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ ब्राह्मणभोजनंदीनतर्पणंचविधेयम् ॥ अथ नानागोदानमाहात्म्यम् ॥ सालंकारांकृष्णांगांदत्वायमलोकंनपश्यति ॥ तथाविधांश्वेतांदत्वाकुलोद्धारः ॥ तथैवगौरीदानेननीलवर्णगोदानेनकल्पकोटिंयावद्वरुणलोकः ॥ समानवत्साकपिलादाने ब्रह्म

लोकनिवासः ॥ समानवत्सांकृष्णांदत्वाश्निलोकः ॥ तद्वद्धूम्रयाय मलोकेमोदते ॥ हिरण्यवर्णादानेपितृलोकः ॥ कपिलादानेदशधेनुदान समंपुण्यम् ॥ इति नानागोदानमाहात्म्यम् ॥ अथोभयतोमुखीगोदानम् ॥ रुक्मशृंगीरौप्यखुरांमुक्तालांगूलभूषिताम् ॥ कांस्योपदोहनांशुभ्रांसवस्त्रांद्विजपुंगवे । प्रसूयमानांयोदद्याद्धेनुंद्रविणसंयुताम् ॥ यावद्वत्सोयोनिगतोयावद्गर्भंनमुञ्चति ॥ तावद्द्यौःपृथिवीज्ञेया सशैलवनकानना ॥ देवलः ॥ अलंकृत्योक्तविधिनासुवर्णत्रिपलान्वितांम् ॥ देयाचद्विपलामध्यापलैकादक्षिणाधमा ॥ वराहेतु ॥ सुवर्णसाहस्रंतदर्द्धार्द्धंमुख्यमुक्तम् ॥ सुवर्णस्य सहस्रेणतदर्द्धेनापि वापुनः ॥ तस्याप्यर्धंशतंवापिपंचाशच्चततोर्धकम् ॥ यथाशक्त्यापिदातव्यावित्तशाठ्यविवर्जितेति ॥ उभयतोमुखींस्वर्णनिष्केणदत्वासद्यःशुद्धयेत्पातकेभ्यश्चमर्त्यः इति सुवर्णनिष्कदक्षिणायुतेनापि अत्रनिष्कचत्वारिंशन्माषकएवग्राह्यः ॥ अत्यंशक्तौविंशतिमाषकंवादद्यादित्यर्थः ॥ अथ दानप्रयोगः ॥ शुचिरयेत्यादि०उभयतोमुखीदानंकर्तुंगोब्राह्मणंपूजांकरिष्ये ॥ इति संकल्पः ॥ द्विजंकुटुंबिनंदरिद्रंवेदपारगंसुशीलंवृत्त्वायथाविभवंवस्त्रालंकारादिभिःतथागामपिसंपूज्य—ॐत्वंमहीमवनिविश्वधेनांतुर्वीतयेष्यायक्षरंतीम्। अरंमयोनमसैजदर्णःसुतरणां ॥ अमुकशाखाध्यायिनेइमांधेनुंसोपस्करामुभयतोमुखींसमुद्रशैलवनोपेतपृथ्वीदानसमफलावाप्तयेधेनुवत्सरोमसंख्याकयुगदेवलोकमहिमत्वपितृपितामहप्रपितामहकुलशतनरकोत्तारणपूर्वकघृतक्षीरबहुकुल्याकदधिपायसकर्दमदेशाधिकारणकोत्तरकोप्सितकामोब्रह्मलोकावाप्तिकामोरुद्रदैवत्यामिमांतुभ्यमहंसंप्रददेन

ममेतिसघृततिलपूर्णकांस्यपात्रयुतगोपुच्छंतद्धस्तेसकुशजलंदत्वा प्रा
र्थयेत् ॥ मंत्रस्तु ॥ इमांगृहाणोभयमुखींभवात्रातामास्तु
वै।ममवंशविशुद्धेश्चसदास्वस्तिकरोभवेति।विप्रोदेवस्त्वेतिप्रतिगृह्य
स्वस्तीत्युक्त्वायथाशाखंकामस्तुतिंपठेत् ॥ ततःसुवर्णसहस्रमा
रभ्यपंचविंशतिचतुर्विंशतिसुवर्णमितांदक्षिणांदद्यात् ततोनन्यू
नामिति।ततोविप्रस्तु ॐइरावतीधेनुमतीहिभूतंसूयवसिनीमनुषेदश
स्या ॥ व्यस्कंभ्नारोदसीविष्णवेतेदाधर्थपृथिवीमभितोमयूखैः ।
ॐस्योनापृथिविभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानःशर्मस
प्रथाः ॥ इति मंत्रद्वयंपठित्वावदेत् ॥ प्रतिगृण्हन्त्विमां
धेनुंकुटुंबार्थेविशेषतः ॥ स्वस्तिभवतुमेनित्यंरुद्रमातर्नमोस्तु
ते ॥ इति ॥ नत्वा गृहीतायाःदक्षिणेनपाणिना ॐगर्भे
नुसन्तन्वेषामवेदमहंदेवानांजनिमानिविश्वाशतंमापुर ॥ आय
सीररक्षन्नघश्येनोजवसानीरदीयमितिमंत्रेणवत्समाकृष्येत् ॥ नि
ष्कासितेसतिकृत्यांतरमाह ॥ ततोयजमानःप्राणानायम्यअद्येत्या
दि० कृतस्योभयतोमुखीदानकर्मणःसांगतासिद्ध्यर्थंदेवादिमंत्रैस्त
र्पणहोमंचकरिष्ये ॥ इतिसंकल्प्य ॥ स्थंडिलेग्निंप्रतिष्ठाप्यान्वाद
ध्यात् अस्मिन्नन्वाहितेग्नावित्यादिचक्षुषी आज्येन्येत्यंतमु
क्त्वाऽत्रप्रधानंपृथिवींत्रिर्गौरींसकृदाज्येनप्रजापतिंचतुरशीत्याज्येनशे
षेणस्विष्टकृतमित्यादिसघोयक्ष्ये इत्यंतमुक्त्वासमिद्वयमग्नावाधा
यइध्मावर्हिषीपरिसन्नह्यपरिसमूहनादिचक्षुष्यंतंकृत्वाकुशांस्तृतभू
मौअग्नेःपश्चादेव साक्षताभिरद्भिर्वक्ष्यमाणमंत्रैर्देवादींस्तर्पयेत् ॥
तेचमंत्राः ॥ ॐयेदेवासोदिव्येकादशस्थपृथिव्यामध्येकादशस्थ ॥ अ

प्सुक्षितोमहिनैकादशस्थतेदेवासोयज्ञमिमंजुषध्वं॥ देवांस्तर्पयामि॥ ॐउशंतस्त्वानिधीमह्युशंतःसमिधीमहि ॥ उशन्नशतआवहपितृन्हविषेअत्तवेपितून्स्तर्पयामि॥ ॐइमंमेगंगेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोमँसचतापरुष्ण्या ॥ असिक्न्यामरुद्वृधोवितस्तयार्जीकीयेशृणुह्यासुषोमया ॥ सरितस्तर्पयामि ॥ ॐ अद्रिभिःसुतोमतिभिश्चनोहितःप्ररोचयन्रोदसीमातराशुचिः ॥ रोमाण्यव्यासमयाविधावतिमधोधारापिन्दमानादिवेदिवे ॥ पर्वतांस्तर्पयामि॥ॐवनस्पतेशतवल्शोविरोहसहस्रवल्शाविवयंरुहेम ॥ यंत्वामयंस्वधितिस्तेजमानःप्रणिनायमहतेसौभगाय।वनस्पतींस्तर्पयामि॥ ॐसमुद्रज्येष्ठाःसलिलस्यमध्यात्पुनानायंत्यन्वीयमानाः॥इंद्रोयाषज्रीवृषभोररादस्ताआपोदेवीरिहमामवंतु ॥ समुद्रांस्तर्पयामि ॥ ॐअहिरिवभोगैःपर्येतिबाहुंज्यायाहेतिंपरिबाधमानः॥हस्तघ्नोविश्वावयुनानिविद्वान् पुमान्पुमांसंपरिपातुविश्वतः॥नागांस्तर्पयामि॥ ॐमधुवाताऋतायतेमधुक्षरंतिसिंधवः ॥माध्वीर्नस्संत्वोषधीस्तर्पयामित्यष्टाभिस्तर्पयित्वाचतस्रआज्याहुतीर्जुहुयात् ॥ ॐइळेयावापृथिवीपूर्वचित्तयेग्निंघर्मंसुरुचंयामन्निष्टये॥याभिर्भरेकारमंशायाजिन्वथस्ताभिरुषुऊतिभिरश्विनागतंस्वाहाद्यावापृथिव्याइदंनमम॥ॐमहीद्यौःपृथ्वीचनइमंयज्ञंमिमिक्षतां।पिपृतान्नोभरीमभिः स्वाहा पृथिव्याइदंनमम २ॐउर्वीपृथ्वीबहुलेदूरेअंतेउपब्रुवेनमसायज्ञेअस्मिन्।दधातेयेसुभगेसुप्रतूर्तीघावारक्षतंपृथिवीनोअभ्वात्स्वाहापृथिव्याइदंनमम ३ॐगौरीमिमायसलिलानितक्षत्येकपदीद्विपदी साचतुष्पदी ॥ अष्टापदीनवपदीबभूवुषी सहस्राक्षरापरमेव्योमन्त्स्वाहागौर्य्याइदंनमम ४ इति चतस्रआज्याहुतीर्हु

त्वासुमस्तव्याहृतिभिश्चतुरशीत्याज्याहुतीर्हुत्वाप्रजापतयेइदंनममेतित्यजेत् ॥ ततःस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्यभूयसींदक्षिणांदत्वागामनुव्रज्यगोमतींजपेत् ॥ यथा ॥ गावोमामुपतिष्ठंतुहेमशृंग्यःपयोमुचः॥ सुरभ्यःसौरभेयाश्चसरितःसागरायथा ॥ गावःपश्याम्यहंनित्यंगावःपश्यंतुमांसदा॥ गावोस्माकंवर्ययंतासांयतोगावस्ततोवयम् ॥ घृतक्षीरप्रदागावोघृतयोन्योघृतावहाः ।घृतनद्योघृतावर्तास्तामेसंतुसदागृहे॥ घृतंमेहृदयेनित्यंघृतंनाभ्यांप्रतिष्ठितम् ॥ घृतंमेसर्वतश्चैवघृतमध्येवसाम्यहम् ॥ गावोमेअग्रतःसंतुगावोमेसंतुपृष्ठतः॥ गावोमेहृदयेसंतुगावांमध्येवसाम्यहम् ॥ गावःसुरभयोनित्यंगावोगुग्गुलुसन्निभाः ॥ गावःप्रतिष्ठाभूतानांगावःस्वस्त्ययनंमहत् ॥अन्नमेवपरंगावोदेवानांहविरुत्तमम्॥ पावनंसर्वभूतानांक्षरंतिचवहंतिच ॥ हविषामंत्रपूतेनतर्पयंत्यमरान्दिवि ॥ ऋषीणामग्निहोत्रीणांगावोहोमेप्रतिष्ठिताः ॥ सर्वेषामेवभूतानां गावःशरणमुत्तमम् ॥ गावःपवित्रंपरमंगावोमंगलमुत्तमम् ॥ गावःसर्वस्यलोकस्यगावोधन्याःसनातनाः ॥नमोगोभ्यश्श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्यएवच ॥ नमोब्रह्मसुताभ्यश्चपवित्राभ्योनमोनमः ॥ पुनःप्रदक्षिणंकृत्वाधेनुंद्विजवरंचतम् ॥ नमस्कृत्यविसृज्यपायसादिनासम्यगुद्वादशब्राह्मणान्भोजयित्वातेभ्योदक्षिणांदत्वास्वस्त्ययनंवाचयित्वासुहृद्युतोभुंजीत ॥ इत्युभयमुखीगोदानप्रयोगः ॥ अथ प्रसंगादुभयतोमुखीगोप्रतिग्रहप्रायश्चित्तम् ॥ ममोभयतोमुखीगोप्रतिग्रहदोषपरिहारार्थंकृच्छ्रत्रयप्रायश्चित्तंयथाप्रत्याम्नायेनकरिष्ये इति संकल्प्यकृच्छ्रत्रयप्रायश्चित्तंकुर्य्यादित्युक्तंदानीथेतेऽरुणस्मृतौ ॥ रहस्यप्रायश्चित्तेष्वशक्तस्येति ॥

इति प्रायश्चित्तम् ॥ अथ देवतोद्देशेन गोदानम् ॥ देवदक्षिणदिग्भागेधेनुःकार्य्याह्युदङ्मुखी।प्राङ्मुखंवत्सकंकृत्वाब्राह्मणंचाप्युदङ्मुखम् ॥प्राङ्मुखोयजमानस्तुपूजयेद्ब्राह्मणंततः॥ क्रोदातेतिचमंत्रेण गृह्णीयाद्ब्राह्मणःस्वयम् ॥तथाहि॥ सपुत्रांवस्त्रसंवीतांसितयज्ञोपवीतिनीम् ॥ स्वर्णशृंगींरौप्यखुरांसुवर्णोपरिसंस्थिताम्॥शक्तितोदक्षिणायुक्तांब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ गावोममाग्रतःसंतुगावोमेसंतुपृष्ठतः ॥ गावोमेहृदयेसंतुगवांमध्येवसाम्यहम् ॥ इमांनः प्रतिगृह्णीष्वधेनुं दत्तांमयातव ॥ समेपापंनोदायममेष्टःप्रीयतामिति ॥ अन्यत्सर्वं गोदानवदनुष्ठेयम् ॥ अथ देवताभ्यो गोदानम् ॥ शिवायविष्णवेचापियस्तुदद्यात्पयस्विनीम् ॥ धेनुंसानोपहारार्थंसपरंब्रह्मगच्छति ॥ सौरींसूर्य्यायवोदद्यात्तरुणींचपयस्विनीम् ॥ तेनदत्तं भवेत्सर्वंजगत्स्थावरजंगमम् ॥ स्नानाग्निकार्य्यमुद्दिश्यसवत्सांसुपयस्विनीम् ॥ कुलीनांकपिलांदत्वादत्तंभवतिगोशतम् ॥ यएवं गामलंकृत्यदद्यात्सूर्य्यायमानवः ॥ सोश्वमेधस्ययज्ञस्यफलमष्टगुणं लभेत् ॥ योदद्यादुभयमुखींसौरभेयींदिवाकरे ॥ सप्तद्वीपांमहीं दत्वायत्फलंतदवाप्नुयात् ॥ पादद्वयांशिरोद्वंचयदास्यादेवनिर्गतम्॥ तदासापृथिवीज्ञेयासशैलवनकानना ॥ अथ ग्रहणीरोगहरगोदानम् ॥ धेनुंपयस्विनींहृद्यांघंटाभरणभूषिताम् । हेमशृंगींरौप्यखुरांवासोभिर्वेष्टितांनरः ॥ नवधान्यैःसमायुक्तामेकैकद्रोणपंचकैः। सहिरण्यांतुतांदद्याद्ब्राह्मणायकुटुंबिने ॥ होमश्चपूर्ववत्कार्य्यःसमिदाज्यचरूत्कटम् ॥ तस्मैहुतवतेदद्यात्पूजितायांगुलीयकैः ॥ गांकृष्णांकृष्णरूपायमंत्रेणानेनरोगवान् ॥ दानमंत्रः ॥ देवकीपुत्र

चाणूरकंसारिष्टविनाशन ॥ नाशयग्रहणींकृष्णगोपीजनमहोत्सव ॥ इतिदानमंत्रः ॥ कृतेनानेनदानेनग्रहणीशांतिमृच्छति ॥ तस्मादेतत्तुकर्त्तव्यंग्रहणीरुग्णयासदा ॥ **अथ असृग्दरनाशनधेनुदानविधिः ॥** धेनुंपयस्विनींदातालोहितांहेमशृंगिकाम् ॥ तथारूप्यखुरांरक्तवस्त्रेणसमलंकृताम् ॥ ब्राह्मणायाग्निवर्णायदद्यात्सत्कृत्यमानवः ॥ पलेनवापलार्द्धेनतदर्द्धेनाथवापुनः ॥ सुवर्णेनयुतांशुभ्रांयद्वास्वविभवेनतु । द्विजोत्तमायश्रेष्ठायसर्वशास्त्रार्थवेदिने धेनुंतामतिसंपूज्यमंत्रेणानेनभक्तितः ॥ मंत्रः ॥ गावोमेहृदयेसंतुगावोमे सन्तुपृष्ठतः ॥ देवानांयातुसुरभीकृपयासृग्दरंमम ॥ इतिदानवाक्यम् ॥ विनाशयत्येदोदानमपिदीर्घमसृग्दरम् ॥ तेनेदंयत्नतः कुर्य्यादसृग्दरगदार्दितः ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेनानाविधगोदान
विधिर्नामचतुर्विंशः कोशः ॥ २४ ॥

---

**अथ दशदानानि ॥** उक्तांत्यादीनिदानानिदशदद्यान्मृतस्यतु ॥ गोभूतिलहिरण्याज्यवासोधान्यंगुडानिच ॥ रौप्यंलवणमित्याहुर्दशदानान्यनुक्रमात् ॥ एतानिदशदानानिनराणांमृत्युजन्मनोः ॥ कुर्य्यादभ्युदयार्थंचत्विहप्रेत्यपरत्रच ॥ तत्रादौगोदानम् ॥ दानविधिस्तुपूर्वोक्तएव ॥ ममसर्वपापक्षयार्थंगांसवौंपस्करांरुद्रदैवत्यांसुवर्णदक्षिणायुतांगोत्रायशर्मणेसुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिदद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ यज्ञसाधनभूतायाविश्वस्यान्नप्रदायिनी ॥ विश्वरूपधरोदेवःप्रीयतामनयागवा ॥ गवामंगेष्वतिष्ठन्तिभुवनानिचतुर्दश ॥ **अथ भूमिदानम् ॥** निवर्त्तनमितांभूमिर्दद्या ॥ दशहस्तेनदं

डेनत्रिंशद्दंडानिवर्त्तनमितिस्मरणात् ॥ दानान्यन्यानिसर्वाणिकनकादीनियानिच ॥ तानिभूमिप्रदानस्यकलांनार्हंतिषोडशीम् ॥ अद्येत्यादि० गोत्रायशर्मणेसुपूजितायषष्टिवर्षसहस्रपरिमितस्वर्गशिवपुरनिवासकामःसर्वपापक्षयकामःइमांभूमिंबहुसस्यप्रदांविष्णुदैवत्यांतुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिदद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ सर्वेषामाश्रयाभूमिर्वराहेणसमुद्धृता ॥ अनंतसस्यफलदाअतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ यस्यांरोहंतिबीजानिकालेचैवमहीतले ॥ तत्प्रसादाच्चसकलाममसंतुमनोरथा इति ॥ अथ तिलदानम् ॥ तिलास्तुद्रोणत्रयमितादेयाःपंचभणपरिमिताभवंति ॥ अद्येत्यादि०गोत्रायशर्मणेइमांस्तिलान् सोमदैवत्यान्विष्णुदैवत्यान्वासर्वपापक्षयकामस्तुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिद० ॥ मंत्रः॥महर्षेर्गोत्रसंभूताःकश्यपस्यतिलाः स्मृताः॥ तस्मादेषांप्रदानेनममपापंव्यपोहतु॥ अथ हिरण्यदानम्॥ तच्चनिष्कत्रयमितंकनिष्ठम् ॥ द्वादशमाषकोनिष्कः । संकल्पस्तुपूर्ववत् ॥ मंत्रः॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थंहेमबीजंविभावसोः॥ अनंतपुण्यफलदमतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ अथाज्यदानम् ॥ घृतंतुप्रस्थमितंदद्यात् ॥ विंशतिसेटकमितंभवति ॥ अद्येत्यादि० गोत्रायशर्मणेइदमाज्यंविष्णुदैवतंसमस्तपापक्षयकामस्तुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिद० ॥ मंत्रस्तु ॥ कामधेनोःसमुद्भूतंसर्वकर्तुषुसंस्थितम् ॥ देवानामाज्यमाहारअतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ अथ वस्त्रदानम् ॥ सूक्ष्मवस्त्रद्वयंबहुमूल्यमष्टहस्तमितंदद्यात् ॥ अद्येत्यादि० गोत्रायशर्मणेसमस्तपापक्षयकामइमेवार्हस्पत्येवाससीतुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिद० ॥ मंत्रस्तु॥ शीतवातोष्णसंत्राणंलज्जायारक्षणंपरम्॥ देहालंकरणंवस्त्रम

तःशांतिंप्रयच्छमे ॥ अथ धान्यदानम् ॥ सार्द्धखारीद्वयंव्रीह योदेयाः ॥ तच्चसार्द्धशतद्वयमणपरिमितंमणषट्कंचेति ॥ गो त्रायशर्मणेइदममुकसंख्यंप्रजापतिदैवत्यंसमस्तपापक्षयपूर्वकैहिकामु ष्मिकशिवफलावाप्तिकामस्तुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिद० ॥ मंत्रस्तु ॥ सर्वदेवमयंधान्यंसर्वोत्पत्तिकरंमहत् ॥ प्राणिनांजीवनोपा यमतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ अथगुडदानम् ॥ गुडंपलषष्टिमितं दद्यात् ॥ अद्येत्यादि० समस्तपापक्षयपूर्वकंगृहेलक्ष्म्यास्थैर्य सिद्धिकामोगोत्रायशर्मणेसुपूजितायेमंगुडंरसवर्यंसोमदैवतंसदक्षिणं तुभ्यमहंसंप्रददेनममेतिद० ॥ मंत्रस्तु ॥ गुडमिक्षुरसोद्भूतंमंत्रा णांप्रणवोयथा ॥ दानेनानेनमेतस्यपरालक्ष्मीः स्थिरागृहे ॥ अथर जतदानम् ॥ पलत्रयमितंरौप्यंदद्यात् ॥ अद्येत्यादि० स मस्तपापक्षयपूर्वकशिवविष्णुपितृप्रीतिकामोगोत्रायशर्मणेसुपूजिता यइदंरजतंविष्णुदैवतंसदक्षिणंतुभ्यमहंसंप्रददेनममेतिद० ॥ मंत्रस्तु ॥ प्रीतिर्यतः पितृणांचविष्णुशंकरयोःसदा ॥ शिवनेत्रोद्भवंरूप्यमतः शांतिंप्रयच्छमे ॥ अथलवणंदानम् ॥ लवणंसार्द्धखारींकं दद्यात्अद्येत्यादि० समस्तपापक्षयपूर्वकशिवप्रीतिकामोगोत्रायश र्मणेसुपूजिताय इदंलवणंसर्वरसोत्कृष्टंसोमदैवतंसदक्षिणंतुभ्यमहं संप्रददेनममेतिद० ॥ मंत्रस्तु ॥ यस्मादन्नरसाःसर्वेनोत्कृष्टालवणंविना शंभोः प्रीतिकरंयस्मादतः शांतिंप्रयच्छमे ॥ अथपंचधेनुदाना नि ॥ तत्रादौपापापनोदकधेनुदानम् ॥ ब्राह्मे दानोपस्करास्तुगोदावो क्तएव ॥ अद्येत्यादि० ममममनोवाक्कायकर्मभिराजन्मोपार्जित सापापनोदकामोगोत्रायशर्मणेसुपूजिताय इमांकृष्णांपापापनोदकधे

नुंयथा शक्तिसोपस्करांरुद्रदैवत्यांतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ ॥ मंत्रस्तु ॥ आजन्मोपार्जितंपापंमनोवाक्कायकर्मभिः ॥ तत्स वैनाशमायातुपापधेनुप्रदानतः ॥ ततःसुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ अथ ऋणापनोदकधेनुदानम् ॥ अद्येत्यादि० आजन्मोपार्जितैहिका मुष्मिकसमस्तऋणपातकच्छेदकामोगोत्रायशर्मणेसुपूजितायइमांस मस्तऋणापनोदकधेनुंयथाशक्तिसोपस्करांरुद्रदैवत्यांतुभ्यमहंसंप्रदद नममेति ॥ ततःसुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ अथ प्रायश्चित्तधेनुदानम् ॥ अद्येत्यादि० मयाजन्मप्रभृतिअद्ययावदाचरितसमस्तपातकस्याक तप्रायश्चित्तस्यामरणांतपापस्यापनोदकामोगोत्रायशर्मणेसुपूजिताय प्रायश्चित्तत्वेनइमांकपिलांधेनुंयथाशक्तिसोपस्करांरुद्रदैवत्यांतुभ्य म हंसंप्रददेनममेति द० ॥ मंत्रस्तु ॥ प्रायश्चित्तेसमुत्पन्नेनिष्कृतिर्नकृताक चित् ॥ तस्यपापस्यशुद्ध्यर्थंधेनुमेतांददामिते ॥ ततःसुवर्णदक्षिणांद द्यात् ॥ अथवैतरणीधेनुदानम् ॥ यासावैतरणीनामयमद्वारेमहा नदी ॥ शतयोजनविस्तीर्णापृथुस्त्वेषामहासरित् ॥ अगाधानंतरूपाच दृष्टमात्राभयप्रदा । पतंतितत्रवैमर्त्याःक्रंदमानाःसुदारुणम् ॥ उष्णेवर्षा सुशीतेचमारुतेचातितीक्ष्णके ॥ दातारंतारयेद्यस्मात्तस्माद्वैतरणीस्मृ तेति ॥ दानकालेपितत्रैवमदनरत्ने ॥ अयने विषुवेपुण्येव्यतीपातेदिन क्षये ॥ अन्येषुपुण्यकालेषुदीयतेदानमादरात् ॥ पाटलामथवाकृष्णां दद्याद्वैतरणींतुगाम् ॥ स्वर्णशृंगींरौप्यखुरांकांस्यपात्रोपदोहिनीम् ॥ कृष्णवस्त्रयुगच्छन्नांसप्तधान्यसमन्विताम् ॥ कार्पासद्रोण शिखरेआसीनांहैमींयमप्रतिमांलोहदंडयुतांमहिषारूढांपाशहस्तां कृत्वाइक्षुदंडमयमुडुपंपट्टसूत्रेणबध्वाउडुपेधेनुंकृत्वाछत्रोपानत्समायु

क्कांवैतरणींगांमृत्युकालेवादद्यात् ॥ तद्यथा ॥ मम यमद्वारस्थितवैतरण्याख्यनद्युतरणार्थंगोत्रायशर्मणेसुपूजितायइमां कृष्णांगांसवत्सांयमप्रतिमायुक्तांकृष्णवस्त्रयुगच्छन्नांसप्तधान्ययुतां रक्तमाल्याद्यलंकृतांस्वर्णशृंगाद्युपस्करोपेतांकार्पासद्रोणाशिखरां सच्छत्रोपानत्कांरुद्रदैवत्यांतुभ्यमहंसंप्रददे नममेति इति तिलजलघृतयुतंगोपुच्छंद्विजहस्तेदद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ यमद्वारपथे घोरेघोरावैतरणीनदी ॥ तांतर्तुकामोयच्छामि कृष्णांवैतरणींतुगा मिति ॥ ततःसुवर्णदक्षिणांदत्वाप्रार्थयेत् ॥ विष्णुरूपद्विजश्रेष्ठसू देवगतिपावन ॥ तर्तुंवैतरणीमेनांकृष्णांगांप्रददाम्यहम् ॥ ततःपुच्छं स्वकरेधृत्वातुव्रजेत्सप्तपदानिधे । नुप्रार्थनामंत्रस्तु ॥ धेनुकेत्वंप्रतीक्ष स्वयमद्वारेमहापथे ॥ उत्तितीर्षुरहंदेविवैतरण्यैनमोस्तुते ॥ इतिप्रणम्य भूयसींदक्षिणांदद्यात् ॥ कृष्णायाअभावेअन्यापिदेयागोरभावेद्र व्यंदेयम् । पित्रादेरशक्तौपुत्रादिर्दद्यात् ॥ तत्रांत्यमंत्रेउत्तितीर्षुरयमि तिपठेत् मध्यमेतर्तुंवैतरणीमस्येतिप्रथमेतांतर्तुमस्येति ॥ ॥ इतिवैतरणीगोदानम् ॥ अथउत्क्रांतिधेनुदानम् ॥ उत्क्रांतिवैतरण्यौचदशदानानिचैवहि ॥ प्रेतेपिकृत्वातंप्रेतंशव धर्मेणदाहयेदिति ॥ यथा ॥ योमुमूर्षुःपुरुषःस्वयंचेतनवेलायां श्रोत्रियंवेदपारगं ब्राह्मणमाहूय ॥ अद्येत्यादि० ममसुखेनप्रा णोत्क्रमणप्रतिबंधकोक्तनिष्कृत्यनुक्तनिष्कृतिजनितसकलपापक्ष यद्वारासुखेनप्राणोत्क्रमणसिद्ध्यर्थमिमामुत्क्रांतिसंज्ञिकांधेनुंयथास क्तिसोपस्करांरुद्रदैवत्यांगोत्रायशर्मणेसुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददे ममेतिदद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ असूत्क्रांतौप्रवृत्तस्यसुखोत्क्रमणसिद्ध

ये। तुभ्यमेनांसंप्रददेधेनुमुत्कांतिसंज्ञिकामिति ॥ ततःसुवर्णदक्षिणां दद्यात् ॥ गोरभावेतुतत्स्वरूपभूतंगोमूल्यंवादद्यात् ॥ पित्रादेरश क्तौतुपुत्रादिर्दद्यात् ॥ तत्रममेतिपदस्थानेपित्रादेरितिवदेत् ॥ इत्युत्कांतिधेनुदानम् ॥ इयमेवमोक्षधेनुरितिकेचित् ॥ तद्यथा॥मोक्षदोवासुदेवस्तुवेदशास्त्रेषुगीयते ॥ तत्प्रीतयेद्विजाग्र्याय मोक्षधेनुंददाम्यहम् ॥ इत्युक्त्वा अद्येत्यादिसमस्तपापक्षयपूर्व कसंसारमोक्षावाप्तिकामःश्रीपापापहमहाविष्णुप्रीतिकामश्चइमांमो क्षधेनुंयथाशक्ति सोपस्करांरुद्रदैवत्यांगोत्रायशर्मणेसुपूजितायतु भ्यमहंसंप्रददे नममेतिदद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ मोक्षंदेहिहृषीकेशमोक्षं देहिजनार्दन ॥ मोक्षधेनुप्रदानेनममंमोक्षोस्तुवेगतः इति ॥ ततः सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ गोरभावेतुपूर्वोक्तमनुसंधेयम् ॥ अथ म हिषीदानम् ॥ महिषीदानमाहात्म्यंकथयामियुधिष्ठिर॥पुण्यंपवित्र मायुष्यंसर्वकामप्रदंतथा ॥ दानकालोपितत्रैव ॥ चंद्रसूर्य्यग्रहेका र्तिक्यामयनेसितचतुर्दश्यांसंक्रांतौ सर्वारिष्टनाशायचित्तप्राशस्त्याय देया ॥ प्रथमप्रसूतांदोषवर्जितांदद्यात् ॥ तब्राह्मैयमस्वरूपायै महिष्यैनमइतिनत्वाप्रार्थयेत् ॥ महिषीब्रह्मपुत्रीचलक्ष्मीरूपेणसं स्थिता ॥ प्रार्थितासिमयादेवीयममार्गंनिवारयेति ॥ तथा॥महि षीयमरूपात्वंविश्वामित्रविनिर्मिते ॥ पूजिताहरमेपापं सर्वदानफल प्रदे। यथाशक्रस्याप्सरसोरूपेणमहिषीतथा ॥ सर्वभाग्यप्रददेवीदीर्घ शृंगीनमोस्तुतइति ॥ अद्येत्यादि०दीर्घायुष्यैहिकामुष्मिकयज्ञया जित्वसितृतारणात्यंतशुभविंशतिधेनुदानसमफलावाप्तिसर्वदोत्तमफ लपुत्रपौत्रबहुत्वसूर्य्यलोकनिवासमहाराज्यावाप्तिकामश्चसर्वारिष्ट निवारणार्थंशनैश्चरजनितपीडाशांत्यर्थंगोत्रायशर्मणेसपूजितायेमां

महिषींसालंकृतांरक्तमाल्यवस्त्रावृतांस्वर्णशृंगीरौप्यखुरांताम्रदोहांहै
मतिलकांसप्तधान्ययुतांघंटाभरणांधेनूपस्करांयमदैवत्यांतुभ्यमहंसंप
ददेनममेतिसकुशातिलजलंतद्धस्तेदद्यात् ॥ विप्रोदेवस्यत्वेतिपठन्पृ
ष्टदेशंस्पृष्ट्वास्वस्तीति प्रतिगृह्ययथाशाखंकामस्तुतिंपठेत् ॥ दाता
तु॥इंद्रादिलोकपालानांयाराज्यमहिषीशुभा ॥ महिषीदानमाहात्म्या
त्सास्तुमेसर्वकामदा ॥ धर्मराजस्यसाहाय्येयस्याःपुत्रःप्रतिष्ठितः ॥
महिषासुरस्यजननीयासास्तुवरदाममेतिदत्वाप्रदक्षिणीकृत्यब्रह्मणेतां
पयस्विनीमिति ।दक्षिणातुदशपंचत्रयःसुवर्णाःएकोवासुवर्णःअतिनि
कृष्टोज्ञेयः।ततोभूयसींदक्षिणांदत्वापरमेश्वरार्पणंकुर्य्यात् ॥ अनेनवि
धिनादत्वामहिषींद्विजपुंगवे ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति इहलोकेपरत्र
चेति ॥ ब्राह्मणःसर्वकामस्तुक्षत्रियोजयकाम्यया ॥ धनकामस्तु
वैश्योवै शूद्रोऽभिलषितंत्रियात् ॥ महिषदानमप्येवंज्ञेयम् ॥
अथ मेषीदानम्॥भविष्ये॥शृणुपार्थपरंदानंसर्वकल्मषनाशनम् ॥
यद्दत्वाविविधंपापंसद्योविलयमृच्छति ॥ अयनेविषुवेग्रहणद्वयेदु
स्स्वप्नदर्शनेचित्तविप्लवानुसारेणकालेतीर्थेगृहेवाकार्यम् ॥ शंकरंब्रह्मा
णंविष्णुगौरींगायत्रींश्रीसहितांयथाशक्ति सुवर्णप्रतिमांकृत्वाशच्या
सहेंद्रंग्रहाँल्लोकपालांश्चकृत्वासंपूज्यतत्पश्चिमतःस्वगृह्येणाग्निंप्रतिष्ठा
प्यस्थापितदेवतामंत्रैस्तिलाज्यैरष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिरष्टाष्टसंख्या
कावाआहुतीर्हुत्वाततोमेषींद्विजंचवस्त्रालंकारादिभिर्यथाविभवंसंपू
ज्य अद्येत्यादि सर्वपापक्षयदुस्स्वप्नसूचितारिष्टविनाश
पुत्रपौत्रधनकीर्तियशःकामइमांमेषींसुवर्णतिलकाद्यंकितांकौशेयप
रिधानांसप्तधान्यसमायुक्तांपुष्पैरुपहारांसन्मुखस्थापितलवणांब्रह्म

विष्णुशिवादिप्रतिमायुक्तामुक्तोपस्करांगोत्रायशर्मणेसुपूजितायइमां तुभ्यमहंसंप्रददेनममेतिदत्वासुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ वाङ्मनःकायजनितंयत्किंचिन्ममदुष्कृतम् ॥ तत्सर्वंविलयंयातुत्व द्दानेनोपसंचितमिति॥ प्रतिमास्थापनंतिलकुंभे। मेषीप्रत्यक्षासुवर्णनि र्मितावा। विप्रोदेवस्यत्वेतिशृंगेप्रतिगृह्ययथाशास्त्रंकामस्तुतिंपठेत्॥ प्रतिग्रहीतुर्विप्रसंभाषणंमुखावलोकनंचवर्जयेत् ॥ शतेनकारयेत्तां तुसुवर्णस्यप्रयत्नतः ॥ यथाशक्त्यथवाकुर्याद्वित्तशाठ्यंनकारयेत्॥ अथ अजादानम् ॥ अजपालोमहीपालोह्यजादानैर्दिवंगतः ॥ अयनेविषुवेचैवयुगादौग्रहणेषुच ॥ अमावास्यामजादानंपौर्णमास्यां चशस्यते ॥ विधिंतस्यप्रवक्ष्यामिविश्वामित्रेणनिर्मितम् ॥ अजांवि प्रंचयथाविभवंवस्त्रालंकारादिनासंपूज्य अद्येत्यादि० गोत्रायश र्मणेइमामजांसप्तधान्योपरिसंस्थितांवस्त्रमाल्योपशोभितां वज्रनेत्रां हेमशृंगींताम्रपृष्ठींरौप्यपादांसदोहनपात्रांसपुत्रांत्वाष्ट्रदैवतांतुभ्यमहंसं प्रददे नममेति कुक्षौतिलोदकंदत्वादद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ मंत्र वासेअजेश्लक्ष्णेयज्ञसंपत्करेशुभे ॥ सदात्वंदहमेपापंजन्मांतरश तैःकृतमिति ॥ तथा ॥ त्वंपूर्वंब्रह्मणासृष्टापवित्राकामदापरा ॥ त्वत्प्रसूतौस्थितायज्ञास्तस्माच्छांतिंप्रयच्छमे ॥ देवस्यत्वेतिशृंगेप्र तिग्रहः ॥ ततःसुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ इत्यजादानम् ॥ अथ वृ षदानम् ॥ अयनेविषुवेचैवयुगादौग्रहणेषुच ॥ अमायांचप्रदात व्यंवृषदानंजगुर्बुधाः ॥ अद्येत्यादि० पूर्ववत् ॥ दानमंत्रस्तु ॥ धर्म स्त्वंवृषरूपेणजगदानंदकारकः ॥ अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतःशांतिंप्रयच्छ मे ॥ अथ मंदाग्नि हरं मेषदानम् ॥ बोधायनः ॥ अग्निमान्द्यं

भवेद्यस्ययस्त्वेताग्नेर्विनाशनः ॥ वक्ष्यामितत्प्रतीकारं यथोक्तंब्रह्म णापुरा ॥ पलार्द्धेनतदर्द्धेनतदर्द्धार्द्धेनवापुनः ॥ राजतंकारयेत्सौम्य मग्नेर्वाहनमुत्तमम् ॥ सौवर्णाश्चखुराःकार्याःश्वेतवस्त्रेणवेष्टयेत् ॥ तत्रश्वेतपुष्पंश्वेतगंधंमधूत्कटं धूपंदद्यात् । द्रोणद्वयतंडुलराशौस्थितं पूजयेत् ॥ मेषादाग्नेय्यांदिशिसमिदाज्यतिलैर्होमःकार्यः ॥ अथा स्यप्रयोगः ॥ पुण्यकालेअद्येत्यादि०ममपूर्वकर्मविपाकोत्थत्रेता ग्निनाशजनिताग्निमांद्यनिरासक्षिप्रजाठराग्निप्रबलत्वसिद्ध्यायुरारो ग्यसिद्ध्यर्थंमेषदानंकरिष्ये इतिसंकल्प्य मेषप्रतिमांमेषंवाप्रत्यक्षं संस्थाप्य आग्नेय्यांस्वगृह्योक्तविधिनाग्निंप्रतिष्ठाप्यान्वाधायत्रिर ग्निक्रमेणसमिदाज्यतिलैरष्टोत्तरशतैरष्टाविंशत्याष्टाष्टसंख्ययावाजुहु यात् ॥ एतैर्मंत्रैःसमिदाज्यघृताक्ततिलाहुतिभिःॐअग्निर्मूर्धा० तिस्वहा ॥ अग्नयइ० ॥ १ ॐ अग्नेनयसुपथा० स्वाहा ॥ अ ग्नयइ० ॥ २ ॐ अग्निनाग्नि०स्यस्वाहाअग्नयइ० ॥ ३ इतित्रिभि र्मंत्रैर्विवक्षितसंख्ययासमिदाज्यतिलैर्हुत्वास्विष्टकृदादिप्रणीताविमो कांतंकृत्वाकुंभोदकैर्यजमानमभिषिंचेदेतैर्मंत्रैः ॥ बोधायनाआपो हिष्ठेत्यपिन्यृचाहिरण्येतिन्यृचेनचपवमानानुवाकेनमार्जयेद्वोमिपांत तः ॥शन्नोवातानुवाकेनशांतिंचापिप्रकल्पयेत् ॥ तस्मैहुत्वतेरोगी प्राङ्मुखायह्युदङ्मुखः ॥सदक्षिणंपूजितायदत्वावाहनमुत्तममिति॥ गोत्रायशर्मणेतुभ्यंसोपस्करंमेषंप्रत्यक्षंराजतंवावरुणदैवतं संकल्पो क्तफलकामस्तुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिदत्वाप्रार्थयेत् ॥ देवानांयोमुखं हव्यवाहनःसर्वपूजितः ॥ तस्यत्वंवाहनंपूज्यंदेवेन्द्राद्यैर्महर्षिभिः ॥ अग्निमांद्यंपूर्वकर्मविपाकोत्थंतुयन्मम ॥ तत्सर्वंनाशयक्षिप्रंजाठरा

श्रिप्रवर्द्धयेति ॥ विप्रस्तुशृंगेदेवस्यत्वेतिप्रतिगृह्यथथाशाखंकामस्तुतिंप ठेत् ॥ ततःसुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ यथाशक्तिभूयसींदक्षिणांदत्वाब्राह्म णांश्चभोजयित्वासुहृद्युक्तोभुंजीतेति ॥ इति मंदाग्निहरंमेषदानम् ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेदशदानविधिर्नाम पंचविंशःकोशः ॥ २५ ॥

अथातिदानानि ॥ तत्रादौगोदानंतद्विधिस्तुगोदानाध्यायेक थितः ॥ अथभूमिदानम् ॥ दोग्धिवासांसिरत्नानिपशून्व्रीही न्यवांस्तथा ॥ भूमिदःसर्वभूतेषुशाश्वतीरेधतेसमाः ॥ यावद्भूमे रायुरितितावद्भूमिदएधते ॥ मुच्यतेब्रह्महागोघ्नः पितृघ्नोगुरुतल्प गः ॥ भूमिंसर्वगुणोपेतांदत्वापापान्नरस्त्वयम् ॥ दशहस्तेनदंडे नदशहस्तान्समंततः ॥ पंचचाभ्यधिकान्दद्यादेतद्धोचर्मकथ्यते ॥ सप्तहस्तेनदंडेनत्रिंशद्दंडानिवर्त्तनम् ॥ त्रिभागहीनंगोचर्ममानमाहप्रजा पतिः ॥ मानेनानेनयोदद्यान्निवर्तनशतंबुधः ॥ विधिनानेनतस्या शुक्षीयतेपापसंहतिः ॥ अथप्रयोगः ॥ भूमिस्योनापृथिवीतिमंत्रेण संपूज्य ब्राह्मणंचवासोलंकारादिभिर्वृत्वा अद्येत्यादि० अमुकगो त्रायामुकशर्मणे इमांभूमिंप्रियदत्तांविष्णुदैवतां अमुककामस्तुरूयम हंसंप्रददे नममेतिसपुष्पंकुशतिलोदकंब्राह्मणहस्तेनिक्षिपेत् ॥ तेनच मनसाभूमिंप्रदक्षिणीकृत्यप्रतिग्रहःकार्य्यः ॥ भूमिसमीपेचेत्साक्षात् प्रदक्षिणीकुर्यात् ॥ सुवर्णदक्षिणात्वेनदद्यात् । गोचर्ममात्रांयःपृथ्वींबा ह्मणायप्रयच्छति ॥ सर्वदःसतुविज्ञेयःशक्रवद्दिविमोदते ॥ ग्रामंवान गरंवापिविप्रेभ्योयःप्रयच्छति ॥ क्षेत्रंवासस्यसंपन्नंसर्वपापैःप्रमुच्य ते ॥ आस्फोटयंतिपितरःप्रजल्पंतिपितामहाः ॥ भूमिदोस्मत्कुले

जातःसोस्माकंतारयिष्यति ॥ अथ शिवाय भूमिदानम् ॥ विधिस्तुपूर्ववत् ॥ यावद्दंडाभवेद्भूमिर्म्मीयमानासमंततः ॥ तावत्कल्पसंख्यानंरुद्रलोकेमहीयते ॥ अथ विष्णवे भू० ॥ विष्णवेविषयं ग्रामंग्रामार्द्धमपिशक्तितः ॥ दत्वाक्रीडतिवैकुंठोपकंठेपुनिरत्ययम् ॥ अथ सूर्य्याय भू० ॥ भूभागाश्चैवयावंतोभूतलेभांतिसत्तमाः ॥ तावद्युगसहस्राणिस्वर्गलोकेमहीयते ॥ एवंसर्वत्रविज्ञेयंफलंद्रव्यानुसारतः ॥ ग्रामादिदानेदेवेभ्योगणेशादिभ्यएवचेति ॥ अथान्यश्चमहीदानविधिः ॥ गोचर्ममात्रभूखंडमधिकंवास्वशक्तितः ॥ विधिंस्तुदक्षिणांकृत्वादत्वाशिवपुरंव्रजेदिति ॥ त्रिष्वेकामुवर्णदक्षिणेत्यर्थः ॥ अपिगोचर्ममात्रेणसम्यक्दत्तेनमानवः ॥ धूतपापोविशुद्धात्मास्वर्गलोकेमहीयते ॥ इति ॥ तथा ॥ दशहस्तेनदंडेनत्रिंशद्दंडानिवर्तनम् ॥ त्रिभागहीनंगोचर्ममानमाहप्रजापतिः ॥ यथा॥ गवांशतंवृषश्चैकोयत्रतिष्ठेदयंत्रितः ॥ तद्धिगोचर्ममात्रंतुप्राहुर्वेदविदोजनाः ॥ तथा॥ षष्टिवर्षसहस्राणिस्वर्गेवसतिभूमिदः ॥ आच्छेत्तावानुमंताचतावंतिनरकेवसेत् ॥ भूमिंयःप्रतिगृह्णातिभूमिंयश्चप्रयच्छति ॥ तावुभौपुरुषौलोकेसूर्यमंडलभेदिनौ ॥ तथा ॥ भूमिप्रदानपुण्यस्यकलांनार्हंतिषोडशीम् ॥ दानान्यन्यानिमेशांतिर्भूमिदानाद्भवत्विहेति ॥ दानवाक्यंतु ॥ अद्येत्यादि०गोत्रायशर्मणेसालंकृतायषष्टिवर्षसहस्रमितस्वर्गशिवपुरनिवासकामःसर्वपापक्षयकामोवाइमांभूमिंसस्योद्भवांसवृक्षफलपुष्पायुपेतांविष्णुदैवतांतुभ्यमहंसंप्रददे नममेति साक्षतकुशतिलोदकंद्विजहस्तेदद्यात् ॥ ब्राह्मणस्तुभूमिंप्रदक्षिणंकुर्वन्प्रतिगृह्णीयात् ॥ देव

स्यत्वेतियथाशास्त्रंकामस्तुतिंपठित्वास्वस्तीतिवदेत् ॥ मांडव्य वचनादत्रसुवर्णदक्षिणामतां ॥ **मंत्रस्तु** ॥ सर्वेषामाश्रयाभूमिर्वरा हेणसमुद्धृता ॥ अनंतस्यफलदाह्यतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ यस्यारो हंतिबीजानिवर्षाकालेमहीतले ॥ भूमेःप्रदानात्सकलाममसंतुमनोर थाः ॥ इति॥ शिवधर्मेविश्वामित्रः ॥ ग्रामंवानगरंवापिविप्रेभ्योयः प्रयच्छति ॥ क्षेत्रंवासस्यसंपन्नंसर्वपापैःप्रमुच्यते॥ इति॥ भूमिहरणे तुविश्वामित्रः ॥ स्वदत्तांपरदत्तांवायोहरेच्चवसुंधराम् ॥ षष्टिवर्षस हस्राणिविष्ठायांजायतेकृमिरिति ॥ सविष्ठायांकृमिर्भूत्वापितृभिः सहमज्जतीतिवा ॥ इति शिवधर्मोक्तंभूदानम् ॥ **अथ प्रसंगात् गृह दानम्** ॥ शक्तितःसर्ववित्तेनपूर्णंगृहमपित्रिधा ॥ सदक्षिणं द्विजेदत्वाब्रह्मलोकंव्रजेन्नरः ॥ श्रेष्टकंदारुवंवापिमृन्मयंवापिशक्ति तः ॥ सर्वोपकरणोपेतंयोदद्याद्विपुलंगृहम् ॥ ब्राह्मणायदरिद्रायवि दुषेचकुटुंबिने॥ सर्वकामसमायुक्तोब्रह्मसायुज्यमाप्नुयादिति॥ तथा— नगार्हस्थ्यात्परोधर्मोनैवदानंपरंगृहात् ॥ नानृतादधिकंपापंनपूज्यो ब्राह्मणात्परः ॥ गृहनिर्माणप्रकारस्तु ॥ स्नानागारंदिशिप्राच्यामा ग्नेय्यांपचनालयम् ॥ याम्यांशयनगेहंचनैर्ऋत्यांशस्त्रमंदिरम् ॥ प्रतीच्यांभोजनागारंवायव्यांपशुमंदिरम् ॥ भांडागारंतूत्तरस्यामैशा न्यांदेवमंदिरमिति ॥ कुर्यादितिशेषः ॥ तत्रकूपेदिग्विशे षफलंदेवीपुराणे ॥ पूर्वामाश्रित्यकर्त्तव्यःकूपःस्यादग्निलेपिवा ॥ नपूर्वव्यत्ययंकुर्यान्मध्येदेवालयाद्गृहादिति ॥ कृतंभयप्रदंलोके तथाचास्याग्निजंभयम् ॥ वायव्यांचापिदेवस्यभयदंजायतेकृ तमितिवराहमिहिरः ॥ पुष्टिभूतिंपुत्रहानिंपुरंध्रीनाशंमृत्युंसंपदं

शस्त्रबाधाम् ॥ किंचित्सौख्यंदिक्षुपूर्वादिकासुकूपोमध्येगेहमर्थक्ष यंचेत्यादि॥मत्स्यपुराणे॥देवतापंचकंतत्रचत्वारिंशत्समावृतम्।पूज यित्वायथान्यायंततोदद्याद्गृहंगृही ॥ पूजयित्वास्वयंवास्तुशांतिंकृ त्वादद्यादित्यर्थः ॥ अथविद्यादानम् ॥ दानानामुत्तमंदानंवि द्यादानंविदुर्बुधाः ॥ आहुःसमस्तविद्यानांश्रियमेवाधिदैवतम् ॥ यथावरिष्ठोदेवानांविष्णुःकारणपूरुषः॥तथाविद्यामदःश्रेष्ठोगरीयांश्च गरीयसाम् ॥ सहस्रमेवधेनूनांशतंचानड्वहांसमम् ॥ दशानड्वत्स मंयानंदशयानसमोहयः ॥ दशवाजिसमाकन्याभूमिदानंचतत्स मम् ॥ भूमिदानात्समंनास्तिविद्यादानंततोधिकम् ॥ विद्याकाम दुघाधेनुर्विद्याचक्षुरनुत्तमम्॥ विद्यादानात्परंदानंनभूतंनभविष्यति॥ शिल्पविद्यांनरोदत्वायातिवैब्रह्मणोऽन्तिकम् ॥ कलांविद्यांनरोदत्वा वैष्णवंलोकमाप्नुयात् ॥ कल्पमेकंनसन्देहःस्वर्गभोगसमन्वितः ॥ तस्यविद्यांनरोदत्वातृप्तिमान्कामसंयुतः ॥ प्रजापतिपुरंगच्छेन्नर कान्तारयेत्पितॄन् ॥ आयुर्वेदंनरोदत्वालोकान्प्राप्नोतिनिर्म्म लान् ॥ अश्विनोर्दिव्यकामाद्यान्दिव्यमन्वन्तरंनरः ॥ तर्कवि द्यांनरोदत्वावारुणंलोकमाप्नुयात् ॥ मीमांसांतुबुधेदत्वाशास्त्रमि न्द्रपुरेवसेत् ॥ धर्म्मशास्त्रंनरोदत्वास्वर्गलोकेमहीयते॥ दशमन्वन्त रान्मर्त्यस्तारयेन्नरकात्पितॄन् ॥ वेदविद्यांनरोदत्वास्वर्गलोकत्रये वसेत् ॥ आत्मविद्यांचयोदद्यात्तस्यसङ्ख्यानशक्यते ॥ पुण्यस्यग दितुंसम्यगपिवर्षशतायुतैः ॥ एतावच्छक्यतेवक्तुंयत्कल्पायुतमुत्त मम् ॥ सत्यलोकेवसेन्मर्त्योयत्रब्रह्मावसेत्प्रभुः ॥ अप्येकंनीरुजं कृत्वाजन्तुंयादृशतादृशम् ॥ आयुर्वेदप्रभावेनकिन्नदत्तंभवेद्भुवि।

तस्यवेदप्रसादेनसम्पन्नाःसस्यशालयः ॥ किंननामकृतंतत्रपुण्यंभव तिशाश्वतम् ॥ मीमांसाशास्त्रमहात्म्यंबुद्ध्वावेदनिर्णयम् ॥ किंन नामशुभंदातुर्यज्ञकर्म्मप्रवर्त्तनात् ॥ आत्मविद्याचपौराणीधर्म्मशा स्त्रात्मिकाचया ॥ एताविद्यास्त्रयीमुख्याःसर्व्वदानक्रियाफलैः ॥ धर्म्मशास्त्रंनरोबुद्ध्वायत्किञ्चिद्धर्म्ममाश्रयेत् ॥ तस्यधर्म्मशत गुणंधर्म्मशास्त्रप्रदस्यच ॥ पुराणाख्यानविद्वांसः पितृदेवार्च्चने रताः ॥ लोकान् सर्वान् कामपूर्णान्यान्तिसर्वशुभोदयान् ॥ पुराणविद्यादातारस्त्वनंतफलभागिनः ॥ आत्मविद्याप्रदातारो नराधर्म्मसमाश्रयान् ॥ नपुनर्योनिनिरयंप्रविशन्तिदुरत्ययम् ॥ उत्तीर्णाःसर्वपापेभ्यःसपुत्रपशुबान्धवाः ॥ मुच्यंतेनिरयैर्घोरैरसंख्यै र्यातनात्मकैः ॥ तथा ॥ श्लोकंप्रहेलिकांगाथामन्यथावासुभा षितम् ॥ दत्वाप्रीतिकरंयातिलोकमप्सरसांशुभम् ॥ तथा ॥ रामायणंभारतंचदत्वास्वर्गेमहीयते ॥ पुराणंतर्कशास्त्रंचछन्दोलंका रलक्षणम् ॥ वेदंमीमांसिकांदत्वाशिवधर्माश्चवैनृपः ॥ सप्तद्वीपपृथि व्याश्चराजराजोभवेन्नृपः ॥ पाणिनीयंनिरुक्तादिवेदाङ्गंस्मृतिकास्त था ॥ दत्वाज्ञानमवाप्नोतिवेदान्तंचविशेषतः ॥ नित्यंदेयानिराजें द्रगावःपृथ्वीसरस्वती ॥ विद्यादानंत्रिधाप्रोक्तंपाठनंपुस्तकस्यच ॥ दानंमंत्रोपदेशंचप्रीत्यासर्वंचरेद्बुधः ॥ वेददानस्य ॥ सर्वेषामेव दानानांब्रह्मदानंविशिष्यते ॥ काम्यंनगोमहीवासस्तिलकांचनसर्पि षाम् ॥ इति विद्यादानप्रशंसा ॥ अथ दानविधिः ॥ विद्यादान विधिंवक्ष्येयथातत्त्वेनसर्वतः ॥ दत्तेनतत्फलंतस्यदातुरस्यसनासतः पुण्येसमारभेत्कालेनिष्पन्नेतविवर्जिते ॥ सुसमेभूप्रदेशेचगोमयेनो

पलेपयेत् ॥ पुष्पप्रकारसंपन्नेगीतवाद्यसमाकुले ॥ अमलंचतु रस्रंवाचंदनेनैवकारयेत् ॥ पुस्तकंतत्रसस्थाप्यगंधपुष्पैःप्पूज येत् ॥ सौवर्णलेखनीकार्य्यामषीभांडंचरौप्यकम् ॥ जयशब्दंसमु च्चोष्यचारभेल्लेखकःसुधीः ॥ विनीतश्चाप्रमत्तश्चशास्त्रनिष्पत्तिमान येत् ॥ ब्राह्मणस्यसुवृत्तस्यवाचकस्यविजल्पतः ॥ अनेनविधिवाद त्वादातूरत्नस्ययत्फलम् ॥ तत्फलंकोटिगुणितंपुस्तकैकप्रदायके ॥ यत्पुण्यंतीर्थयातृणांयत्पुण्यंयज्वनांनृणाम् ॥ तत्पुण्यकोटिगुणितं विद्यादाने नसंशयः ॥ कपिलानांसहस्रेणसम्यग्दत्तेनयत्फलम् ॥ तत्फलंसमवाप्नोतिपुस्तकस्यप्रदानतः ॥ आत्मचित्तानुसारेणविद्य दानंकरोतियः ॥ असाध्यंफलमाप्नोतिचाढ्यतुल्यंनसंशयः ॥ स्त्रीवानेनैवविधिनाविद्यादानफलंलभेत् ॥ भर्ताचैवाननुज्ञाताविद्य वाचतमुद्दिशेत् ॥ विद्यार्थिनेसदादद्याद्वस्त्राभ्यंगंचभोजनम् ॥ छत्रिकामुदकंदीपंयस्मात्तेनविनामही ॥ लेखनीघटितंतीक्ष्णामषी पात्रंतुलेखनी ॥ दत्वातुलभतेसम्यग्विद्यादानमनुत्तमम् ॥ पुस्तका स्तरणंदत्वासुप्रमाणंसुशोभनम् ॥ विद्यादानजमाप्नोतिसूत्रबद्धंचबु द्धिमान् ॥ यंत्रकंत्वासनंचैवदंडासनमथापिवा ॥ विद्यावाचन शीलायदत्तंभवतिराज्यदम् ॥ अंजनंनेत्रपादानांदत्तंविद्यापरायणे॥ भूमींगृहंचक्षेत्रंचस्वर्गराज्यफलप्रदम् ॥ यश्चभूम्यांस्थितोनित्यं विद्यादानंप्रवर्तयेत् ॥ तस्यापिभवतिस्वर्गस्तत्प्रभावान्नसंशयः ॥ योपिपत्रंमषीपात्रंलेखनीसंपुटादिकम् ॥ लघुशास्त्राभियुक्तायतेपि विद्याप्रदायिनाम् ॥ यांतिलोकान्शुभान्मर्त्याःपुण्यभाजोभवं

तिहि ॥ अत्रापिपुस्तकादिदानेसंकल्पादिविधिः पौर्णमासदान विधावुक्तवद्बोद्धव्यः ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेअतिदानकथनंनामषड्विंशःकोशः ॥ २६ ॥

---

**अथदशमहादानानि** ॥ कनकाश्वतिलानागादासीरथमहीगृहाः॥ कन्याचकपिलाधेनुर्महादानानिवैदशेति ॥ अत्रस्वर्णदानममावास्यादानविधावुक्तम् ॥ अत्रायंविशेषः।।सुवर्णस्यसुवर्णस्यसुवर्णयः प्रयच्छति॥सर्वपापविनिर्मुक्तःस्वर्गलोकेमहीयते॥सुवर्णद्वितयंदत्त्वा चाक्षय्यांगतिमाप्नुयात्॥दत्वासुवर्णस्यशतंद्विजेभ्यःश्रद्धयान्वितः॥ ब्रह्मलोकमनुप्राप्यब्रह्मणासहमोदते ॥ प्रथमंसुवर्णशब्देनहिरण्यमभिधीयते अपरेणतस्यैवशुद्धवर्णत्वंप्रतिपाद्यते पारिमाणविशेषस्तृतीय इति ॥ सुवर्णदानेरजतंदक्षिणा ॥ दानमंत्रस्तु ॥हिरण्यगर्भगर्भेति० ॥ **अथनित्यसुवर्णदानम्** ॥ आदित्येचोदयंप्राप्तेविधिमंत्रपुरस्कृतम् ॥ ददातिकांचनंयोवैदुःखंसंप्रतिहंतिसः॥योदेवअर्च्यतेतेनयस्यचैवप्रयच्छति ॥ तस्यलोकेनिवसतिनित्यंचैवददातियः ।। विधिस्तुपूर्ववत् ॥ **अथपापरोगहरशतमानसुवर्णदानविधिः** ॥ शतमानंचाक्षयेणसुवर्णेनमितंचयत् ॥ तत्कांस्येनिक्षिपेत्सम्यक्तिलाढकसमन्वितम् ॥ कांस्यपात्रमष्टपलम्।द्युमीणमावाह्यषोडशोपचारैःसंपूज्याष्टाक्षरमंत्रेणब्राह्मणंसंपूज्यदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ पद्मोद्भवःपद्मकरःसप्ताश्वरथवाहनः।शतमानेनदत्तेनतुष्टःसर्वजगद्गुरुः। इहजन्मनियत्पापमन्यजन्मनियत्कृतम् ॥ तत्प्रत्ययाप्रत्ययाभ्यां तत्सर्वंक्षपयत्यसौ ॥ इतिशतमानदानम् ॥ **अथभद्रनिधिदानम्** ॥

आनंदब्रह्मणोरूपंनित्यंवेदेषुगीयते ॥ सर्वावासोविभुःसाक्षादानंदेन व्यवस्थितः ॥ तस्मादानमिदंपुण्यंदेयमानंदशेवधिम् ॥ विधानं तु पुण्यदिनेउपरागादिषुसर्वेषुवा औदुंबरंकुंभंहिरण्यभारेण तदर्द्धेन वापलशतकेन यथाशक्तिपलत्रयादूर्द्धेनपरिपूर्य्यतंताम्रपात्रेनिधाय सवज्रनीलोत्पलपद्मरागमुक्तावैडूर्य्यविद्रुमाणिरजतपात्रेधृत्वातेनतं घटमाच्छाय कुशदर्पणचामरोपानत्पादुकाछत्रक्षौमवस्त्रयुतंतंसं पूज्य तस्मिन्विष्णुंशिवंचप्रणवादिनमोंतेननाममंत्रेणसंपूज्यप्रार्थये त् ॥ ॐत्वयासमस्तामरसिद्धयक्षविद्याधरेंद्रोरगकिन्नराद्यैः ॥ गंधर्वविद्याधरदानवेंद्रैर्युतंवृत्तांविश्वमिदंनमस्ते ॥ समस्तसंसारकरी त्वमेवविभोःसदानंदमयीचमाया ॥ समस्तकल्याणनिधिःसमा धिर्हरिप्रियेभद्रनिधिर्नमस्ते ॥ ततःकिरीटांगदकुंडलांगुलीयक वस्त्रमाल्यैर्विप्रंसंपूजयेत् ॥ तत्रमंत्रः ॥ भूदेवोसीत्यतोनि त्यंनित्यानंदमयोहरे ॥ हरमेदुष्कृतंकृष्णकृपाकरनमोस्तुते ॥ भू देवभगवन्धर्मभवभंगकरेश्वर ॥ भवभूतिकरोजिष्णोप्रभविष्णुर्नमो स्तुते ॥ एवंसंपूज्य विष्णुरूपंतंहृदिध्यायन् यथाकाममुक्ति रूयभद्रनिधिंदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ पितृसंतारणार्थायनित्यानंदवि वृद्धये ॥ सर्वाघौघविनाशायविष्णोर्दानंमयाकृतम् ॥ तदनेनसरत्ने नधातुत्रययुतेनच ॥ सक्षौमांबरयुक्तेनसादर्शपादुकेनच ॥ सदानं दविधानेनप्रीयतांविष्णुरीश्वरः ॥ एवमुच्चार्य्यतंदद्याद्विजायहरिरूपि णे ॥ गोप्येनविधिनादद्याद्धेमसंख्यांनकीर्त्तयेत् ॥ एवंकृतेस्यान्म नुजःकृतात्मातपेन्नचस्यान्मरणंकदाचित् ॥ प्रयातिविष्णोः पदमव्ययंतदशिवात्मकानंदमयंससख्यम् ॥ इतिभद्रनिधिदानम् ॥

अथाश्वाख्यंद्वितीयंमहादानम् ॥तद्विधिस्तुकन्यासंक्रमणदानवि धावुक्तः ॥ अत्रायंविशेषः ॥ अश्वंवायदिवायुग्मंशोभनेवाथपादु के ॥ददातियःप्रदातावैब्राह्मणेभ्यःसुसंयतः॥ तस्यदिव्यानियानानिर थध्वजपताकिनः ॥ दुष्टःपंथानचैवेहभविष्यतिकदाचन ॥ अश्वं तन्मूल्यमथवाकनीयोमध्येमोत्तमम् ॥ दद्याद्वित्तानुसारेणतारागण परिच्छदम् ॥ तारागणइति । तारानुकार्य्यश्चालंकारविशेषःशफैः पंचपलैरौप्यैःसुवर्णालंकृतंकमात् ॥ सदक्षिणंसवस्त्रंचब्राह्मणाया ग्निहोत्रिणे ॥ स्वर्णदःप्राप्नुयात्स्वर्गमश्वसालोक्यमश्वदः ॥ अथ तृतीयंतिलदानम् ॥ तद्विधिस्तुकन्यासंक्रमदानविधावुक्तः ॥ अत्रकामनाभेदेनविशेषः ॥ तत्रादौतिलमृगदानम् ॥ मृगं तिलमयंकृत्वासुवर्णरजतान्वितम् ॥ दद्यात्कंबलसंस्तीर्णंकृ ष्णमार्गाजिनेनवा ॥ सर्वकामसमृद्धेनविमानेनदिवंव्रजेत् ॥ का लक्षयादिहागत्यराजराजोभवेत्पुनः ॥ विधिस्तुतिलधेनुवत् ॥ धेनुपदस्थानेमृगपदंवाच्यम् ॥ नित्यतिलपात्रदानंतुपौर्ण मासीदानविधौद्रष्टव्यम् ॥ अथमातृऋणमुक्त्यर्थंकांस्यपा त्रेतिलदानम् । यज्ञंसौत्रामणिंकर्तुंयदिशक्तिर्नविद्यते ॥ महासरस्त थावापीकूपंकर्तुंचदीर्घिकाम् ॥ एवंकृतेमातृऋणान्मुक्तोभवतिमान वः॥सदक्षिणंकांस्यपात्रमथदत्वाप्रमुच्यते॥ तत्तुशुद्धकांस्यपंचविंश तिपलमितेपात्रेप्रस्थप्रमाणंतिलं चतुर्माषकंसुवर्णंतत्रनिक्षिप्यवस्त्रे णसंवेष्टयकुंकुमादिनिर्मितकमलेसंस्थाप्यसंपूज्य सलक्षणंब्राह्मणं संपूज्य( केचिदत्रमातृश्राद्धंकुर्वंति) अद्येत्यादि०मममातृऋणोत्तारण पूर्वंकंपितॄणांवैकुंठनिवासायेत्यादि० । दक्षिणार्थंसुवर्णंदेयम् ॥ त

त्रमंत्रः ॥ कांस्यपात्रंमयादत्तंमातुरानृण्यकांक्षया ॥ भगवन्वचना त्तुर्ण्ययथामुक्तिस्तथावद ॥ दशमासांश्चउदरेजनन्याःसंस्थितेनवै॥ क्लेशिताबाल्यभावेचस्तनपानाद्विजोत्तम ॥ गूथमूत्रादिसंलेपलिप्ता यच्चकृतामया ॥ भवतोवचनादद्यमममुक्तिर्भवेदृणात् ॥ कांस्यपा त्रंसुवर्णंचतिलान्वस्त्राणिदक्षिणाम् ॥ सप्तधान्यंमयादत्तमृणा न्मुक्तिर्भवेन्मम ॥ कांस्यपात्रप्रदानेनतत्त्वज्ञानंशरीरजम् ॥ तथा हेमप्रदानेनपरमात्मानमव्ययम् ॥ आच्छादनंतुब्रह्माण्डंगुह्य मेतत्सनातनम्॥विप्राच्छादनदानेनपरमात्मासुपूजितः ॥ तिलसं ख्याकृतंदुःखंजनन्याममसंचितम् ॥ तिलदानप्रभावेणकृतान्मुक्तो भवाम्यहम् ॥ ब्राह्मणेनततोवाच्यंजननीसंभवादृणात् ॥ मु क्तस्त्वंपात्रदानेनमहेश्वरवचोयथा ॥ ततोब्राह्मणान्भोजयेत् ॥ भूयसींदक्षिणांचदद्यात् ॥ अथ सर्वपापहरंतिलराशिदानम् ॥ सर्वपातकसंघातःकामतोवाप्यकामतः॥शुद्धितस्यप्रवक्ष्यामिस्वर्गसा धनमेवच ॥ शुक्लैःकृष्णैर्यथालब्धैर्द्वात्रिंशदंगुलोत्थिता ॥ राशि स्तिलैःसमेदेशेकर्त्तव्यापुरुषायता ॥ यथाविभवविस्तारंयदिवाश क्तितोनरैः ॥ प्रतिमाष्टांगुलास्थाप्यासौवर्णीतत्रमाधवी ॥ तत्रक्षौ द्रपयोदधिघृतपूरितकलशान्संस्थाप्य यथालब्धोपचारैःसंपूज्ययथा काममुल्लिख्यदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ अज्ञानायदिवामोहाल्लोभाद्वा जन्मजन्मनि॥आर्जितंयन्मयाकिंचिद्दुष्कृतंमधुसूदन॥ तत्सर्वंविल यंयातुदानेनानेनमाधव ॥ एवमुच्चार्य्यतत्सर्वंब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ यावज्जीवकृतंपापंतत्क्षणादेवनश्यति ॥ अथतिलपद्मदानम् ॥ सर्वयज्ञेषुयत्पुण्यंसर्वदानेषुयत्फलम् ॥ तत्फलंसमवाप्नोतितिलपद्म

प्रदानतः ॥ तत्तुपुण्यदिने चतुरस्रंगोमयमंडलंकृत्वा तत्रकृष्णा जिनंसवस्त्रमास्तीर्य्यतस्मिंस्तिलद्रोणंतत्राष्टदलकर्णिकांकृत्वातस्यां निष्कत्रयसुवर्णनिर्मितांश्रीनिवासमूर्त्तिंस्थापयेत् ॥ तस्याध्यानंतु॥ श्रीनिवासंजगन्नाथंभुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ ध्यायेच्चतुर्भुजंदेवंप्रणतार्तिहरंहरिम् ॥ हिरण्यगर्भममृतंश्रीगर्भंपरतःपरम्॥ शंखचक्रगदापाणिंपीतवाससमंच्युतम् ॥ श्रीवत्सांकंजगद्बीजंसर्वकारणकारणम्॥ कविंपुराणंविश्वेशंपुंडरीकनिभेक्षणम् ॥ आसीनंकर्णिकामध्येसर्वशक्तिसमन्वितम् ॥ कृतांजलिपुटोभूत्वानमस्कृत्यपुनःपुनः ॥ ततःश्रद्धयायथालब्धोपचारैः संपूज्य इंद्रनीलमहानीलमणीन्विनिवेद्य तांबूलंपंचसुगंधिद्रव्यंदत्वा दिनत्रयमेक दिनं वानिराहारस्तिलाहारोवा भवेत् ॥ देवस्योत्सवंकृत्वा तत्पार्श्वतस्तिलप्रस्थघृतप्रस्थदध्याढकषोडशधान्यपात्राणिसंस्थाप्य सलक्षणंब्राह्मणंवृत्वायथाकाममुल्लिख्यपद्मंदद्यात् ॥ प्रीयतां माधवोदेवइत्युक्तामनुस्मरन् ॥ हिरण्यगर्भदेवेशपद्मनाभ जनार्दन ॥ हिरण्याक्षगुणाधारसर्वाधारधरेश्वर ॥ धनधान्यसमृद्धं चसर्वसंपत्समन्वितम् ॥ पुत्रपौत्रादिसंयुक्तंदासीदाससमन्वितम् ॥ अरोगंचसुमंत्रंचसर्वदुःखविवर्जितम् ॥ कुरुमांपरमोदारंभक्तोयमितिचिंतयन् ॥ एवंप्रार्थ्यसुवर्णंगांचदक्षिणार्थेदद्यात् ॥ धर्मार्थीधर्ममाप्नोतिधनार्थीधनमाप्नुयात् ॥ मोक्षार्थीमोक्षमाप्नोतिनात्रकार्य्याविचारणा ॥ सर्वपापरतोवापिमुच्यतेनात्रसंशयः ॥ इति तिलपद्मदानम् ॥ अथ शिवप्रीत्यैमूत्रकृच्छ्रहरंतिलपद्मदानम् ॥ विधिस्तुसर्वःपूर्ववत् ॥ दशनि०पंचनिष्केणापिसुवर्णेनभवति ॥ क

र्णिकायांशिवंतत्परितोषामाज्येष्ठारौद्रीकालीविकारिणी बलप्र
मथिनीदमनीशक्तयःपूज्याः ॥ तद्वाह्येविघ्नेशान् ॥ अथानंतश्चसू
क्ष्मश्चशिवश्चाप्येकनेत्रकः ॥ एकरुद्रस्त्रिमूर्तिश्चश्रीकंठश्चशिखंडे
कइति ॥ अन्यत्सर्वंपूर्ववत् ॥ दानमंत्रेतु विशेषोयथा ॥
खगःपूषापतंगोसौद्वादशात्मात्रयीतनुः ॥ पद्मेनानेनदत्तेनप्रीतस्तर
णिरस्तुमेइति ॥ कृतेनानेनमनुजोमूत्रकृच्छ्रात्प्रमुच्यते ॥ मूत्रकृ
च्छ्रातुरस्तस्मादेतत्कुर्य्यात्प्रयत्नतः ॥ इति मूत्रकृच्छ्रहरंतिलपद्म
दानम् ॥ अथ क्षयरोगहरंतिलपद्मदानम् ॥ क्षयेतुराजतंपद्मं
शतनिष्केणकल्पयेत् ॥ विधानंतुपूर्ववदेव ॥ मंत्रस्तु ॥ पद्मेनरा
जतेनेहप्रदानादत्रिनेत्रज ॥ जातकर्मविपाकेनक्षयंनाशयमेनघ ॥
कृत्वैवंक्षयरोगीतुशीघ्ररोगात्प्रमुच्यते ॥ इति क्षयरोगहरंतिलपद्म
दानम् ॥ अथ रक्तशूलघ्नंतिलपद्मदानम् ॥ अत्रपद्मंसुवर्णेन
नालंरजतेनेत्युक्तम् ॥ तत्रसूर्य्यावाहनंयथा ॥ एह्येहिभगवन्दे
वपद्मेस्मिन्सन्निधिंकुरु ॥ त्रयीतनोद्वादशात्मन्सर्वप्राणिहिताय
चेति ॥ ततःसर्वोपचारैःसूर्य्यंसंपूज्यान्यत्सर्वंपूर्ववदेवबोध्यम् ॥ दान
मंत्रेतुविशेषः ॥ भगवन्सर्वभूतेशयुमणेलोकनायक ॥ रक्तव
र्णप्रतापेंद्ररक्तत्रैलोक्यपावन ॥ सत्पात्रायमयादत्तंममजन्मनिचै
वहि ॥ औषधादितुतत्सर्वंनाशमायातुदानतः ॥ ततःपुण्याहवाच
नंकृत्वा सगुडंपायससंभोजयित्वा भर्त्तारंदेववन्मत्वाघृतपायसं
भुंजीयात् ॥ एवंकृतेनदानेननाशंयांतिनसंशयः ॥ संपत्स्यौष
धदानेनरक्तशूलमुपार्जितम् ॥ रक्तशूलरुजानार्य्यादानंकार्य्यमि
दंततः ॥ इतिरक्तशूलघ्नंतिलपद्मदानम् ॥ अथकंडूदद्रूहरंतिल

पद्मदानम् ॥ गवांयःपीडनंकुर्य्यान्नरोरोधनबंधनैः ॥ दद्रुरोगीसो तिकंडूयुक्तोभवतिसर्वदा ॥ वक्ष्यामितत्प्रतीकारंपद्मदानादिकर्म णा ॥ पद्मंसुवर्णनिष्केणनालंराजतेन तिलद्रोणस्याधोद्रोणत्रय परिमितास्तंडुलाःस्थाप्याः ॥ तत्रकर्णिकायांसौवर्णंभानुंसंपूज्य तस्याग्नेय्यांसमिदाज्यतिलैःसूर्य्यंतच्चक्षुरितिमंत्रेणहुत्वा व्याहृतिभि स्तिलहोमंचकृत्वा आहुतिसंपातशेषंपात्रांतरेधृत्वातेनदद्रुरोगिणोगा त्राण्याज्यज्य अक्षीभ्यामित्यनुवाकेनवाससासंमृज्यअन्यत्सर्वंपू० । मंत्रस्तु ॥ देवदेवजगन्नाथदेवरूपपरात्पर ॥ जगतांपरमानंदकार कद्युमणेप्रभो ॥ प्रभाकरसुसप्ताश्वदेवेशारुणसारथे ॥ रोधनैर्बंधनैश्चैववै रूप्यंयच्छरीरके ॥ पूर्वकर्मविपाकेनदद्रुकल्पादिकश्मलम् ॥ पद्मदा नेनतुष्टस्त्वंनाशयाशुशरीरके ॥ इति ॥ एवंदत्वातुतत्पद्मंदद्रु रोगविवर्जितः ॥ विनाकंडूंविनाकुष्ठंत्वग्दोषैश्चविवर्जितः ॥ जाय तेरूपवान्सद्यआदित्यस्यप्रभायथा ॥ जीवेद्वर्षशतंमर्त्योधनधान्यस मन्वितः ॥ अनंतरंब्राह्मणेभ्यःपायसंविनिवेदयेत् ॥ एवंयःकुरुते दानंगौतमोक्तविधानतः ॥ रोगैरन्यैर्विमुक्तश्चमोदतेभानुवद्भुवि ॥ इति क० ति० ॥ अथ मूकत्वहरंतिलपद्मदानम् ॥ स्वरो पघातीवाचांचहर्त्तामूकः प्रजायते ॥ वक्ष्यामितत्प्रतीकारंयेन संपद्यतेसुखम् ॥ अष्टपलात्मकेताम्रपात्रेपलमितसुवर्णनिर्मितपद्मंरक्त वस्त्रवेष्टितंपूर्ववत्तिलराशौनिधायतत्रषोडशोपचारैःसूर्य्यंसंपूज्य० ॥ तत्रमंत्रः ॥ ब्रह्मणःसदनंत्वंहिविष्णोरुत्तमनाभिजः ॥ अग्निभी तिकरो भानोरग्नेरुद्रस्यचैवहि ॥ गृहाणपूजामेतांत्वंसर्वक्लेशविनाश कः ॥ ततआग्नेय्यांसावित्र्याष्टाक्षरेणसमित्तिलहोमश्चित्रमित्यनेनआ

ज्यहोमःकर्त्तव्यः ॥ अग्नेरुत्तरतःकलशंसंस्थाप्य अन्यत्सर्वंपूर्ववत्कर्त्तव्यम् ॥ ममवाचउपघातवाग्धरणादिदोषजनितमूकत्वनिर्हरणार्थमित्यादिसंकल्पयेत् ॥ **दानमंत्रस्तु** ॥ यत्प्राग्वाचांनिरोधेनवैरूप्यंममदेहजम् ॥ अघभेदभवंतीव्रंदुःखरोगाकरंतथा ॥ तत्सर्वंनाशयंत्वत्रब्रह्मसूर्य्यशिवाग्नयः ॥ त्रिदशाद्यायेचदेवाहविष्मंतस्तथाभुवि ॥ इति ॥ एवंदत्वातुतत्पद्ममाचार्य्यायातिभक्तितः ॥ पृष्ठतस्तमनुव्रज्यह्यंगभेदाद्विमुच्यते॥ इति मू०ति० ॥ **अथ त्रिपद्मपंचकदानम्** ॥ अश्वदानंप्रवक्ष्यामित्रिपद्मामितिविश्रुतम् ॥ आयुष्यंश्रीकरंपुण्यमारोग्यंपापनाशनम् ॥ व्याधिग्रस्तेचदातव्यं दुस्स्वप्नाद्भुतदर्शने ॥ अथान्यस्मिन्भयेप्राप्तेसर्वरोगप्रशांतये॥ गोमयोपलिप्तभूमौतिलाढकोपरि अष्टदलेसुवर्णपद्मंधृत्वातत्रब्रह्माणंपूजयित्वादद्यात् ॥ तत्रमंत्रः॥ संप्रीयतांमेभगवानात्मभूश्चतुराननः॥ दानेनानेनसर्वात्माजगत्स्रष्टाजगत्पतिः ॥ ततोद्वितीयंतंडुलैःकृत्वातत्राविष्णुंसंपूज्यदद्यात् ॥ मंत्रः ॥ संप्रीयतांमेभगवान् परमात्माजगन्मयः॥ दानेनानेनविश्वात्मापरमःपुरुषोत्तमः ॥ ततस्तृतीयंलवणेनकृत्वात्रिशिवंसंपूज्यदद्यात् ॥ मंत्रः ॥ संप्रीयतांमेभगवाञ्छंकरःशंकरोतुमे ॥ दानेनानेनविश्वात्माचंद्रार्द्धकृतशेखरः ॥ ब्रह्मादीनांमूर्तिविधानंधान्यपर्वतदानेद्रष्टव्यम् ॥ इत्यश्वदानम् ॥ **अथातिलरंजकदानम्** ॥ पंचरंगद्वादशारचक्रे अव्रणंतिलपूर्णकुंभंनिधाय चंद्राकारासौवर्णीप्रतिमातत्रस्थाप्या॥ तस्मिन्निंद्रंसंपूजयेत् ॥ **दानमंत्रः**॥ भूगंधपतिरीशानःशक्ररूपीतिलाशयः ॥ न्यासोत्थंपृथिवीजातंममपापंव्यपोहतु ॥ इतिकृत्वाविनश्यंतिपापानिक्षितिजानिच ॥

भोजनेयानिहिंस्यंतेस्थावराणिचराणिच ॥ कंडूतिवमनेया निशवमद्यादिगंधयोः ॥ घ्राणेघ्राणेगवांगंधेश्रोत्रियस्यातुरस्यच ॥ पुनःशिवपुरेतिष्ठेद्यावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ इतिति० ॥ **अथतिल पीठदानम् ॥** तिलपीठमथोवक्ष्येसारदारुमयेशुभे ॥ पीठेर त्निद्वयायामेतिलपूर्णेसुभित्तिके ॥ व्योमाधिपंगणेशानरूपिणंशिव मर्चयेत् ॥ शुक्लगंधानुलेपनादिभिःसंपूजयेत् ॥ **दानमंत्रः ॥** व्योमोध्वनिपतिःशुभ्रोगणनाथस्तिलाश्रयः ॥ व्योमशब्दश्रु तिप्राप्तंपापमीशोव्यपोहतु ॥ इतिदत्तेस्यनश्यंतिपापान्याकाशजा निच ॥ अनिबद्धकथोत्थानिपरनिंदाभवानिच ॥ कूटसाक्ष्यसमु त्थानिपैशून्यजनितानिंच ॥ वेदनिंदागुरोर्निंदातयोश्चश्रवणेनच ॥ हंतिपापान्यशेषाणितिलपीठःप्रदानतः ॥ शिवलोकेचकल्पांश्चमो दतेदशपंचच ॥ इतितिलपीठदानम् ॥ **अथतिलादर्शदानम् ॥** पूर्वोक्तकल्पितेपीठेचतुष्कुंभपरिष्कृते ॥ आदर्शंविमलंन्यस्यतत्र देवंमनोमयम् ॥ विष्णुरूपधरंशंभुंविन्यस्यपरितोन्यसेत् ॥ पूजनादिपूर्ववत् ॥ **दानमंत्रः ॥** मनोमयनमस्तेस्तुसौम्यरूप वृषध्वज ॥ नमःकृतानिपापानिसर्वाण्याशुविनाशय ॥ इति दत्तेस्यनश्यंतिमानसानिकृतानिवै ॥ परद्रोहप्रवृत्तानिकामलो भोद्भवानिच ॥ क्रोधजानिचसर्वाणिपापानिचविशेषतः ॥ अवा च्यवाचनीयानिअध्येयध्यानजानिच ॥ मदनोत्सवजातानिको धोद्भूतानियानिच ॥ ध्येयान्यावृत्तिवृत्तानिनश्यंतिसकलान्यपि ॥ शिवलोकेवसेद्वर्षाण्यर्बुदान्दशकामतः ॥ इति तिलपीठदानम् ॥ **अथ तिलकुंभदानम् ॥** तिलपूर्णकुंभंत्रिकोणमंडलेसंस्थाप्य

तत्रसौवर्णप्रतिमायांशिवंरक्तचंदनकरवीरादिभिः ॥ संपूज्यआ दर्शसहितंदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ वह्निरूपपतिःशंभुर्वह्निरूपीतिला श्रयः ॥ तेजोरूपंकृतंपापंचाक्षुषंचव्यपोहतु ॥ इति दत्तेस्यनश्यंतिपा पान्यग्निकृतानिच ॥ पाकहोमेषुकाष्ठेषुहिंस्यंतेयानिवह्निना ॥ अंगारवनदाहादिसंभवानिचयानिवै। विरुद्धकरणोत्थानिरूपयागोद्भ वानिच ॥ परदारपरद्रव्यपुत्रदर्शनजानिच ॥ शवादिदर्शनोत्थानिने त्रदोषकृतानिच ॥ यएवंकुरुतेदानंशिवभक्त्याप्रयत्नतः ॥ शिवलोके वसेत्कल्पत्रितयंनात्रसंशयः ॥ इति तिलकुंभदानम् ॥ अथाहंका रदानम् ॥ तिलपीठोक्तवत्सर्वमादौप्रकल्प्य विष्वगष्टांगुलायतंराजतं पीठंतत्रधृत्वा तस्मिनहंकारंपुरुषाकारंवज्रशक्तिधरंकृत्वापरितो नैगमेशं विशाखंकुमारं गुहंचप्राङ्मूर्त्तिषुसंपूज्य अन्यत्सर्वंपूर्ववत्कुर्यात् ॥ दानमंत्रः ॥ अहंकारपतेदेवगुहरूपदुरंतक ॥ अभि मानकृतादोषात्सर्वस्मात्पाहिमांप्रभो ॥ इति दत्तेस्यनश्यंतियान्यहंकारजानितु ॥ पारुष्यस्त्रीनिषेध्यादिविप्रक्षत्रियजानिच ॥ तानि सर्वाणिनश्यंति यानिकृत्यविलंघनैः ॥ अनात्मन्यात्मबुद्ध्यातुगृहक्षे त्रादिसंगमे । अन्यानियानिपापानितानिनश्यंतिसर्वतः इत्यहंकारदा नम् ॥ अथैकादशरुद्रःतिलदानम् ॥ अतःपरंप्रवक्ष्यामितिल दानमनुत्तमम् ॥ यद्दत्वापुरुषःस्त्रीवावैरंचिलोकमाप्नुयात् ॥ आयु रारोग्यदंपुण्यंसर्वपापप्रणाशनम् ॥ शिवप्रीतिकरंनृणांपुत्रवृद्धिक रंपरम् ॥ एकादशविप्रानेकादशारुद्रबुद्ध्यार्च्यप्रत्येकमंडले ।एकादश पात्रेषुप्रस्थद्वयपूरितेषुहैमेषुरुद्रान्संपूज्य यथाकाममुल्लिख्यदद्यात् ॥ रुद्रायथा ॥ मृगव्याधश्चशर्वश्चनैर्ऋतिश्चमहायशाः ॥ अजैकपाद

हिर्बुध्न्यः पिनाकीचपरंतपः ॥ वहनोत्थशिराश्चैवकपालीचम हाद्युतिः ॥ स्थाणुर्भवश्चभगवान्रुद्राएकादशास्मृताः ॥ इति एका दशरुद्र तिलदानम् ॥ अथ तिलगर्भदानम् ॥ अतःपरंप्रवक्ष्या मितिलगर्भमनुत्तमम् ॥ यत्संप्रदानान्मनुजोदीर्घमायुरवाप्नुयात् ॥ अपमृत्युजयोपायोव्याधिनिर्मोक्षणःक्षमः ॥ जन्मर्क्षस्यग्रहोपरो धेव्याध्युत्पातोदयेचकार्य्यः ॥ पूर्वोक्तेमंडलेअर्द्धाढकास्तंडुलास्त न्मध्येअष्टपत्रंसौवर्णंपद्मंनवरत्नयुतंकृत्वासंमतात्तिलैःपरिस्तांकृत्वा तत्पद्मं यस्यैयज्ञियोगर्भोयस्यैयोनिर्हिरण्मयीत्यादिमंत्रेणसंपूज्य त्र्यंबकमितिमृत्युंजयमंत्रेणन्यासान्कृत्वा पंचब्रह्ममंत्रैःसद्योजाता दिभिःप्रतिष्ठाप्य ॥ तंपद्मंपुनस्तिलैस्संगर्भ्यपुनःसंपूज्य ॥ शतावृत्तं मृत्युंजयंपठित्वा ॥ पुनस्तंपद्मंगर्भस्थानादुत्थाप्यजलेनस्नाप्यपा वमानीतिसूक्तेनाभिषिंच्य ॥ विनीतायसुपूजितायब्राह्मणाययथा काममुल्लिख्यदद्यात् ॥ प्रीयतांभगवान्शंभुश्चंद्रमौलिरितिब्रुवन् ॥ अत्रदानेदेहनिर्मुक्तःशुद्धःशंकरोस्मीतिचिंतयेत् ॥ अनेनविधि नायस्तुतिलगर्भंसमाचरेत् ॥ अकालमृत्युर्नभवेत्तस्यनास्त्यत्रसंश यः॥व्याधीनांविप्रमोक्षःस्यान्महतामपिनिश्चयः॥ग्रहदोषाश्चनश्यंति प्रसीदंतिग्रहाःपुनः ॥ उत्पातानांप्रशांतिश्चत्रिविधानामपिक्षणात् ॥ इति नानाविधतिलदानविधिः ॥ अथ हस्तिदानविधिः॥ दश्म द्रजंपुराणोक्तंमूल्यंपंचशतानिवा ॥ वित्तानुसारात्तत्रापिकनिष्ठोत्त ममध्यमम् ॥ तत्रापिस्वरूपतोगजदानमुत्तमम् ॥ तन्मूल्यंहेममाष शतपंचकदानंमध्यमम् ॥ शतत्रयहेममाषदानंकनिष्ठमिति ॥ रूप्य स्थूणालंकरणंस्वर्णतारविभूषणम् ॥ सदक्षिणंवित्तशक्त्यादत्वा

शिवपुरंव्रजेत् ॥ स्थूणारज्जुः ॥ तारामौक्तिकजालीगजालंकारः ॥ तथाच ॥ यथालाभोपपन्नंवायःप्रयच्छतिदंतिनम् ॥ ब्राह्मणायद रिद्रायस्वर्गलोकेमहीयते ॥ इति ॥ ततोगजदानांगंशिवंद्विजंचसंपू ज्यदद्यात् ॥ दानवाक्यंतु ॥ अयेत्यादि० ममसर्वपापक्षयो त्तरसिद्धचारणसेवितार्ककिंकिणीजालमालिविमानारोहणोत्तरानेक मन्वंतरावच्छिन्नाक्षय्यदेवराजत्वांतेविष्णुपुरावाप्तिकामस्तत्प्रीति कामश्चसालंकृतायामुकशर्मणेब्राह्मणायेमंगजंकक्षारज्जुस्थिरासन सहितंकांचनमालादिकीर्णंचामरगंधपुष्पाद्यलंकृतंप्रजापतिदैवतंतुभ्य महंसंप्रददेनममेतिकरंधृत्वादद्यात् ॥ करःशुंडादंडः ॥ कृतैतद्र जनदानकर्मणःसांगतासिद्ध्यर्थमिदंसुवर्णमग्निदैवतंदक्षिणात्वेनतुभ्य महंसंप्रददेनममेतिदद्यात् ॥ ततोद्विजोगजमारुह्यदेवस्यत्वेतियथा शाखंकामस्तुतिंपठित्वाप्रतिगृह्णामीति स्वस्तीतिवदेत् ॥ यजमानो गजंप्रार्थयेदेतैर्मंत्रैः ॥ ऐरावतश्चतुर्दंतोगजानांनायकस्तुनः ॥ दिग्दं तिनांपूज्यतमः पापंक्षयतुमेप्रभुः ॥ सुप्रतीकगजेंद्रत्वंसरस्वत्याभिषे चक ॥ इंद्रस्यवाहनंश्रेष्ठसर्वदेवैस्तुपूजित ॥ गजेंद्रमत्तमातंगदैत्यसै न्यविनाशक ॥ तवदानेनमेशांतिःसर्वदास्तुमहत्सुखमितिब्राह्मणे स्तथास्त्वितिवदेत् ॥ ततोयजमानःभूयसींदक्षिणांदद्यादितिस्वरूप तोगजदानम् ॥ अथ काम्यगजदानानि ॥ तत्रादौमुखरोगह रगजदानम् ॥ वाग्विरोधंगुरोःकृत्वामुखरोगीभवेन्नरः ॥ तस्य दानेनविहितःप्रतीकारोयमुच्यते ॥ सौवर्णंराजतंताम्रंपलेनार्द्धपले नवा ॥ कारयेत्करिणंसौम्यंरुक्मदंतपरिच्छदम् ॥ मुक्तापुच्छं मणिनेत्रंपीतवस्त्रयुतंधान्यराशिस्थंसंपूजयेत् ॥ धान्यराशिरत्राष्ट

द्रोणमिता ॥ ब्राह्मणंसलक्षणंसंपूज्यसमिदाज्यतिलैर्हुत्वाशुक्रंचर तीतिमंत्रेण यथाकाममुल्लिख्यदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ सुप्र तीकगजेंद्रत्वंसरस्वत्याभिषेचक ॥ इंद्रस्यवाहनंशश्वत्सर्वदेवैश्चपू जित ॥ दानेनानेनदत्तेनमुखरोगंविनाशय ॥ ततोब्राह्मणान्भो जयेद्भूयसींदक्षिणांचदद्यात् ॥ इति मु० रो० दानम् ॥ अथ व्रणरोगघ्नगजदानम् ॥ पलेनवातदर्द्धेनसुवर्णेनचतुर्दंतंवारणंकृ त्वापूर्वक्ददद्यात् ॥ पूजनमंत्रः ॥ चत्वारोदिग्गजायेचपुष्पदंता दयश्चये ॥ सार्वभौमादयोयेचत्वादरात्तोषयामितान् ॥ घृणिमंत्रे णातिलाज्यसमिद्धोमंकृत्वाब्राह्मणंवासोलंकारादिभिर्वृत्वायथाकाम मुल्लिख्यदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ ऐरावतश्चतुर्दंतोगजानांनायकस्तु यः ॥ दिग्दंतिनांपूज्यतमोव्रणंक्षपयतुप्रभुः ॥ ततोब्राह्मणभोजनं भूयसींदक्षिणांचदद्यात् ॥ एवंकृतेव्रणबाधातत्क्षणादेवसर्पति ॥ ते वैवव्रणिनानूनंकार्य्यमारोग्यहेतवे ॥ एवमेवशिवादिदेवताभ्यो गजदानंस्वर्गापवर्गदम् ॥ विधानंपूर्ववदेव ॥ अथ दासीदा नम् ॥ स्थिरनक्षत्रसंयुक्तेसौम्येसौम्यग्रहान्विते ॥ दानंकालेप्रशं संतिसंतःपर्वाणिवापुनः ॥ अलंकृत्ययथाशक्त्यावासोभिर्भूषणैस्त था ॥ ब्राह्मणायप्रदातव्यायजमानेनशक्तितः॥ पंचवर्षाधिकासातुच त्वारिंशत्समावधि ॥ दासीद्विजायदातव्यादासीदानेत्वयंविधिः॥ दान वाक्यंतु ॥ अद्येत्यादि० गोत्रायशर्मणेसालंकृतायसुवर्णालंका रवतींगंधपुष्पार्चितांप्रजापतिदैवत्यांअक्षयसुखावाप्तिकामस्तुभ्यमहं संप्रददेनममेति ॥ शिरसिधृत्वादद्यात् ॥ प्रार्थनायथा ॥ इयं दासीमयातुभ्यंश्रीवत्सप्रतिपादिता ॥ सर्वकामकरीभोग्यायथेष्टंभद्र

मस्तुमे ॥ ततःसुवर्णदक्षिणांदत्वा ॥ नमस्कुर्य्यात् ॥ अनुगत्वातुसी मानंद्विजंचैवविसर्जयेत् ॥ दासींसमीक्ष्यबहुशोगृहकर्मदक्षांयोब्राह्म णायकुलशीलवतेददाति ॥ विद्याधराधिपतिभिस्त्वभिपूजितोसौ मर्त्यःप्रयातिस्वजनैःसहविष्णुलोकम् ॥ एवंदेवताभ्योदासीदानं कर्त्तव्यम् ॥ तदुपलक्षणार्थंशिवाययथा ॥ योलंकृत्यस्त्रियंशं भोरुत्तमांविनिवेदयेत् ॥ सोश्वमेधस्ययज्ञस्यफलंशतगुणंलभेत् ॥ सुविनीतांस्त्रियंदासींघृतकार्थंनिवेदयेत् ॥ नरमेधस्ययज्ञस्यफलंश तगुणंलभेत् ॥ अथ रथदानम् ॥ रथंचतुर्बलीवर्दैरूढंधान्यावृतंत्रिधा। वित्तानुसारात्सर्वैश्चरथोपकरणैर्युतम् ॥ सदक्षिणंचविप्रायदत्वा शिवपुरंव्रजेत् ॥ अस्यदानविधानंतुधनुःसंक्रमणदानविधा वुक्तम् ॥ गंत्रीरथविशेषदानंचतत्रैव ॥ अथरथदानप्रसंगे नशिविकादानंचतत्रैवोक्तम् ॥ भूमिदानंत्वतिदानविधावु क्तम् ॥ अथगृहदानाख्यंमहादानम् ॥ तद्विधिस्त्वतिदा नाध्यायेकथितः ॥ अथगृहदानप्रसंगेनाश्वलायनगृह्योक्तावास्तु शांतिः स्वल्पतरा ॥ तद्यथा ॥ काष्ठादिनिर्मितंसंपन्नंधान्यादिस र्वोपस्करैः ॥ शोभनेमुहूर्ते ब्राह्मणैःसहतूर्यघोषेणगृहंप्रविश्या गारमध्येप्राङ्मुखउपविश्यदर्भेषुदर्भान्धारयमाणःपत्न्यासहआचम्य प्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्य ममास्यवास्तोः शुभतासिद्ध्यर्थंवा स्तुशांतिंकरिष्ये ॥ इतिसंकल्प्य ॥ तदंगत्वेनगणपतिपूजनंपुण्याह वाचनंमातृकापूजनंनांदीश्राद्धंचकृत्वापूर्वोक्तवास्तुपीठदेवतास्थाप नार्चनहोमवलिदानंत्रिसूत्र्यागृहवेष्टनमभिषेचनब्राह्मणभोजनसंक ल्पान्तंकृत्वा आश्वलायनगृह्योक्तांवास्तुशांतिंकुर्यात् शुचिदेशे

चतस्रःशिलाःसंस्थाप्यतासुदूर्वांनिधायतत्रमणिकसंज्ञुकभांडंसंस्था
पयेदेतैर्मंत्रैः ॥ पृथिव्याअधिसंभवेति अरंगरोवावदीति त्रेधा
बद्धोवरत्रया॥इरामुह प्रशंसतिअनिरामपबाधतामितिवा ॥ ततोम
णिकेजलमासिंचेदनेनमंत्रेण ॥ ऐतुराजावरुणोरेवतीभिरस्मिंस्था
नेतिष्ठतुमोदमानः॥इरांवहंतोघृतमुक्षमाणामित्रेणसाकंसहसंविशंत्वि
ति ततस्तज्जलंपात्रांतरेणादायतस्मिन्दूर्वाशमीशाखोदुंबरशाखा
व्रीहियवान्फलंहिरण्यंचक्षिप्त्वादूर्वाभिःशाखाभ्यांचसर्वंगृहंप्रागादि
तःप्रदक्षिणंपरिव्रजन्प्रोक्षेदनेनसूक्तेन शंनइन्द्राग्नीतिपंचदशर्चस्यसू
क्तस्यवसिष्ठोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप्गृहप्रोक्षणेवि०सकृत्सूक्तपाठः ॥ इति
नारायणवृत्यनुरोधात् ॥ वस्तुतस्तुशंतातीयेनेति इळेधावेतिवर्गपं
चकैरित्यन्ये॥एवंसतिसमुच्चयेनकोपिविरोधः।तद्यथाइळेधावेतिपंच
विंशर्चस्यसूक्तस्याप्तसुतम् ॥ अश्विनीयौपादालिंगोक्तदेवता ॥ ज
गत्यन्त्येत्रिष्टुभौ ॥ गृहप्रोक्षणोविनि० ॥ इळेधावापृथिवीवर्ग५
श्चात्रापिसकृदेवसूक्तपाठःकार्यः ॥ ततःप्रागादितस्त्रिरविच्छिन्ना
मुदकधारांदध्यादानेनापोहिष्ठेत्युचस्यांबरिषः ॥ सिंधुद्वीपः ॥
आपोगायत्री ॥ गृहस्यसमंताद्धारायांविनि० ॥ ॐआपोहिष्ठाम
योभु०३ ॥ अत्रापिसकृदेवमंत्रपाठः ॥ ततोवास्तुपीठान्नैर्क
त्यांपश्चिमायांवाकुंडेस्थंडिलेवागृह्याग्निंवरदनामकंसंस्थाप्यचत्वारि
शृंगेतिध्यात्वाऽस्मिन्वास्तोष्पतिस्थालीपाकेअन्वाधानंकरिष्ये ॥
इति संकल्प्यअस्मिन्नन्वाहितेग्नावित्यादिचक्षुषीआज्येनेत्यंतमुक्का
त्रप्रधानंवास्तोष्पतिंचतुर्वारंचरुणाशेषेणस्विष्टकृतमित्यादिसघोय

१ हंडीइतिप्रसिद्धा ।

क्ष्येइत्यंतमुत्कान्वाधायेध्मावर्हिषीसन्नह्यपरिसमूहनादियूर्णपात्रनि धानांतंकृत्वावास्तोष्पतयेचतुःकृत्वा ॥ तूष्णींनिरूप्यतत्संख्ययात थैवप्रोक्ष्यावघाताद्याज्यभागांतंकृत्वा वदानधर्मेणचरुमवदायवा स्तोष्पतइति चतसृणांवसिष्ठोवास्तोष्पतिस्त्रिष्टुप्अंत्यागायत्री वास्तोष्पतिप्रदानचरुहोमेवि०ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानी०ष्पदेस्वा० अत्रऋगंतेस्वाहाकारंपठन् जुहुयात् ॥ नस्वाहाकारांतेहोमः ॥ गृह्येतुप्रत्यृचंहुत्वेत्युक्तेः ॥ एवंसर्वत्रवास्तोष्पतयइदंन मम ॥पुनःचरुमवदायॐवास्तोष्पतेप्र० ॥ वास्तोष्पतयइदं०२ ॥ ॐवास्तोष्पतेशग्मया०वास्तोष्पतयइदं० ॥ ३ ॥ ॐ अमी वहावास्तोष्पते० ॥ वास्तोष्पतयइदं० ॥ ४ ॥ ततः स्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्यशिष्टेनचरुणान्येनस्वादुव्यंजनपायसा दियुक्तेनशतंतदर्द्धंवाशक्त्यावाब्राह्मणान्भोजयेत् ॥ होमात्पूर्व मन्यः पाकोनकार्यः ॥ ततःशिवंवास्तुशिवंवास्तुशिवंवास्तिवातित्रिः प्रयुक्तःयजमानःसुहृद्युतोभुंजीतेति ॥ विशीर्णगृहसज्जीकरणेपीष्य तेवास्तोष्पतिस्थालीपाकः साधारणशांतिवत् ॥ इत्याश्वलायनगृह्यो क्तावास्तुशांतिः ॥ अथगृहदानप्रयोगः ॥ यजमानःकृतनित्यक्रियः पुण्यकालेगृहमध्येदक्षिणभागेचंदनेनाष्टदलंपद्मंविलिख्यतदुपरिप्रस्थ मात्रंतिलान्निक्षिप्यतदुपरिशय्यांसोपस्करांस्थापयित्वाशय्योपरि सौवर्णमयींलक्ष्मीनारायणप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वकंपंचामृतादिना भिषिच्यसंपूज्यप्रतिग्रहीतारंचसपत्नीकंवृत्वातंकरे गृहीत्वामंग लतूर्यघोषेणमंत्रैर्गृहंप्रवेशयेत् ॥ तेचमंत्राः ॥ एह्येहिनारायणदि व्यरूपसर्वामरैर्वंदितपादपद्म ॥ शुभाशुभानंदशुचामधीशलक्ष्मीयुत

स्त्वंचगृहंगृहाण ॥ नमःकौस्तुभनाथायहिरण्यकवचायच ॥ क्षीरो दार्णवसुतायजगद्धात्रेनमोस्तुते ॥ नमोहिरण्यगर्भायविश्वगर्भायवै नमः ॥ चराचरस्यजगतोगृहभूतायवैनमः ॥ भूर्लोकप्रमुखालोका स्तवदेहेष्ववस्थिताः ॥ नंदंतियावत्कल्पांतंतथास्मिन्भवनेगृही ॥ त्वत्प्रसादेनदेवेशपुत्रपौत्रावृतोगृहे ॥ पंचयज्ञक्रियायुक्तोवसेदाचंद्र तारकमिति ॥ ततस्तंपूर्वस्थापितशय्यायामुदङ्मुखमुपवेश्यसपत्नी कंयथाविभवंवस्त्रालंकारादिभिःसंपूज्यस्वयमासनेप्राङ्मुखोदर्भेष्वा सीनोदर्भान्धारयमाणःपत्न्यासहप्राणानायम्य देशकालौसंकीर्त्यम मसमस्तपापक्षयपूर्वककल्पकोटिशतावधिब्रह्मलोकनिवासनकामः शिलाकाष्ठपकेष्टकादिनिर्मितयथोपपत्तिसंपादिततास्रादिभाजनसर्व धान्यलवणघृततैलगुडशर्करागोमहिषीबलीवर्ददासदासीमंचकतूलि काद्ययवितानादर्शतांबूलायतनैलालवंगादिवर्षपर्याप्तसर्वोपकरणा न्वितंसदीपिकाप्रद्योतितंविश्वकर्मदैवतंशक्रदैवत्यंदेवंगृहंगोत्रायशर्म णे अमुकशाखाध्यायिनेसपत्नीकायसालंकृतायसुपूजितायलक्ष्मी नारायणप्रतिमासहितंतुभ्यमहंसंप्रददेनममेतिदत्वापठेत् ॥ मंत्रौतु ॥ इदंगृहंगृहाणत्वंसर्वोपस्करसंयुतम् ॥ तवविप्रप्रसादेनममसंतु मनोरथाः ॥ गृहंममविभूत्यर्थंगृहाणत्वंद्विजोत्तम ॥ श्री यतांमेजगद्योनिर्वास्तुरूपीजनार्दनः ॥ ततः प्रतिग्रहीतागृहम ध्यस्तंभंबहिर्द्वारंदेहलींवासंस्पृश्यदेवस्यत्वेतियजुषाप्रतिगृह्यस्वस्ती त्युक्त्वायथाशाखंकामस्तुतिंपठेत् ॥ ततः सुवर्णसहस्रमा रभ्य एकसुवर्णपर्यंतंयथाशक्त्यावित्तशाठ्यविवर्जितांदक्षिणांदद्या त् ॥ ततःपादुकोपानच्छत्रचामरादिकंदत्वासंपन्नंगृहोपस्कारादी

त्युक्तासर्वंसुसंपन्नंसंपूर्णमेवास्त्वितिप्रतिवचनंदद्यात् ॥ ततोब्राह्मणान्संपूज्यभूयसींदक्षिणांदत्वाशिषोगृण्हीयात् ॥ प्रमादात्कुर्वतां कर्म० यस्यस्मृत्येतिकर्मेश्वरार्पणंकुर्यात् ॥ गृहदानफलमुक्तंमात्स्ये ॥ यएवंसर्वसंपन्नंपक्केष्टंविनिवेदयेत् ॥ कल्पकोटिशतं यावद्ब्रह्मलोकेमहीयते ॥ शैलजंदारुजंवापियोदद्याद्विधिपूर्वकम् ॥ वसेत्क्षीरार्णवेरम्येनारायणसमीपतः ॥ मृन्मयंवापियोदद्याद्हंसोपस्करान्वितम् ॥ पुरेषुलोकपालानांप्रतिमन्वंतरेवसेदिति ॥ अत्रप्रविश्यसंस्पृश्यवाप्रतिगृण्हीयादित्युक्तेःप्रविश्यगृहद्वारदेहलींदेहल्यांप्रतिग्रहः कर्त्तव्यः ॥ तथैवसंस्पृश्यस्थूणांद्वारदेहलींवासंस्पृश्यप्रतिगृह्णीयादितिसांप्रदायिकाः ॥ इति गृहदानप्रयोगः ॥ **अथमठदानम्** ॥ कृत्वामठंप्रयत्नेनशयनासनसंयुतम् ॥ तृणैराच्छादितंचैववेदिका ॥ भिःसुशोभितम् ॥ पुण्यकालेद्विजेभ्योथयतिभ्योवानिवेदयेत् ॥ सर्वान्कामानवाप्नोतिनिष्कामोमोक्षमाप्नुयादिति ॥ इतिमठदानम् ॥ **अथधर्मशालादानम्** ॥ कुर्यात्प्रतिश्रयगृहंपथिकानांहितावहम् ॥ निजगेहैकदेशंवासाधूनांयोनिवेदयेत् ॥ प्रतिश्रयोधर्मशाला ॥ **तथा** ॥ अक्षय्यं पुण्यमुद्दिष्टंतस्यस्वर्गापवर्गदम् ॥ सर्वकामसमृद्धोसौदेववद्दिविमोदते ॥ **तथाच** ॥ प्रतिश्रयेसुविस्तीर्णेकारितेसजलेधने ॥ दीनानाथजनार्थायवदकिञ्चकृतंभवेदिति ॥ इति धर्मशालादानम् ॥ **अन्यच्च** ॥ शंकरात्परमंनान्यदतस्तस्मैविकल्पयेत् ॥ यतीनामाश्रयंवापिकृत्वापक्केष्टकामयम् ॥ विकल्पः ॥ संकल्पः ॥ **तथा**—तथागवार्थेशरणं शीतवातहरंशुभम् ॥ आसनमंतारयित्वा कुलंसंतरतेस्वयम् ॥ प्रतिश्रयमतिथीनामाश्रयं ॥ कुर्य्यात्प्रतिश्रयगृहं

पथिकानांहितावहम् ॥ निजगेहैकदेशेवासाधून्पांथान्निवासये त् ॥ अक्षय्यंपुण्यमुद्दिष्टंतस्यस्वर्गापवर्गदम् ॥ सर्वकामसमृद्धो सौदेववद्दिविमोदते ॥ अथ कन्यादानम् ॥ सहस्रमेवधेनूनांशतं वानडुहांसमम्॥ दशानुडुत्समंयानंदशयानसमोहयः॥दशवाजिसमा कन्याभूमिदानंचतत्समम्॥ तस्मात्सर्वेषुदानेषुकन्यादानंविशिष्यते इति ॥ अग्निपुराणे ॥ श्रुत्वाकन्याप्रदानंचपितरश्चपितामहाः ॥ विमुक्ताःसर्वपापेभ्योब्रह्मलोकंव्रजंतिते ॥ इति ॥ देवलः ॥ तिस्रः कन्यायथान्यायंपालयित्वानिवेद्यच ॥ नापितानरकंयातिनारीवा स्त्रीप्रसूयिनीति ॥ वशिष्ठः ॥ हाटकक्षितिगौरीणांसप्तजन्मानुगंफ लम् ॥ धर्मेणविधिनादातुःसमंगोत्रेणयुज्यतः ॥ इति ॥ ऋष्यशृं गः ॥ वरगोत्रंसमुच्चार्यप्रपितामहपूर्वकम् ॥ नामसंकीर्त्तयेद्विद्वान् कन्यायाश्चैवमेवहि ॥ तिष्ठेदुदङ्मुखोदातातिष्ठेत्पूर्वमुखोवरः॥ मधु पर्कार्चितायैनांतस्मैदद्यात्सदक्षिणाम् ॥ उदपात्रंतदादायमंत्रेणा नेनदापयेदिति ॥ तिष्ठेदिति ॥ अनुपविष्टइत्यर्थः ॥ गौरींक न्यामिमामित्यादिपुत्रपौत्रप्रवर्धिनीमित्यंतंप्रयोगेवक्ष्यामः ॥ भू मिंधेनूश्चदासीं चवासांसिचस्वशक्तितः ॥ महिषीवाजिनश्चैवद द्यात्स्वर्णमणीनपीति ॥ ततःस्वगृह्यविधिनाहोमार्थंकर्मकारयेत् तथाचारंविधेयानिमांगल्यकुतुकानिचेति ॥ अथकन्यादानप्र योगः ॥ तत्रादौयथाशाखंमधुपर्केणसंपूज्यप्राङ्मुखीमुपविश्यपि त्रादिकोवधूवरदक्षिणतःस्वदक्षिणस्थपत्नीसहितउदङ्मुखोदर्भेष्वा सीनोदर्भान्धारयमाणोदेशकालौसंकीर्त्यममसमस्तपितॄणांनिरतिश यसानंदब्रह्मलोकावाप्त्यादिकन्यादानकल्पोक्तफलावाप्तयेअनेनवरे

णास्यांकन्यायामुत्पादयिष्यमाणसंतत्याद्वादशावरान्द्वादशपरान् पुरुषान् पवित्रीकर्तुं आत्मनश्चलक्ष्मीनारायणप्रीतयेब्राह्म विवाहविधिनाकन्यादानमहंकरिष्ये ॥ इतिकुशाक्षतजलेनसं कल्प्यसपत्नीकउत्थायोदङ्मुखएवकन्यांसंप्रगृह्यपठेत् ॥ कन्यां कनकसंपन्नांकनकाभरणैर्युताम् ॥ दास्यामिविष्णवेतुभ्यंब्रह्मलो कजिगीषया ॥ विश्वंभरःसर्वभूताःसाक्षिण्यःसर्वदेवताः ॥ इमां कन्यांप्रदास्यामिपितॄणांतारणायच ॥ इतिमंत्रौपठित्वा ॥ स्वद क्षिणस्थभार्यादत्तपूर्वकल्पितजलधारामविच्छिन्नांनवकांस्यपात्रोप रिधृतकन्यांजल्युपरिस्थवरांजलिंदक्षिणहस्तेक्षिपन्वदेत् ॥ कन्या तारयतु पुण्यंवर्धताम् ॥ शिवाआपःसंतु ॥ सौमनस्यमस्तु ॥ अक्षतंचारिष्टंचास्तु ॥ दीर्घमायुःश्रेयःशांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु ॥ यच्छ्रेयस्तदस्तुयत्पापंतत्प्रतिहतमस्तु ॥ पुण्याहंभवंतोब्रुवंतु ॥ स्वस्तिभवंतोब्रुवंतु ॥ ऋद्धिंभवंतोब्रुवन्तु ॥ श्रीरस्त्विति भवं तोब्रुवंतु ॥ अस्तुश्रीरितिप्रतिवचनंसर्वत्रज्ञेयम् ॥ अमुकामुकप्रवरोपेतो मुकगोत्रोत्पन्नोमुकशर्माहंममसमस्तपितॄणामित्यादि ॥ श्रीलक्ष्मीना रायणप्रीतयेइत्यंतंपूर्वोक्तमुक्त्वाअमुकप्रवरोपेतायामुकगोत्रायामुक प्रपौत्रायामुकपौत्रायामुकपुत्रायामुकशर्मणेवरायश्रीधररूपिणेकन्या र्थिनेअमुकामुकप्रवरोपेतामुकगोत्राममुकप्रपौत्रीममुकपौत्रीममुकस्य ममपुत्रीममुकदेवींनाम्नींकन्यांश्रीरूपिणींवरार्थिनींयथाशक्त्यलंकृ तांप्रजापतिदैवत्यांधर्मप्रजासहत्वकर्मण्यस्तुभ्यमहंसंप्रददेकन्यांप्रति गृह्णातुभवानितिवरहस्ते सकुशाक्षतजलंक्षिपेत् ॥ प्रजापतिः प्रीय तामितिमनसास्मरेत् ॥ नममेति नवदेदितिकेचित् ॥ ततोदाता

गौरींकन्यामिमांविप्रयथाशक्तिविभूषिताम् ॥ गोत्रायशर्मणेतुभ्यं दत्तांविप्रसमाश्रय ॥ कन्येममाग्रतोभूयाःकन्येमेदेविपार्श्वयोः ॥ कन्येमेपृष्ठतोभूयास्त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुयाम् ॥ ममवंशेसमुत्पन्नापालितावत्सराष्टकम् ॥ तुभ्यंविप्रमयादत्तापुत्रपौत्रविवर्द्धिनी ॥ धर्मेचार्थेचकामेचनातिचरितव्यात्वयेयम् ॥ नाति चरामीति वरः ॥ एवंसमस्तेत्यादि नातिचरामीत्यंतं कन्यादानं त्रिवारं काम्यमितिशौनकः ॥ ततोवरःदेवस्यत्वा०भ्यांप्रतिगृह्णामि ॥ ॐ स्वस्तीत्युक्त्वा कन्यायादक्षिणांसमभिमृश्य कइदंकस्माअदादितियथाशाखं कामस्तुतिंपठित्वा पृथ्वीप्रतिगृह्णात्वितिजपित्वा गृहस्थाश्रमांतर्गतस्मार्तकर्मानुष्ठानाधिकारसिद्धये धर्मप्रजासहत्वकर्मसिद्धयर्थंचकन्यांप्रतिगृह्णामीतिवदेत् ॥ ततोदातादेशकालौसंकीर्त्य कृतस्यकन्यादानकर्मणःसांगतासिद्धयर्थमिदंसुवर्णमग्निदैवतंदक्षिणात्वेनतुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिवरहस्तेदद्यात् ॥ ॐस्वस्तीतिवरः ॥ ततोदाता एवमेवजलपात्रभोजनभाजनानि गोमहिष्यश्वगजदासीदासभूवाहनालंकारादियथाविभवंसंकल्प्यदद्यात् ॥ अथवासर्वयौतकंविनासंकल्पेनदद्याद्यतःयौतुकागारसहितामितिचकन्यादानसंकल्पेब्रूयात् ॥ ततोब्राह्मणभोजनंसंकल्प्यभूयसींदक्षिणांचदद्यात् ॥ कर्मेश्वरार्पणंकुर्य्यादन्यदपियथाचारंकार्य्यंविस्तरस्तुप्रयोगरत्नादौज्ञेयः ॥ कन्यागृहेभोजननिषेधोयथा ॥ अप्रजायांतुकन्यायांनभुंजीतकदाचन ॥ दौहित्रस्यमुखंदृष्ट्वाकिमर्थमनुशोचतीति ॥ अथ स्थानच्युतस्थापनम् ॥ तत्रादौद्विजस्य ॥ मातापितृविहीनंतुसंस्कारोद्वहनादिभिः ॥ यःस्थापयतितस्येहपुण्यसंख्यानविद्यते ॥

राज्ञः ॥ भूमिपालंच्युतंराज्याद्यस्तुसंस्थापयेत्पुनः ॥ तस्यवासः कल्पशतंनाकपृष्ठेनसंशयः ॥ साधारणस्य ॥ स्थानभ्रष्टस्ययः कुर्य्याद्भूयस्त्वारोपणंनरः ॥ नाकलोकमवाप्नोतिचिरंतेनेहकर्मणा॥ इति॥अत्रदशमहादानेकपिलागोदानाख्यंतत्तुषष्टिदानविधावुक्तम्॥

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेदशमहादाननिर्देशोनाम सप्तविंशःकोशः ॥ २७ ॥

अथ विष्णोर्मत्स्यादिदशावतारमूर्तिदानम् ॥ तत्रादावुपलक्षणार्थमादिवराहदानंयथा ॥ दानमादिवराहस्यकथयामिसमासतः ॥ पुण्यंपवित्रमायुष्यंसर्वदानोत्तमोत्तमम् ॥ महापापादिदोषघ्नंपूजितंमुनिसत्तमैः ॥ देयंसंक्रमणेभानोर्ग्रहणेद्वादशीतिथौ ॥ यज्ञोत्सवविवाहेषुदुःस्वप्नाद्भुतदर्शने ॥ यदावाजायतेवित्तंचित्तंश्रद्धासमन्वितम् ॥ तदैवतस्यकालःस्यादध्रुवंजीवितंयतः ॥ कुरुक्षेत्रादितीर्थेषुगंगायासुनदीषुच ॥ गोष्ठेदेवालयेवापिरम्येवापिगृहांगणे ॥ देयंपुराणविधिनाब्राह्मणायकुटुंबिने ॥ अव्यंगायसुशीलायवेदवेदांगवादिने ॥ पूर्वोत्तरप्लवांगोमयोपलिप्तांकुशास्तरणयुतांभूमिंपरिकल्प्य तस्मिन्कृष्णाजिनोपरिद्रोणचतुष्टयतिलान्संस्थाप्य तदुपरिवाराहंसुवर्णखुरं रजतदंष्ट्रंपद्मरागविभूषितंरौप्यपादंदंष्ट्राग्रेस्वर्णवसुंधरायुतंचक्रगदान्वितंसर्वधान्ययुतंवस्त्रालंकृतंषोडशोपचारैराराध्य ब्राह्मणंवृत्वा यथाकाममुल्लिख्यदद्यात्॥तत्रमंत्रः वराहाशेषदुष्टानिसर्वपापफलानिच ॥ मर्दयमर्दयमहादंष्ट्रभास्वत्कनककुंडल।शंखचक्रासिहस्तायहिरण्याक्षांतकायच । दंष्ट्रोद्धृतक्षितिपतेत्रयीमूर्तिमतेनमः॥ इत्युच्चार्य्यनमस्कृत्यत्रिःप्रदक्षिणीकृत्यअस्यपाद

योःप्रतिग्रहःकार्य्यः ॥ ततआचार्य्यंसंपूज्यान्येभ्योयथाविभवंभूयसीं दक्षिणांदद्यात् ॥ एवमेवमत्स्यादिदशावतारदानविधिर्बोद्धव्यः ॥ तेषांरूपंतुपृथगेव ॥ यथा ॥ आदौमत्स्यरूपम् ॥ नरांघ्रिर्मत्स्यरूपीवा मत्स्यरूपीजनार्दन इति ॥ कूर्मस्तुमत्स्यवत् ॥ वराहस्य ॥ मधु पिंगलवर्णश्चचतुर्बाह्वायुधैर्युतम् ॥ नरांगंसूकरास्यं चमनाकृपीनंसु भीषणम् ॥ श्रीवामकूर्परस्थातुधनानंतौपदानुगौ ॥ एतद्रूपधरंदेवंवराहं मुक्तिमुक्तिदम् ॥ नृसिंहस्य ॥ ज्वलदग्निसमाकारंसिंहवक्त्रं नरांगकम् ॥ दंष्ट्राकरालवदनंललज्जिह्वंसुभीषणम् ॥ वृत्ताक्षंजटि लंकुद्धमालीढंपीनवक्षसम् ॥ अभेद्यतीव्रनखरंवामोरुकृतदानवम् ॥ तद्वद्वक्षोदारयंतंकराभ्यांनखरैर्भृशम् ॥ गदाचक्रधरंद्राभ्यांनरसिंहं जगत्प्रभुम् ॥ वामनस्य ॥ कुंडीछत्रधरोद्विर्दोर्वामनःपरिकीर्त्तितः परशुरामस्य ॥ क्षत्रांतकरणंघोरमुद्वहन्परशुंकरे ॥ जाम दग्न्यःप्रकर्त्तव्योरामोरोषारुणेक्षणः ॥ रामस्य ॥ युवा प्रसन्नवदनःसिंहस्कंधोमहाबलः ॥ आजानुबाहुःकर्त्तव्योरामो बाणधनुर्द्धरः ॥ बलरामस्य ॥ शंखचक्रधरःकार्य्योनी लोत्पलदलच्छविः ॥ कृष्णोदीर्घद्विबाहुश्चसर्वदैत्यक्षयंकरः ॥ बौद्धस्य ॥ कषायवस्त्रसंवीतस्कंधसंसक्तचीवरः ॥ पद्मासनस्थो द्विभुजोध्यायीबुद्धःप्रकीर्तितः ॥ कल्किनः ॥ खड्गोद्यतकरःक्रुद्धो हयारूढोमहाबलः ॥ म्लेच्छोच्छेदकरःकल्कीद्विभुजःपरिकीर्त्ति तः ॥ एतद्विधाःशुभाःकार्य्यामूर्त्तयोदशशार्ङ्गिणः ॥ यथाशक्त्याप्र कुर्वीतसुवर्णेनविजानता ॥ प्रत्येकदानेप्रत्येकपूजनविधानंनाममं त्रेणकार्य्यमन्यत्सर्वमादिवराहदानवज्ज्ञातव्यम् । तत्रदानवाक्यं

तु ॥ देवरूपंमयाविप्रकारितंकांचनंशुभम् ॥ तद्गृहाणप्रदानेनप्रीयतांविश्वरूपधृक् ॥ अत्रविशेषविधानेकुंडमंडपसंभारादिसर्वंतुलापुरुषदानवदेवकर्त्तव्यम् ॥ दानमाहात्म्यंयथा ॥ क्षीरेक्षारंयथाक्षिप्तंपयःसंहरतेनलः ॥ तथाविष्णोःसदातावैऐक्यंयातिनसंशयः ॥ ब्रह्महाचसुरापश्चतस्करोगुरुतल्पगः ॥ यथामुंजादिषीकांतस्तथापापात्प्रमुच्यते।सहस्रंचैवजंतूनामुद्धरेत्सइदंजगत्।तस्माद्देयामूर्त्तयस्ताः विष्णोःशक्तेश्चशक्तितः ॥ येनसर्वस्यदानस्यफलंप्राप्नोतिसत्वरम् ॥ नतत्तपोभिरत्युग्रैर्विहितैःप्राप्यतेफलम् ॥ विष्णोःशक्तेश्चमूर्त्तीनां दानेनयदवाप्यते ॥ अत्रशक्तेश्चेत्युक्तत्वाद्देव्यादशमूर्त्तिदानंविशिष्यते ॥ तेषांदानविधानंपूर्ववदेव ॥ पूजनविधानंतुपृथक्पृथक्तंत्रोदितंकर्त्तव्यम् ॥ दशमहाविद्यानामानितु ॥ कालीतारामहाविद्याषोडशीभुवनेश्वरी ॥ भैरवीछिन्नमस्ताचविद्याधूमावतीतथा ॥ बगलास्यात्सिद्धविद्यामातंगीकमलापरा ॥ दानार्थंमूर्तयोयथा ॥ करालवदनांमुंडकृपाणवरदाभयाम् ॥ केशबद्धजटाजूटां कालिकांमुंडमालिकाम् ॥ १ ॥ कर्त्रीकजांशरःखड्गधरान्नेत्रत्रयान्वितां॥ताराशिवासनगतांव्याघ्रचर्मांबरावृताम् ॥ २ ॥ पाशांकुशशरेष्वासधरांचंद्रार्द्धशेखराम् ॥ हारकुंडलमंजीरभूषाढ्यांविश्वमातरम् ॥ ३ ॥ पाशांकुशवराभीतिधारिणींचंद्रशेखराम् ॥ त्रिनेत्रांरक्तवसनांविद्येशींभुवनेश्वरीम् ॥ ४ ॥ मालाविद्याभयवरांचंद्रार्द्धकृतशेखराम् ॥ त्रिनेत्रांभैरवींविद्यांमुंडमालाविभूषिताम् ॥ ५ ॥ करोटिकांखड्गधरांरक्तासक्तांविमस्तकाम् ॥ स्मेरासनगतांदेवींछिन्नमस्तांप्रकल्पयेत् ॥ ६ ॥ कुब्जांरूक्षांत्रिनेत्रांचकृष्णांमुक्तशिरोरुहाम्

शूर्पोदरींकलिरतांविद्यांधूमावतींकुशाम् ॥ ७ ॥ पाशमुद्गरजिह्वाञ्च वज्रशोभासुशोभिताम् ॥ बकास्यांपीतवसनांत्रिनेत्रांचंद्रशेखराम् ॥ ८ ॥ नवयौवनसंपन्नांवीणासक्तांमुदान्विताम् ॥ रत्नपद्मासन गतांमातंगीमरुणांबराम् ॥ ९ ॥ वराभयगदापद्मधरांविद्युन्निभां शुभाम् ॥ हारोपशोभितोरस्कांकमलांकमलप्रियाम् ॥ १० ॥ स्त्रीपुंरूपौहरिहरौयतोयोनिर्जनार्दनः ॥ लिंगरूपीशिवःसाक्षाद्याभ्यां व्याप्तमिदंजगत् ॥ अनयोरंतरंनास्तिस्त्रीपुंसोर्भगलिंगयोः ॥ भग लिंगांकितंसर्वंदृश्यादृश्यंचराचरम् ॥ एतासांमूर्त्तीनांदानंकुंडमंडप संभारभूषणाच्छादनपताकातोरणवितानहोमपूजनर्त्विगाचार्य्यपूज नादिसर्वंतंत्रोदितंकर्त्तव्यम् ॥ यतः ॥ बीजानिवेदमंत्राणांसारमुद्धृ त्यशंभुना ॥ उक्तानिजगतांसिद्धिहेतवेशक्तियोगिना॥ इति ॥

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेविष्णुशक्तिदशावतारदान कथनं नामाष्टाविंशःकोशः ॥ २८ ॥

अथतिथिवारर्क्षयोगयोगजपर्वसुदानविशेषाउच्यंते ॥ तत्रादौ भौमचतुर्थ्यांरुद्रमूर्त्तिदानम् ॥ अन्नचौरोभवेद्यस्तुसोऽकस्माज्जायते कुशः॥ वक्ष्येतस्यप्रतीकारंदानहोमाभिषेचनैः ॥ पलमितसुवर्णेनत्रि नेत्रांचतुर्बाहुंसुखासनस्थांश्वेतवस्त्राभरणांरुद्रमूर्त्तिंप्रकल्प्यगोमयो पलिप्तमंडपेतंडुलद्रोणचतुष्टयोपरिसंस्थाप्य मूलमंत्रेणषोडशोपचार पूजांकृत्वाऋत्विगाचार्य्यवरणंविधायस्थंडिलेग्निंसंस्थाप्य त्र्यंबकं० कद्रुद्रा० वामदेव० इतिमंत्रैः प्रत्येकमष्टोत्तरशतं जुहुयात् ॥ हुतशेषमग्नेःपूर्वदिशिस्थितदृढकलशेक्षिप्त्वातस्मिन्कलशेसप्तमृत्ति काःप्रक्षिप्यपूजनानंतरं कलशोदकेनाचार्य्योयजमानमभिषिंचे

त् ॥ तत्रमंत्राः ॥ आपोहिष्ठा० हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका० पवमानसूक्तंच ॥ ततःसर्वांगमभ्यज्यशुक्लमाल्यांबरधरोयजमानःशुचिराचार्य्यायतांमूर्तियथाकाममुल्लिख्यदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ देवदेवमहेशानवृषभध्वजशंकर ॥ अन्नचौर्येणयत्पापंकृतंजन्मांतरेमया ॥ तेनयज्जनितंकार्श्यमसह्यंममदेहजम् ॥ तत्प्रदानेनदत्तेनप्रीतोस्मिन्नरक्षपापिनम् ॥ ततःपुण्याहवाचनंब्राह्मणभोजनं भूयसींदक्षिणांदद्यादितिकर्मशेषंसमापयेत् ॥ एवंयोविधिनानेनशंकरप्रतिमांनरः ॥ ददातिविप्रवर्य्यायसकार्श्याद्विप्रमुच्यते ॥ इतिभौ० रु० दानम् ॥ अथभानुसप्तम्यांसर्वरोगहरमश्विनीकुमारमूर्त्तिदानम् ॥ शुचौदेशेगोमयोपलिप्तेहस्तमात्रं समंतात्तिलतंडुलराशिंकृत्वातस्मिन्नश्विनीकुमारमूर्तिंसंस्थाप्य—नौ यथा ॥ द्विभुजौदेवभिषजौकर्त्तव्यौचारुलोचनौ ॥ तयोरोषधयःकार्य्यादिव्यादक्षिणहस्तयोः ॥ वामयोःपुस्तकेकार्य्येदर्शनीयेहिरण्मये ॥ एकस्यदक्षिणेपार्श्वेवामेचान्यस्यशक्तितः ॥ रौक्म्यौशक्तीचारुरूपे रत्नयुक्तेशुभांबरे ॥ कार्येतन्नामनीभोक्तरूपसंपत्तथाकृती ॥ एवंकृत्वा संपूज्य ब्राह्मणंवृत्वायथाकाममुल्लिख्यदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ नासत्यदस्रौयुवयोर्हिरण्यरूपप्रदानान्ममशांतिरस्तु ॥ यथायुवांदेवभिषक्तमेतां तथाचमेरोगशमायदेवौ ॥ इत्यश्वि०कु०दानम् ॥ अथबुधाष्टम्यांसर्वरोगहरंत्रिमूर्त्तिदानम् ॥ पुण्यदिनेगोमयोपलिप्तमंडलेहस्तायामंवेदिकात्रयंकृत्वातेषुतंडुलराशिंविधायराशिषु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराणांहिरण्मयीश्चतुर्भुजाःकिरीटिन्यःसर्वायुधांबरामूर्तीर्भृत्वासंपूज्य

एकंत्रीन्वाब्राह्मणान्वृत्वायथाकाममुद्धिरण्यदद्यात् ॥ तत्रमंत्राः ॥ त्वयाजगत्सृष्टिकृतासमेतंत्वमेवसर्वस्यपितामहोसि ॥ त्वमेवकर्त्ता जगतांविकर्तात्वमेवधाताजगतांविधाता ॥ त्वत्संप्रदानादनघोय थाहंत्वयाचसायुज्यमुपैमिदेव ॥ तथाकुरुत्वंशरणंप्रपन्नेमयिप्र भोदेववरप्रसादम् ॥ त्वयाजगद्व्याप्तमिदंसमस्तं त्वंविष्णुरित्येवव दंतिसंतः॥त्वय्यैवलीनंप्रविशंतिकल्पेत्वयाधृतंविश्वमनंतमूर्त्ते ॥ त्रिमू र्त्तिदानादनघोभवामि यथा जगत्कारणकारणेश ॥ तथाकु रुत्वंशरणंप्रपन्ने मयिप्रभोदेववरप्रसादम् ॥ त्वयामृराणाममृतं विधाय हालाहलंसंहृतमेवसद्यः ॥ तथासुराणांत्रिपुरंचदग्धमे केषुणालोकहितार्थमीश ॥ त्वद्रूपदानादहमप्यशेषं दोषैर्वि मुक्तांस्तुगणान्प्रपद्ये ॥ तथाकुरुत्वंशरणंप्रपन्ने मयिप्रभोदेववरप्रसा दम् ॥ इत्येवमुक्काविधिवद्ददातिसयातिसायुज्यमथत्रिमूर्त्तेः ॥ यःकारयेद्विप्रवरायतस्मैसुवर्णसंख्यागुणितंहिरण्यम् ॥ दद्याच्चवा सोयुगमादरेणतथाकृतेऽयंलभतेफलंतत् ॥ इति त्रिमूर्तिदान म् ॥ अथापमृत्युहरंत्रिपुरुषदानम् ॥ सुवर्णरक्तिका नांचशतैनैकेनशक्तितः ॥ कार्य्योब्रह्माथविष्णुश्चशंकरश्चतथैव च ॥ पलद्वादशमानेनपीठंलोहेनकारयेत् ॥ देवानांस्थापनार्थाय चक्रवत्परिमंडलम् ॥ तत्रब्रह्मादयःस्थाप्यायमदूतंपुरोन्यसेत् ॥ चतुर्मुखश्चतुर्बाहुःपद्महस्तःपितामहः ॥ शंकरोद्विभुजःशूलीवृषारू ढस्त्रिलोचनः ॥ विष्णुश्चतुर्भुजश्चक्रीगदागरुडवाहनः ॥ यमदूतः पाशपाणिर्दंडवान्विकृताननः ॥ सतुलोहमयःकार्य्योभीतो बद्धइवाग्रतः ॥ ततोविधायदेवानांपूजांपुष्पफलादिभिः ॥ यजमा

नःकरेखड्गंगृहीत्वानिशितंनवम् ॥ इदंशिरश्छिनभीतिदूतस्या स्यदुरात्मनः ॥ इत्युच्चार्य्यशिरश्छित्वादूतस्ययमदिङ्मुखः ॥ तत श्चतुर्भिर्विप्रैस्तुकार्य्यंब्राह्मणवाचनम् ॥ ततोब्रह्मादिदेवानांदानंकु र्य्यात्प्रयत्नतः ॥ देवालयगृहेवापितीर्थेवान्यत्रकुत्रचित् ॥ ब्राह्म णायतुतान्दद्याद्दिव्यांगायसुशीलिने ॥ सुवर्णदक्षिणायुक्तान्ब्रह्मा दीननुपूर्वशः ॥ अपमृत्युभयात्रस्तोयोदद्याद्देवतात्रयम् ॥ तस्य मृत्युर्विनष्टस्स्याद्दानादस्मान्नसंशयः ॥ मृत्युनागृह्यमाणोपिजीवत्ये वनरस्स्फुटम् ॥ इति त्रिमूर्तिदानम् ॥ अत्रैवबुधाष्टम्यांन्यप र्वणिवारुद्राष्टकदानम्॥ गोमयोपलिप्तेचतुरस्रेमंडले सुवर्णनिर्मिता नष्टौरुद्रान्संस्थाप्य तैस्तैर्मंत्रैस्तान्संपूज्य रुद्रमानार्द्धसुवर्णेनतेषां देव्यःपुत्राश्चकार्य्यास्तत्तन्मंत्रैःपूज्याश्च॥तेषांनामानि ॥ तत्रादौरुद्रा यथा ॥ रुद्रोभगश्चशर्वश्चईशःपशुपतिस्तथा ॥ भीमउग्रोमहादेव इति ॥ सर्वेजटिलाश्चर्मवसनाःखट्वांगशूलिनः ॥ देव्यस्तु ॥ सौ वर्चलांगवादाचविकेशीचशिवातथा ॥ स्वाहादिशाचदीक्षाचरो हिणीचतथाक्रमात् ॥ ताश्चस्त्रीवेषधारिण्यस्सर्वाभरणभूषिताः।पुत्रा यथा ॥ शनैश्चरश्चशुक्रश्चलोहितांगोमनोजवः ॥ वसंतःसर्वगःशां तोबुधश्चैवयथाक्रमम् ॥ तेबालवेषाःकर्त्तव्याःशिखिनोदंडपाणयः। स्थंडिलेपद्मानिकृत्वातत्रैतेषांपूजनंकृत्वामध्येब्रह्माणंचसंपूज्य ब्रा ह्मणान्वृत्वायथाकाममुल्लिख्यप्रत्येकमेकंदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ प्रीयतांभगवान्ब्रह्मापरमेष्ठीप्रजापतिरिति ॥ एवंरुद्राष्टकोपेतंदानं दद्यायथाविधि॥सर्वपापविनिर्मुक्तःसर्वसिद्धिमवाप्यच ॥ आयुरारो ग्यसंयुक्तःपुत्रवान्धनवान्सुखी ॥ भुक्त्वाभोगान्यथेच्छंचस्वर्गंगो

क्षंचविंदति ॥ इतिरुद्राष्टकदानम् ॥ अथपुष्यैकादश्यां वान्यस्मिन्पुण्यदिनेवादक्षिणामूर्त्तिदानंमहापातकहरम् ॥ पुण्यभूमौपंचरंगरंजितंकमलंविधाय तत्कर्णिकायांसौवर्णींदक्षिणा मूर्त्तिंसंस्थाप्य—अस्य रूपंतुरुद्रमूर्त्तिवत्—सर्वज्ञंसर्वगंशांतंसर्वकारण कारणम् ॥ सर्वदेवनमस्कृत्यंसर्ववेदांतवेदिनम् ॥ पापेंधनमहावह्निंचं द्रमौलिंमहेश्वरम् ॥ वरदानाभयकरंसर्वागममहार्णवम् ॥ एवंध्यात्वा श्वेतपद्मैःसितचंदनवारिणाचसंपूज्य क्षौमेवाससीपरिधायपायसनैवे द्यंसमर्प्य प्रदक्षिणंकृत्वाचार्य्यंवृत्वा । दानेमंत्रः ॥ भगवन्सर्वभूतज्ञसर्व ज्ञामृतशंकर ॥ त्वत्प्रसादेनमेशेषंपापंनश्यतुसर्वतः ॥ तत्पापंवाङ्म नःकायसंभवंममशंकर ॥ तवरूपप्रदानान्मेविलयंयातुसर्वतः ॥ अ ज्ञेपापेनिराचारेत्वामेवशरणंगते ॥ मयिसर्वाघनाशेनदयांकुरुमहेश्व र ॥ इत्यामंत्र्य शिवःप्रीयतामितिदद्यात् ॥ कामोल्लिखनेनवा ॥ क्रियाकलापमखिलमात्मानोमलसंचयम् ॥ सर्वंनिवेदयेत्तस्मै विश्वरूपायशंभवे ॥ अनेनविधिनायस्तुप्रदद्यात्सर्वनिष्कृतिम् ॥ तस्यसर्वाणिपापानिविनश्यंतिनसंशयः ॥ इति दक्षिणामू०दानम् ॥ अथ हस्तद्वादश्यामतीसारहरमग्निमूर्त्तिदानम् ॥ तत्रवह्नि मूर्तिंयथाविभवंसुवर्णेनताम्रेणज्वालाकुलांरक्तचंदनलिप्तांरक्तवस्त्रवे ष्टितांमेषस्थांरक्तमाल्यमुक्तादामशोभितांचतुर्बाहुमतींसप्तजिह्वान्वि तांत्रिपदांचतुःशृंगांद्विशीर्षांविधायमंडपेसंस्थाप्याग्निमंत्रेणसंपूज्य ब्राह्मणंवृत्वा यथाकामंसंकल्प्यदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ त्रेतारूपोग्निरी ड्यस्त्वमंतश्चरसिवैनृणाम् ॥ त्वंवेत्थप्राक्तनंपापमतीसारंविनाश येति ॥ ततोब्राह्मणान्संभोज्यभूयसींदक्षिणांचदद्यात् ॥ एवं

कृत्वानरःसम्यगतीसारंव्यपोहति ॥ नीरुजःसुसुखीनित्यंदीर्घमायुश्च विंदति ॥ इत्यग्नि०दानम् ॥ **अथ मघायुक्तत्रयोदश्यामन्यस्मिन्पुण्यदिनेवा आत्मप्रतिकृतिदानम्** ॥ आत्मप्रतिकृतिर्नामयन्नोक्तंकस्यचित्पुरा ॥ तदहंसंप्रवाक्ष्यामिदानंमानविवर्द्धनम्। तत्रपुण्यसमयेसौवर्णींभव्यामात्मप्रतिकृतिंसवाहनांसेष्टजनांवस्त्रस्रग्भूषणयुतां कुंकुमादिलिप्तागीकृत्वा स्त्रीचेच्छयनेशयितांकारयेत् ॥ यद्यदिष्टतमंवस्तुतत्पार्श्वतोन्यसेत् ॥ ततोगणेशलोकपालग्रहदेवीदिक्पालान् पूजयित्वा आचार्य्यंवृत्वायथाभिलाषमुल्लिख्यदद्यात्। तत्रमंत्रः ॥ आत्मनःप्रतिमाचेयंसर्वोपकरणैर्युता ॥ सर्वरत्नसमायुक्तातवविप्रनिवेदिता॥ आत्माशंभुःशिवःशौरिःशक्रोदेवगणैर्युतः ॥ तस्मादात्मप्रदानेनपरमात्माप्रसीदतु ॥ इति ॥ ब्राह्मणश्चकोदादितिकीर्त्तयेत् ॥ ततोयजमानःप्रदक्षिणीकृत्यविसर्जयेत् ॥ यश्चात्मनःप्रतिकृतिंवरवाहनस्थांहैमींविधायधनधान्यसमाकुलांच ॥ सोपस्करांद्विजवरायददातिभक्त्याचंद्रार्कवद्दिविविभातिसराजराजः ॥ इति प्रति०दानम् ॥ **अथ श्रवणचतुर्दश्यांमपमृत्युहरंकल्पदानम्** ॥ कल्पानुकीर्त्तनंवक्ष्येसर्वपापप्रणाशनम् ॥ यस्यानुकीर्त्तनादेववेदपुण्येनयुज्यते ॥प्रथमःश्वेतकल्पस्तुद्वितीयोनीललोहितः ॥ वामदेवस्तृतीयस्तुततोराथंतरोपरः ॥ रौरवःपंचमःप्रोक्तःषष्ठःप्राणइतिस्मृतः ॥ सप्तमोथबृहत्कल्पःकंदर्पोष्टमउच्यते ॥ सद्योथनवमःप्रोक्तईशानोदशमःस्मृतः॥ व्यानएकादशःप्रोक्तस्तथासारस्वतोपरः त्रयोदशउदानस्तुगारुडोथचतुर्दशः ॥ कूर्म्मःपंचदशोज्ञेयःपौर्णमासीप्रजायते ॥ षोडशोनारसिंहस्तुसमानस्तुततःपरः॥ आग्नेयोष्टादशः

प्रोक्तःसोमकल्पस्तथापरः ॥ मानवोविंशतिः प्रोक्तस्तत्पुमानि तिचापरः ॥ वैकुंठश्चापरस्तद्वल्लक्ष्मीकल्पस्तथापरः ॥ चतुर्विंशस्त थाप्रोक्तःसावित्रीकल्पसंज्ञकः ॥ पंचविंशोमहा घोरोवाराहस्तुत तोपरः ॥ सप्तविंशोथवैराजोगौरीकल्पस्तथापरः ॥ माहेश्वरस्ततः प्रोक्तोत्रिपुरोयत्रघातितः ॥ पितृकल्पस्तत्परस्तुयाकुहूर्ब्रह्मणस्मृ ता ॥ इत्ययंब्रह्मणोमासःसर्वपापप्रणाशनः ॥ आदावेवहिमाहात्म्यं यस्मिन्यस्यविधीयते ॥ तस्यकल्पस्यतन्नामविहितंब्रह्मणापुरा ॥ यस्तुदद्यादिमान्कृत्वाहैमान्पर्वणिपर्वणि ॥ ब्रह्मविष्णुपुरेकल्पंमुनि भिःपूज्यतेदिवि ॥ सर्वपापक्षयकरंकल्पदानंयतोभवेत् ॥ मुनिरूपां स्ततःकृत्वादद्यात्कल्पान्विचक्षणः ॥ मुनिरूपान्मुन्याकारानित्य र्थः ॥ इति कल्पदानम् ॥ अथ पूर्णातिथिषुदिग्दानम् ॥ प्राच्यादिकुर्वीतदिशश्चतस्रःपृथिवीयुताः ॥ स्त्रीवेषाश्चैवकर्त्तव्याः पूर्णकुंभकरीःशुभाः ॥ गोरूपापृथिवीकार्य्यासर्वलक्षणसंयुता ॥ कृत्वाकमलसंस्थानाःसुवर्णद्वितयेनतु ॥ पूजयित्वाद्विजान्पंचसु वस्त्राभरणैस्ततः ॥ ताम्रपात्रंदलेकृत्वाकदल्याःपीठसंयुताः ॥ यो ददातिप्रदत्तास्यात्पृथिवीतेननिश्चितम् ॥ पितरःपितृलोकस्थादेव लोकेदिवौकसः ॥ संप्रीणयंतितंतुष्टावसुपुत्रधनेप्सितैः ॥ अमाष मन्नंभुंजीतदत्त्वैतद्विधिपूर्वकम् ॥ इति दिग्दानम् ॥ अथ लोक पालाष्टकदानम् ॥ अथदानमहंवक्ष्येसर्वपापप्रणाशनम् ॥ सर्व मंगलमायुष्यमारोग्यंश्रीकरंशुभम् ॥ दानानामुत्तमंह्येतत्सर्वसिद्धि करंपरम् ॥ करोतिदानंनारीवासायुज्यंब्रह्मणोव्रजेत् ॥ विषुवत्य यनेराहोर्ग्रहणेचंद्रसूर्य्ययोः ॥ पूर्णेसुजन्मनक्षत्रेपुण्यदेशेगृहेथवा ॥

चतुरस्रांसमांभूमिंलिप्त्वागोमयवारिणा ॥ वेदिकातु षडष्टौदशहस्ता यथामंडपंकार्य्या ॥ प्राच्योदीच्यानांरेखानांचतुष्टयं कृत्वा तत्र वकोष्ठानिस्युः ॥ मध्यकोष्ठेकमलेसुवर्णमयंब्रह्माणंसमंतात्प्रत्येक कोष्ठेषु इंद्राग्नियमनिर्कृतिवरुणवायुकुवेरेशानान् जातरूपमयान् सायुधवस्त्रवाहनान् ब्रह्मणोऽभिमुखान्कृत्वा कुशवारिणासंप्रोक्ष्य आचार्य्यसहितानष्टौब्राह्मणान्संपूज्यलोकपालान्ब्रह्मसहितान्स्वस्व मंत्रैःसंपूज्य यथाकाममुल्लिख्यदद्यात् ॥ आचार्य्याय—दक्षिणादश निष्कास्याद्भूषणैश्चसमन्विता ॥ अत्रहोमंपूर्वस्यांलोकपालमंत्रैः॥ शेषंकुंडमंडपवेदिकावितानादिसर्वंतुलापुरूषदानवत्कर्त्तव्यम् ॥इति लोक० दानम् ॥ अथहस्तार्केद्वादश्यांसप्तम्यांवाचक्षूरोगहरं द्वादशादित्यदानम् ॥ अथदानमहंवक्ष्येपुण्यमादित्यसंज्ञितम्॥ कर्त्तुःपापहरंश्रीदमायुष्यंभुक्तिमुक्तिदम् ॥ चाक्षुष्यंसर्वरोगघ्नंसर्व सिद्धिफलप्रदम् ॥ आलिप्यवैद्वादशहस्तदैर्ध्यांक्षितिंतथागोमयसं युताद्भिः ॥ तस्मिन्मितैस्तंडुलपुंजकैश्चविस्तारयेद्वादशपंकजा नि ॥ प्रादेशमात्राणिशुभानितानिसकर्णिकान्यष्टदलेषुतेषु ॥ हिरण्यरूपाणिरवेर्निधाययथाक्रमादुत्तरतोपवर्गः ॥ प्रत्यङ्मुखा न्प्राङ्मुखएवदेवांस्तद्वर्णगंधादिभिरर्चयित्वा॥ दद्यादपूपंसघृतंगुडाक्तं वस्त्रैरथावेष्टचयथाक्रमेण ॥ प्रत्येकमेकंद्विजपुंगवानामाराध्यगंधा दिभिरादरेण ॥ संप्रीयतामित्यथचक्रमेणप्रत्येकमुच्चार्य्यतदीयना म ॥ धाताचमित्रश्चततःपरेणमार्त्तंडनामाचतथार्य्यमाच ॥ शक्रश्च देवोवरुणस्तथासौभगोविवस्वान्नवमस्तथैषाम् ॥ आदित्यनामास्त्वितातथान्यस्त्वष्टास्तथैकादशएवतेषाम् ॥ विष्णुस्तथाद्वादशएव

मंत्रैराराधयेद्देववरान्द्विजांश्चेति ॥ अन्यत्सर्वंतुलापुरुषदानविधान वद्विधेयम् ॥ इत्यादित्य दानम् ॥ अथ पौर्णमादिपर्वस्वायुष्कर दानम् ॥ अथदानंप्रवक्ष्यामिह्यपमृत्युनिवारणम् ॥ आयुष्करमि तिप्रोक्तमारोग्यंसर्वसिद्धिदम् ॥ यत्रसाधनसिद्धःस्यात्तत्रदानंसमाचरेत् ॥ भूमौगोमयलिप्तायांदक्षिणोत्तरतःशुभम् ॥ निधायत त्रपाणिभ्यांपूर्णानिसिततण्डुलैः ॥ चत्वारितेषुहैमानिमण्डलानि निवेशयेत् ॥ सौवर्णांश्चततोदेवानर्चयेच्चयथाक्रमम् ॥ पूर्व मात्मभुवंतत्रविष्टर श्रवसायुतम् ॥ कृत्तिवाससमीशानंवज्र पाणिंशतक्रतुम् ॥ आत्मभूर्ब्रह्मा ॥ विष्टरश्रवाःविष्णुः ॥ ईशानः शिवःप्रसिद्धः ॥ एतेषांलक्षणमुक्तंब्रह्माण्डदाने ॥ एतेचयथाश क्तिसुवर्णमयाविधातव्याः ॥ गन्धादिभिरथाभ्यर्च्यदक्षिणोत्तरतःक मात् ॥ प्रत्येकमेकंविप्रेभ्योदद्यादाराध्यभक्तितः ॥ तंतंदे वमितिध्यात्वामंत्रानेतानुदाहरेत् ॥ संप्रीयतांमेभगवानात्मभू रित्युदीरयेत् ॥ संप्रीयतांजगद्व्यापीभगवान्विष्टरश्रवाः ॥ संप्रीयतांमेभगवान्वज्रपाणिःशतक्रतुः ॥ अन्यत्सर्वंतुलापुरुषो क्तवद्विधेयम् ॥ इत्यायुष्कर दानम् ॥ अथ सोमवारयुता यांभौमवारयुतायांवामायांचंद्रसूर्य्यदानम् ॥ अत्रद्वादशां गुलवृत्तमंडलाकारंसूर्य्यबिंबंसौवर्णंतथैवचांद्रंराजतंसकर्णिकंपद्मा कारंकृत्वा तत्रापिघानुंघृतपूरितेताम्रपात्रेसोमंक्षीरपूर्णेशंखेसंस्था प्य ॐ अमृतमूतर्येसोमायनमःॐखोल्कायनमः इतिमंत्राभ्यांद्व योःपूजनंविधाय ब्राह्मणमाचार्य्यंवृत्वाआहिताग्निंसंपूज्य यथाभि लाषंकाम्यसंकल्पंकृत्वादद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ रुक्मंचपुरुषंचैवप

र्णंपुष्करमेवच ॥ त्रयीतुविद्यासांगातुयस्यांगंविश्वरूपिणः ॥ स वैचंडकरोदेवःप्रीयतांविप्रमाचिरम् ॥ एवमुच्चार्य्यभानुंतुब्राह्मणा यनिवेदयेत् ॥ क्षीरजंदेवदेवंचद्विजराजंतथैवतु ॥ सुधामूर्तिं शीतांशुंतेददामिद्विजोत्तम ॥ गायत्र्याचैवसूर्य्यस्यग्रहणजाग्रतेद दा— सोमंतरत्समंदीत्यादिजपेत् ॥ ततःसुवर्णदक्षिणांदत्वाब्रा ह्मणांश्चभोजयेत् ॥ सर्वंतेनतुदत्तंस्यादोदयाच्चंद्रभास्करावितिं ॥

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेयौगिकपर्वदानविधि
र्नामएकोनात्रिंशः कोशः ॥ २९ ॥

---

अथानंतफलदानानि ॥ तानितु ॥ संपादयेच्चनियमादारोग्यं भोगसाधनम् ॥ अभयंपांथशुश्रूषामन्नोदकमहीरुहान् ॥ अनंतफ लदान्याहुर्दानान्येतानिसूरय इति ॥ तत्रादावारोग्यदानम् ॥ आरोग्यदानात्परमंनदानंवियतेक्वचित् ॥ अतोदेयंरुजार्तानामा रोग्यंभाग्यवृद्धये ॥ औषधंपथ्यमाहारंतैलाभ्यंगंप्रबिश्रयम् ॥ यःप्रयच्छतिरोगिभ्यः सभवेद्व्याधिवर्जितः ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणा मारोग्यंसाधनैर्युतम् ॥ अतस्त्वारोग्यदानेननरोभवतिसर्व दः ॥ आरोग्यशालांकुरुतेमहौषधपरिच्छदाम् ॥ विदग्धवै द्यसंयुक्तांभृत्यावसथसंयुताम् ॥ आरोग्यशालामेवंतुकुर्य्याद्योधर्म संश्रयः ॥ सपुमान्धार्मिकोलोकेसकृतार्थः सबुद्धिमान् ॥ स म्यगारोग्यशालायामौषधैःस्नेहपाचनैः ॥ व्याधितंविरुजीकृत्यअ प्येकंकरुणायुतः ॥ प्रयातिब्रह्मसदनंकुलसप्तकसंयुतः ॥ आ ढ्योवित्तानुसारेणदरिद्रःफलभाग्भवेत् ॥ दरिद्रस्यकुतःशालाआ रोग्यौषधयुग्वा ॥ अपिमूलेनकेनापिमर्दनादैरथापिवा ॥ स्व

स्थीकृतेभवेन्मर्त्यःपूर्वोक्तालोकअव्ययः ॥ वातापित्तकफाद्यानां चयापचयभेदिनाम् ॥ यस्तुस्वल्पाभ्युपायेनमोचयेद्व्याधिपीडितान् ॥ सोपियातिशुभाँल्लोकानवाप्यान्यज्ञयाजिभिः ॥ रोगिणोनोद्विजेत्प्राज्ञोदुर्बलानपिसर्वदा ॥ तान्पापानामुवाचेत्थमेवंधर्मःप्रवर्त्तते ॥ योनुग्रहीतमात्मानंमन्यमानोदिनेदिने ॥ उपसर्पेतरोगार्त्तस्तीर्णस्तेनभवार्णवः ॥ तस्माद्रोगापवर्गार्थंरोगार्त्तसमुपाचरेत् ॥ विशेषेणतुयोगींद्रंशरीरेणधनेनच ॥ इत्यारोग्यदानम् ॥ अथरोगहरदानानि ॥ आधयोव्याधयश्चैवशरीरपरिशोषिणः ॥ पुण्यंतत्परिहारार्थंकर्त्तव्यंहितमिच्छता ॥ ज्वरोतिसारोयक्ष्माचगुल्मशूलभगंदराः ॥ कुष्ठाग्निरोगौवातश्चकंठशूलमसूरिकाः कंठदंताक्षिकर्णेतुशिरोरोगोपजिह्वके ॥ त्रिदोषसंभवाःसर्वेरोगाः प्राणिभयंकराः ॥ ग्रंथयोमूत्रकृच्छ्रोचबस्तिरोगोमहोदरम् ॥ एते चान्येचबहवोमहावेगामहाबलाः ॥ व्याधयःशतसंख्याकामृत्योर्हेतवएवते ॥ यद्यद्रोगशमंकुर्य्यात्तत्तत्कार्य्यंमनीषिभिः ॥ औषधंजपहोमादिदानंदेवार्चनादिकम् ॥ सर्वरोगप्रशमनंसौवर्णंदानमुच्यते ॥ ज्वरेमसूरिकायाश्चराजयक्ष्मणिचैवतत् ॥ गुल्मेतथायसंप्रोक्तंकुष्ठे राजतमुच्यते ॥ रत्नदानाच्छमंयांतिगुदोत्पन्नाश्चसर्वशः ॥ शमःस्यादंततोव्याधेर्भूदानान्नात्रसंशयः ॥ शमार्थंवातरोगाणांवासोदानंविधीयते ॥ कंठजिह्वोद्भवादीनांरोगाणांशांतिमिच्छता ॥ धान्यंवासोहिरण्यंवादातव्यानिप्रयत्नतः ॥ सुवर्णदानंसर्वेषांरोगाणांशमकारणम् ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनदातव्यंसुखमिच्छता ॥ तथा चरत्नरजतैर्यथाशक्त्यानुरूपतः ॥ कृत्वाचप्रतिमांव्याधेर्दद्याद्विप्राय

यत्नतः ॥ शतेनवातदर्द्धेनत्रिंशतानिष्कसंख्यया ॥ जातरूपमयंव्याधेः प्रतिरूपंतुकारयेत् ॥ निधायपात्रेसंपूर्णंतंडुलैःशतरूपकैः ॥ अलंकृत्यचसौवर्णंरूपंत्वगरुलेपनैः ॥ वासोयुगेनसंवेष्टयहिरण्यबहुभूषणैः ॥ अलंकृतायविप्रायदत्वामंत्रमुदीरयेत् ॥ येमांरोगाःप्रबाधंतेदेहस्थाःसततंतताः ॥ गृह्णीष्वप्रतिरूपेणतान्रोगान्द्विजसत्तम ॥ बाढमित्येवतद्रूपंगृह्णीयाद्व्याधिभिःसह ॥ ततस्त्वरोगीदाताचदीर्घायुष्ट्वं प्रपद्यते ॥ एवंबहुविधंशांत्यैरोगाणामिहकीर्त्तितम् ॥ यत्कृत्वासर्वरोगेभ्योमुच्यतेव्याधिपीडिताः ॥ इति प्रतिरूपदानानि ॥ **अथभोगदानानि ॥** तत्रादौरत्नदानम् ॥ रत्नानिचद्विजेंद्रयाद्बहुमूल्यानिमानवः ॥ अलंकारनिमित्तंवादेवताभ्योतियत्नतः ॥ सपापतापनिर्मुक्तोमुक्तिमेवसमश्नुते ॥ नरत्नेभ्यःपरंवस्तुज्यायोस्तित्रुवनत्रये ॥ अतस्तद्दानतोन्यत्स्यात् फलंतत्केनवर्ण्यते ॥ तथा ॥ समुद्रजानिरत्नानिनरोविगतकल्मषः ॥ दत्त्वाविप्रायमहतेप्रामोतिमहतींश्रियम् ॥ विद्रुमाणां प्रदानेनरुद्रलोकंव्रजेन्नरः ॥ सर्वपातकनिर्मुक्तोमुक्तादानेनजायते ॥ लोकमामोतिदानेननरोवज्रस्यवज्रिणः ॥ तथाप्रदत्तैर्गोमेदैर्मोदतेनंदनेवने ॥ सर्वेग्रहाःप्रतुष्यंतिपुष्यरागस्यदानतः ॥ गारुत्मतैर्मरुत्वंतंनियतंजयतिश्रिया ॥ वैडूर्य्यैःसूर्य्यलोकंचपद्मरागैररोगताम् ॥ प्रदानादिंद्रनीलानांलीलानांभाजनंभवेत् ॥ सुखीशंखप्रदानेनशक्तिंशुक्तिप्रदानतः ॥ इति भोगदानानि ॥ **अथभगंदररोगहरंनवरत्नदानम् ॥** माणिक्यंपद्मरागंचवज्रंवैडूर्य्यमेवच ॥ गोमेदमौक्तिकंपुष्यरागंमरकतंतथा ॥ हरितंचनवैतानिस्तु

र्णपात्रोपरिन्यसेत् ॥ अथवाराजतेताम्रेचाज्येनपरिपूरयेत् ॥ नव ग्रहाणांप्रीत्यर्थंब्रह्मणानिर्मितंपुरा ॥ गंधपुष्पाक्षतैर्धूपैर्नैवेद्यैस्तान्प्र पूजयेत् ॥ स्वलिंगैश्चैवमंत्रैश्चहोमःकार्य्यस्तुपूर्ववत् ॥ ततोब्राह्मणं माहूयसर्वशास्त्रार्थकोविदम् ॥ मंत्रस्तु ॥ आदित्यादिग्रहाःसर्वेन वरत्नप्रदानतः ॥ विनाशयंतुमेहृष्टाःक्षिप्रमेवभगंदरम् ॥ अनेनकर्म णानूनंयथावद्विहितेनतु ॥ नरोनैरुज्यमाप्नोतिनिस्संदिग्धंभगंदरी ॥ इति नवरत्नम् ॥ अथ व्रणघ्नरत्नदानम् ॥ माणिक्यंवज्रसहि तमव्रणंजातितःशुभम् ॥ रक्तवस्त्रेणसंवेष्टयखारिकापंचकोपरि ॥ यद्वाविभवसारेणमाणिक्यंयवपुंजके ॥ निधायगंधपुष्पाद्यैरर्चयेद्भ क्तिपूर्वकम् ॥ सौवर्णेनोपवीतेनविप्रंवस्त्रांगुलीयकैः ॥ पूजयित्वार्प येत्तस्मैमंत्रेणानेनसुव्रती ॥ देवसूर्य्यजगन्नाथसर्वलोकनमस्कृत ॥ माणिक्यवज्रदानेनप्रणाशयममव्रणम् ॥ व्रणाश्शस्त्रेणयेपिस्युर्विष दिग्धेनसंयुगे॥ तेपिशुद्धाःप्ररोहंतिच्छिन्नशाखाइवानिलात् ॥ इति व्रणघ्नरत्नदानम् ॥ अथ गलगंडघ्नरत्नदानम् ॥ गलगंडी गलद्रव्यहर्ताभवतिमानवः ॥ दानेनतत्प्रतीकारं वक्ष्यामिसुखदंनृणाम् ॥ मणिक्यपद्मरागवज्रगोमेदवैडूर्य्यपु ष्यरागपाचिकामरकतमालांस्वर्णसूत्रेविधाय अशक्तौपाचिकायन्य तमैःमालांकृत्वाताम्रपात्रेतिलद्रोणपंचकोपरिधृत्वासंपूज्य नवग्रहपूज नंकृत्वा आचार्यंसंपूज्य आसत्येनतथा० गणानां० ॥ यइ दं० सोमंराजानं० एभिःसमिदाज्यतिलान्हुत्वा स्विष्टकृतंहुत्वा मालांयथाकाममुल्लिख्यदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ मालेयंसार्वदैवत्या ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः ॥ रुद्रादिलोकपालैश्चतथासर्वामरैरपि ॥ सत

तंकंठलग्नायाधारितापीतिपूर्वकम् ॥ ब्राह्मणायप्रदास्येहंगलगंडंव्यपो हतु॥ इतिगल०दानम् ॥ अथालंकारदानम्॥ द्विजातिभ्यस्तुयोदद्या दलंकारान्समुज्ज्वलान् ॥ स्वलंकृतःस्वर्गलोकेक्रीडत्यप्सरसांगणैः॥ अलंकारप्रदानेनसुरूपःसुभगोभवेत् ।। तथालंकारदानेनदीर्घमायु श्चविंदति ।। नराभरणदानेनतुष्टियातिसदाशिवः ॥ योषिदाभर णैर्दत्तैःप्रीयतेहिमशैलजा ॥ मूर्द्धाभरणदानेनव्रजेन्मूर्द्धाभिषिक्तता म्॥ कर्णजैःकर्णकीर्त्तिःस्याल्लक्ष्मीःकंठैरकुंठिता॥ पाणिजैःपाणिजै त्रःस्याज्जघनैरजघन्यजः॥ जानुजैरनुजैत्रःस्याच्छरणंचरणोद्भवैः॥ इत्यल०दानम् ॥ अथ वस्त्रदानम्॥ वस्त्रंवस्त्रार्थिनेदद्याच्छुभंवापि यदृच्छया।सभवेद्धनवान्श्रीमान्बृहस्पतिपुरेवसेत् ॥ योगिनांचदरि द्राणांयेचवस्त्रप्रदानराः ॥ तेषांदिव्यानिवस्त्राणिसुगंधीनिमृदूनिच ।। वातश्चैवप्रवहतिसुगंधोह्यमृतोपमः ।। दत्त्वाकार्पासकंवस्त्रंस्वर्ग लोकेमहीयते॥ दत्त्वासरोमतत्रापिफलंदशगुणंभवेत् ॥ आविकंवसनं दत्त्वाशतगुणांल्लोकमाप्नुयात् ॥ छागंदत्त्वाचांगिरसंक्षौमंदत्त्वांबृहस्प तेः।।चसूनांलोकमाप्नोतिकुशकौशेयवाससी।।कृमिजंचतथादत्त्वासो मलोकेमहीयते ॥ अग्निष्टोममवाप्नोतिदत्त्वावामृगलोमजम् ।। दत्त्वावल्कलजंवासोवसूनांलोकमाप्नुयात् ।। समोचकाकदल्पा दिदत्त्वाचैत्रेतथाजिनम् ॥ वारवाणमुरस्त्राणंशिरस्त्राणंतथैवच ।। पादत्राणं चददतः पृथग्यज्ञफलंलभेत् ।। वस्त्रदानंपवित्रंतुपितृणाम पितारणम् ॥ कौसुंभरक्तंदत्त्वातुसौभाग्यंमहदाप्नुयात् ॥ दा नात्कुंकुमवस्त्रस्यलावण्यंमहदाप्नुयात् ॥ रंगैरन्यैश्चनीलैश्चरक्तंद त्त्वासुस्त्रीभवेत् ॥ यथायथाहिवस्त्रस्यभवतीहमहर्घता ।। यथाय

थातुशुभतातथापुण्यफलंमहत् ॥ इति वस्त्रदानम् ॥ अथ रुद्रै कादशवस्त्रदानम् ॥ वस्त्रयुग्मंसितंसूक्ष्ममेकैकस्यचकल्पयेत् ॥ एकादशानांविप्राणांतत्संख्यारुद्ररूपिणाम् ॥ गंधपुष्पैरलंकृत्यभोजं यित्वाविधानतः ॥ तत्रमंत्रः ॥ प्रसीदंतुभवोनित्यमस्माकंकृत्तिवा सनः ॥ वस्त्राण्यस्मत्प्रदत्तानिप्रतिगृह्णातुशंकरः ॥ इति ॥ एव मेवसर्वेभ्योदेवेभ्यः ॥ इत्येका०रु०व०दानम् ॥ अथ शोक हरवस्त्रदानम्॥विघ्नकर्त्ताचवस्त्राणांशोकीभवतिमानवः॥तस्यकर्म विपाकोत्थंव्याधिनाशनमुत्तमम् ॥ तदित्थंबहुमूल्यंक्षौमंवस्त्रंमुक्ता ग्रथितंकुंकुमांकितं कर्पूरागरुधूपितंतंदुलोपरिसंस्थाप्य युवासुवा साइतिसंपूज्य उद्बुध्यस्व० इदंविष्णु० आयस्मिन्सप्त० ॥ इतिमंत्रैस्तिलाज्यसमिद्धोमंकृत्वा यदस्यकर्मणोत्यरीरीतिपूर्णाहुतिं दत्त्वा संपातेनागमज्वा अक्षीभ्यामितिसूक्तेनांगानिसंमृज्य यथाका ममुल्लिख्यवस्त्रंदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ ऋषीणांप्रवरोगस्त्योलोपामु द्रापतिःप्रभुः ॥ क्षौमवस्त्रप्रदानेनतुष्टोव्याधिंव्यपोहतु ॥ त तोभूयसींदक्षिणां दद्यात् ॥ इतिव०दनम् ॥ अथोष्णी षदानम् ॥ उष्णीषदायिनोमर्त्याजायंतेमुकुटोज्वलाः ॥ विस्ती र्णेराजवंशेतुसितच्छत्राढ्यलक्षणाः ॥ विधिस्तुपूर्ववत् ॥ इत्युष्णीष दानम् ॥ अथोर्णावस्त्रदानम् ॥ निष्किंचनेभ्योदीनेभ्यःशीत वातमहातपैः॥अर्दितेभ्योकरुणयावस्त्रमौर्णंददातियः॥ नतस्यसुकृतं वक्तुंशक्यतेत्रिदशैरपि॥आधिव्याधिविनिर्मुक्तःसोक्षयंसुखमश्नुते ॥ इत्यूर्णादानम् ॥ अथासनदानम् ॥ सुगंधिचित्राभरणोपशोभितं यस्त्वासनंवेदविदेप्रदद्यात् ॥ ग्रामाधिपत्यंलभतेमनुष्यः कुलेमहत्त्वं

सलभेत्समग्रम् ॥ इत्यासनदानम् ॥ **अथापाकदानम् ॥** म णिकादीनिशुभ्राणिस्थाल्यश्चसुमनोहराः ॥ घटकान्करकांश्चैवप्र णीताःकुंडकानिच ॥ शरावादीनिपात्राणिभांडान्युच्चावचानिच ॥ अलिंजराःप्रतिघटामंथनीकटहानिच ॥ एवमन्यच्चयत्किंचिदुपभो ग्यंभवेद्गृहे ॥संपादयेन्मंडलेतुलेपितेगोमयादिना॥हैमरौप्याणिभांडा नितास्रलोहमयानिच।परितःस्थापयित्वाचस्वशक्त्यातानिषोडश॥ तानिचत्वारिचत्वारिन्यसेत्पूर्वादिदिक्रमात् ॥ पूजयित्वाप्रयत्ने नहुत्वाचापिहुताशनम् ॥ नार्घ्यश्चाविधवास्तत्रसमानीयप्रपूजयेत् ॥ प्रदक्षिणंततःकृत्वामंत्रेणानेनपूजयेत् ॥ आपाकब्रह्मरूपोसिभांडा नीमानिजंतवः॥प्रदानांतेप्रजापुष्टिःस्वर्गश्चास्तुममाक्षयः ॥ **दानमंत्र स्तु ॥** भांडरूपाणियान्यत्रकल्पितानिमयाकिल ॥ भूत्वासत्त्वा नुरूपाणिचोपतिष्ठंतुतानिवः ॥ ॐअग्नेत्यादि० इममापाकंनाना भांडरचितंविष्णुदैवतंनानाजनेभ्यःसौभाग्यावैधव्यंसर्वगुणोपेतगृहप्रा प्तिपुत्रपौत्रादिसंततिस्वाम्ययोग्यसदासुखकामोहमुत्सृजामीति॥ यो ह्यर्थीयेनभांडेनतत्तस्यप्रतिपादयेत् ॥ स्वेच्छयाचैवगृह्णातुनिवा र्य्यस्तुकश्चन ॥ अनेनविधिनायस्तुदानमेतत्प्रयच्छति ॥ विश्वकर्म्मा भवेत्तुष्टस्तस्यजन्मनिजन्मनि ॥ नारीदत्त्वातुसौभाग्यमतुलंप्रतिपद्य ते ॥ गृहंसर्वगुणोपेतंभृत्यमित्रजनैर्वृतम् ॥ अवियोगंसदा भर्त्तुरूपंचानुत्तमंलभेदिति ॥ **अथताम्रपात्रदानम् ॥** अथातः संप्रवक्ष्यामिपात्रदानमनुत्तमम् ॥ कृत्वाताम्रमयंपात्रंयथाविभवविस्त रम् ॥ तत्पात्रेहैमींलक्ष्मीनारायणप्रतिमांमुमामहेश्वरप्रतिमांचसंपूज्य द्विजमपिपूजयित्वा परापवादपैशून्याभक्ष्यभक्षणादिशरीरोत्थसक

लपापनाशकामोगोत्रायशर्मणेसुपूजितायइदंताम्रपात्रंउमामहेश्वरल
क्ष्मीनारायणप्रतिमासहितंचतुभ्यमहंसंप्रददे नममेति ॥ मंत्रस्तु ॥
परापवादपैशून्यादभक्ष्यस्यचभक्षणात् ॥ पापंगात्रोत्थितंताम्रपात्रदा
नात्प्रणश्यत्विति ॥ एवंसंकल्पवाक्यम् ॥ प्रतिमादिसर्वपात्रदानेषुबो
ध्यम् ॥ इति ताम्रपात्रदानम् ॥ अथप्रसंगात्ताम्रदानम् ॥ संक
ल्पादि० आरोग्यबलवृद्धिसूर्य्यप्रीतिकामः ॥ मंत्रस्तु ॥ सूर्य्यप्रीतिक
रंताम्रमारोग्यबलवर्द्धनम् ॥ तस्मादस्यप्रदानेनशांतिरस्तुसदाममेति ॥
इति ताम्रदानम् ॥ अथकांस्यपात्रदानम् ॥ वाराहे ॥ संकल्पादि०
कामकृताकामकृतपापनाशकामः । मंत्रस्तु ॥ यानिपापान्यनेका
निकामाकामकृतानिच ॥ कांस्यपात्रप्रदानेनतानिनश्यंतुमेसदेति ॥
इति कांस्यपात्रदानम् ॥ अथ प्रसंगात्कांस्यदानमपि ॥ संक
ल्पादि० ब्रह्मविष्णुशिवप्रीतिकामः ॥ मंत्रस्तु ॥ कांस्यंब्रह्मशिवौसा
क्षात्कांस्यमेतद्विभावसुः ॥ कांस्यंविष्णुमयंयस्मादतःशांतिंप्रयच्छ
मे ॥ इति कांस्यदानम् ॥ अथ लोहपात्रदानम् ॥ संकल्पादि० ॥
ज्ञानज्ञानांकृतंपापंमयालोभात्कृतंचिरात् ॥ लोहपात्रप्रदानेनम
मशीघ्रंव्यपोहतु ॥ इति लोहपात्रदानम् ॥ अथ रौप्यपात्र
दानम् ॥ संकल्पादि० कन्यादूषणपरदाराभिमर्शनादिपापक्षय
कामः ॥ मंत्रस्तु ॥ कन्यादूषणतःपापंपरदाराभिमर्शनात् ॥
रौप्यपात्रप्रदानेनतानिनश्यंतुमेसदेति ॥ इतिरौप्यपात्रदानम् ॥
अथ सुवर्णपात्रदानम् ॥ संकल्पादि० जन्मांतरसहस्रोत्थदु
ष्कृतनाशकामः ॥ मंत्रस्तु ॥ जन्मांतरसहस्रेषुयत्कृतंदुष्कृतं
मया ॥ तत्सर्वंनाशमायातुस्वर्णपात्रप्रदानतः ॥ अथ सपायसस्था

स्थालीदानम् ॥ कृत्वाताम्रमयींस्थालींपलानांपञ्चभिःशतैः ॥ अशक्तस्तुतद्वर्द्धेनतर्द्धार्द्धेनवापुनः ॥ अत्यशक्तोमृन्मयींपायसपूर्णांघृतशर्कराशाकजलपात्रयुतांचसवस्त्रांमंडलेसंस्थाप्यगंधमाल्यादिनालंकृत्यअद्येत्यादि० यावज्जीवंसकुटुंबस्ययथेष्टमन्नमक्षयभोज्यादिलाभकामः इमांस्थालींपायसपूर्णांघृतशर्कराशाकजलपात्रवस्त्राभृतां मंडलस्थांसालंकृतांगोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तुः ॥ इमांपायससंपूर्णांयः स्थालींघृतजलादिभिः ॥ दद्यात्सपत्तिपात्रंस्यादतःपाहिमहेश्वरेति ॥ सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ अथाभयदानम् ॥ सएकःपुरुषोलोकेसर्वधर्मभृतांवरः ॥ वधभीतस्ययःकुर्य्यात्परित्राणंनरोत्तमः ॥ शक्रलोकेस्थितिस्तस्ययावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ तमःप्रवेशभीतस्यपरित्राणेनमानवः ॥ ब्रह्मलोकमवाप्नोति नात्रकार्य्याविचारणा ॥ तमःप्रवेशनंचक्षुरुत्पाटनादिनांधीकरणम् ॥ वधादपिपरंपापंचक्षुषांतुवियोजनात् ॥ समर्थेननतत्कार्य्यंकदाचिदपिकस्यचित् ॥ तमःप्रवेशनंकृत्वापरेषांपुरुषाधमः ॥ अंधत्वंध्रुवमाप्नोतियत्रयत्रापिजायते ॥ अपिकल्पसहस्राणितमसाह्यभियुज्यते ॥ अंगच्छेदनभीतस्यकृत्वात्राणंविनिर्मितम् ॥ रुद्रलोकमवाप्नोतिकल्पाशेषमितिश्रुतिः ॥ कल्पादिसर्गेभवतिज्ञानयुक्तोनरस्ततः ॥ कृत्वाबंधनभीतस्यपरित्राणं नरोत्तमः ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तोवायुलोकेमहीयते ॥ आसेधनाद्विनीतस्यत्राणंकृत्वातथानरः ॥ सर्वदुःखविनिर्मुक्तःसाध्यलोकमवाप्नुयात् ॥ ताडनाद्यस्तुभीतस्यत्राणंतत्समाचरेत् ॥ सर्वदुःखविनिर्मुक्तो [illegible]लोकमश्नुते ॥ विवासनाच्चभीतस्यत्राणंकृत्वातथानरः ॥

सर्वलोकमवाप्नोतिमानुष्यस्थानमुत्तमम् ॥ धनापहारभीतस्यत्राणं कृत्वानरोत्तमः ॥ दानपुण्यमवाप्नोतिलोकंदानदएवच ॥ अवमाना च्चभीतस्यत्राणंकृत्वानरोत्तमः ॥ स्वर्गलोकमवाप्नोतिपूजांदेवगणात्त था॥नरःकृतपरित्राणःपुण्यंकिंचिद्यआचरेत् ॥ भागीतस्यपरित्राता नरःपुण्यस्यकर्मणः ॥ पशूनां चमृगाणांचपक्षिणांचेद्विजन्मनाम् ॥ नाकलोकमवाप्नोतिसुखीसर्वत्रजायते॥यावंतितस्यरोमाणितावद्वर्षा णिमानवः ॥ सर्वलोकमवाप्नोतिअस्यत्राणंकरोत्यसौ॥अपिकीटपतं गस्यत्राणात्स्वर्गमवाप्नुयात् ॥ बहून्यब्दसहस्राणिदेवेभ्यस्तत्रमोद ते ॥ चौरग्रस्तंनृपग्रस्तंरिपुग्रस्तंविमोचयेत् ॥ व्यालग्रस्तमृणग्रस्तं सोश्वमेधफलंलभेत् ॥ उपदेशंतथाकृत्वाभिषक्मूल्यंविनैवच ॥ प्रा णदानफलंप्राप्यनाकलोकेमहीयते ॥ येरक्षणायाभिरतामनुष्याभी रूनूगतास्तेत्रिदशेंद्रलोके ॥ अवंतिनाथापिचतेनृवीराःकालेपितेषां व्यवनंचनास्ति ॥ इत्यभयदानविधिः ॥ अथपांथपरिचर्य्या ॥ पांथंपरिचरेद्यस्तुशयनासनभोजनैः ॥ सःस्वल्पेनप्रयासेनलोकान् जयतियाजिनाम् ॥ प्रतिश्रयंसुनिर्वातंशुचिभूमितलंशुभम् ॥ अध्वनीनाय संपाद्यसद्योदहतिपातकम् ॥ वर्षायांपुष्कलतमे हेमंतेशिशिरेषुच ॥ ग्रीष्मेचशीतलतलेपांथंविश्रामयेत्सुधीः ॥ दत्वावासोविक्लवायरोगिणोरुक्प्रतिक्रियां ॥ तृषार्त्तायजलं स्वादुमृष्टमन्नंबुभुक्षवे ॥ पथिकायथा वित्तंसर्वतरतिदुष्क तम् ॥ अध्वन्यमनुमान्यापिशाकमूलफलैर्जलैः ॥ सकृत्सत्कृत्य वाचापिश्रेयसोभाजनंभवेत् ॥ अध्वगानांसुखार्थायमार्गसत्कारका रिणः ॥ अगाधजलसंचारेतेषांनौकाधिकारिणः ॥ प्रपामपांरसैर्दि

ब्यैः पूर्णांपथिकहेतवे ॥ येकुर्वंतिनराःपुण्याःसर्वेतेस्वर्गभागिनः तथाच ॥ मार्गेसेतुसुखंकृत्वावह्निष्टोमफलंलभेत् ॥ जलप्रतरणेसेतुंयःकरोतिनरोत्तमः ॥ सतीर्णःसर्वदुःखेभ्योनाकलोकेप्रपद्यते ॥ शर्करालोष्टपाषाणकंटकानितथानरः ॥ मार्गादपास्ययत्नेनगोदान फलमाप्नुयात् ॥ श्रांतसंवाहनंकृत्वातदेवफलमश्नुते ॥ वीजयित्वातथा पांथंतालवृंतेनमानवः ॥ स्कंधेनश्रांतमूह्यापिवाजपेयफलंलभेत् ॥ वा हनेनाथयानेनस्वेदश्रांतंतथावहन् ।साध्यानांलोकमासाद्यदेवभोगानु पाश्नुते ॥ श्रांतस्यभोजनंदत्वास्थानमाप्नोतिशाश्वतम् ॥ श्रांतंतुत र्पितंतोयैःस्वस्तिप्राप्नोतिमानवः ॥ उपानद्भ्यांचछत्रेणश्रांतंसंयोज्य मानवःसंस्थाप्यशुभदेशेषुक्षणाद्बहुफलंलभेत् ॥ भारश्रांतस्यवाभारं गृहीत्वावहतेतुयः ॥ कर्मणातेनपुण्यात्मास्वर्गलोकमुपाश्नुते ॥ मू ल्येनवागृहीतायः परभारंविचक्षणः ॥ अश्वमेधस्ययज्ञस्यफ लंदशगुणंलभेत् ॥ रक्षणंपथितत्कृत्वापांथानांमानवोत्तमः ॥ प्राप्यवृद्धिपरांलोकेरुद्रलोकेमहीयते ॥ चौरेभ्योरक्षणंकृत्वाशक्र लोकेमहीयते ॥ नदीतीरेषुसंतार्य्यपांथान्पथितथानरः ॥ शीघ्रंतरतिदुर्गाणिक्षुरधारांश्चपर्वतान् ॥ सर्वपोतंतथानावंयःकरो तिनदीतटे ॥ अश्वमेधफलंतस्यभवतीहनसंशयः ॥ सभास्था नानिरम्याणियः करोतिविचक्षणः ॥ उद्यानानिविचित्राणिश क्रलोकेमहीयते ॥ प्रेक्षणीयप्रदानेनस्मृतिंमेधांचविंदति ॥ पांथानांहितयाकार्य्याकर्मणायेनकेनचित् ॥ कृपास्थानंतुपां [illegible] ॥ लिंगीवाप्यथवाचर्मीपांथःपथि [illegible] ॥ उपस्थानेश्वकर्त्तव्यः पांथःपूज्यस्तुसर्वशः ॥

इतिनानोपचाराः ॥ अथाभ्यंगदानम् ॥ तैलेनशुभ गंधेनदत्वाभ्यंगंद्विजातये ॥ विरूक्ष्यशुभचूर्णैस्संस्नाप्यकोष्णे णवारिणा ॥ प्राप्नोतिचंद्रसालोक्यंयावदाभूतसंप्लवम् ॥ यस्तु मार्गपरिक्लांतंद्विजातिग्रामकर्षितम् ॥ तैलेनाभ्यंजयन्प्राज्ञःससुखी मोदतेचिरम् ॥ यच्चपक्वादितैलेनद्विजंवाकेशवंशिवम् ॥ संस्ना पयतिपुण्यात्माकिंतस्यबहुभिर्मखैः ॥ योद्वादशीदिनेविष्णुमभ्यंज यतिभक्तितः ॥ शुभगंधेनतैलेनशक्तितोगोघृतेनवा ॥ तिलतै लेनवालोकेगंधर्वाणांसमोदते ॥ सर्पिषाकपिलाधेनोरथवान्येनस र्पिषा ॥ उत्तरायणमासाद्यअंजयतिधूर्जटिम् ॥ महापूजां घृतेनैवतस्मिन्नेवदिनेशुभे ॥ कृत्वामनुष्योलभतेराज्यंनिहतकंट कम् ॥ सर्पिःपलसहस्रेणगोर्विदस्यशिवस्यवा॥ महास्नानंनरःकृत्वा ब्रह्महत्यांनिरस्यति॥ अथ पादाभ्यंगदानम् ॥ पादाभ्यंगंतुयोदद्या त्पांथायबहुवेदिने ॥ सशुभाभरणैः पादैर्वंदिभिर्नित्यवंदितः ॥ भवेन्नृपोमहाभागोमंडलेदशयोजने ॥ संवाह्यतुपरिश्रांतंपादाभ्यंगा दिनानरः ॥ धर्मस्यपुरमाप्नोतिसर्वकामगुणोज्वलम् ॥ दत्वा वारिसुखस्पर्शंपादाभ्यंगंद्विजातये ॥ उच्छिष्टमार्जनाच्चापिगोदान फलमश्नुते ॥ अध्वस्फुटितपादानांपरिचर्य्यांकरोतियः ॥ स स र्वभोगसंपूर्णंविमानमधिरोहति ॥ इत्यभ्यंगदानम् ॥ अथप्रसंगे नगोपरिचर्य्या ॥ आषाढ्यामाश्वयुज्यांचपौष्यांमाघ्यांचसर्वदा॥ नगृह्णीयाद्गवांक्षीरंसवत्सायनिक्षिपेत् ॥ नषंडान्वाहयेच्चैवनगांभा रेणपीडयेत् ॥ युगादिषुयुगांतेषुषडशीतिमुखेषुच ॥ दक्षिणोत्तरगेसू र्य्येतथाविषुवयोर्द्वयोः ॥ संक्रांतिषुचसर्वासुग्रहणेचंद्रसूर्य्ययोः ॥

पंचदश्यांचतुर्दश्यांद्वादश्यामष्टमीषुच ॥ उपचारोगवांकार्य्योमा सिमासियथाक्रमम् ॥ लवणस्यतुचत्वारिपलान्यष्टौघृतस्यच ॥ परकीयस्यदुग्धस्यतथादेयानिषोडश ॥ द्वात्रिंशच्छीतलस्यापि जलस्यचपलानिच ॥ आदौविचार्य्यपयसः परिमाणंबलंरुचिम् ॥ आंकस्मिकंतुदातव्यंपुण्यार्थंतुगवाह्निकम् ॥ प्रभातेलवणंयंत्र दीयतेचततोजलम् ॥ ततस्तृणानिभोज्यंचपोषणंमांसवर्जितम् ॥ निशिदीपः सतंत्रीकोदिव्यापौराणिकीतथा ॥ एवंकृतेमहींपूर्णां रत्नैर्दत्वाभवेत्फलम् । गोःप्रदानेनतत्पुण्यंगवांसंरक्षणाद्भवेत् । मनुष्यैस्तृणतोयाद्यैर्गावः पाल्याः प्रयत्नतः ॥ देयाः पूज्याश्चपोष्याश्चप्रतिपाल्याश्चसर्वदा ॥ तृणोदकाग्रेषुवनेषुमत्ताः क्रीडंतुगावः सवृषाः सवत्साः ॥ क्षीरंप्रमुंचंतुसुखंस्वपंतुशीतातपव्याधिभयैर्विमुक्ताः ॥ इमंमंत्रंसशुद्धात्माजपेन्नित्यंसमाहितः ॥ गच्छंस्तिष्ठंजपञ्जिघ्रन् भुंजन्क्रीडन्समुत्सृजेत् ॥ महाभयेषुसर्वेषुसमेषुविषमेषुच ॥ प्रयाणकालेचतथाश्रोतव्यमभयप्रदम् ॥ घासग्रासादिकंदेयंनिशिदीपः सुभास्वरः ॥ इतिहासपुराणानांव्याख्यानंसोपवीणकम् ॥ अंतस्तुष्टैर्यथाशक्तिपरिचर्य्यायथाक्रमम् ॥ ताडनाक्रोशखेदाश्चस्वप्नेपिनकदाचन ॥ तासांमूत्रपुरीषेतुनोद्वेगःक्रियतेक्वचित् ॥ शोधनीयश्चगोघाटःशुष्कक्षारादिकैःसदा ॥ ग्रीष्मेवृक्षाकुलेवेश्मशीततोयेविकर्दमे ॥ वर्षासुचाथशिशिरे सुखोष्णेवातवर्जिते ॥ उच्छिष्टमूत्रविट्श्लेष्ममलं जह्यान्नतत्रच ॥ रजस्वलानप्रवेश्यानांत्यजातिर्नपुंश्चली ॥ नलंघयेद्वत्सतरीं नक्रीडेद्वोष्टसन्निधौ ॥ नगंतव्यंगवांमध्येसोपानत्कैःसपादुकैः ॥ हस्त्यश्वरथयानैश्चसवितानैःकदाचन ॥ दक्षिणोत्तरगैःप्रह्वैर्ग

व्यंचपदातिभिः ॥ गावःक्रशातुराःपाल्याःश्रद्धयापितृमातृवत् ॥ गिरिप्रपातसिंहर्क्षशीतातपभयातुराः ॥ महाकोलाहलेघोरेदुर्दिनेदेशविप्लुवे ॥ गवांतृणानिदेयानिशीतलंचतथाजलम् ॥ गवांचतीर्थेवसतीहगंगापुष्टिस्तथासांरजसिप्रवृद्धा ॥ लक्ष्मीःपुरीषेप्रणतौचधर्मस्तासांप्रणामंसततंचकुर्य्यात् ॥ इति गो०र्या ॥ अथान्नदानम् ॥ सर्वेषामेवदानानामन्नदानंपरंस्मृतम् ॥ सद्यःप्रीतिकरंदिव्यंबलबुद्धिविवर्द्धनम् ॥ नान्नदानसमंदानंत्रिषुलोकेषुविद्यते ॥ अन्नाद्भवंतिभूतानिम्रियंतेतदभावतः ॥ गर्भस्थाजायमानाश्चबालावृद्धाश्चमध्यमाः ॥ आहारमभिकांक्षंतिदेवदानवतापसाः ॥ क्षुधाहि सर्वरोगाणांव्याधिःश्रेष्ठतमास्मृता ॥ तस्यान्नौषधलेपेनप्रतीकारःप्रकीर्त्तितः ॥ अन्नदःप्राणदःप्रोक्तःप्राणदश्चापिसर्वदः ॥ तस्मादन्नप्रदानेनसर्वदानफलंलभेत् ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणांदेहःपरमसाधनम् ॥ स्थितिस्तस्यान्नपानाभ्यामतस्तत्सर्वसाधनम् ॥ अन्नंप्रजापतिःसाक्षादन्नंविष्णुः शिवःस्वयम् ॥ तस्मादन्नसमंदानंन भूतंनभविष्यति ॥ तथाच-- लवणंचघृततैलंगुडंहिंगुस्तथार्द्रकम् ॥ कटुकंजीरकंचैवपत्रंशाकंचशोभनम् ॥ शुभमिक्षुरसंचैवदधीनिव्यंजनानिच ॥ सुरभीणिचपापानिदत्त्वात्यंतंसुखीभवेत् ॥ तथा ॥ देवतानांचयोदद्यादन्नाद्यंश्रद्धयान्वितः ॥ सिक्थात्सिक्थाद्वसेल्लक्षसमास्स्वर्गेमरैःसह ॥ एतद्दशगुणंपुण्यमन्नेव्यंजनसंयुते ॥ यथेष्टंदेवतादानादेतत्पुण्यंप्रकीर्त्तितम् ॥ योदद्याद्ब्राह्मणेन्नानितस्यद्विगुणितंफलम् ॥ तस्मादस्मैचदत्त्वान्नंद्विगुणंफलमश्नुते ॥ रुद्रायान्नप्रदानेनफलमेतच्चतुर्गुणम् ॥ श्रद्धाकालसामायोगाद्व्यंजनानांचयोगतः

शतसंख्यंभवेत्पुण्यंसम्यगन्नप्रदायिनाम् ॥ अन्यच्च ॥ यस्त्वे कपंक्त्यांविषमंददातिस्नेहाद्भयाद्वायदिवार्थहेतोः ॥ देवैश्चदृष्टंमुनि भिश्चगीतं तांब्रह्महत्यांमुनयोवदंवि ॥ मृष्टमन्नंस्वयंभुक्त्वापश्चात्कद शनंलघु ॥ ब्राह्मणान्भोजयेन्मूर्खोनिरयेचिरमावसेत् ॥ इति पक्वान्नदानम् ॥ अथामान्नदानम् ॥ धान्यानामुत्तमंदानंकथितं द्विजपुंगवैः ॥ धान्येभ्योपिपरंदानंरक्तशालिःप्रकीर्तिता ॥ रक्त शालिंनरोदत्त्वासूर्य्यलोकेमहीयते ॥ दत्त्वातथासुगंधांश्चगंधैर्वैःसह मोदते ॥ कलमानांप्रदानेनशक्रलोकेमहीयते ॥ महाशालिप्रदाने नवसूनांलोकमाप्नुयात् ॥ कृष्णशालिंतथादत्त्वाचालकायांप्रमोदते व्रीहीणांसस्यजातानांदानात्स्वर्गमवाप्नुयात् ॥ यवप्रदानेननरः स्वर्गलोकेमहीयते ॥ तथागोधूमदानेनवसूनांलोकमाप्नुयात् ॥ प्रियोभवतिलोकस्यप्रियंगुंयःप्रयच्छति ॥ ददातियस्तुश्यामाकंप्री ताः स्युस्तस्यदेवताः ॥ अन्येषांशुष्कधान्यानांप्रदानेनियतोनरः ॥ स्वर्गलोकमवाप्नोतिनात्रकार्य्याविचारणा ॥ मुद्गदःशक्रलोकंतुयम लोकंतुमाषदः ॥ यथेष्टंलोकमाप्नोतितिलदानान्नसंशयः ॥ षष्टि कान्नप्रदानेनलोकंनैर्ऋतिकंलभेत् ॥ सचीनचणकंदत्त्वालोकंवारुण माप्नुयात् ॥ वाय्व्यंचमसूरांणिराजमाषाणिधानदम् ॥ अन्येषांश मीधान्यानांदानात्स्वर्गमवाप्नुयात् ॥ इक्षुमूद्वीकयोर्दानात्परंसौभाग्य माप्नुयात् ॥ पक्वान्नदानात्फलदंनृलोकेशुष्कान्नभुक्तंहितदात्तिरस्मा त् ॥ यजंतियज्ञैर्हिततोद्विजेंद्रास्तस्मात्तुतत्पुण्यतमंप्रदिष्टम् ॥ इत्यन्न दानम् ॥ अथोदकदानम् ॥ सलिलंयःप्रयच्छेतजीवानांप्राणधार णम् ॥ शीतलंग्रीष्मकालेतुतस्यपुण्यफलंशृणु ॥ कपिलाकोटिदा

नस्ययत्पुण्यंहिविर्दीयते।। तत्पुण्यफलमाप्नोतिपानीयंयःप्रयच्छति।।
पूर्णचंद्रप्रकाशेनविमानेनाधिरोहिति ॥

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेऽनंतफलदाननाम
त्रिंशत्तमः कोशः ॥ ३० ॥

---

अथोपरागादिषुक्रूरदानानि ॥ तत्रादौग्रहणेदानम् ॥ सौवर्णंकारयेन्नागंपलेनार्द्धपलेनवा ॥ यथाशक्त्याप्रकुर्वीतफणायांतुमणीन्न्यसेत् । ताम्रपात्रेनिधायाथघृतपूर्णेविशेषतः । कांस्येवाकांतिलोहेवान्यस्यदद्यात्सदक्षिणम् ॥ चंद्रग्रहेतुरूप्यस्यबिंबंदद्यात्सदक्षिणम् ॥ नागंरुक्ममयं सूर्य्यग्रहेबिंबंचहेमजम् ॥ तुरंगरथगोभूमितिलसर्पिश्चकांचनम् ॥ विशेषेणप्रदाबव्यंनचदोषः प्रतिग्रहे ॥ मंत्रस्तु ॥ तमोमयमहाभीमसोमसूर्य्यविमर्दन ॥ हेमतारापदानेनममशांतिप्रदोभव ॥ विधुंतुदनमस्तुभ्यंसिंहिकानंदनाच्युत ॥ दानेनानेनवैभानोरक्षमांवेधजाद्भयात् ॥ अथ ग्रहपीडानिवृत्तौशांतिर्यथा ॥ यस्यराशिंसमांसाद्यभवेद्ग्रहणसंभवः ॥ स्नानंतस्यप्रवक्ष्यामिसर्वौषधिसमन्वितम् ॥ चंद्रोपरागंसंप्राप्यकृत्वाब्राह्मणवाचनम् ॥ संप्राप्यचतुरो विप्रान् शुक्लमाल्यानुलेपनैः । पूर्वमेवोपरागस्यसमानीयौषधादिकम् ॥ स्थापयेच्चतुरःकुंभानग्रतःसागरानिव ॥ गजाश्वरथ्यावल्मीकसंगमाद्भद्रगोकुलात् ॥ राजद्वारप्रदेशाच्चमृदमानीयनिक्षिपेत् ॥ पंचगव्यंपंचरत्नंपंचत्वक्पंचपल्लवान् ॥ रोचनंपद्मकंशंखंकुंकुमंरक्तचंदनम् ॥ शुक्तिस्फटिकतीर्थांबु सितसर्षपगुग्गुलून् ॥ मधूकंदेवदारुंचविष्णुक्रांतांशतावरीम् ॥ बलांचसहदेवींचनिशाद्वितयमेवच ॥ एतत्सर्वंविनिक्षिप्यकुंभेष्वावाहयेत्सुरान् ॥ सर्वेस

मुद्राःसरितस्तीर्थानिजलदानदाः ॥ आयांतुयजमानस्यदुरितक्षय कारकाः ॥ योसौवज्रधरोदेवआदित्यानांप्रभुर्मतः ॥ सहस्रनय नश्चेंद्रोममपीडांव्यपोहतु ॥ मुखंयःसर्वदेवानांसप्तार्चिरमितद्युतिः॥ चंद्रोपरागसंभूतांग्रहपीडांव्यपोहतु॥ यःकर्मसाक्षीलोकानांधर्मोमहि षवाहनः॥यमश्चंद्रोपरागोत्थांग्रह०॥रक्षोगणाधिपःसाक्षान्नीलांजन समप्रभः ॥ खड्गहस्तोतिभीमश्चग्रह० ॥ नागपाशधरोदेवःसदामकर वाहनः॥सजलाधिपतिर्देवोग्रह० ॥ प्राणरूपोहिलोकानांसदाकृष्ण मृगप्रियः ॥ वायुश्चंद्रोपरागोत्थांग्रह० ॥योसौनिधिपतिर्देवःखड्गशू लगदाधरः ॥ चंद्रोपरागकलुषंधनदोत्रव्यपोहतु ॥ योसाविंदुध रोदेवःपिनाकीवृषवाहनः ॥ चंद्रोपरागपापानिसनाशयतुशंकरः ॥ त्रैलोक्येयानिभूतानिस्थावराणिचराणिच ॥ ब्रह्मविष्णुकरुद्राश्च दहंतुममपातकम् ॥ एवमावाहयेद्देवान् मंत्रैरेभिश्चवारुणैः ॥ एता नेवतथामंत्रान्स्वर्णपट्टेविलेखयेत् ॥ ताम्रपट्टेथवालिख्यनववस्त्रेत थैवच ॥ मस्तकेयजमानस्यनिदध्युस्तेद्विजोत्तमाः ॥ कलशान्द्र व्यसंयुक्तान्नानारूपसमन्वितान् ॥ गृहीत्वास्थापयेद्भूयःभद्रपीठो परिस्थितम् ॥ पूर्वैरेवतुमंत्रैश्चयजमानंद्विजोत्तमाः ॥ अभिषेकंततः कुर्य्युर्मंत्रैर्वारुणसूक्तकैः॥आचार्य्यंपूजयित्वातुस्वर्णपट्टंनिवेदयेत्॥ दक्षिणाचतथादेयागोदानंचस्वशक्तितः ॥ होमंचापिप्रकुर्वीतसप्त व्याहृतिभिस्तथा ॥ दानंचशक्तितोदद्यादीच्छेदात्मनोहितम् ॥ सूर्य्यग्रहेसूर्य्यनामयुक्तान्मंत्रान्प्रकीर्त्तयेत् ॥ अनेनविधिनायस्तुग्रह णेस्नानमाचरेत् ॥ नतस्यग्रहजोदोषःकदाचिदपिजायते ॥ इतिग्रह दानविधिः ॥ अथ भूकंपेदानम् ॥ भूमिकंपक्षणेदेयंयस्तुतत्रैववर्त्त

ते ॥ धनधान्यपटादीनि यद्धस्तेह्यागतंतदा ॥ नपूजानापिमंत्राश्च वाक्यानिचनमार्गयेत् ॥ नपात्रंनविधानंचदेयंदेयंयथातथा ॥ यदामलभ्यतेतत्रद्रव्यमानंतदाचरेत् ॥ मानसेदानसंकल्पंपश्चाद्देयं प्रयत्नतः ॥ भूकंपदानमाहात्म्यंवक्तुंनालंचतुर्मुखः ॥ सर्वसौ भाग्यजननंसर्वसंपद्विवर्द्धनम् ॥ संतानसौख्यदंनृणां भुक्तिमुक्तिफल प्रदम् ॥ तस्माद्देयंधराकंपेयत्किंचिद्द्रव्यमात्मनः ॥ नभूमिकंपात्पर मःसमयोविद्यतेक्वचित् ॥ दानस्यसर्वयत्नेनतस्माद्दानंतदाचरेदिति ॥ इति भूकंपेदानम् ॥ अथभद्रादानप्रसंगेनतद्विधानमुच्यते । यथा ॥ सुतामार्तंडदेवस्य अक्षयेजनितापुरा ॥ शनैश्चरस्यभगिनी सासोदर्य्यभयंकरी ॥ साजातमात्राभुवनंग्रसितुंह्युपचक्रमे ॥ नि र्य्यातियदिकार्य्येपिकश्चित्तस्यपुरस्थितः ॥ विघ्नंकरोतिस्वपतोभुं जानस्यस्थितस्यच ॥ सर्वविघ्नकरीरौद्रासमाजोत्सवनाशिनी ॥ नित्यो द्वेगकरीसाक्षाद्विनाशयतियाजगत् ॥ तांतुदुर्विनयेसक्तांदृष्ट्वादेवोदिवा करः ॥ चिंतयामासकस्यापियच्छाम्येनांसुमध्यमाम् ॥ कन्यादु र्विनयाद्देहेपितादोषेणगृह्यते ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकन्यादेयाविप श्चिता ॥ चिंत्यैवमशुभांभद्रांयस्मयस्मप्रयच्छति ॥ तंतंनयेत्क्षयंचै षासुररक्षसकिन्नरम् ॥ मंडपंमंडपारंभेविनाशयतितत्क्षणात् ॥ विवस्वांश्चिंतयामासकस्येयंप्रतिपाद्यते ॥ विरूपादुष्टहृदयागर्दभा स्यात्रिपादिका ॥ ऊर्द्ध्वरोमामहादंष्ट्रास्वेच्छाचारविहारिणी ॥ दत्ता प्येषानसौख्यायभवतीहकथंचन ॥ एवंवितर्कयन्देवआस्तेयावद्दि वस्पतिः ॥ तावच्चयाजगत्सर्वंदूषयामासविद्रुतम् ॥ अथाजगाम सवितुः पार्श्वेब्रह्मांडसंभवः ॥ उपालंभंददौचाथविष्टिदौष्ट्यमशे

षतः ॥ भास्करस्तमुवाचेदंस्वयंभुर्भूवनेश्वरः ॥ भवान्कर्त्ताचहर्त्ता चकस्मादेवंप्रभाषसे ॥ एवमुक्तस्तदाब्रह्माभास्करेणामितद्युतिः ॥ उवाचविष्टिमानाम्यशृणुभद्रेमयोदितम् ॥ करणैःसहवर्त्तस्वबव बालवकौलवैः॥ सप्तमेर्द्धदिनेप्राप्तेयदभीष्टंकुरुष्वतत् ॥ यात्राप्रवेशे मांगल्येकृषिवाणिज्यकारकान् ॥ भक्षयस्वाभिमुखगान्नरानुन्मार्गगमिनः ॥ नोद्वेजनीयोहिजनोभवत्यादिवसत्रयम् ॥ पूज्यासुरासुराणांत्वंदिवसार्द्धंभविष्यसि ॥ उल्लंघ्ययेप्रवर्त्तंतेभद्रेत्वांनिर्भयानराः ॥ तेषांविनाशयशुभंकार्य्यमार्य्येसुनिश्चितम् ॥ एवमुक्त्वागतोब्रह्माभद्रापिभुवनत्रयम् ॥ बभ्रामोद्भ्रांतहृदयाभीषयंतीसुरासुरान् ॥ एवमेषासमुत्पन्नाविष्टिरिष्टविनाशिनी ॥ सिंहग्रीवासप्तभुजात्रिपादापुच्छसंयुता ॥ खरोत्तमांगवदनाप्रेतारूढाकृशोदरी ॥ ज्वलच्चक्षुश्चदधतीहस्तैः पाशासिशक्तिकाः ॥ नरमुंडांश्चमालाश्च मुद्राःसप्तविधाःस्मृताः ॥ सजलजलदवर्णादीर्घनासोग्रदंष्ट्रा विपुलहनुकपोलापिंडकोद्बद्धजंघा ॥ अनलशतसहस्रंचोद्गिरंतीसमंतात्पततिभुवनमध्येकार्य्यनाशायविष्टिः ॥ नभोधियाकेतुशताग्रजाताकृष्णांगयष्टिःसततंकुचेला॥ देवैर्विमुक्ताकरणांतसंस्थाविष्टिस्तुसर्वत्रविवर्जनीया ॥ मुखेतुषटिकापंचद्वेतुकंठेसदास्थिते ॥ हृदिचैकादशप्रोक्ताश्चतस्रोनाभिमंडले ॥ पंचकट्यांतुविज्ञेयाःतिस्रः पुच्छेभयावहाः ॥ मुखेकार्य्यविनाशायग्रीवायांधननाशिनी ॥ हृदिप्राणहराज्ञेयानाभ्यांतुकलहप्रदा ॥ कट्यामर्थपरिभ्रंशोविष्टिपुच्छेध्रुवंजयः ॥ पृथिव्यांयानिकार्य्याणिअशुभानिशुभानिच ॥ तानिसर्वाणिसिद्ध्यंतिविष्टिपुच्छेनसंशयः ॥ जलानलेंदुक्रूरेशयाम्यवातें

द्रदिक्कमात् ॥ संख्यांसमानप्रहरैर्विष्टर्दुष्टंमुखंयतः ॥ घुंजाटेणीसि तेपक्षेडैछीऋूंढसितेतरे॥ व्यंजनैस्तिथयोज्ञेयास्वरैस्तुप्रहरादिशः ॥ क रालीनंदनीरौद्रासुमुखीदुर्मुखीतथा ॥ त्रिशिराभैरवीहंसीह्यष्टौचैता स्तुविष्टयः ॥ धनात्वधोमुखीभद्रामहामारीखरानना ॥ कालरात्रि र्महारात्रिर्विष्टिश्चकुलपुत्रिका ॥ भैरवीचमहाकाली असुराणांक्षयं करी ॥ द्वादशैतानिनामानिप्रातरुत्थाययःपठेत् ॥ नचव्या धिभयंतस्यरोगीरोगात्प्रमुच्यते ॥ ग्रहाःसर्वेनुकूलाः स्युर्नचविघ्नो भिजायते ॥ रणेराजकुलेद्यूतेसर्वत्रविजयोभवेत् ॥ यश्च पूजयतेनित्यंशास्त्रोक्तविधिनानरः ॥ तस्यसर्वार्थसिद्धिस्तुजा यतेनात्रसंशयः ॥ यस्मिन्दिनेभवेद्विष्टिस्तस्मिन्दानंसमाचरेत् ॥ सर्वौषधिजलैःस्नानंसुगंधामलकैरथ ॥ देवान्पितॄन्समभ्यर्च्यततः स्वर्णमयींशुभाम् ॥ विष्टिंकृत्वापुष्पधूपनैवेद्यादिभिरर्चयेत् होमं तुनामभिर्विष्टयाश्शतमष्टोत्तरंक्रियात् ॥ सतैलंकुसरंदद्यात्तत्प्रीत्यैद क्षिणान्वितम् ॥ छायासूर्य्यसुतेदेविविष्टेदृष्टार्थनाशिनी ॥ पूजिता सिमयाभक्त्याभद्रेभद्रप्रदाभव ॥ ततोमूर्तिंलोहमयींपीठेधृत्वाप्रपूज्य च॥ ब्राह्मणायपुनर्दद्याल्लोहंतैलंतिलैर्युताम् ॥ कृष्णांसवत्सांगामेकां तथैवंकृष्णकंबलम् ॥ दक्षिणां चयथाशक्तिदत्त्वाभद्रांविसर्जयेत् ॥ एवंयःकुरुतेभक्त्याभद्रायादानमुत्तमम् ॥ विघ्नोनजायतेतस्यका र्य्यारंभेकदाचन ॥ राक्षसावापिशाचावापूतनाशाकिनीग्रहाः ॥ नपीडयंतितंमर्त्यंयोभद्रादानमाचरेत् ॥ नचैवेष्टवियोगःस्या न्नहानिस्तस्यजायते ॥ देहांतेयातिसदनंभास्करस्यनसंशयः ॥ सूर्य्यात्मजातिभयदाभगिनीशनेर्व्यामर्त्यैश्रमर्त्यतिबलाकरणक्रमे

ण ॥ तांकृष्णाजासुरमुखींप्रददातिविधिमिष्टार्थसिद्धिमबुधोपिपुमानुषै
ति॥ इतिभद्रादानम् ।अथकालपुरुषदानम्॥ज्ञेयोनिष्कशतंतत्रदा
नेयंविधिरुत्तमः॥ मध्यमस्तुतदर्द्धेनतदर्द्धेनाधमःस्मृतः ॥ अत्यशक्तौ
पंचसौवर्णिकोवा ॥ ततोल्पेनतुप्रतिग्रहीतादुःखशोकावहःस्यात् ॥
चतुर्थ्यांचतुर्दश्यांभद्रायांकरणेवाकुर्य्यात् ॥ तत्स्वरूपंतु ॥ रौप्य
दशनंसुवर्णनेत्रंखड्गोद्यतकरंमांसपिंडयुतवामकरं जपाकुसुमकुंडलंर
क्तवस्त्रस्रग्विणंशंखमालाधरं छुरिकायुतंकटिदेशे अतिदीर्घकृष्णा
जिनयुतंनिर्माय अद्येत्यादि० अपमृत्युव्याधिसर्वबाधानिवारणाव्या
हृतैश्वर्य्यप्राप्तिधर्मश्रीपुत्रपौत्रादिकर्तृकराज्यांतेपरमपदाप्तिकामः
कालपुरुषदानमहंकरिष्ये ॥ इति कालपुरुषंसंपूज्यविभूष्यद्विजं
वृत्वायथाविभवंवस्त्रालंकारादिभिः संपूज्य पुष्पांजलिंगृहीत्वा
पठेत् ॥ सर्वंकलयसेयस्मात्कालस्त्वंतेनचोच्यसे ॥ ब्रह्मविष्णुशिवा
दीनांत्वमसाध्योसिसुव्रत ॥ पूजितस्त्वंयथाभक्त्याप्रार्थितश्च
यथासुखम्—यद्बुध्यतेविष्णुरूपतत्कुरुष्वनमोस्तुते ॥ इति
संप्रार्थ्य ॥ अद्येत्यादि० पूर्ववत्संकीर्त्ययगोत्रायशर्मणेसा
लंकृतायसुपूजितायइमंकालपुरुषंसालंकृतियुक्तोपस्करं विष्णु
दैवतंतुभ्यमहंसंप्रददेनममेतिदत्त्वा—पंचसुवर्णादूर्द्धमानिष्कशतंदक्षि
णांदत्त्वातंविसृज्यतन्मुखंनपश्येन्नस्पृशेच्च।ततःशांतापृथिवीशिवमंत
रिक्षम् इतिजप्त्वा हस्तौपादौप्रक्षाल्याचम्यभूयसींदक्षिणांदत्त्वा वि
प्रान्संभोज्यसुहृद्युतोभुंजीतेति ॥ अनेनविधिनायस्तुदानमेतत्प्रयच्छ
ति ॥ नापमृत्युभयंतस्यनचव्याधिकृतंभयम् ॥ भवत्यव्याहतैश्वर्यः
सर्वबाधाविवर्जितः ॥ अथ यममूर्तिदानंअपमृत्युहरम् ॥ तत्रैह

पात्रस्थितंकांस्यंतत्रपद्मंतुराजतम् ॥ तस्मिन्कालेश्वरःस्वर्णैःपुरुषाकारतांगतः ॥ तद्रूपंतु ॥ ईषत्पीतोदंडहस्तोरक्तदृक्पाशहस्तकः ॥ क्रुद्धो वस्त्रालंकृतःस्याद्रोगिणामभयप्रदः ॥ अलंकृतःस्वर्णालंकारैःत्रिलोहालंकारैर्दूतैर्वृतः ( त्रिलोहमत्रकांस्यताम्रपित्तलाख्यम् ) पुरुषाकारैर्दूतैर्दंडहस्तैःकृत्वायमंमहिषपृष्ठेअष्टम्यांचतुर्दश्यांवादद्यात् । दक्षिणान्तु घृतपूर्णोघटःसुवर्णंवा । एवंकृत्वादानेननाशोपमृत्योः ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेक्रूरदानविधिर्नामैकत्रिंशःकोशः ॥ ३१ ॥

---

अथसर्वसंपत्करंदानम् ॥ सूर्य्योपरागादिपुण्यकालेदेवालयंग्रदिपुण्यदशेगृहेवाकार्य्यंदानम् ॥ प्रातस्तिलकुशमिश्रोदकेनस्नात्वा कृतनित्यक्रियःआचम्यप्राणानायम्याद्येत्यादि०सर्वसंपदायुरारोग्यसमस्तपापनाशपुत्रपौत्रादिकुलवृद्धिस्वर्गनिवासमोक्षेष्टसिद्धिकामोमित्रादिप्रतिमादानमहंकरिष्ये। इति संकल्प्य। गुरुंवृत्वायथाविभवंवस्त्रालंकारादिभिःसंपूज्य विंशतिहस्तांचतुरस्रांभुवंगोमयेनोपलिप्य तत्रभागायताश्चतस्रउदगायत्राश्चतस्रोरेखालिखित्वा तेषुनवकोष्ठेषुद्रोणमिततंडुलान्निक्षिप्यतेषुनवकुंभान्संस्थाप्यवस्त्रैरावेष्ट्यतेषुसुवर्णत्रयादूर्द्धंपलावधिसुवर्णनिर्मितानवप्रतिमाःसंस्थाप्यपूजयेत् तत्रपश्चिमपंक्तावुदकसंस्थितंमित्रंवरुणंसोमंमध्यपंक्तौब्रह्माणंचतुर्भुजंविष्णुमुमापतिंचांत्यपंक्तौदिवाकरंवृत्रहणंवह्निंच । ततोष्टाविंशान्संपूज्यैकैकस्मै पूर्वोक्तसंकल्पोच्चारणानंतरंगोत्रायशर्मणेसुपूजिताय

| | | |
|---|---|---|
| वह्निं ९ | वृत्रहणं ८ | दिवाकरं ७ |
| उमापतिं ६ | विष्णुं च तुर्भुजं ५ | ब्रह्माणं ४ |
| सोमं ३ | वरुणं २ | मित्रं १ |

इमांमित्रप्रतिमांसुपूजितांतुभ्यमहंसंप्रददेनममेतिदत्त्वा—वरुणप्रतिमां गुरवेदत्त्वादेयद्रव्यसमंसुवर्णदक्षिणांवस्त्रयुगंचदद्यात् ॥ ततःसोमब्रह्म विष्णुशिवदिवाकरवृत्रहवह्निप्रतिमाश्चब्राह्मणेभ्योदत्त्वासुवर्णदक्षिणांचतेभ्योदत्त्वा ब्राह्मणांश्चभोजयित्वाभूयसींदक्षिणांचदत्त्वासुहृद्युतोभुंजीत ॥ एवंयःकुरुतेमर्त्यःसर्वविधिविधानतः ॥ तस्यक्लेशाःशमंयांतिसर्वसंपत्तिभाग्भवेदितिइतिस०नम् ॥ **अथ जलाशयनिर्माणम्** ॥ उदकेनविनावृत्तिर्नास्तिलोकद्वयेसदा ॥ तस्माज्जलाशयाः कार्य्याःपुरुषेणविपश्चिता ॥ अग्निष्टोमसमःकूपःसोश्वमेधसमोमरौ ॥ कूपःप्रवृत्तपानीयःसर्वंहरतिदुष्कृतम् ॥ कूपकृत्स्वर्गमासाद्यसर्वान्भोगानुपाश्नुते ॥ तत्रापिभोगनैपुण्यंस्थानाभ्यासात्प्रकीर्त्तितम् ॥ अवटंयोनरः कुर्य्यादपांपूर्णंसुशोभनम् ॥ दद्यात्सुब्राह्मणेभ्यस्तंभोजयित्वायथाविधि ॥ अष्टाभिः सुविचित्राभिः पताकाभिरलंकृतम् ॥ पितॄंस्तारयतेपंचाशतंदत्त्वानरोत्तमः ॥ यात्यप्सरस्सुगीतेनवरुणस्यसलोकताम् ॥ **अन्यच्च** ॥ योवापीमग्निसाक्ष्येण विधिवत्प्रतिपादयेत् ॥ कोणेपूदककुंभस्थान्समुद्रानार्च्यश्रद्धया ॥ चतुरश्चतुरोदत्त्वातेनदत्तामहीभवेत् ॥ तत्सन्निधौद्विजानार्च्यविधिवत्पानभोजनैः ॥ सयातिवारुणंलोकंदिव्यकामसमन्वितम् ॥ **अन्यच्च** ॥ तडागेयस्यपानीयंसततंस्खलतिष्ठति ॥ स्वर्गलोकगतिस्तस्यनात्रकार्य्याविचारणा ॥ तडागकर्त्तावसतिस्वर्गेयुगचतुष्टयम् ॥ यत्रविप्रोथगौरेकाशालिलंपिबतिकचित् ॥ तडागंतादृशंकृत्वास्वर्गे दशयुगंवसेत् ॥ शुभेदिनेसुनक्षत्रेसुमुहूर्तेभवेद्यदा ॥ वापीकूपतडागानांतस्मिन्काले विधिःस्मृतः ॥ संपूर्णेतुकृतेकर्त्तुःसंपूर्णास्युर्म

नोरथाः ॥ अथैतेषांप्रतिष्ठादिद्रष्टव्यंयत्रकुत्रचित् ॥ ग्रंथंदा नपरेत्वस्मिन्नोक्ताभूयस्त्वभीषया ॥ इति ज०णम् ॥ अथ वृक्षा रोपणम् ॥ स्थावराणांचभूतानांजातयःषट्प्रकीर्त्तिताः ॥ वृक्षगु ल्मलतावल्कत्वक्सारास्तृणजातयः ॥ एतास्तुजात्योवृक्षाणां तदारोपेगुणोस्तिहि ॥ कीर्त्तिश्चमानुषेलोकेप्रेत्यचैवशुभंफलम् ॥ अतीतानागतौचोभौपितृवंशौयथातथा ॥ तारयेद्वृक्षरोपीचतस्मा द्वृक्षांश्चरोपयेत् ॥ पुष्पैस्सुरगणान्वृक्षाःफलैश्चापितथापितॄन् ॥ छायया चातिथीनांतुपूजयंतिमहीरुहाः ॥ किन्नरोरगरक्षांसिदेवगंध र्वमानवाः ॥ तथामहर्षयश्चैवसंश्रयंतिमहीरुहान् ॥ पुष्पिताःफ लवंतश्चतर्पयंतीहमानवान् ॥ वृक्षदंपुत्रवद्वृक्षास्तारयंतिपरत्रच ॥ तस्मात्तडागेरोप्यावैवृक्षाःश्रेयोर्थिभिःसदा ॥ पुत्रवत्परिपाल्याश्चपु त्रास्तेधर्मतःशुभाः॥अपुत्रस्यचपुत्रत्वंपादपाइहकुर्वते ॥ यच्छंतिरो पकेभ्यस्तेसतीर्थंतर्पणादिकम् ॥ धनीचाश्वत्थवृक्षेणह्यशोकःशो कनाशनः ॥ पुक्षोयज्ञपतिःप्रोक्तश्चिंचाश्वायुःप्रदाःस्मृताः ॥ जंबूः कन्याप्रदाप्रोक्ताभार्य्यादादाडिमीतथा ॥ अरलूरोगनाशायपला शोब्रह्मदस्तथा ॥ प्रेतत्वंजायतेपुंसांरोपयेद्योविभीतकम् ॥ अंमुलेः कुलवृद्धिःस्यात्बदरेचाप्यरोगता ॥ निंबप्ररोपकोयस्तुतस्यतुष्टोदि वाकरः॥श्रीवृक्षेशंकरोदेवःपाटलायांतुपार्वती॥ शिशुपायामप्सरसः कुंदेगंधर्वसत्तमाः ॥ तिन्त्रिडीकेदासवर्गोबकुलोदस्युदस्तथा ॥ पु ण्यस्त्रीदायकश्चैवचंदनःपनसस्तथा ॥ सौभाग्यदंचंपकंचकरीरः पारदारकः ॥ अपत्यनाशदस्तालोनादीशःकुलवर्द्धनः ॥ बहुभा र्य्यानालिकेरीद्राक्षासर्वांगसुंदरी॥रतिप्रदाच कदलीमोचिकाराजुना

शिक ॥ इत्यादयस्तथायेन्येयेनोक्तास्तेपिदायकाः ॥ प्रतिष्ठांतेग मिष्यंतियेनरावृक्षरोपकाः ॥ अश्वत्थमेकंपिचुमंदमेकंन्यग्रोधमेकं दशतिंत्रिडीकम् ॥ कपित्थबिल्वामलकीत्रिपंच पंचाम्रवापीनर कंनपश्येत् ॥ प्रतिश्रयाःश्रांतसमाश्रितत्वादमीचसर्वेफलदाबुभु क्षवे ॥ अपत्यमेतेपरलोकहेतो र्विमृश्यतत्तिंकतरवोनरोपिताः ॥ नखानितापुष्करिण्योरोपितानचपादपाः ॥ मातुर्यौवनचोरेणते नजातेनकिंकृतम् ॥ छायामन्यस्यकुर्वंतितिष्ठंतिस्वयमातपे॥ फलं तिचपरार्थेषुनस्वार्थैकपराद्रुमाः ॥ अतोद्रुमाःसदारोप्याःसर्वकामस मृद्धये ॥ इति वृक्षरोपणफलम् ॥ अथ वृक्षदानम् ॥ देवेभ्यो थद्विजातिभ्योयोदद्यात्फलंद्रुमम् ॥ सपीयूषभुजांलोकेसेव्यमानो वरोरुभिः ॥ क्रीडतेदेववत्कालमनंतंपूर्वजान्वितः ॥ सहकारद्रुमान्द त्त्वाकिन्नरैस्सहमोदते ॥ यातिदत्त्वाद्विजेजंबूमंबिकायाःसलोकता म् ॥ वारुणंनालिकेरेण खर्जूरेणचधानदम् ॥ पूगद्रुमप्रदानेनलो कंसारस्वतंव्रजेत् ॥ यातिचंद्रमसोलोकंदत्त्वापनसभूरुहम् ॥ चिंचा प्रदानतोयातिरुचिरंलोकमाश्विनम् ॥ कपित्थदाडिमाम्रातकदल्या मलकीतरून् ॥ दत्त्वानक्षत्रलोकेषुसुखमश्नातिमानवः । अन्येषामपि वृक्षाणांसुमनःफलशाखिनाम् ॥ प्रदानतोनरोयातिपरमैश्वर्यसंपदम् ॥ पुष्पोपगंवाथफलोपगंवायः पादपंस्पर्शयतेद्विजाय ॥ सस्त्रीसमृद्धंब हुरत्नपूर्णंप्राप्नोत्ययत्नोपनतंगृहंवै ॥ इति वृक्षदानम् ॥ अथकदलीदानम् ॥ कारयेत्कदलींदिव्यांपर्णैःसर्वत्रसंवृताम् ॥ फलपूगे नसंयुक्तांसुवर्णस्यफलेनतु ॥ यथाविभवतः कुर्य्याद्वस्त्रेणावेष्टयसूत्र कैः॥ धर्मज्ञायातिदांतायदद्यात्संपूज्ययत्नतः ॥ मंत्रस्तु ॥ हिरण्य

गर्भपुरुषपरात्परजगन्मय ॥ रंभादानेनदेवेशक्षयंक्षपयमेप्रभो ॥ इति कदलीदानम् ॥ अथन्यग्रोधदानम् ॥ व्रणाःशस्त्रेणयेपिस्युर्विष दिग्धेनसंयुगे ॥ तेपिशुद्धाः प्ररोहंतियथाप्रोक्तंतुवायुना ॥ विधिस्तु कदलीवत् ॥ मंत्रस्तु ॥ उत्तराशापतेदेवकुबेरनरवाहन ॥ नाडी व्रणंनश्यतुमेन्यग्रोधस्यप्रदानतः॥ इति न्यग्रोधदानम् ॥ अथाश्वत्थ दानम्॥भवेत्स्फुटितपादस्तुयोभिहिंस्याद्वनस्पतीन् ॥ दानेनतत्प्रती कारंप्रवक्ष्यामियथोदितम् ॥ पलार्द्धेनतदर्द्धेनतदर्द्धार्द्धेनवापुनः ॥ अश्व त्थवृक्षंकुर्वीतस्कंधशाखासमन्वितम् ॥ माणिक्यवज्रवैडूर्य्यैःस्कं धमध्येस्वलंकृतम् ॥ वस्त्रेणावेष्टयसर्वत्रधान्यस्योपरिविन्य सेत् ॥ ततोवृक्षंआचार्य्यंचसंपूज्य—यदौषधय०निम्नति०नामवति० इति तिसृभिस्तिलाज्यसमिद्धोमंकृत्वाअश्वत्थइतिमंत्रेणस्विष्टकृतंहु त्वाआहुतिसंपातशेषेणरोगिणःपादौमृजेत् ॥ सर्पत्वक्कूर्मनिशाचूर्ण मिश्रितोदकैःतंस्नापयित्वा॥ दानमंत्रः॥ पीप्पलीवृक्षराड्देव ह्यग्निगर्भ स्त्वमेवहि ॥ प्रभुर्वनस्पतीनांचपूर्वजन्मनियत्कृतम् ॥ हिंसनंयत्कृतं यच्चवैरूप्यंपादयोर्मम ॥ नाशयाशुचमेप्राप्तत्वंदानेनातितोषितः ॥ अश्वत्थमेवंदत्वातंप्रणिपत्यविसर्जयेत् ॥ पुनःस्नात्वातुभुंजीतब्रा ह्मणैर्बंधुभिःसह ॥ अथाम्रदानंविद्रधिरोगहरम् ॥ विद्रधिःफलह र्तास्यान्मनुष्योब्राह्मणस्यतु ॥ वक्ष्यामितत्प्रतीकारंदानहोमादिभिः पुनः॥ सर्वंविधानमश्वत्थवद्बोध्यम्॥ होमेतु यदहंवायुरित्यादिमंत्रः॥ ग्रहशांतिश्चात्रोक्ता ॥ आग्नेय्यामग्निस्थापनम् ॥ उत्तरस्यांकलश स्थापनम् ॥ एवंकृत्वासौवर्णंह्याम्रवृक्षंदद्यात् ॥ मंत्रस्तु॥आम्रस्त्वं ब्रह्मणासृष्टःसर्वप्राणिहितायतु ॥ वृक्षाणामादिभूतस्त्वंदेवानांप्रीति

वर्द्धनः ॥ फलचौर्य्येणयत्पापंवैरूप्यंपूर्वजन्मनः ॥ सौवर्णवृक्षदाने नतुष्टाःसर्वाश्चदेवताः ॥ विद्रधिंचशरीरोत्थंबाह्यमाभ्यंतरंतथा ॥ विनाशयंतुसकलंस्वास्थ्यंकुर्वंतुमेसदेति।ततस्सुवर्णदक्षिणांदत्त्वाभूयसीं दक्षिणांचदद्यात् ॥ इतिवृक्षदानविधिः ॥ अथारामविधिः ॥ क्रीडारामंतुयःकुर्य्यादुद्यानंपुष्पसंयुतम् ॥ तोयाश्रयसमायुक्तंगुल्मफल समृद्धिदम् ॥ सगच्छेच्छंकरपुरंवासस्तत्रयुगत्रयम् ॥ उत्तरेणशुभः प्लक्षोवटंप्राच्यांचरोपयेत् ॥ उदुंबरंचयाम्येनसौम्येनाश्वत्थमेवच ॥ एतेकर्मणिनेष्यंतेदक्षिणादिक्समुद्भवाः ॥ समीपजाताश्च तथावर्ज्याःकंटकिनोद्रुमाः ॥ वामभागेतथोद्यानंकुर्य्याद्वासगृहाच्छुभम् ॥ वायव्येप्राकिलांस्तत्रमृद्वीकांताश्चपुष्पितान् ॥ ततस्तुरोपयेद्वृक्षान् प्रयतःसुसमाहितः ॥ स्नातोद्रुममथाभ्यर्च्यब्राह्मणांश्चशिवंतथा ॥ ध्रुवानिपंचवायव्येहस्तंपुष्यंसवैष्णवम् ॥ नक्षत्राणितथामूलंशस्यतेद्रुमरोपणे ॥ उद्यानमज लंशुष्कंनाभिरामंयदातदा ॥ प्रवेशयेन्नदीवाहान्पुष्करिण्यश्च कारयेत् ॥ संस्कार्यमुद्धिदंतोयंकूपाःकार्य्याःप्रयत्नतः ॥ अरिष्टाशोकपुन्नागशिरीषाः सप्रियंगवः ॥ पनसाशोककदलीजंबूलकुचदाडिमाः ॥ मांगल्याःपूर्वतोवृक्षारोपणीयागृहेषुवा ॥ कृत्वाबहुत्वमेतेषांरोप्याःसर्ववनांतरम् ॥ शाल्मलींकोविदारंचवर्जयित्वाविभीतकम् ॥ दमनंदेवदारुंचपलाशंपुष्करंतथा ॥ नविवर्ज्यस्तथाकश्चिद्देवोद्यानेविजानता ॥ तत्रापिबहुलाकार्य्यामांगल्यानांविशेषतः ॥ सायंप्रातश्चघर्मांतेशीतकालेदिनांतरे ॥ वर्षाकालेभुवःशोषेसेक्तव्यारोपितादुमाः ॥ उत्तमंविंशतिर्हस्तामध्यमंषोडशांत

रम् ॥ स्थानात्स्थानांतरंकार्य्यंवृक्षाणांद्वादशांतरम् ॥ अभ्यास जातास्तरवः संस्पृशंतः परस्परम् । अव्यक्तमित्रसूक्ष्मत्वाद्भवंतिसफ लाः सदा ॥ तेषांव्याधिसमुत्पत्तौ कथयिष्येचिकित्सितम् ॥ आदौ संशोधनंतेषांकिंचिच्छस्त्रेणकारयेत् ॥ विडंगघृतपंकाक्ताःसेचये च्छीतवारिणा ॥ फलनाशेकुलत्थैश्चमाषैर्दुग्धैस्तिलैर्यवैः ॥ शृतशी तपयस्सेकःफलपुष्पायसर्वदा ।आविकाजसंकुचूर्णंतिलानिचगोमांस मुदकंचेतिसप्तरात्रान्निधापयेत् ॥ उत्सेकंसर्ववृक्षाणांफलपुष्पादिवृद्धि दम् ॥ रंगतोयोषितंबीजंरंगतोयाच्चसेवितम् ॥ तद्रंगपुष्पंभवति यौवनेनात्रसंशयः ॥ तदंभसातुसेकेनवृद्धिर्भवतिशाखिनाम् ॥ अतः प्राधान्यतोवक्ष्येद्रुमाणांदोहदान्यहम् ॥ मत्स्योदकेनशीतेनआम्रा णांसेकइष्यते ॥ मृद्वीकानांतथाकार्य्यस्त्वनेनैवविधानतः॥ पक्वंफलं तुरुचिरंदाडिमानांप्रशस्यते ॥ तुषोदेयश्चभव्यानांमद्यंचबकुलद्रु मे ॥ विशेषात्कामिनीवक्त्रसंसर्गात्तुगुणंचयेत् ॥ प्रशस्तं चा प्यशोकानांकामिनीपदताडनम् ॥ सृगालमांसतोयेननारंगोत्थो दकैर्हितम् ॥ मधुयष्ट्युदकंचैवबदराणांप्रशस्यते ॥ गुडोदकंसगो मांसंकरकाणांप्रशस्यते ॥ क्षीरासवेनभवतिसप्तपर्णोमनोहरः ॥ मांसशृतोवसामज्जासेकःकुरवकेहितः ॥ पूतिमत्स्याहितंपूतिकार्पा सफलमेवच ॥ अहिमेदस्यसेकोयंपाटलेषुचशस्यते ॥ सृगालम त्स्यमांसाभ्यांचंपकेषुचदापयेत् ॥ फलेलतानांक्षीरेणरुधिरेणच शस्यते ॥ कपित्थबिल्वयोःसेकंगुडतोयेनकारयेत् ॥ जातीनांम ल्लिकायाश्चगंधतोयंपरंहितम् ॥ तथाकुप्यतजातीनांकूर्ममांसंप्रश स्यते ॥ खर्जूरनारिकेलानांवंशस्यकदलस्यच ॥ लवणेनसतोये

नसेकोवृद्धिकरःस्मृतः ॥ विडंगतंडुलोपेतंमत्स्यमांसंतथाजिकम् ॥ श्वानकंचैवमार्जारंमार्गंचास्थियुतंतथा ॥ सर्वेषामविशेषेणदोहदंपरिकल्पयेत् ॥ एवंकृतेचारुफलाःसुपुष्पाःसुगंधिनोव्याधिविवर्जिताश्च । भवंतिनित्यंतरवःसुरंम्याश्चिरायुषःस्वादुफलान्विताश्च ॥ अथ वृक्ष प्रतिष्ठा ॥ पादपानांविधिंवक्ष्येतथैवोद्यानभूमिषु ॥ तडागविधिवत्सर्वमासाद्यदानमाचरेत् ॥ कृत्विड्मंडपसंभारमाचार्य्य श्चापितादृशः ॥ पूजयेद्ब्राह्मणांस्तद्वद्धेमवस्त्रानुलेपनैः ॥ सर्वौषध्युदकैःसिक्तान्पिष्टालक्तविभूषितान् ॥ वृक्षान्माल्यैरलंकृत्यवासोभिरभिवेष्टयेत् ॥ सूच्यासौवर्णयाकार्य्यंसर्वेषांकर्णवेधनम् ॥ अंजनंचापिदातव्यंतद्वद्धेमशलाकया ॥ फलानिसप्तचाष्टौवाकालधौतानिकारयेत् ॥ कालधौतानिरूप्यमयानि ॥ प्रत्येकंसर्ववृक्षाणांवेधांतानधिवासयेत् ॥ धूपोत्रगुग्गुलुः श्रेष्ठस्ताम्रपात्रैरधिष्टितान् ॥ सर्वधान्ययुतान्कृत्वावस्त्रगंधानुलेपनैः ॥ कुंभान्सर्वेषुवृक्षेषुस्थापयित्वाविधानतः ॥ सहिरण्यानशेषांस्तान्कृत्वाबलिनिवेदनम् ॥ यथावल्लोकपालानामिंद्रादीनांविधानतः ॥ वनस्पतेश्चविद्वद्भिर्होमःकार्य्योद्विजातिभिः ॥ ततःशुक्लांबरधरांसौवर्णकृतभूषणाम् ॥ सकांस्यदोहांसौवर्णशृंगाढ्यामतिशालिनीम् ॥ पयस्विनींवृक्षमध्यादुत्सृजेद्ब्राह्मुदङ्मुखीम् ॥ ततोभिषेकमंत्रेणवाद्यमंगलगीतकैः ॥ ऋग्यजुस्साममंत्रैश्चब्रारुणैरभितस्तदा ॥ तैरेवकुंभैःस्नपनंकुर्य्युर्ब्राह्मणपुंगवाः ॥ स्नातः शुक्लांबरधरोयजमानः प्रपूजयेत् ॥ गोभिर्विभवतःसर्वानृत्विजःसुसमाहितान् ॥ हेमसूत्रैःसकटकैरंगुलीयैःपवित्रकैः ॥ वासोभिःशबलैश्चैवश्रेष्ठोपस्करपा

दुकैः ॥ क्षीराभिषेचनंदद्युर्य्यावद्दिनचतुष्टयम् ॥ होमश्चसर्पिषाकार्य्यो यवकृष्णतिलैस्तथा ॥ पलाशसमिधः शस्ताश्चतुर्थेह्नितथोत्सवः ॥ दक्षिणाचपुनस्तद्वद्देयातत्रापिशक्तितः ॥ यद्यदिष्टतमंकिंचित्तत्तद्दद्याददत्सरः ॥ आचार्य्यंद्विगुणंदद्यात् प्रणिपत्यविसर्जयेत् ॥ वृक्षादीनांततः कुर्य्यादुत्सर्गंपुण्यवृद्धये ॥ दानवाक्यंतु ॥ येमयारोपिता वृक्षायत्नेनपरिरक्षिताः ॥ सर्वेषामेवजंतूनांतृप्तयेउत्सृजाम्यहम् ॥ दानेनानेनसर्वात्माजगद्रूपीजगन्मयः ॥ प्रीतोरक्षतुमांपापात्तथासंसारकूपतइति ॥ अनेनविधिनायस्तुकुर्य्याद्वृक्षोत्सवंनरः ॥ सर्वान्कामानवाप्नोतिपदंचानंत्यमश्नुते ॥ यश्चैकमपियत्नेनवृक्षंसंस्थापयेन्नरः ॥ सोपिस्वर्गेवसेत्सम्यग्यावद्दिंद्राश्चतुर्दश ॥ भूतान्भव्यांश्चमनुजान्तारयेद्वागसंमितः ॥ परमांसिद्धिमाप्नोतिपुनरावृत्तिदुर्लभाम् ॥

**अथतरुपुत्रदानम् ॥** दशकूपसमावापीदशवापीसमोह्रदः ॥ दशह्रदसमः पुत्रोदशपुत्रसमोद्रुमः ॥ तरुपुत्रंतुयः कुर्य्याद्विधिवद्वाह्लिसन्निधौ ॥ समहापातकैर्मुक्तः समुद्धृत्यकुलत्रयम् ॥ नरकेष्योनरोयातिप्रजापतिपुरंशुभम् ॥ स्वपुत्रार्थंभूमिरुहंग्रहिष्यामीतियासती ॥ सोपवासाभवेन्नारी शुचिवस्त्राशुचिव्रता ॥ ततश्चैवसहस्रांशावस्तशृंगगतेरवौ ॥ उदितेविमलेचापितथेंदौबिंदुसन्निभे ॥ विप्रानामंत्रयेद्रात्रौपावनान् वेदवादिनः ॥ विप्रान्निमंत्रयित्वातुशुचिवस्त्राशुचिव्रता ॥ शयीतसनमस्कारासदर्भांभूमिमाश्रिता ॥ गमयित्वातथारात्रिंसवितर्य्युदितेपिच ॥ भक्ष्यभोज्यंसमादायव्रजेयत्रभवेत्तरुः ॥ ततस्तंस्नपयित्वातुसातपत्रंसभूषणम् ॥ तंतरुंतरुणीकृत्यततश्छायानुगामिनः ॥ यज्ञोपपन्नमन्नंतान्भोजयित्वाद्विजोत्त

तः ॥ पुण्याहंकारयित्वातुऋत्विग्भिश्चाथवात्मना ॥ तृप्तानांब्राह्मणानांवैचैतत्सङ्कल्पमात्मनः ॥ निवेद्यकृतमुद्दिश्यसद्भावेनापरेणतु ॥ अपुत्रोभगवंतोहंपुत्रप्रतिकृतिंतरुम् ॥ ग्रहीष्यामिममानुज्ञांकर्तुमर्हथ सत्तमाः ॥ ततस्तैरभ्यनुज्ञातंततंतरुंतरुणाकृतिम् ॥ भूमिदेवसमक्षंवैगृह्णीयात्तनयंशुभम् ॥ अनेनविधिनायस्तुगृहीततरुपुत्रकः ॥ पितॄणांनिरयस्थानांमधुधारांसवर्षति ॥ गृहीतोविधिनानेनशुभभूमिरुहात्मजः ॥ सवैसुखायभवतिविपरीतेनदुःखदः ॥ नपुत्राणां शतंवापियदिस्यद्भक्तिवर्जितम् ॥ एकोभूमिरुहःश्रेष्ठःपुत्रत्वेकल्पितःसुत इति ॥

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेसर्वसंपत्करदानकथनंनामद्वात्रिंशः कोशः ॥ ३२ ॥

---

अथसौभाग्यसंक्रांतिदानम् ॥ संक्रांतिवासरेतैलस्नानंकृत्वाविचक्षणः ॥ हैमपात्रेघृतंकृत्वाहिरण्येनसमन्वितम् ॥ स्वरूपंवीक्ष्यतत्पात्रंब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ एवंसंक्रमणेकृत्वाभक्त्याचैवसमन्वितः ॥ अश्वमेधसहस्राणांफलमाप्नोतिमानवः ॥ रूपयौवनसंपन्नआयुरारोग्यसंपदः ॥ लक्ष्मींचविपुलान्भोगान्भुनक्तीहनसंशयः ॥ अथ धनसंक्रांतिदानम् ॥ संक्रांतिवासरंप्राप्यशुचिर्भूत्वासमाहितः ॥ कलशंनिर्व्रणंशुद्धंवारिपूर्णंनिधापयेत् ॥ सुवर्णयुक्तंकृत्वाप्रतिमांसंप्रदापयेत् ॥ द्विभुजंपूजयेद्भानुंरक्तवस्त्रयुगान्वितम् ॥ उद्यापनेतु॥सौवर्णंकमलंकृत्वासूर्य्यंचोपरिविन्यसेत् ॥ हस्तेसुवर्णघटितंपंकजंचनिवेदयेत् ॥ गोदानंतत्रकर्त्तव्यमेवंसंपूर्णताभवेत् ॥ एवंकृतेमनुष्यस्तुधनीस्याज्जन्मजन्मनि ॥ आयुरारोग्यसंपन्नःसूर्य्यलोके

महीयते ॥ अथाज्ञासंक्रांतिदानम् ॥ संक्रांतिदिवसंप्राप्यदानं सौम्यंसमारभेत् ॥ पद्ममष्टदलंकृत्वाकुंकुमेनतुभास्करम् ॥ पूजयेन्मंत्रमुच्चार्य्यविधिवद्गुरुसन्निधौ ॥ आज्ञांतेजस्करींपृष्ठेप्रभादीप्तिंयशस्करीम् ॥ आज्ञांसर्वत्रगांदेवममदेहिनमोस्तुते ॥ इति संप्रार्थ्य ब्राह्मणायदद्यात् ॥ उद्यापनेतु ॥ सुवर्णरथंदद्यात् ॥ यःकुर्य्याद्विधिनानेनआज्ञासंक्रांतिदानकम् ॥ आज्ञानस्स्वलितालोकेसूर्य्यभक्तिःप्रजायते ॥ अथपापसंक्रांतिदानम् ॥ संक्रांत्यांनियतोभूत्वातिलैः श्वेतैःसमन्वितैः ॥ पापकंवर्द्धमानंचप्रतिमासंनिवेदयेत् ॥ मंत्रस्तु ॥ तिलोमांपातुपापेभ्यस्तवदेवप्रसादतः ॥ त्वंचमांरक्षदेवेशवाङ्मनःकायसंभवात् ॥ उद्यापनंतुधनसंक्रांतिदानोक्तिवत्कार्य्यम् ॥ तिलधेनुंचदद्यात् ॥ पूर्वपापप्रणाशाय आयुरारोग्यहेतवे ॥ एतत्सर्वंपुराप्रोक्तंब्रह्मणापद्मयोनिना ॥ अथतांबूलसंक्रांतिदानम् ॥ तांबूलंचंदनायंचप्रतिसंक्रांतिवासरे ॥ दद्याद्ब्राह्मणमुख्यायभानुंसंपूज्ययत्नतः ॥ वर्षांतेकमलंकृत्वासौवर्णंपत्रकान्वितम् ॥ द्विजदांपत्यमाहूयवस्त्रालंकरणादिभिः ॥ संपूज्य दद्यात्तत्पद्मंभास्करप्रीतयेमुदा ॥ एवंकरोतियानारीतांबूलंदानमुत्तमम् ॥ सर्वान्कामानवाप्नोतिब्रह्मणोवचनंयथा ॥ भर्त्रापुत्रैश्चपौत्रैश्चसमोदतेस्वंगृहेसुखम् ॥ मृताकालांतरेपश्चात्सूर्य्यलोकेमहीयते ॥ पत्याचदेववत्कल्पशतंतांबूलदानतः ॥ अथविशोकसंक्रांतिदानम् ॥ तिलैस्नातोनरःसम्यक्कांचनंसूर्य्यमर्चयेत् ॥ स्नाप्यपंचामृतेनैववस्त्रयुग्मंनिवेदयेत् ॥ पूजार्थंताम्रपात्रेतंनिधायविधिपूर्वकम् ॥ पूजयेदिति ॥ भास्करायनमः पादौपूजयामि० रवये० जंघे० आदित्याय०

जानू० दिवाकराय ऊरू० यमाय कटिं० भानवे० उदरं० पूष्णे० बाहू० अर्यम्णे० स्तनौ० विवस्वते० कण्ठं० सहस्रांशवे० मुखं० प्रभाकराय० नेत्रं० तेजोराशये० शिरः० वरुणाय० केशान् । एवंसंपूज्य ब्राह्मणायसंकल्पंकृत्वादद्यात् ॥ तदंतेकपिलांदद्या द्दानसांगतासिद्धये ॥ एवंकृतेकोटिगुणंस्वर्णदानात्फलंलभेत् ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्य्यंभाग्यांपुत्रांश्चविंदति ॥ अथ तेजस्संक्रांतिदा नम् ॥ संक्रांतिवासरंप्राप्यस्नानंकृत्वाविचक्षणः॥शालितंडुलसंयुक्तं क्षरकंकारयेच्छुभम् ॥ तन्मध्येदीपमास्थाप्यप्रज्वलंतंस्वतेजसा ॥ तन्मुखेमोदकंक्षिप्त्वाब्राह्मणायनिवेदयेत्॥ द्वादशसंक्रांतिष्वेवंकृत्वा स्वर्णदीपदानंकुर्य्यात् ॥ सांगतासिद्धयेगोदानंकर्तव्यम् ॥ सुवर्ण कोटिदानस्यफलमाप्नोतिनिश्चितम् ॥ तेजसादित्यसंकाशोजायते दीपदानतः ॥ अथायुःसंक्रांतिदानम् ॥ संक्रांतिदिवसेध नसंक्रांत्युक्तिवत्सर्वंपूजादिकंभास्करस्यविधाय—कांस्यंक्षीरंघृतंदद्या त्ससुवर्णंस्वशक्तितः ॥ मंत्रस्तु ॥ सक्षीरंभुंजतेचैवपीयूषसदृशं घृतम् ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्य्यंममदेहिद्विजार्पितम् ॥ अनेनविधि नादानंप्रतिसंक्रमणेचरेत् ॥ पश्चाद्दुग्धापनादिकंधनसंक्रांतिवत्कर्त्त व्यम् ॥ एवंकृतेरोगमुक्तोदीर्घायुस्तेजसायुतः ॥ अपमृत्युभयं नास्तिजीवेच्चशरदांशतम् ॥ अथ कीर्त्तिसंक्रांतिदानम् ॥ सं क्रांतिवासरं प्राप्यरविबिंबंलिखेद्भुवि ॥ तस्यमध्येस्थितंदेवं पूजयेत्सूर्य्यमंत्रतः ॥ यथाविभवसारेणदद्याद्विप्रायदक्षिणाम् ॥ प्र तिमासंतुवर्षांतंवस्त्रयुग्मंप्रदापयेत् ॥ उद्यापनेतुरौप्यंचसूर्य्यमंत्रंप्रदा पयेत् ॥ एवंकृतेपराकीर्त्तिर्जायतेचापिवह्निवत् ॥ विमलाकीर्त्तिरा

ज्यंचजायतेनात्रसंशयः ॥ अथ मनोरथसंक्रांतिदानम् ॥ गुडेनपूर्णकुंभंचसवस्त्रंचस्वशक्तितः ॥ संक्रांतिवासरे दद्यादेवंद्वादशधामुदा ॥ सांगतायांगुडमयंपर्वतंदानमिष्यते ॥ यंयंप्रार्थयतेलोकंतंतंप्राप्नोतिपुष्कलम् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तःसूर्य्यलोकेमहीयते ॥ अथ शीलसंक्रांतिदानम् ॥ अयनादयनंयावत्प्रदद्यात्पुष्पसर्पिषी ॥ तदंतेकांचनंपुष्पंघृतधेनुसमन्वितम् ॥ दद्याच्छिवपदंयाति विधानेनयदाचरेत् ॥ एतच्छीलप्रदंनामदानंशीलसुखप्रदम् ॥ अथ राज संक्रांतिदानम् ॥ उत्तरेह्ययनेप्राप्तेघृतप्रस्थेनयोहरिम् ॥ स्नापयित्वाब्राह्मणायबडवांसंप्रयच्छति ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तःसूर्य्यलोकेचिरंवसेत् ॥ ततोभवतिभूपालःप्रजानंदविवर्द्धनः॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेकाम्यसंक्रांतिदानकथनंनाम त्रयस्त्रिंशःकोशः ॥ ३३ ॥

अथलक्षवर्त्तिकादानम्॥ गोघृतेनाथतैलेनलक्षसंख्याःसुवर्त्तिकाः॥ वह्निज्वालाप्रज्वलितादद्याद्वेवायशक्तितः ॥ समाप्तिंपौर्णिमायांतुविधानेनविधीयते ॥ त्रयोदशर्त्विजोभद्रान्साग्निकान्वृणुयात्ततः ॥ सतिलैश्चयवैःकुर्य्यादग्नेयऋगादिभिः ॥ तर्पणोक्तेनमंत्रेणपायसंचघृतान्वितम् ॥ पलाशसमिधश्चैवमंत्रेणानेनवैष्णवैः ॥ घृतंचविष्णुगायत्र्याहोमशेषविधिःस्मृतः ॥ कलशेषुयथास्थाप्यंपिधानंचसवस्त्रकम् ॥ सुवर्णप्रतिमांकृत्वा अष्टयुत्तारणपूर्वकम् ॥ आवाहनादिपुष्पांतं पूजांकुर्य्यायथाविधि ॥ ततस्तिलोरुक्ममध्यः प्रतिमाःकारयेत्ततः ॥ श्रियाचसहितंदेवंमध्यगंपूजयेद्धरिम् ॥ तद्दक्षिणेचतुर्वक्त्रंसावित्र्यासहितंतथा ॥ उत्त

चोमयाशंभुंपुरतोगरुडंतथा ॥ कालोविष्णुस्तथावह्नीरविर्दीप्तो निशाकरः ॥ रुद्रश्शेषोजगद्व्यापीतेजोरूपीमहेश्वरः ॥ निरंजनःकलाध्यक्षोविश्वरूपीजगत्प्रभुः ॥ स्वप्रकाशः स्वयंज्योतिश्चतुर्व्यूहोजलाशयः ॥ परब्रह्मेतिद्विदश नामभिःपूजयेद्धरिम् ॥ शिरोललाटकेनेत्रेकर्णेनासिमुखोष्ठके ॥ कंठस्कंधेतथाबाह्वोःस्तनेवक्षसिचोदरे ॥ नाभौकट्यांचजघनेऊरौजानौचगुल्फके ॥ पादेतदग्रेकमशोह्यंगान्येवंतुपूजयेत् ॥ धूपंदीपंततोदद्यान्नैवेद्यंचनिवेदयेत् ॥ शक्त्याचजगदात्मानंस्तुत्वादेवंक्षमापयेत् ॥ देवदेवंजगन्नाथभक्तानांकार्य्यसाधक ॥ त्वत्प्रसादाद्दृढांचेशीघ्रंकार्य्यप्रदो भव ॥ अनेनैवविधानेनलक्षपूजांकरोतियः ॥ पुत्रैःपौत्रैःप्रपौत्रैश्च सुखंप्राप्नोतिनिश्चितम् ॥ आचार्य्यंपूजयेत्पश्चाद्ब्राह्मणान्ऋत्विजस्तथा।गौर्देयाचसवत्सावैसालंकारागुणान्विता॥त्रिंशत्पलंकांस्यपात्रंघृतेनपरिपूरितम् ॥ सुवर्णवर्त्तिसंयुक्तमाचार्य्यायनिवेदयेत् ॥ अथो दशपलं रूप्यंघृतेनचसमन्वितम् ॥ सांगतायैप्रदातव्यंकांस्यं वैघृतपूरितम् ॥ यावज्जीवंजीवपतिर्भवत्येवनसंशयः ॥ रजोदोषविमुक्तिःस्यादेवंदानंकरोतिया॥ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्वित्तशाठ्यं नकारयेत् ॥ अथसर्वाणिपापानिरहस्यानिकृतानिवै ॥ नश्यंतितानिसर्वाणिदानस्यास्यप्रभावतः॥ चांडालगामिनीवापितथाशूद्राभिगामिनी ॥ कारुकरजकादीनांगामिनीदुष्टचारिणी ॥ ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रप्रतिलोमाभिगामिनी॥ मातुलेयपितृव्यादिभ्रातृपुत्राभिगामिनी॥ बालघ्नीवापितृघ्नीवामातापित्रोर्विधेरता ॥ गोघ्नीवातस्करीवापिरजस्संकरकारिणी ॥ एवमादिमहापापैरावृतापिकुलांगना ॥ क

त्वाचैतद्विधिंसम्यङ्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ एवंवर्त्तिप्रदानेनविष्णोरमि ततेजसः ॥ कोटयोब्रह्महत्यानामगम्यागमकोटयः ॥ तथैवात्युग्र पापानि कोटयोथसहस्रशः ॥ नश्यंतिनात्रसंदेहोनारीणांवानरस्य च ॥ पुरुषोपिव्रतंकृत्वापूर्वोक्तैः पापसंचयैः ॥ मुच्यतेनात्रसंदेहो मधुशासनशासनात् ॥ अथगोपद्मदानम् ॥ गोष्ठेथवापिगोस्था नेगोमयेनोपलिप्यच ॥ त्रयस्त्रिंशत्तुपद्मानिगंधपुष्पैःप्रपूजयेत् ॥ तत्संख्याकाश्चिकाय्यास्स्युःनमस्काराःप्रदक्षिणाः॥ तत्संख्याकान्य पूपानिब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ कर्षमात्रसुवर्णस्यप्रतिमांचैवकारये त् ॥ संपूज्यवस्त्राभरणैरधिवासंचकारयेत् ॥ जुहुयात्पुरुषसूक्ते नघृतमिश्रंतिलादिकम् ॥ ब्राह्मणान्पंचयोषिद्भिःषड्रसान्नंतुभोजये त् ॥ इदंदानंमहापुण्यंकरोतिश्रद्धयान्वितः ॥ इहभुक्त्वातुविमला न्सर्वान्कामान्मनोरथान् ॥ अंतेगच्छतिवैकुंठंकुलकोटिशतैरपि॥ अथ प्रसंगाच्चातुर्मास्यनियमाः ॥ नियमग्रहणमंत्रः ॥ चतु रोवार्षिकान्मासान्देवस्यबोधनात्परम् ॥ गृह्णामिनियमंदेवनिर्विघ्नः सचयातुमेइति ॥ स्त्रीवानरोवागृह्णीयान्नियमंतुयदृच्छया ॥ देवंस पूज्यविधिवत्तदग्रेनियमीस्थितः ॥ संकल्पयेत्पुनस्तस्यतत्पूर्तौदान माचरेत् ॥ नियमास्तु ॥ मधुस्वरोभवेन्मर्त्योनारीवागुडवर्जना त् ॥ लभेच्चसंततिंदीर्घांपुत्रपौत्रानुवर्तिनीम् ॥ तैलस्यवर्जनात्स म्यक्सुंदरांगःप्रजायते ॥ कटुतैलपरित्यागाच्छत्रुनाशमवाप्नुयात् मधुतैलपरित्यागात्सौभाग्यमतुलंलभेत् ॥ पुष्पादिभोगत्यागेनस्वर्गे विद्याधरोभवेत् ॥ योगाभ्यासीभवेद्यस्तुसब्रह्मपदमाप्नुयात् ॥ कटुकंतिक्तमधुरंकषायंक्षारजान्त्यजेत् ॥ वर्जयेत्सर्ववैरूप्यंदौर्गं

ध्यंनामुयात्सदा ॥ तांबूलवर्जनाद्रोगीरक्तकंठश्चजायते ॥ शाक पत्राशनाद्रोगी ह्यपाकृतमलोभवेत् ॥ पादाभ्यंगपरित्यागाच्छि रोभ्यंगविवर्जनात् ॥ दीप्तिमान्दीप्तिकरणोयक्षोद्रव्यपतिर्भवेत् ॥ दधिदुग्धपरित्यागीगोलोकंलभतेनरः ॥ इंद्रातिथ्यत्वमाप्नोतिस्था लीपाकविवर्जनात् ॥ लभतेसंततिंदीर्घांतैलपक्वविवर्जनात् ॥ भूमौसंस्तरशायीचहरेरंतुचरोभवेत् ॥ सदामुनिःसदायोगीएकस स्यस्यभोजनात् ॥ निर्व्याधिर्नीरुगोजस्वीमद्यमांसविवर्जनात् ॥ एवमादिपरित्यागाद्धर्मःस्याद्धर्मकारिणे ॥ एकांतरोपवासीचब्रह्मलो केमहीयते ॥ धारणान्नखलोमानांगंगास्नानंदिनेदिने ॥ मौनव्रती भवेयस्तुतस्याज्ञास्खलिताभवेत् ॥ भूमौभुंक्तेनरोयस्तुपृथिव्यधि पतिर्भवेत् ॥ ॐनमोनारायणायेतिजप्त्वानंतफलंलभेत् ॥ पा दाभिवंदनाद्विष्णोर्लभेद्गोदानजंफलम् ॥ देवालयेतथाकुर्य्यादुप लेपनमार्जनम् ॥ कल्पस्थायीभवेद्राजासनरोनात्रसंशयः ॥ प्रद क्षिणशतीयस्तुनरोतिस्तुतिपाठकः ॥ हंसयुक्तविमानेनसतुविष्णु पुरंव्रजेत् ॥ त्रिरात्रभोजनाच्चैवमोदतेदिविदेववत् ॥ षडहर्भोजना न्मर्त्योदेवताभवतिस्वयम् ॥ प्राजापत्यंचरंश्चैवचातुर्मास्यव्रतीनरः ॥ मुच्यतेपातकैःसर्वैस्त्रिविधैर्नात्रसंशयः ॥ तप्तकृच्छ्रातिकृच्छ्रा ख्यांयः क्षिपेच्छयनंहरेः ॥ सयातिपरमंस्थानंपुनरावृत्तिवर्जि तम् ॥ चांद्रायणंनरोयस्तुचरेन्मासचतुष्टयम् ॥ दिव्यदे होभवेत्सोथसोमलोकंचगच्छति ॥ शुक्लपक्षेनरोयोवैत्यजेदन्ना दिभक्षणम् ॥ तेनपक्षोपवासेनप्रतिपक्षंहरिप्रियः ॥ सगच्छेद्ब्रह्मसा युज्यंनभूयस्तुप्रजायते ॥ भिक्षाभोजीनरोयोहिसभवेद्वेदपारगः ॥

नलिप्यतेसपापैस्तुपद्मपत्रमिवांभसा ॥ कृष्णेविष्णौहृषीकेशे सुप्तेमधुसूदने ॥ परान्नंवर्जयेद्यस्तुकृतकृत्योभवेद्धिसः॥ परान्नंवर्जनाच्चैवचांद्रायणफलंलभेत् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तःसोमलोकेमहीयते॥ शाकाहारंतुयः कुर्य्यात्सम्यङ्मासचतुष्टये ॥ तस्यवंशसमुच्छेदः कदाचिन्नोपपद्यते ॥ लवणंवर्जयेद्यस्तुनरोमासचतुष्टयम्॥त्रिजन्मो पार्जितंपापंसर्वनाशयतिक्षणात् ॥ पंचगव्याशनाच्चैवचांद्रायणफलं लभेत् ॥ निर्मलंदेहमाप्नोतिगंगास्नानंदिनेदिने ॥ मांसंधूतानृतंचैव व्यायामंक्रोधमैथुनम् ॥ हिंसांतैलंविवादंचनिद्रांनिर्माल्यलंघनम् ॥ द्वादश्यांद्वादशैतानिविष्णुभक्तोविवर्जयेत् ॥ उपवासंतथानक्तमे कभक्तमयाचितम्॥अशक्तस्तुयमान्कुर्य्यात्सायंप्रातरखंडितम् ॥ स्नानंपूजादिसंयुक्तंसनरोहरिलोकभाक् ॥ गीतवाद्यकरोविष्णोर्गांधर्वं लोकमाप्नुयात् ॥ लोकान्प्रबोधयेद्यस्तुसोतेविष्णुपुरंव्रजेत् ॥ कृत्वा प्रेक्षणकंदिव्यं लोकमप्सरसांव्रजेत् ॥ दत्त्वाप्रेक्षणकंदिव्यं निर्मलंदेहमाप्नुयात् ॥ नित्यस्नायीनरः शुद्धोनरकंनसपश्यति ॥ भोजनंवर्जयेद्यस्तुसस्नानंपौष्करंलभेत् ॥ तीर्थंजांबुहरिस्नाना न्नग्निहोत्रफलंलभेत् ॥ अयाचितेनचाप्नोतिवापीकूपप्रपाफल म् ॥ षष्ठाहकालभोगेनस्थायीस्वर्गेनरोभवेत् ॥ पत्रेषुयोनरो भुंक्तेकुरुक्षेत्रफलंलभेत् ॥ शिलायांभोजनंनित्यंप्रयागस्नानजंफल म् ॥ यामद्वयंजागरणान्नरोगैरभिभूयते ॥ एवमन्यैश्चनियमैः तुष्टिमायातिकेशवः ॥ असंक्रांतंचमासंचदेवेपित्र्येचवर्जयेत् ॥ म लिम्लुचमशौचंचसूर्य्यसंक्रांतिवर्जितम् ॥ प्राप्तेभाद्रपदेमासिएका दश्यांसितेहनि ॥ कटिदानंभवेद्विष्णोर्महापूजाप्रवर्त्तते ॥ कृष्ण

कृष्णजगन्नाथयोगगम्यनिरंजन ॥ कटिदानंकुरुष्वायप्रातेभाद्रप
देशुभे ॥ श्रावणेशाकपत्रादिभाद्रेदुग्धस्यवर्जनात् ॥ इषेदध्नोद्वैद
लस्यऊर्जेस्वर्गापवर्गभाक् ॥ एवमादीनिचान्यानियेषुश्रद्धाभिजा
यते ॥ यस्मिंश्चातितरांप्रीतिस्तंत्यजेत्प्रावृषिक्षितौ ॥ नियमांतेपूजनं
चकुर्य्यात्स्वेष्टस्ययत्नतः ॥ गोभूतिलहिरण्यादिवस्त्रभूषादिका
न्यपि ॥ यथाविभवसारेणदातव्यंविधिपूर्वकम् ॥ आचार्य्यं.
तोषयेत्सम्यक्ज्ञानदातारमादरात् ॥ होमंचाभीष्टदेवस्यप्रीतयेजु
हुयान्मुदा ॥ पुण्याहवाचनादीनिमंगलानिततश्चरेत् ॥ वृंताकत्यागे
नुविशेषः ॥ वृंताकस्यविधिंवक्ष्येपुण्यदंब्रह्मणोदितम् ॥ संव
त्सरंवाषण्मासान्त्रीन्मासान्वानभक्षयेत् ॥ अथैकरात्रोपवासंक
त्वा भरण्यांमघायांवास्थंडिलेदेवानाहूयगंधादिभिः संपूजयेत् ॥
आवाहनप्रकारस्तुदर्भपाणिर्गंधोदकेन ॥ यमराजमावाहयामि ॥
कालमावाहयामि ॥ नील० ॥ चित्रगुप्त० ॥ वैवस्वत० ॥
मृत्यु० ॥ परमेष्ठिनम् ॥ ततोग्निमुपसमाधायतिलाज्यंजुहुयात्
यमराजादिनाममंत्रैरेवाग्निर्मूर्द्धेत्याहुतीरष्टोत्तरशतंजुहुयात् ॥ प्रायश्चि
त्तंचजुहुयात् ॥ ब्राह्मणाःस्वयमेवेतरेषामाचार्य्याः ॥ अथस्व
शक्त्यासौवर्णंवृंताकंब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ कृष्णांगांतथावृषभं तथै
वकर्णालंकारांगुलीयकेछत्रोपानद्यौकृष्णवस्त्रयुगंकृष्णकंबलंचदया
त् ॥ ब्राह्मणान्संभोज्याशिषोवाचयेत् ॥ अनेनविधिनायस्तुवृंताकंसं
प्रयच्छति । त्रीन्मासानथषण्मासान्वर्षमेकंनभक्षयेत् ॥ अथचैवं
विधिंकृत्वा जन्मावधित्यागंकरोतिविष्णुलोकंप्रयाति ॥ पौ
डरीकाश्वमेधफलंप्राप्नोति ॥ सप्तजन्मसहस्राणिनाकपृष्ठेमहीयते ॥

सप्तजन्मांतरंयावद्यमलोकंनपश्यति ॥ जन्मविधित्यागपक्षेपिहोमा दिकंपूर्ववदेव ॥ वृंताकमप्रतिहतंवरहेमसिद्धंदद्याद्द्विजायघृतवस्त्रसम न्वितंयत् ॥ कृष्णर्तुवर्षमपिमासमथैकमेवयाम्यंनपश्यतिपुरंपुरुषः कदाचित्र्।अथाश्वत्थसेचनम्॥ उदकुंभप्रदानेतुअशक्तोयःपुमान्भ वेत् ॥ तेनाश्वत्थतरोर्मूलंसेव्यंनित्यंजितात्मना ॥ सर्वपापप्रशमनं सर्वदुःखविनाशनम् ॥ सर्वरोगापहंनित्यंधुवंसंततिवर्द्धनम् ॥ सेच नमंत्रः ॥ सिंचामितेश्वत्थमूलंममसंततिवृद्धये ॥ अश्वत्थरूपीभग वान्प्रीयतांमेजनार्दनः ॥अनेनमंत्रवर्यणसिंचेदश्वत्थमूलकम् ॥ नम स्कुर्य्यात्ततःसम्यक्प्रार्थयेच्चपुनःपुनः॥।यःकरोतिनरोमूलेसेकं त तुष्टये ॥ मनोरथास्तुसिद्ध्यंतिश्रुतिरेषासनातनी ॥ मासचतुष्टयेचै वादौ ।तथाच॥ अश्वत्थमूलमासिंचेत्तोयेनबहुनासदा॥कुलानामयु तंतेनतारितंस्यान्नसंशयः ॥ अथाश्वत्थाभिमंत्रणम् ॥ आरात्तेइ त्यस्याग्निकांडांतेयोनित्वेनाग्निऋषिःवनस्पतिर्देवताअनुष्टुप्छंदःअश्व त्थाभिमंत्रणेविनियोगः ॥ ॐ आरात्तेअग्निरस्त्वारात्परशुरस्तु ते ॥ निर्वातेत्वाभिवर्षतुस्वस्तितेस्तुवनस्पते ॥ इति ॥ तकारस्था नेमेकारस्स्वयंवक्तव्यः ॥ पौराणमंत्रस्तु ॥ अक्षिस्पंदंभुजस्पंदंदुः स्वप्नंदुर्विचिंतितम्॥शत्रुतश्चसमुत्पन्नमश्वत्थशमयस्वमे ॥ तथा ॥ मूलतोब्रह्मरूपायमध्यतोविष्णुरूपिणे ॥ अग्रतःशिवरूपायअश्व त्थायनमोनम इति ॥ अश्वत्थस्पर्शंतुमंदवासरएवकुर्यात् ॥ अन्य वासरेष्वर्चनंसेचनंसेवनंचदूरतएवकुर्य्यात् ॥ अथ सहस्रभोज नविधिः ॥ सहस्रभोजनस्येहविधिंनारायणोमुनिः ॥ सर्वेषामेवपु

ण्यानामब्रवीत्पुण्यमुत्तमम् ॥ यदाचित्तंचवित्तंचभक्तिरात्मनिजा
यते ॥ तदानीमेवकर्त्तव्यंप्रीतयेपरमात्मनः ॥ आषाढंचैवमाघं
चमलमासंतथैवच ॥ गुरुभार्गवयोरस्तंहित्वान्येस्मिञ्छुभेदिने ॥
कृत्वादौमंगलस्नानंशुद्धःसन्भार्य्ययासह ॥ कृत्वादौद्रव्यशुद्धच
र्थंप्रायश्चित्तंयथाविधि ॥ दशांशद्रव्यमादायविप्रेभ्योविनिवेदयेत् ॥
द्रव्यंसंप्रोक्षयेत्पश्चात्संपादितंतदाज्ञया ॥ गणेशंपूजयेत्पूर्वंमातृणां
पूजनंततः ॥ कृत्वाभ्युदयिकंश्राद्धंस्वस्तिवाचनपूर्वकम् ॥ आचा
र्य्यंपूजयेत्पश्चाद्वस्त्रालंकारभूषणैः ॥ ऋत्विजोवस्त्रदष्टौवस्त्रगंधै
श्चपूजयेत् ॥ पुष्पमंडपिकांकृत्वाचतुरस्रांसुशोभनाम् ॥ कृत्वे
शस्यसुवर्णेनप्रतिमांकर्षसंमिताम् ॥ सशक्तिकस्यदेवस्यभवानी
शंकरस्यच ॥ तस्याधिदेवताविष्णुर्ब्रह्मात्यंधिदेवता ॥ कृत्वातुप्र
तिमाशुद्धिमभ्युत्तारणपूर्वकम् ॥ षोडशैरुपचारैश्चतत्तन्मंत्रैः प्रपू
जयेत् ॥ कृत्विभिश्चपावमानीभिरभिषिच्ययथाविधि ॥ पुष्पमंडपि
कामध्येस्थापनंतंडुलोपरि ॥ प्रतिमांतत्रसंस्थाप्यकलशेचांबरा
वृते ॥ समंताद्देवदेवस्यक्रमेणैवतुपूर्वतः ॥ तत्तन्मंत्रेणनाम्नावापूज
येदंगदेवताः ॥ कर्णिकायांभवानीशोह्यधिप्रत्यधिसंयुतः ॥ तद्व
हिश्चैवंचत्वारस्तद्बहिःषोडशकमात् ॥ एकत्रिंशद्बहिश्चाष्टचत्वारिं
शत्तथाक्रमात् ॥ पद्मस्यदलवच्छस्ताःकर्णिकाशतसंग्रहाः ॥ दिशो
देवताः १० ऋषयः सप्त ७ सागराः ४ भुवनत्रयम् ३ ।नयः सप्त ७
गुणा ३ श्चैववेदा ४ श्चात्मेत्यनुक्रमात् ॥ अत्रपीठयंत्रस्थापनदेव
ताप्रयोगंचाह ॥ आदौपद्मकर्णिकायांमध्ये अधिदेवताविष्णु

ब्रह्मप्रत्यधिदेवतासहितंभवानीशंकरंस्थापयेत् ॥ तद्बहिश्चतुर्दलंम ग्नेप्रादक्षिण्येन गणेश १ दुर्गा २ क्षेत्रपाला ३ भयंकराः ४ स्थाप्याःतद्बहिस्तृतीयेषोडशमातरः— गौरी १ पद्मा २ शची ३ मेधा ४ सावित्री ५ विजया ६ जया ७ ॥ देवसेना ८ स्वधा ९ स्वाहा १० मातरो ११ लोकमातरः १२ ॥ धृतिः १३ पुष्टि १४ स्तथातुष्टि १५ स्वत्मनःकुलदेवता १६ ॥ तद्बहिरेकत्रिंशद्दलेवसुरु द्रादित्याः ॥ अष्टौवसवस्तु— ध्रुवो १ ध्वर २ श्चसोमश्च ३ आप ४ श्चैवानिलो ५नलः ६ ॥ प्रत्यूषश्च ७प्रभासश्च ८ वसवोष्टौप्रकी र्तिताः ॥ इति ॥ एकादशरुद्रास्तु ॥ वीरभद्रश्च १ शंभुश्च २ योगीशो ३ जैकपात्तथा ४ ॥ अहिर्बुध्न्यः ५ पिनाकीच ६ भुवना धीश्वरस्तथा ७ ॥ कपाली ८ विटूपतिः ९ स्थाणु १० र्भर्गाख्यो ११ रुद्रसंज्ञकाः॥ इति ॥ द्वादशादित्यास्तु ॥ धाता १ र्य माच २ मित्रश्च३ वरुणे४शौ५ भगस्तथा६ ॥ इंद्रो७विवस्वान् ८ पूषाच ९ पर्जन्योदशम १० स्तथा॥त्वष्टा ११ विष्णु १२रिति प्रोक्ताआदित्याद्वादशक्रमात् ॥ पंचमेष्टचत्वारिंशद्दलआदौक्रमेणन वग्रहाः—सूर्य्यः १सोमो २महीपुत्रः ३ सोमपुत्रो ४ बृहस्पतिः ५ ॥ शुक्रः ६शनैश्चरो७ राहुः ८ केतवश्च ९ नवग्रहा इति॥ दशलोकपा लास्तु—इंद्रो १ ग्नि २ र्यमो ३निर्ऋति ४र्वरुणो५ वायु ६ रेवच ॥कु बेरे ७ शौ ८ तथाब्रह्मा ९ अनंतो १० दशदिक्पतिरिति ॥ सप्त र्षयस्तु—कश्यपो१ त्रि २ र्भरद्वाजो ३ विश्वामित्रो ४ थगौतमः। ५ जमदग्नि ६ र्वशिष्ठश्च ७ सप्तैतेऋषयःक्रमात् ॥ समुद्रास्तु—

पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरा ४ श्चत्वारःसमुद्राइति ॥ भुवनत्रयम्—
भूर्लोक १ भुवर्लोक २ स्वर्लोक ३ इति ॥ सप्तसरितश्च—गंगा
१ चयमुनाचैव २ गोदावरी ३ सरस्वती ४ ॥ तापी ५ पयोष्णी
६ रेवाच ७ सप्तनद्योयथाक्रममिति ॥ त्रिगुणास्तु— सत्व १
रज २ स्तमो ३ गुणाइति ॥ वेदास्तु— ऋग्वेदो १ थयजुर्वेदः
२ सामवेदो ३ ह्यथर्वणः ४ इति ॥ आत्मच इत्येतास्तत्रा
वाह्यपूजयेदिति ॥ इतिपीठत्रयेदेवतास्थापनक्रमः ॥ गंधपुष्पा
दिभिश्चैवसमभ्यर्च्ययथाविधि ॥ यथाशक्तिकृतंसर्वमर्चनंविनिवेद
येत् ॥ देवदेवजगन्नाथविश्वसाक्षिन्नमोस्तुते ॥ गृहाणेमांकृतां
पूजांप्रसीदभगवान्गुरो ॥ ग्रहयज्ञविधानेनग्रहपूजांसमाप्यच ॥ ऋ
त्विग्भिःसहवैहोमंततःकुर्य्याद्यथाविधि ॥ कुंडेवास्थंडिलेवापिस्व
गृह्यविधिनाचरेत् ॥ कृत्वाज्यभागपर्यंतमुपलेपादिकंततः ॥
समिदाज्येनचरुणायवैस्तिलसमन्वितैः ॥ सहस्रंचाहुतीस्तत्र
व्याहृतीभिस्ततःक्रमात् ॥ जुहुयादृत्विगेकैकश्चतुर्विंशोत्तरंशुभम् ॥
प्रणवेनाहुतिंचैकांमंत्रेणैवपृथक्पृथक् ॥ देवतानांचसर्वेषांनामभिर्जुहु
याद्घृतम् ॥ देवतान्नमंगदेवतानाम् ॥ ततःस्विष्टकृतंहुत्वाहोमशेषं
समापयेत् ॥ आचार्य्यादीन् संमभ्यर्च्यगंधपुष्पाक्षतादिभिः ॥
दद्याद्वित्तानुसारेणदक्षिणांचयथोचिताम् ॥ लेह्यपेयंतथाचोष्यंखा
द्यंचैवचषड्रसान् ॥ देवायादौनिवेद्याथ द्विजवर्यान्समर्चयेत् ॥
भक्ष्यभोज्यादिकंदद्यात्तृप्तिर्यस्यथथाभवेत् ॥ दक्षिणांचयथाशक्त्या
सर्वेषांचसमासतः ॥ ततश्चभोजयेद्विप्रान्सहस्रंसम्यगेवहि ॥ एक

स्मिन्नेवकालेवाभवेद्वापिदिनेदिने ॥ भवेद्यावत्सहस्रंतुतावदेवहि भोजयेत् ॥ तेभ्योपिदक्षिणांदद्याद्भुंजानेभ्यःस्वशक्तितः ॥ दीनांधकृपणादींश्चभोजयित्वास्वयंततः ॥ समाहितमनाः कर्त्ता भुंजीयात्सहबंधुभिः ॥ एवंयःकुरुतेसम्यक्सहस्रद्विजभोजनम् ॥ समाप्तेतुपुनर्होमःकर्त्तव्यःपूर्ववत्क्रमात् ॥ ब्रह्महाचसुरापीचपरद्रव्यापहारकः ॥ मातृगामीचगोघ्नश्चपरदाररतःसदा ॥ ज्ञानतोज्ञानतोवापिपापकारीयथेच्छया ॥ सदाचारविहीनस्तुदमदानविवर्जितः ॥ ईदृशोपिनरोयःस्यात्सहस्रद्विजभोजनम् ॥ कुरुतेसथएवेहसपु नातिनसंशयः ॥ ब्रह्मानंदमवाप्नोतिनपुण्येनचैवहि ॥ सहस्रभो जनाच्चैवनानाविधमनोरथान् ॥ भुंक्तेसकामान्सकलान्भोगानपि चपुष्कलान् ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रंकन्यार्थीचापिकन्यकाम् ॥ यं यंकामयतेकामंतंतंप्राप्नोत्यसंशयम् ॥ तत्र संकल्पमाह ॥ ममपं चमहापातकनिवृत्तिपूर्वकब्रह्मलोकवासार्थंसहस्रद्विजभोजनकर्म करिष्ये इति संकल्पः ॥ अथ सहस्रभोजनप्रयोगः ॥ तत्रादौ गणेशपूजनं स्वस्तिवाचनंमातृकापूजनंनांदीश्राद्धंआचार्य्यवरणंकृत्वि ग्वरणहोमादिचकरिष्य इति संकल्प्य ॥ गणेशपूजादिकंयथो क्तंकर्मकुर्य्यादिति ॥ अथ सर्वस्वंदानसंकल्पवाक्यम् ॥ अ द्येत्यादि०ममैतच्छरीरावच्छिन्नसमस्तपापक्षयपूर्वकसकलमनोरथ

सिद्धियज्ञयाजित्वसर्वद्रव्यदानजन्यसर्वतीर्थस्नानजन्यसर्वदेवपूजा
जन्यसमफलयमलोकादर्शनद्वारिद्र्यानुत्पत्तिसर्वकालस्त्रीपुत्रपौत्रधन
धान्यसौभाग्यादेर्यावज्जीवमवियोगेनैहिकामुष्मिकाष्टैश्वर्य्यवद्बहुगंध
र्वोपगीयमानदिव्याप्सरोगणसेवितदिव्यांगनासमाकीर्णहंससारसवि
हंगादिपरिकृतहेमकिंकिणीजालमालिकामंडिततरुणादित्यसंकाशवि
मानारोहणशक्रादिसुरगणैर्ब्रह्मविष्णुरुद्रलोकेंद्रलोकादिषुस्वेच्छया
विचरणपूर्वकयावदाभूतसंप्लवाक्षय्यस्वर्गलोकावाप्यंतेविष्णुसायु
ज्यकामइदंसकलंमदाश्रमीयंसकलवस्तुसर्वस्वंविष्णुदैवतं तत्रैवक
ल्पितसुवर्णबहुदक्षिणम् ॐ सर्वस्वायनमइतिनाममंत्रेणसुपूजिताय
तुभ्यमहंसंप्रददे नममेत्येकस्मैदद्यात् ॥ यद्वा ॥ नानानामगोत्रेभ्योब्रा
ह्मणेभ्यः सुपूजितेभ्यःसदक्षिणंदातुमहमुत्सृजे नमम तेनश्रीपरमेश्वरः
प्रीयताम् । तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु इति द० ॥ प्रार्थनामंत्रस्तु ॥ हरिश्चंद्रो
यथाराजासर्वदत्त्वादिवंगतः ॥ तथाहमाश्रमंदत्त्वायास्यामित्रिदशा
लयम् ॥ दिविभुव्यंतरिक्षेचहस्त्यश्वरथसंकुला ॥ हरिश्चंद्रस्यभू
पतेः शोभतेनगरीयथा ॥ तथाममाश्रमंसर्वंदिविसर्वत्रगच्छतु ॥
सर्वस्वंमुनयेदत्त्वायांगतिंनृपतिर्गतः ॥ सर्वस्वदाननानेनतांगतिंप्राप्नुया
म्यहम् ॥ सर्वस्वंतवदाननेहरिश्चंद्रोयथाभवत् ॥ दुःखहीनः
सुखमयस्तथामांकुरुसर्वदा ॥ सर्वस्वदानात्सकलाममसंतुमनो
रथाः ॥ इतिसर्वस्वदानप्रयोगः ॥

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेनानाविधनियम
कथनं नामचतुस्त्रिंशःकोशः ॥ ३४ ॥

अथयुगप्राधान्येनव्यासाद्युक्तधर्माउच्यंते ॥ तपःपरंकृ
तयुगेत्रेतायांज्ञानमुत्तमम् ॥ द्वापरेयज्ञमित्याहुर्दानमेवकलौस्मृत
म् ॥ श्रांतस्ययानंतृषितस्यपानमन्नंक्षुधार्त्तस्यनरस्यशुद्धम् ॥
दद्याद्विमानेनसुरांगनाभिः संस्तूयमानस्त्रिदिवंप्रयाति॥ यतीनामाह॥
यतीनांपरमोधर्मस्त्वनाहारोवनौकसाम्॥दानमेवगृहस्थानांशुश्रूषाब्र
ह्मचारिणामिति ॥ दानमावश्यकंकेषामित्याह ॥ मातापित्रो
श्चयद्दत्तंभ्रातृस्वसृसुतासुच ॥ सोदर्य्येपिचयद्दत्तंसोतिथिःस्वर्गसंक्र
मः ॥ पितुःशतगुणंदानंसहस्रंमातुरुच्यते ॥ अनंतंदुहितुर्दानंसोदर्ये
दत्तमक्षयम् ॥ नकेवलंब्राह्मणानांदानंसर्वत्रशस्यते ॥ भगिनी
भागिनेयानांमातुलानांपितृष्वसुः॥ दरिद्राणांचबंधूनांदानंकोटिगुणं
भवेत् ॥ मातुर्गोत्रेशतगुणंस्वगोत्रेदत्तमक्षयम् ॥ दातुर्लक्षणंतु—
अपाप्यरोगीधर्मात्मादितसुरव्यसनःशुचिः ॥ अनिंद्योजीवकर्मा
चषड्भिर्दाताप्रशस्यते ॥ प्रतिग्रहीतृलक्षणमपि—त्रिशुक्लःक्षीणवृ
त्तिश्चघृणालुःसकलेंद्रियः॥ विमुक्तोयोनिदोषेभ्योब्राह्मणःपात्रमुच्य
ते ॥ तथा ॥ सौमुख्यमभिसंप्रीतिरर्थिनांदर्शनेसदा ॥सत्कृतिश्चान
सूयाचतदाश्रद्धेतिकीर्त्यते ॥ तथा ॥ यद्दातियंदश्नातितदेवधि
नांधनम्॥अन्येमृतवत्क्रीडंतिदारैरपिधनैरपि॥ आयासशतलब्ध
स्यप्राणेभ्योपिगरीयसः ॥ गतिरेकैववित्तस्यदानमन्येविपत्तयः ॥
ग्रासादर्धोपिचग्रासश्चार्थिभ्यःकिन्नदीयते ॥ इच्छानुरूपोविभवः
कदाकस्यभविष्यति ॥ तथा ॥ न्यायेनार्जनमर्थस्यवर्धनंचापि
रक्षणम् ॥ सत्पात्रेप्रतिपत्तिश्चसर्वशास्त्रेषुगीयते ॥ अदातायत्रय

त्रेतितत्रतत्रसुदुःखितः ॥ दानात्सुखमवाप्नोतिपरत्रापिचनिर्वृतः ॥ तथा ॥ अक्षरद्वयमभ्यस्तंनास्तिनास्तीतियत्पुरा ॥ तदिदंदेहिदे हीतिविपरीतमुपस्थितम् ॥ तथा ॥ द्वारंद्वारमटंतीहभिक्षुकाः पात्रपाणयः ॥ दर्शयंतिचलोकानामदातुःफलमीदृशम् ॥ द्वावेवा प्लुमवेष्टव्यौगलेबध्वादृढांशिलाम् ॥ धनवंतमदातारं दरिद्रंचातप स्विनम् ॥ अन्यच्च ॥ वृष्टिर्यथासमुद्राणांतृप्तानामशनंयथा ॥ तथादानंसमृद्धानांदत्तंभवतिनिष्फलम् ॥ अथप्रतिग्रहप्रायश्चि त्तानि ॥ दानानिसर्वाण्यभिधायतेषांप्रतिग्रहेशुद्धिमतोभिधास्ये ॥ यथाधियाभावितयाप्रवृत्तिः प्रतिग्रहेसाधुजनस्यनस्यात् ॥ तत्रमेषीदानप्रकरणे ॥ दुष्प्रतिग्रहतोविप्रोजायतेपातकीमहान् ॥ नाभिभाषेत्ततोदत्त्वातन्मुखंनावलोकयेत् ॥ तथा ॥ दुष्प्रति ग्रहदग्धस्यविप्रस्यचयथातथम् ॥ नपश्येद्वदनंपश्चान्नचैनमभि भाषयेत् ॥ तथा ॥ पूजकोगणकोव्यासोघोरग्राहीतथैवच ॥ परास्थिवाहकोवैद्योग्रामयाजीतथैवच ॥ एतेत्यजसमालोकानस्पृष्टव्याःकदाचन ॥ कदाचिन्मोहतःस्पृष्टाःसवासाआप्लुतःशुचिः ॥ तथा ॥ मंत्रेणानेनदत्त्वातंप्रणिपत्यक्षमाप्यच ॥ आसीमांतमनुव्रज्यतन्मुखंनावलोकयेत् ॥ प्रतिग्रहदुष्टत्वंचतुर्धा दातृकालदेशंप्रतिग्राह्यदोषभेदात् ॥ चांडालत्वपतितत्वादयोदा तृदोषाःचंद्रसूर्य्योपरागादयःकालदोषाःउभयतोमुखीत्वमेषीत्वादयो देयदोषाः ॥ तिलधेनुर्गजोवाजीमहिषाजिनमूर्त्तयः ॥ सुरभिः सूयमानाचघोराःसप्तप्रतिग्रहाः इतिनिषेधात् ॥ प्रेतान्नमजिनं

मणिरितिपाठेप्रेतान्नमेकादशाहिकश्राद्धान्नभोजनम् ॥ मणिश्चा लयामइति ॥ अन्यच्च ॥ परमापद्गतेनापिअंत्यजातिप्रतिग्रहः ॥ नकार्य्योब्राह्मणेनेहचात्मनःश्रेयइच्छता ॥ प्रतिग्रहाच्चांत्यजातेःप तितत्वंप्रजायते इति ॥ अंत्यजास्तु ॥ रजकश्चर्मकश्चैवनटो बुरुडएवच ॥ कैवर्त्तमेदभिल्लाश्चसप्तैतेअंत्यजाःस्मृताः ॥ चांडा लास्तु ॥ ब्राह्मण्यांशूद्रजाताश्चचांडालास्त्रिविधास्मृताः ॥ तथा ॥ कुरुक्षेत्रेप्रतिग्राहीनभूयःपुरुषोभवेत् ॥ गायत्रीमनुजाप्येतांसप्तलक्षं भवेच्छुचिः ॥ कालदोषभिन्नोसत्प्रतिग्रहनिषेधः तत्प्रतिग्रहप्रायश्चि त्तकथनेनस्पष्टः । सर्वसत्प्रतिग्रहेप्रायश्चित्तम् ॥ देव्यालक्षजपेनै वशुद्धयतेसत्प्रतिग्रहात् ॥ जपसंख्यातु—जपित्वात्रीणिसाविंश्याः सहस्राणिसमाहितइति ॥ इदंतुपतितादिभ्योदुष्टदेशकालयो रदुष्टद्रव्यप्रतिग्रहे ॥ अन्येषुदशप्राजापत्यरूपं पतितादिभ्योम हिष्यादिप्रतिग्रहेषु सर्वत्रानुक्तदानदेशकालद्रव्येष्वदुष्टेष्वपिद्वादश निष्कप्रमाणद्रव्यप्रतिग्रहेकार्य्यम् ॥ एवंसर्वत्रद्रव्यानुसारे णप्रायश्चित्तवृद्धिह्रासौकल्प्यौ ॥ दातृदेशकालद्रव्येष्वन्यतरदोषे एकैकगुणवृद्धिः ॥ मणिवासोगवादीनामन्यतरप्रतिग्रहेगायत्र्यष्ट सहस्रजपः ॥ भिक्षादिप्रतिग्रहेपुण्यमंत्रोच्चारणम् ॥ नचप्रतिग्रहस्या निषिद्धत्वात्कथंप्रायश्चित्तविधिरितिवाच्यम् ॥ प्रतिग्रहेणवि प्राणांब्राह्मंतेजःप्रणश्यतीतिकथनात्प्रतिग्रहसमर्थोपिप्रसंगंतत्रवर्जये दितिस्पष्टमेवनिषेधसत्त्वाच्च ॥ प्रायश्चित्तंचप्रतिगृहीतसर्वद्रव्यंत्यक्त्वै वकार्य्यंसतिद्रव्येप्रायश्चित्ताधिकाराभावादिति ॥ केचित्तु षष्ठांश

द्वादशांशौपरित्याज्यौवैकल्पिकावुक्तौ॥तथा ॥ प्रतिग्रहाच्चषष्ठांशं वाणिज्याच्चतृतीयकम् ॥ कृषेर्विंशतितमंभागंत्यज्यवानास्तिपातकम् ॥ प्रतिग्रहःकुत्सितानांत्रिभिःकृच्छ्रैर्विशुद्ध्यति ॥ रथोवाजी चमहिषीतिलधेनुर्गुजोऽजिनम् ॥ सूयमानाचसुरभिर्घोरःसप्तप्रतिग्रहाः॥ एतेषांप्रतिग्रहेआहिताग्नेःप्राजापत्येष्टिःस्मार्त्ताग्निमतश्चरुस्तद्देवताकः।अनग्नेःअन्येषांचकृच्छ्रत्रयम् ॥ अन्यच्च ॥ गुडधेन्वाश्चिधे. नूनांप्रायश्चित्तंतथोच्यते ॥ प्रतिग्रहेचरेद्विप्रःप्राजापत्यमतंद्रितः ॥ जपेच्चपौरुषंसूक्तमप्सुचैवाघमर्षणम् ॥ अहोरात्रस्थितश्चैवमुच्यते तेनकिल्बिषात् ॥ अयुतंजपसंख्या ॥ गृहंदानंमहादानंनास्तिदानंगृहात्परम् ॥ येनदत्तंहिवैतेनसर्वंदत्तंभवेन्नृणाम् ॥ गृहोपकरणं सर्वंगोमहिष्यादिभूषणम् ॥ कंडणीपेषणीचुल्लीह्युदकुंभस्तुमार्जनी ॥ शय्याविभाजितंछत्रंवितानंरथगोवृषम् ॥ तत्रकृच्छ्रंचरेद्विप्रोमहासांतपनंतथा॥शतंवाभोजयेद्विप्रान्गायत्रीलक्षमेवच॥प्रायश्चित्तेकृतेविप्रोमुच्यतेतत्प्रतिग्रहात् ॥ गोशतंगोसहस्रंचकृष्णावैतरणीतथा ॥ चतस्रश्चैवगावश्चवर्जनीयाःप्रयत्नतः ॥ चतस्रउत्क्रांतिकृणपापमोक्षधेनवः॥गृहीत्वावैतरणींलोहदंडोभयावहः ॥ प्राजापत्यत्रयंकुर्य्याद्भोजयेच्चशतंद्विजान् ॥ जपेद्वामदेव्यंचशिवसंकल्पमेवच ॥ रथंतरंवामदेव्यं जपेन्मुच्यतेकिल्बिषात् ॥ यज्ञकर्मणियाधेनुर्ब्रह्मधेनुस्तथैवच ॥ मधुपर्केचयाधेनुर्याधेनुःकर्मसिद्धये ॥ एतत्प्रतिग्रहेकिंचित्प्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ पर्वतायदशप्रोक्तास्तथैवद्विमुखीचगौः ॥ उष्ट्रप्रतिग्रहेचैवक्षपेन्मासचतुष्टयम् ॥ प्राजापत्येनकृच्छ्रे

णषष्ठांशंतुपरित्यजेत् ॥ जपेद्वादशलक्षंवागायत्र्यानिश्यभोजनम् ॥ शतेनमुच्यतेपापाद्विप्राणांभोजनेनच ॥ प्राणायामंशतंकुर्य्याद्ब्रह्मकूर्चसमन्वितम् ॥ रथप्रतिग्रहेलक्षगायत्रीजपमाचरेत् ॥ अयुतंवाथगायत्र्याःसंगमेस्नानमाचरेत् ॥ षष्ठांशंतुपरित्यज्य ब्राह्मणान्भोजयेच्छुचिः ॥ प्रतिगृह्यान्नदानानिप्रायश्चित्तंयथोदितम् ॥ जपेन्निरंतरंदेवीं वैष्णवंव्रतमाचरेत् ॥ जपसंख्याअयुतादिः ॥ विद्यादानंगृहीत्वापियत्किंचित्पुस्तकादिकम् ॥ ब्राह्मणान्भोजयेद्दत्त्वाकृच्छ्रमेकंसमाचरेत् ॥ पृथिवींप्रतिगृह्याथसशैलवनकाननाम् ॥ अपिधातुमथागृह्यतप्तंकृच्छ्रत्रयंतथा ॥ भूत्वा त्रिषवणस्नायीक्षिपेन्मासचतुष्टयम् ॥ एवंशुद्धिमवाप्नोतिद्विजः षष्ठांशमुत्सृजेत् ॥ इदंचसदक्षिणाप्रतिग्रहे ॥ तद्रहितेतुनदोषः भूमिंयःप्रतिगृह्णातियस्तुभूमिंप्रयच्छति ॥ तावुभौपुण्यकर्माणौनियंतस्वर्गगामिनौ ॥ अथ षोडशमहादानेषु-तुलापुरुषभागंतुगृहीत्वाचांद्रकंचरेत् ॥ हिरण्यगर्भंचतथाब्रह्मांडेकल्पपादपे ॥ जलेत्रिषवणस्नायीचरेत्सांतपनद्वयम् ॥ गोसहस्रप्रतिग्राहीयदाविप्रोह्यकामतः ॥ गोमूत्रयावकाहारोमासेनैकेनशुद्ध्यति। हिरण्यकामधेन्वादिदानमत्रयथोदितम् ॥ महाभूतघटांतेषुप्रायश्चित्तमथोच्यते ॥ गायत्र्यादशलक्षैश्चप्राणायामसहस्रकैः ॥ नश्यंतिपापसंघाश्चकाकथादुष्प्रतिग्रहे ॥ पावमानंचसूक्तंवैसर्वपातकनाशनम् ॥ अत्रायमभिसंधिः ॥ आयुष्यमितिसूक्तेनमार्ष्णिकंठेप्रमुच्यते इत्यादिसूत्रेषुअखिलानामपिधिनियोगदर्शनात् तेषामपि

प्रामाण्यबलात् पावमानीजपस्याखिलेषुविधानात्ते ॥ तद्बलापेक्षायां--गोघ्नान्मातृपितृवधादित्यादिमंत्रवर्णेनतत्तत्पातकनाशस्यफलत्वावगत्या तत्तत्पापेषुपावमानीजपस्यप्रायश्चित्तत्वम् ॥ पापानुरोधेनचजपसंख्याकल्पनीयेतिदिक् ॥ अथ राजप्रतिग्रहप्रायश्चित्तम् ॥ अनापदिराजप्रतिग्रहंनिंदंति ॥ यथा ॥ नराज्ञःप्रतिगृह्णीयाल्लुब्धस्योच्छास्त्रवर्त्तिनः ॥ प्रतिग्रहेशुनी चक्रीध्वजी वैश्यानराधिपाः ॥ अष्टादशगुणंपूर्वंपूर्वादेते यथोत्तरम् ॥ तथाच ॥ राजप्रतिग्रहोघोरोमध्वास्वादो विषोपमः ॥ पुत्रमांसंवरंभोक्तुंनतुराजप्रतिग्रहः ॥ मरुदेशेनिरुदकेब्रह्मरक्षस्त्वमागतः ॥ राजप्रतिग्रहात्पुष्टःपुनर्जन्मनविंदति ॥ ब्राह्मणंयःपरित्यज्यद्रव्यलोभेनमोहितः ॥ विषयामिषलुब्धस्तु कुर्य्याद्राजप्रतिग्रहम् ॥ नरकेरौरवेघोरे तस्यैवपतनंध्रुवम् ॥ वृक्षादवाग्निनादग्धाः प्ररोहंतिघनागमे ॥ राजप्रतिमहादग्धान प्ररोहंतिकेचन ॥ अन्यच्च ॥ दशसूनासमश्चक्रीदशचक्रिसमोध्वजी ॥ दशध्वजिसमावेश्यादशवेश्यासमोनृपः ॥ दशसूनास हस्राणियोवाहयतिसैनिकः ॥ तेनतुल्यःस्मृतोराजातस्माद्घोरः प्रतिग्रहः--इत्यधार्मिकराजविषयेनिंदा ॥ यतः--येषांनविषयेपीतिर्यज्ञेयज्ञपतौहरौ ॥ यत्रैयेभूभुजस्तेषामेतत्सूनोदितंफलम् ॥ येषांपाषंडिसंकीर्णंराष्ट्रंनब्राह्मणोत्कटम् ॥ एतेसूनासहस्राणांदशानांभोगिनोनृपाः ॥ येषांनयज्ञपुरुषःकारणंपुरुषोत्तमः ॥ तेतुपापसमाचारासूनापापौघभागिनः ॥ अदुष्टात्तुराज्ञः प्रति

ग्रहोनर्नियः ॥ यथा ॥ छंदोगशाखायाम् ॥ प्राचीन शालादीन्महामुनीन् राजगृहेप्रवर्त्तत इति ॥ अन्यच्च ॥ ममेस्तैन्यंजनपदेनकुर्य्यान्नचमद्यपः ॥ नानाहिताग्निर्नाविद्वान्न स्वैरीस्वैरिणंकुतइति ॥ श्रेयान्प्रतिग्रहोराज्ञां नान्ये षांब्राह्मणादृते ॥ ब्राह्मणश्चैवराजाचद्वावप्येतौधृतव्रतौ ॥ नैतयोरंतरंकिंचित्प्रज्ञाधर्माभिरक्षणे ॥ शुचीनामशुचीनांचसन्नि वेशोयथांभसाम् ॥ समुद्रेसमतांयांतितद्वद्राज्ञांधनागमे ॥ यथा ग्नौसंस्थितंचैवशुद्धिमाप्नोतिकांचनम् ॥ एवंधनाममःसर्वःशुद्धिमाप्नो तिराजनि ॥ राजप्रतिग्रहेप्रायश्चित्तम् ॥ यथा ॥ राज्ञःप्रतिग्रहंकृत्वामास मप्सुसदावसेत् ॥ षष्ठेकालेयथाभक्षःपूर्णमासेप्रमुच्यते ॥ तर्पयित्वा द्विजान्कामैःसततंनियतव्रतः इति--तदसत्प्रतिग्रहविषयम् ॥ अथ रहस्यप्रायश्चित्तानि ॥ अनभिख्यातदोषस्तुरहस्यव्रतमाचरेत् ॥ इति कर्तृव्यतिरिक्तैर्यदीयोदोषोनज्ञापतइत्यर्थः ॥ अतश्चपारंदा र्य्यादेरपिस्त्रीपुंसाभ्यामितरेणाज्ञातस्यरहस्यत्वमेव । तस्यंप्रायश्चि त्तमपिरहस्यमेवकर्त्तव्यम् ॥ तथाचरहस्येरहस्यंप्रकाशेप्रकाशमि ति सूत्रकारः ॥ तत्ररहस्यानांसाधारणप्रायश्चित्तंयथा ॥ वेदा भ्यासोन्वहंशक्त्यामहायज्ञक्रियाक्षमा ॥ नाशयंत्याशुपापानिमहा पातकजान्यपि ॥ यथैधस्तेजसावह्निःप्राप्तंनिर्दहतिक्षणात् ॥ तथा ज्ञानकृतंपापंकृत्स्नंदहतिवेदवित् ॥ सव्याहृत्यस्सःप्रणवाःप्राणा यामास्तुषोडश ॥ अपिभ्रूणहणंमासात्पुनात्यहरहःकृताः ॥ इति ॥ तथाच ॥ यच्चाकार्य्यंकृतंसाम्नैशंतेवेदश्चधार्य्यते ॥ त

त्सर्ववेदस्यवेदाग्निर्दहत्यग्निरिवेंधनम् ॥ तथाच ॥ सहस्रपरमांदेवीं शतमध्यांदशावराम् ॥ गायत्रींसंजपेन्नित्यं महापातकनाशिनीम् ॥ ऋग्वेदमभ्यसेयस्तुयजुस्सामानिचापिवा ॥ सूक्तानिसरहस्यानिअथर्वांगिरसस्तथा ॥ ब्राह्मणानिचकल्पांश्चषडंगानितथैवच ॥ इतिहासपुराणानिदेवतास्तवनानिच ॥ जप्त्वापापैःप्रमुच्येतधर्मस्थानेतथापरान् ॥ अन्यच्च ॥ तपोव्रततीर्थसेवादेवब्राह्मणपूजनम् ॥ ग्रहणादिषुकालेषुमहापातकशोधनम् ॥ पुण्यक्षेत्राभिगमनंसर्वपापप्रणाशनम् ॥ देवताभ्यर्चनंनृणांसर्वपापप्रणाशनम् ॥ अमावास्यातिथिंभक्त्यायःसमाराधयेद्ध्रुवम् ॥ ब्राह्मणान्भोजयित्वातु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ कृष्णाष्टम्यांमहादेवंतथाकृष्णचतुर्दशीम् ॥ संपूज्य ब्राह्मणमुखेसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ त्रयोदश्यांतथारात्रौसोपहारंत्रिलोचनम् ॥ दृष्ट्वेशंप्रथमेयामेमुच्यतेसर्वपातकैः ॥ एकादश्यां निराहारःसमभ्यर्च्यजनार्दनम् ॥ द्वादश्यांशुक्लपक्षस्यसर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ उपोषितश्चतुर्दश्यांकृष्णपक्षेसमाहितः ॥ यमायधर्मराजायमृत्यवेचांतकायच ॥ वैवस्वतायकालायसर्वभूतक्षयायच ॥ औदुंबरायदध्नायनीलायपरमेष्ठिने ॥ वृकोदरायचित्रायचित्रगुप्तायवैकमात् ॥ चतुर्दशैतेमंत्राःस्युश्चतुर्थ्यंतानमोन्विताः ॥ तैःपृथक्तिलसंमिश्रान्दद्यात्सप्तोदकांजलीन् ॥ स्नात्वानद्यांतुपूर्वाह्णेमुच्यतेसर्वपातकैः ॥ तथाच ॥ अस्मिन्कलियुगेघोरेलोकाःपापानुवर्त्तिनः ॥ भविष्यंतिदुराचारावर्णाश्रमविवर्जिताः ॥ तेषामुद्धरणार्थायश्रेष्ठावाराणसीपुरी ॥

सर्वपापप्रशमिनीप्रायश्चित्तविधायिनीति. ॥ इतिरहस्येषुसाधारणं प्रायश्चित्तानि ॥ अथप्रतिपदोक्तप्रायश्चित्तानि ॥ त्रिरात्रोपोषितोजप्त्वाब्रह्महात्वघमर्षणम् ॥ अंतर्जलेविशुध्येच्चगांचदद्यात्पयस्विनीम् ॥ जप्त्वाचपौरुषंसूक्तंमुच्यतेगुरुतल्पगः ॥ हविष्यांतमजरंस्वर्विदीत्येकोनविंशर्चंव्रतमहोनदुरितंसप्तर्चं इतिवाइतिमेमनस्त्रयोदशर्चंवाजप्त्वा प्रत्यहंषोडशकृत्वोमासम् अकामतोगुरुतल्पगःशुद्धयति ॥ अन्यच्च अतोदेवाजपेत्सूक्तमग्नआयूंषि वेत्यृचा ॥ अघमर्षणंवाजप्त्वामुच्यतेब्रह्महत्यया ॥ इतिस्मृत्यर्थसारमतेनरहस्यप्रायश्चित्तानि ॥ अथस्मृत्यर्थसारमतेनरहस्यप्रायश्चित्तानि॥कर्त्तव्यातिरिक्तेतराज्ञातदोषेरहस्यप्रायश्चित्तंचरेत्न अविद्वां तुमुखांतरेणरहस्यप्रायश्चित्तंज्ञात्वारहस्यंचरेत् ॥ त्रिमधुत्रिसुपर्णंचत्राचिकेतत्रयंतथा ॥ नारायणंजपेत्सर्वंमुच्यतेब्रह्महत्ययेत्युक्तेत्रिमध्वादिपठनंनियमतःकार्यम् ॥ इति ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तम् ॥ अथसुरापानादिप्रायश्चित्तम् ॥ अप्नःशोशुचदघमितिसूक्तपाठेनगुरुतल्पगमनपापनाशः ॥ कौत्संजपित्वापेत्येतद्वासिष्ठंचप्रतीत्यृचम् ॥ माहित्रंशुद्धवत्यश्चसुरापोऽपिविशुद्धयतीत्युक्तेः ॥ इतिसुरापानप्रायश्चित्तम् ।एवं रुद्राऽध्यायस्यैकादशकृत्वोजपात्सुरापानादि जन्यपापनिवृत्तिः ॥ मद्यंपीत्वागुरुदारांश्चगत्वास्तेयंकृत्वाब्रह्महत्यांचकृत्वा ॥ भस्मच्छन्नोभस्मशय्याशयानोरुद्राऽध्यायीमुच्यतेसर्वपापैरितिशातातपोक्तेः ॥ इतिसुरापानादिप्रायश्चित्तम् ॥ अन्यपापेषुतुकृन्तापंवालखिल्यंचजप्त्वापापैःप्रमुच्यते ॥ ब्रह्महत्या

दिपापेभ्यःपावमानात्प्रमुच्यतेइत्याश्वलायनोक्तेः ॥ कुन्तापादिपा ठैःतन्नाशइति । उपपातकेषुतेषुपूर्वोक्तमेवेतिचासिद्धमितिदिक् ॥ कृ च्छ्रादिलक्षणानितदुपयोगक्रमस्तत्प्रत्यान्नायाश्चतत्तन्महानिबन्धे भ्योज्ञेयाइत्यलम् ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेरहस्यप्रायश्चित्तानि ॥

---

इति महीधरकृतो दानसंग्रहः ।

---

संवत् १९५४ मिते मुद्रितः ।

पुस्तकमिलनेका ठिकाना:-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना, खेतवाड़ी-बंबई.

# विक्रय्यपुस्तकोंकी-संक्षिप्त-सूची।

## कर्मकांडग्रंथाः।

| नाम. | की. रु. आ. |
|---|---|
| संस्कारभास्कर(यजुर्वेदी सब संस्कारोंकी विधि प्रयोग और मंत्र सहित) ... ... | २-१२ |
| जन्मदिनपूजापद्धति. ... ... | ०-२ |
| गोदानपद्धति ... ... ... ... | ०-१॥ |
| पूजापंकजभास्कर .... ... ... | २-० |
| सकामशिवपूजनविधान भाषाटीका ... ... | ०-४ |
| स्वस्तिवाचन ( पुण्याहवाचन ) ... ... | ०-१॥ |
| दशकर्मपद्धति. ... ... ... | ०-७. |
| वासिष्ठीहवनपद्धति ... ... ... | ०-४ |
| लंबोदरीहवनपद्धति ... ... ... | ०-४ |
| एकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोग ... ... ... | ०-२ |
| पार्वणश्राद्धप्रयोग ... ... ... | ०-२ |
| उपाकर्मपद्धति(श्रावणीयजुर्वेदकी) ... ... | ०-१२ |
| कर्मविपाकचरणगत रफ् १० आना ग्लेज ... | ०-१२ |
| कर्मविपाक भाषाटीका ... ... ... | १-४ |
| वेदोक्तवास्तुपद्धति. ... ... ... | ०-६ |
| व्रतोद्यापनकौमुदी. ... ... | ०-१२ |

## व्याकरण ग्रन्थाः।

सिद्धांतकौमुदी अष्टाध्यायी, गणपा०,धातुपा० लिंगानुशासनपा०

## जाहिरात ।

| नाम. | की. रु. आ. |
|---|---|
| इसमें १८४ विषयहैं शाक्त लोगोंको अवश्य लेना चाहिये ... ... | ५-० |
| नित्यतंत्रभाषाटीका ( नैमित्तिक कर्मोंमें उपयोगी ) ... .. | ०-१२ |
| मंत्रमहोदधि सटीक सटिप्पण मातृकाकोष तथा अनुष्ठानिकयंत्रों समेत ... ... | ३-४ |
| महानिर्वाणतंत्रम् भाषाटीका समेतम् चौंसठ तंत्रोंमें सर्वतंत्रोत्तमोत्तम है .. .. ... | २-० |
| माहेश्वरीतंत्र भाषाटीका ( मारण मोहन वशीकरण उच्चाटनादि विधि) वर्णितहै ... | ०-४ |
| कामशास्त्र भाषाटीका छपताहै .. .... | ०-० |
| इन्द्रजाल ( संस्कृत और भाषा मंत्र तंत्र मारण मोहन उच्चाटन वशीकरण प्रयोग और वैद्यक तथा समस्त कार्योंके सिद्ध करनेवाले १३८ यंत्रों समेत .. .. | ०-१२ |
| दुर्गासप्तशती शान्तवीटीकासहित .. .. | १-४ |
| दुर्गासप्तशती भट्टनागोजीकृतटीकासहित .. | १-० |
| दुर्गासप्तशती भाषाटीका शान्तनवी टीकाकेअनुकूल | १-० |

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

**खेमराज श्रीकृष्णदास,**

**" श्रीवेंकटेश्वर " छापाखाना-मुंबई.**